आज़ाद-कथा के कलाकार रतननाथ 'सरशार' उर्दू कथा-साहित्य के सिद्धहस्त कलाकार थे। उनका 'कामिनी' उपन्यास 'आज़ाद कथा' के नवाबी युग के परवर्ती समाज का जीता-जागता चित्र है। इस उपन्यास में लेखक की कला अधिक परिष्कृत है। हिन्दी रूपान्तरकार हैं शमशेरबहादुर सिंह, जिनका हिन्दी उर्दू पर समान अधिकार है। भाषा का प्रवाह और उसकी सजीवता उनकी शैली का विशिष्ट गुण है।

रतननाथ 'सरशार'

की

अमर कृति

∵

कामिनी

रूपांतरकार

शमशेरबहादुर सिंह

सरस्वती प्रेस बनारस

मूल्य–पांच रुपया

मुद्रक—पं० पृथ्वीनाथ भार्गव, भार्गवभूषण प्रेस, गायघाट, बनारस

भूमिका

'आज़ाद-कथा' के प्रणेता, उर्दू साहित्य के अमर रत्न रतननाथ 'सरशार' से हमारे पाठक अपरिचित नहीं हैं। 'आज़ाद-कथा' उनकी हास्य-कृति थी; 'कामिनी' उनकी गम्भीर रचना है। एक सामाजिक उपन्यास की हैसियत से हम समझते हैं कि आज भी उसका स्थान बहुत ऊँचा है। आज भी इतना सजीव, इतना यथार्थ चित्रण दुर्लभ है। यह निर्विवाद है कि नवाबी ज़माने के लखनऊ का जितना सजीव चित्र 'सरशार' उपस्थित करते हैं वैसा और किसी लेखक ने नहीं किया है। 'कामिनी' की रोचकता और उसमें अंकित चित्रों की मोहकता उसकी अपनी निधि है। और उस निधि को आपके हाथों में समर्पित करते हुए हमें न केवल संतोष है, वरन हर्ष भी हो रहा है।

'कामिनी' बहुत बड़ा उपन्यास है और आज के पाठक के लिए, संभवतः, वह पुराना विस्तार और शब्द-बाहुल्य बहुत प्रीतिकर न हो। उपन्यास की हमारी धारणा में भी बहुत अंतर हो गया है। इस दृष्टि से अनुवाद के समय उस विस्तार का कुछ अनावश्यक अंश हमने निकाल दिया है। ऐसा करने में, परंतु, उपन्यास की कहानी, उसकी शैली अथवा गठन को कोई क्षति नहीं पहुँची है। वैसा करना हमें कदापि प्रिय न होता। अब 'कामिनी' का रूप और निखर आया है। उसकी भाषा के साथ, आप देखेंगे, हमने अधिक स्वतंत्रता नहीं ली है। 'सरशार' महोदय की शैली इतनी सुंदर है कि उसे और अधिक सँवारने का मतलब सूरज को दीपक दिखाना होगा—जो कभी हमारा दंभ नहीं है।

—प्रकाशक

कामिनी

पहला अध्याय

सूरमा बेटा

धनन्ना ! धनन्ना ! तोप की घन गरज आवाज़ें जो गूँजीं, तो लोगों के कान खड़े हुए, ऐं ! ये तोपें कैसी दग़ती हैं, भई ? किसी ने कहा कोई बड़ा लाट आया होगा। कोई बोला, मालूम होता है हैदराबाद-वाला नवाब या कश्मीर का महाराजा आया है। किसी ने कहा : अरे मियाँ, न कोई आया है, न गया है; चाँदमारी हो रही है। कोई बोल उट्ठा : भइ आवाज़ तो धावे की-सी है; लाल कुर्ती के गोरों और काली पल्टन में लड़ाई हो रही होगी ; हम जानते हैं बेली गारद पर धावा है, अपनी-अपनी राय के मुताबिक सब गप्पेबाज़ियाँ करते थे और सरकारी तोपख़ाने से तोप की दनादन की आवाज़ें बराबर आती थीं। थोड़ी देर में सबको मालूम हो गया कि हिज़ एक्सेलेंसी कमाण्डर-इन-चीफ़-हिन्दुस्तान, यानी हिन्दुस्तान भर की फ़ौज के अफ़सर-आला, जिनका दर्जा और ओहदा इस मुल्क में सिर्फ़ गवर्नर जनरल के दर्जे से कम है, आज लखनऊ की रौनक बढ़ा रहे हैं, और यह शिलिक उन्हीं के स्वागत में है।

अब सुनिये कि ऐन उसी वक़्त, जब कि छावनी से अजदर-मुहाँ तोप पर बत्तियाँ पड़ रही थीं और शहर भर में गोलों की आवाज़ गूँजती थी, अभी धनन्ना की आवाज़ें ख़त्म नहीं हुई थीं, कि मिस बेली, अमरीका की लेडी ने बहुत खुश होकर एक शरीफ़ हिन्दू ख़ान्दान के घर में अन्दर जाकर कहा—'बेटा-बाबा पैदा हुआ !' और उनकी मददगार दाई जुब्बन ने, जो हिन्दुस्तानी दाइयों में शहर भर की नाक थी, पुकारकर कहा—'लो बीवी, मुबारक ! चाँद-सा बेटा पैदा हुआ। अल्ला ज़च्चा-बच्चा दोनों को सलामत रखे !' लड़का होने की खुशी किसको नहीं होती, घर भर में सब खुशियाँ मनाने लगे। बाहर मर्दों में ख़बर हुई, तो उसके बाप से उनके दोस्तों ने कहा, यार यह लड़का बड़ा सूरमा होगा, कि ऐन पैदा होने के वक़्त हिन्दुस्तान भर की फ़ौज के कमाण्डर-इन-चीफ़ के आमद की शिलिक-सलामी सर हुई !

सबको यक़ीन हो गया कि लड़का बढ़ के बड़ा तलवरिया, बड़ा गोलचला, बड़ा पक्का निशानेबाज़ होगा और रन के मैदान में शेर-नर की तरह बिफरेगा और डकारेगा। क्षत्री का लड़का, राजपूत तो है ही; और फिर उस ख़ान्दान का, जहाँ न जाने कितने पुश्तों से सिपहगिरी होती आई है—कोई रिसालेदार,

कोई सूबेदार, कोई कमेदान। चीन, बर्मा, काबुल की लड़ाइयाँ लड़े हुए। घर में जो पैदा हुआ, जियाला। जरी, नर आदमी। घुट्टी के एवज़ गोया दुश्मन का खून पीना सिखाया था। खुद भी खूँख़ार, तलवार भी खून की प्यासी। ठाकुर बलज़ोर सिंह, जिनके यहाँ लड़का हुआ था, एक बड़ा जरीर राजपूत था। कई लड़ाइयों में ब्रिटिश गवरमेंट की तरफ से शरीक था। पहले महाराजा सिंधिया ग्वालियरवाले की फ़ौज का कप्तान था। एक कमाण्डर-इन-चीफ़ ने जब ग्वालियर के दरबार की फ़ौज का मुआइना किया और क़वायद देखी, तो महाराजा साहब से बलजोर सिंह को माँग लिया। और इस जरी राजपूत ने हर जंग में, जहाँ-जहाँ भेजा गया, बड़ा नाम पैदा किया। हर मैदाने-जंग में दो चीज़ें हाथ में लेकर जाता था और एक चीज बगल में: तलवार और जान हाथ में—और बग़ल में कफ़न। रन के मैदान में जान को कोई चीज़ ही नहीं समझता था, और मौत को एक भूनी मूँग के बराबर भी कभी न समझा। उसका भाई भी बड़ा गोलचला मशहूर था: उम्र भर सूबेदारी की, और जब सुना यही सुना, कि आग फाँद पड़ा, समुन्दर में कूद पड़ा। इनके यहाँ की औरतें जब कभी अपने खान्दान के किसी मर्द के बारे में सुनती थीं कि फलाँ शख्स गुत्थम-गुत्था घमासान में ज़ख्मी हुआ, फलाँ मर्द ने गोली खाई, फ़लाँ नौजवान आदमी के दस टाँके रन के मैदान में लगाये गए, तो उस दिन घी के चिराग़ जलाती थीं, और रतजगा करती थीं और खुश होती थीं। और मर्द तो कोई ऐसा नहीं जिसके बदन पर ज़ख्म न लगे हों, या जिसने तलवार के मुँह लड़ाई न लड़ी हो, या गोली न खाई हो। यह तो इस खान्दान का फ़ख्र है। इस खान्दान में जो ऐसे वक्त में लड़का पैदा हुआ जब कमाण्डर-इन-चीफ-हिन्द के स्वागत में शिलिक-सलामी सर हो रही थी, तो उनके कुल बिरादरी वालों का कलेजा हाथ भर का हो गया, और खुशी के शादियाने बजने लगे।

मिस बेली ने बलज़ोर सिंह से कहा कि—ऐसी साअत में तुम्हारा बच्चा पैदा हुआ, यह कोई बड़ा मुल्क फतेह करेगा। हम जानते हैं कि रूस का ज़ार होगा; या रूसियों को एशिया से निकाल के शहंशाह हो जायगा और तुर्कमानिया के गेगोग-टोप को अपनी सलतनत की राजधानी बनाएगा।

बलज़ोर सिंह ने शुक्रिया अदा करके कहा: भगवान करे ऐसा ही हो, मगर यह तो बताइये, मिस बेली, कि आपने ऐसी उर्दू बोलना कहाँ सीखा?

मिस ने मुस्कराकर जवाब दिया—मैं पैदा तो अमरीका में हुई, मगर दो बरस की उम्र में यहाँ आई, और चौदहवें बरस यहाँ से अमरीका गई। वहाँ तीन बरस रही। साल भर के लिये इंग्लिस्तान गई। फिर अमरीका आके चार साल रही। फिर दो महीने फ्रांस में रही और वहाँ से लंदन गई। वहाँ दो बरस तक डाक्टरी का काम किया। कभी-कभी स्काटलैंड और आयलैंड और पेरिस भी

जाती थी। फिर दो बरस तक अमरीका में रही। अब ग्यारह बरस से फिर लखनऊ में हूँ। इस अर्से में सिर्फ दो दफा अमरीका गई थी। बढ़ी आपके शहर में। बारह बरस तक तालीम आपके शहर में पाई, उर्दू-फारसी पढ़ी। डाक्टरी का खिताब अमरीका में पाया। वह कौन महल है, जहाँ मैं नहीं गई, और कौन खान्दान है जिसमें मैंने इलाज नहीं किया, और वह कौन बहू-बेटियाँ हैं जिनसे मैं वाकिफ नहीं, और जो मुझे नहीं जानतीं। रजवाड़ों, ताल्लुक़ेदारों, ज़मींदारों में जाने का भी इत्तफ़ाक होता है। उनकी बोली ऐसी साफ़ बोलती हूँ कि आपकी औरतें न बोल सकेंगी। अच्छा, अब छुट्टी के दिन मिशन की आठ लेडियों की दावत कर दीजिये। शैम्पेन पार्टी।'

बलज़ोर सिंह ने खुशी से क़बूल किया और उसी वक्त मिस बेली से एक ख़त मरे एण्ड कम्पनी के नाम लिखवाया कि मेहरबानी करके आधी दरजन शैम्पेन की बोतलें और आधी दरजन शैम्पेन पाइंट (अद्धे) और तीन बोतल शेरी और तीन बोतल क्लैरेट भिजवा दीजिये। और इलाहाबाद एक ख़त भेजा कि फ़लाँ-फ़लाँ क़िस्म की मिठाई भिजवाइए। और दोनों ख़तों पर दस्तख़त कर दिये।

इतने में बलज़ोरसिंह के दो दोस्त आए। दोनों फ़ौजी अफ़सर, दोनों पेंशनर। जब उन्होंने सुना कि बलज़ोर सिंह के यहाँ लड़का उस वक्त पैदा हुआ जब कमाण्डर-इन-चीफ़ के रेल से उतरते ही सरकारी तोपख़ाने से तोपों के दगने की आवाज़ें दनादन आ रही थीं, तो बड़े खुश हुए। और दोनों ने एकराय होकर कहा कि यह लड़का कहीं का जरनैल होगा। एक ने कहा कि इसकी तलवार जाके काबुल ही में दम लेगी। दूसरा बोला—बरमा फतेह करेगा। होनहार बिरवे के चिकने-चिकने पात। गोली चलाना तो इस लड़के को मैं खुद सिखाऊँगा।

एक रिसालदार ने कहा—और घोड़े पर सवार होके मेख उखाड़ना और उसके कुल करतब हम सिखाएँगे।

एक मौलवी जो मुबारकबाद देने आए थे, वह मुस्कराकर बोले—अब इससे कौन इनकार कर सकता है कि यह लड़का बेशक बड़ा पक्का सिपाही होगा। जब तीन-तीन रिसालेदारों, और ऐसे-ऐसे तजरुबेकार रिसालेदारों की तालीम होगी, तो फिर बचपने ही से लड़का अच्छे-अच्छे करनैलों के कान काटने लगेगा। अल्लाह उम्र दराज करे! मगर इसके साथ ही अँग्रेजी-फारसी की तालीम से भी न चूकियेगा। इस लड़के को निरा उजड्ड सिपाही ही न बनाइयेगा, जैसे—बे अदबी मुआफ़—आपके ठाकुरों में बाज़ गँवार के लट्ठ होते हैं। ऐसा कीजिये, कि यह तलवार का भी धनी हो और क़लम का भी। जब लुत्फ़ है।

इसी पर दो-एक ठाकुर हँसे कि हमारी अच्छी तारीफ़ की, कि उजड्ड बनाया और गँवार का लट्ठ।

बलज़ोर सिंह ने यह सुनकर जवाब दिया कि अब तो हम लोग अंग्रेज़ी अमलदारी की बदौलत आदमी बन गए, मगर कभी-कभी वह पुराने उजड्ड-पने का खून जोश कर आता है। अब इससे बढ़के उजड्डपना और क्या होगा कि लड़कियों को जिन्दा ही मार डालते थे। एक तोता भी आदमी पालता है तो उसकी मोहब्बत हो जाती है—न कि अपनी औलाद! अब भी पुराने उजड्डपन की बू नहीं गई है।

एक बूढ़े ठाकुर रिसालेदार ने ये बातें सुनकर कहा—अरे अब कौन सिपह-गिरी रह गई। जब से हेनरी मार्टीनी रफल चली और आर्मस्ट्रांग की तोप निकली, सिपहगिरी गई-गुज़री। आड़ में खड़े होके, ख़ाकी ख़ाकी वर्दी पहन ली और पट-पट दाग दी। जैसे मौत बरस गई। परबत हो तो डोल जाय, आदमी भुनगा कौन चीज़ है। इसमें सिपाही की क्या चले। सिपहगिरी तब थी जब दोनों फौजें गुथ जाती थीं, जैसे दो साँप ज़बानें निकाले हुए एक दूसरे से गुथ जायँ। वह सिपहगिरी थी। मौलवी साहब, (पगड़ी उतार के) यह देखो, यह सर पर तलवार खाई थी, और दूसरी लड़ाई में इधर तलवार पड़ी। जब तलवार पड़ती है, मौलवी साहब, तो पहले आँखों में अँधेरा छा जाता है। होश कब आता है जब खून की धार निकलती है। बस आँखें खुल जाती हैं। और उसके बाद जो चक्कर आता है तो फिर ज़खमी गिर जाता है, और अगर ज़ख्म खाने का आदी है, तो ज़रा देर ठहर सकता है। लेकिन कारी ज़खम के आगे देव के बच्चे की भी नहीं चलती। हमने कभी ज़ख्म खा के उफ़् नहीं की और आगे ही बढ़ गये। और कड़कैतों का कड़का सुनके तो हिजड़े तक को हरारा आ जायगा। हाँ, शेराने-शेर! बढ़े हुए!—बस सुनना था कि तलवारें सूत-सूत के घोड़ों को और भी तेज़ी से कड़कड़ा दिया। अब उस वक्त यही दिल चाहता है कि फौरन मुठभेड़ हो जाय। बस जुट ही जाएँ। और जब गनीम को भागते जा देखते थे, तो हमको तो रंज होता था। दिली खुशी हमको तब होती थी जब हमारी फ़ौज ग़नीम की फ़ौज से तलवार की लड़ाई लड़ती थी। शपाशप। उस वक्त कलेजा हाथ भर का हो जाता था। और लुत्फ़ यह कि अगर ज़ख्म लगाएँ तो भी खुश, और अगर ज़खम खाएँ तो भी खुश। हम तो मनाते ही थे कि ज़ख्मी होके रन से आयें। और हम, अपनी कहते हैं, औरों का हाल नहीं जानते, कि जब दुश्मन को हमने निहत्था कर दिया, और देखा कि उसके पास तलवार, तमंचा, बन्दूक; कटार वग़ैरह कुछ भी नहीं है, तब हमारा वार कभी उस पर नहीं हुआ। बस हाथ को रोक लिया कि निहत्थे आदमी पर हाथ चलाना और औरत पर हाथ चलाना बुज़दिलों का काम है, कोई बहादुरी की बात नहीं। दो-दो दिन बे आबोदाना हम लोग लड़ते थे। और अँग्रेज़ी फौज के साथ तो वह सामान होता है कि गोया समधियाने में दावत खाने जाते हैं। उनका कमसरियट होता

है कि दुनिया भर की न्यामत की माँ का कलेजा। भेड़ी और बकरी और बकरियाँ और मुर्गी और अण्डे और बटेर और तीतर और कबूतर और सूअर और मछली और हिरन और हर तरह का ग़ल्ला और दूध और मक्खन और दही और सारी खुदाई भर के ऐश की चीज़ें ढेर-की-ढेर होती हैं। और शराब की कोई इन्तहा नहीं। सुना, सोडा और लेमोनेड की हज़ारों बोतलों की ड्योढ़ लगी रहती है। और यहाँ कभी रोटी नसीब हुई, कभी सत्तू ही खाके रहे। कभी चना-चबेना, कभी कुछ नहीं। कभी-कभी ऐसा हुआ है कि आलू के खेत से आलू तोड़ के उसी दम भुनवाए और घोड़े ही की पीठ पर खाए। खेतों निकल गये, और पानी का पता नहीं।...

इतने में बलजोर सिंह के मुख़तार ने आके कहा—कल बड़ी क़वायद है। जंगी क़वाएद। कुछ गोरे और काले एक तरफ होंगे, और कुछ दूसरी तरफ। साहब कमाण्डर-इन-चीफ मोआइना करेंगे। देखने के क़ाबिल है।

बलज़ोर—जो आता है जंग ही का ज़िक्र करता है।

रिसालेदार, १ ले—कहा न, कि होनहार बिरवे के चिकने-चिकने पात। भई, क्या नेकशगून है कि वाह !

रिसालेदार (नवाबी के वक्त के)—इस लड़के का नाम रनबीरसिंह रखना। ब्रहमन जल-सूर, छत्तरी रन-सूर, वैश धनकी लालच से धनसूर, शूद्र सेवा-सूर।

रिसालेदार, १ ले—नाम तो अच्छा तजवीजा, मगर वैश की बड़ी तारीफ !...

इतने में म्युनिसिपैल्टी का चपरासी टैक्स वसूल करने आया, और सलाम करके बलज़ोर सिंह को मुबारकबाद दी, कि शहर भर में लोगों की ज़बान पर यही है, कि ठाकुर बलज़ोर सिंह का यह लड़का बड़ा नामी अफसर होगा।

मौलवी साहब—ठाकुर बलज़ोर सिंह, आप जाके सिपन्द इस बच्चे पर से नज़रे-बद के लिये उतारिये। इसमें कोई हर्ज नहीं।

रिसालेदार (नवाबी वाले)—अजी कहीं सिपाहियों के बच्चों पर से नज़रे-बद उतारी जाती है? तो फ़ौज की नौकरी तो कर चुके !

मौलवी साहब (जतन दाई से)—भला ज़च्चाख़ाने में सिपन्द की अँगीठी है या नहीं—जाके देखो !

जतन—ए मौलवी साहब, इनके घर की सारी ख़ुदाई से निराली रीत है। न अँगीठी है, न कालादाना। एक तलवार रखी है, वह भी नंगी। और एक ढाल जो देव के उठाए भी न उठे। और एक जोड़ी तपंचे की। पैदा होते-साथी छुवाई गई। (आहिस्ता से, कानमें) क्या जाने कहाँ के हुश्शू हैं।

इतने में अन्दर से महरी आई, और घर का सन्देसा लाई, कि बन्दूकें दग़वाइए। रिसालेदार (नम्बर १) मुस्कराये कि इतनी तोपें दनादन दग़ चुकीं और अभी तक उनको बन्दूक़ के सर होने की ख़ाहिश है। रिसालदार (नं०२)

ने इक्कीस जरब की सलामी उतारी—दाँय-दाँय! दाँय-दाँय! फिर अन्दर से सन्देसा आया कि बच्चे के ऐन सिरहाने पर भी बन्दूकें दाग़ी जायँ, और बलज़ोर सिंह ने अपने लड़के इन्द्र बिक्रम सिंह से जाके कहा। उसने भाई के सिरहाने पर जाके ११ दफ़ा बन्दूक़ दाग़ी। जब जाके कहीं औरतों को तसल्ली हुई। जतन को घर से बहुत भारी जोड़ा इनाम में मिला, और एक अशर्फी नक़द; और हुक्म हुआ कि महीने भर तक रोज़ आना, और खाना यहीं खाना। मिस बेली को छै अशर्फियाँ नज़र कीं, और एक सियाह रेशमी थान, और एक शाल; दोनों कीमती। वह भी खुश हो गईं और दुआ दे गईं कि यह लड़का वस्त-एशिया का शहंशाह हो; और वादा कर गईं कि मैं हर रोज लड़के को एक बार देख जाया करूँगी। और जतन और मिस बेली दोनों ने अपने क़ौल को पूरा किया।

छठी के दूसरे दिन बलजोर सिंह के दरवाज़े पर भाँड़ों के गाने-बजाने की आवाज़ आने लगी। ("मान करे नँदलाल, सुहागिन जच्चा। मान करे नँदलाल. . . . .") उनको अन्दर से इनाम दिया गया। और बलजोर सिंह ने कहा—ईद बाद टर्र! पैदा होने के दिन नहीं आये। दूसरे दिन नहीं। छठी के दिन नहीं आये! आज आये हो!

एक बूढ़े भाँड़ ने कहा—ए हुज़ूर, क़ुरबान जाऊँ, पहले दिन तो नौनिहाल के तौलदगाह जंडैली वर्दी बजती थी। (सब ठठाकर हँसते हैं) कहीं तोप, कहीं करना, कहीं भोंपू। हम नचनिये-गवैयों का कौन काम था। दूसरे दिन गराब चलने लगी। हमें मम्मूखाँ का ज़माना और बिरजिस क़दरी गर्दी याद आई। (सब ठठाकर हँसते हैं।) समझे, भगदड़ के दिनों की तरह हवाई गोले शहर में उतारे जाते हैं—कि घबराकर खलकत शहर को खाली कर दे। फिर हुज़ूर हम कोई रिसालेदार, सूबेदार, तमनदार, भोंपूबरदार तो हैं नहीं, कि आग और तलवार की आँच सह जायँ। नचनिये का दिल कितना! सारंगी तबला ढोल की मजीरा बाँध, अपने तायफ़े को साथ ले, काँकराबाद-गोपामऊ हो रहे। जब सुना अमन हो गया, भागे हुए रिसालदार तमनदार भोंपूवरदार अपनी अपनी जगह वापिस आये। गदर ठंडा हुआ तो घर की राह ली। राह ली तो रास्ते में क़ुरबान जाऊँ क्या देखते हैं कि—

भागे जहाँ-जहाँ पे बि-ज़न औ, बिकट मिला
लुट-पिट के घर को आए तो घर का टिकट मिला

फौरन् दूसरे भाण्ड ने तबले पर थाप दी; और सबने मिलकर कहना शुरू किया—'अल्लाह करे छोटे ठाकुर रनबीर सिंह बहादुर को झाँसी की गद्दी मिल जाए। आमीन! खुदा करे जच्चा महारानी हो जाएँ, और ठाकुर बलज़ोर सिंह को एक-एक थन से दो-दो सेर निखालिस दूध पिलाएँ!' इस पर बड़ा क़हक़हा पड़ा, और भाण्ड इनाम लेकर और दिल खुश करके और दो-चार ओखी सुना के, यह जा वह जा।

—:o:—

दूसरा अध्याय

चाँद-सी बेटी: मनोकामना पूरी हुई

जान-आलम की नैना नुकीली,
सुल्तान आलम की नैना नुकीली
जान आलम की नैना नुकीली

एक नाजुकबदन, पिस्ता से होंठ, खुश आवाज , गलेबाज़ पतुरिया अजब लुत्फ से गाती और सच्ची तानों से लुभाती, और गोरे-गोरे हाथों से, जिनमें मेंहदी के शोख रंग से और भी जोबन हो गया था, बताती जाती थी--'नैना-नुकीले के नैन'। भाव पर सब लोट थे। नीचे छत पर कमरे में नाच और गाना होता था, मर्द बैठे थे, मगर सब घर के, बाहर का कोई नहीं। अगर बाहर का कोई था तो सिर्फ तबलिये, सारंगिये वग़ैरह। और उसके ऊपर दोनों जानिब कमरों में औरतें थीं, करीब की रिश्तेदार। दोहरी चिकें इस तरह पड़ी हुई थीं कि ऊपर से नीचे का हाल सब सूझता था, मगर नीचे से ऊपर का हाल कुछ नहीं मालूम होता था। तायफा थोड़ी देर के बाद बदला गया और बैठ के गाना होने लगा--

दिल लोट गया सुनते ही गुफ़्तार किसी की,
सुनता ही नहीं अब य' मेरा यार किसी की।

—इतने में एक महरी ने एक कमसिन लड़के को जिसका नाम इन्द्रबिक्रम सिंह था इशारे से बुलाके कुछ कहा और वह कोठे पर गया, और शिवरानी एक कमसिन औरत ने जो इन्द्रबिक्रम सिंह की चचाज़ात बहन थी कहा—भैया, मुबारक हो, तुम्हारे एक और बहन हुई। सब ख़ैरियत है। जैनब की माँ ने कहा—भैया, हम तो घबरा गये थे, मगर अल्लाह ने ख़ैर की। मैंने बिटिया (शिवरानी) से कहा कि अब मेम-डाक्टरनी को बुलवाना चाहिये। मगर वाह री लड़की, उन्होंने कहा: नहीं बुआ, तुम क्या किसी मेम-एम से कम हो। बस उसी दम से तबीअत बहाल होने लगी। आप को—किसीको—कानोकान मालूम भी न हुआ, और बच्ची पैदा हो गई। ले अब इनाम लाओ। लड़के हो तो क्या हुआ, तुम्हारे बाप तो पिशावर में जाके दनदना रहे हैं; अब घर के बड़े यहाँ जो भी हो तुम्हीं हो।

शिवरानी ने इन सब बातों का जवाब यों दिया—तुम घबराई क्यों जाती हो, जैनब की माँ! भर-पूर इनाम लो! जैनब की माँ और घर की कई औरतें आपस में बातें करने लगीं, कि वाह कितनी अच्छी साअत पर यह लड़की पैदा

हुई है, कि वाह। यह ज़रूर रानी बनेगी। कितना अच्छा! सीताजी की साल-गिरह का दिन। बाप ने लड़ाई सर की। ख़िताब और तमग़ा पाया। जान बचने और फ़तेह पाने का जलसा हो रहा है। किसी को सान-गुमान भी नहीं था, कि आज बच्चा पैदा होगा। ऐसी सुभ-घड़ी लड़की पैदा हुई कि जो जुड़वाँ लड़के भी होते तो ऐसी खुशी न होती। मालूम होता है, आज जलसा इसी खुशी के लिये हुआ था।

ज़च्चा की एक चची ने जो बड़ी-बूढ़ी औरत थीं कहा कि—कोई आठ महीने हुए होंगे कि एक दिन मैं और यह ज़च्चा रथ पर जा रही थीं, तो एक फकीर ने दूर तलक साथ किया। और क्या जाने उसको क्या सूझी, जब कहे यही कहे कि 'गंगामाई तुम्हारी मनोकामना पूरी करे, दूधों नहाओ, पूतों फलो: जो चन्ने साईं की जबान पर असर है तो अल्लाह ने चाहा, चाँद-सा बेटा हो; और जो बेटी हो, तो राज करे, महालक्ष्मी सहाय रहे!' मुझे बड़ी हँसी आई कि यह उसने नई दुआ माँगी! उसको कहाँ से मालूम हो गया कि यह होनेवाला है। सो वही हुआ। हम इस लड़की का नाम कामिनी रखेंगे।

यह नाम ऐसा दिलफ़रेब था कि सब ने इसी पर राय दी। और इन्द्रबिक्रम सिंह ने भी कहा, कि कितना प्यारा नाम तजवीज़ हुआ है। एक बहन का नाम पद्मनी, दूसरी का कामिनी। ज़ैनब की माँ बोली—इस नाम पर तो हमारा भी साद है। लाख दो लाख में एक। जिसने सुना फड़क गया। ज़च्चा भी ज़च्चाख़ाने में यह सुनके लोट हो गई और ज़ैनब की माँ से कहा—इसके बाप को भी यह नाम बहुत पसन्द आएगा।

इतने में मिस बेली अमरीका की लेडी डाक्टर आईं। जब सब हाल सुना तो कहा—कोई पांच बरस हुए ठाकुर बलज़ोर सिंह के घर में लड़का हुआ था। मैं थी और एक मुसलमान दाई। फ़ौज के बड़े लाट उसी दिन आए थे। रेल से उतरते ही तोपें दग़ने लगीं; और तोपें दग़ती ही थीं कि लड़का पैदा हुआ। छत्रियों का ख़ान्दान, इसको बड़ा अच्छा शगून समझे, और अन्दर-बाहर बड़ी ख़ुशियां हुईं। सबने आके बड़ी मुबारकबादें दीं कि यह लड़का कई मुल्क फतह करेगा; और एक ठाकुर ने उसी वक्त रनबीर सिंह नाम रख दिया।

शिवरानी ने जो गजराज सिंह की भतीजी थीं कहा—और यही यहाँ भी हुआ। जलसा इस बात का हो रहा था कि हमारे चचा की जान बच गई, उन्होंने एक लड़ाई में बड़ा नाम पैदा किया और ख़िताब पाया। (दोनों तार जो आए थे, वह मिस बेली ने पढ़े।) बस नाच-गाना हो रहा था कि दाई ने कहा—मुबारक, लड़की सही-सलामत पैदा हुई। और हमारी एक चची होती हैं, उन्होंने कामिनी नाम रख दिया।

मिस—मैं उसको अँग्रेज़ी-उर्दू सिखाऊँगी।

शिव०—और हम खाना-पकाना और सीना सिखाएँगे।

एक—और मैं घर का इन्तजाम करना सिखाऊँगी।

दूसरी—और मैं सँवरना और कपड़े पहनना, और नाक-चोटी से दुरुस्त रहना, मेंहदी लगाना; उसके रुकाने सिखाऊँगी।

तीसरी—और मैं सिखाऊँगी कि सास, ननद, ससुर, देवर, देवरानी, जिठानी को यों खुश रखते हैं।

चौथी—हम पूजा-पाठ सिखाएँगे , कि दो घड़ी परमेश्वर का नाम ले।

मिस—जब ऐसे-ऐसे घरों की औरतें इस लड़की को ये-ये बातें सिखाएँगी तो लड़की तो बर्क़ हो जाएगी। क़ौम के राजा-महाराजा अपने घर ले जाने और अपनी खाना आबादी की कोशिश करेंगे।

—:०:—

तीसरा अध्याय

बिन गहे चाँद का मुखड़ा माँद हो गया

बीसवें बरस रनबीर सिंह सिपाहगरी, घुड़सवारी, निशानेबाजी, तलवार के कुल करतब, बानक-पटे, बिनौट, लकड़ी, कुश्ती में अकेला अपनी आप ही मिसाल था। बड़ा जियाला, बड़ी जीवट का सिपाही हुआ। निडर। घुड़सवार ऐसा कि जिन्होंने सिखाया था वह तक उससे पखचते थे।। सी उम्र में घुड़दौड़ में दो बाजियाँ जीता। पोलो के खेल में बर्क और मशहूर था। खाई फँदाने में बेबदल उस्ताद। सालोतरी का फ़न भी खूब जानता था। कैसा ही मुँहज़ोर, सरकश, बदनफस, हरामजादा, घोड़ा क्यों न हो, यह राह पर ले आता था। अच्छे चाबुकसवार से जानवर बरसों में ठीक न होता, उसको यह दो दिन में ठीक बना लेते। गोली चलाने की यह कैफियत थी, कि छै बार बद-बद के इनाम पा चुका। इन्तहा यह है कि निशाना कभी ख़ता ही नहीं हुआ। ताका और मारा। लोगों को ताज्जुब होता था कि इतना-सा लड़का, ऐसा निशानेबाज, ऐसा गोलचला! तलवार का धनी। कुश्ती में पूरा पहलवान, जैसे बरसों का कोई लड़न्तिया होता है। गुहार लड़ने में हजारों में बन्द नहीं। एक तो तबीअत ही ऐसी शेर, दूसरे राजपूत का लड़का, जिनके घर से मरदानगी पैदा होती थी। और इन सब पर तुर्रा यह था सुर्ख-सफ़ेद ऐसा जैसे बिलकुल अंग्रेज होते हैं। नमकीनी और मलाहत तो ऐसी कि न देखी, न सुनी।

हाथ-पावँ सुडौल; नक-सिख से दुरुस्त। बदन का एक-एक जोड़ साँचे का ढला हुआ। और हथियार लगाकर तो वाक़ई इस क़ाबिल था कि घंटों इंसान देखे और मर्द औरत अश् अश् करें। ग़रूर नाम को नहीं। रहमदिल इन्तहा से ज्यादा। हर वक्त दूसरों की भलाई में। दिल का खुला हुआ। अंग्रेज़ी में 'रोज़मर्रा'—यानी बातचीत का ढंग—बहुत अच्छा : लब-लहजा बिलकुल अंग्रेजों का-सा; कोई फ़र्क नहीं। अंग्रेज़ी के लिखने-पढ़ने में भी आम अंग्रेज़ीदानों का उससे कोई मुक़ाबला नहीं। फ़ारसी-उर्दू की बहुत लियाक़त। चाल-चलन तारीफ़ के क़ाबिल; बेऐब।

अब सुनिए कि ठाकुर गजराज सिंह की लड़की इस वक्त जब रनबीर सिंह पूरे पन्द्रह बरस के थे, वह दस बरस की थीं। हुस्न की निस्बत तो सारी खुदाई की यही राय थी कि ऐसी हसीन तो दुनिया-जहान में नहीं हुई। सरापा साँचे का ढला हुआ। कलाइयों पर वह नूर बरसता था कि तारीफ मोहाल है। होंठ याक़ूत को शर्माएँ। चेहरा सचमुच भगवान ने अपने हाथ से बनाया था। बूटा-सा क़द, और नाज़ुक जिस्म; छरेरा बदन। और अंग्रेजी पढ़ी; फ़ारसीदाँ; उर्दू में भी पूरी लियाक़त। हिसाब-किताब में ताक़। इसी सिन में पूरा शऊर और सलीक़ा। सीने-परोने में होशियार। मिस बेली ने मिशन की पुरानी और होशियार मिसोंको तायनात कर दिया था। जुर्राब बनाना भी सिखाया था। खाना भी खूब पका लेती थी। सोलहवें बरस इन ठाकुरों के खान्दान में एक नई बात हुई, यानी कुमारी कामिनी देवी ने इन्ट्रेंस के इम्तहान में कामियाबी हासिल की। इम्तहान के हाल के एक छोटे-से कमरे में जहाँ परिन्दा पर नहीं मार सकता था ये जवाब लिखती थीं, और मिशन की एक लेडी गार्ड रहती थीं। नई पौध के क्षत्री तो बड़े खुश हुए कि एक खान्दान, और बड़े ऊँचे, रईस और शरीफ खान्दान की लड़की ने तहज़ीब की पहली मंज़िल में क़दम रखा। और उसके बुजुर्गों और रिश्तेदारों की 'मॉरल करेज' पर भी सब अश् अश् करने लगे। मगर पुराने फैशन के ठाकुर बहुत बिगड़े, कि नवाबी होती, तो मूड़ काट लेते।

जब कामिनी सयानी हुई तो दिल में सोचा करती थी कि देखा चाहिए, किसके पाले पड़ती हूँ, किससे ब्याह होता है, किसके साथ उम्र बसर करनी होगी। अगर जाहिल-मूरख हुआ तो ज़िन्दगी तलख हो जाएगी। क्षत्रियों में कोई-कोई ऐसे भी हैं जो औरतों के पढ़ने-लिखने से चिढ़ते हैं। अगर ऐसे मूरख-उजड्ड से साबक़ा पड़ा तो दिल इस हालत पर रोएगा, कि मैं किसके खूँटे बँधी : हाय, इससे मर क्यों न गई! वह जब तक दस-पन्द्रह सफ़े किसी नई किताब के न पढ़ ले, तब तक खाना-पीना हराम है। ज़रा चैन न आए; जी घबरा जाए। क्या जाने, खूबसूरत हो या बदसूरत हो। जो सियाहफाम, चेचक-

रू, सूरत का घिनौना, कम-रू हुआ, तो बिन-गहा चाँद-सा मुखड़ा गहन में आ जाएगा। कौए और तूती का कौन ताल-मेल। भगवान से मनाती थी, कि चाहे जो हो, परमेश्वर मुझे अनपढ़ जाहिल से साबक़ा न डाले; नहीं बिन मौत मर जाऊँगी। और बीमार न हो; बदसूरत हो ख़ैर बला से। यों तो कौन लड़की न चाहेगी कि गोरा-चिट्टा दूल्हा मिले। कौन लड़की न चाहेगी कि हमारा दूल्हा हमसे बढ़ के ख़ूबसूरत हो। और वह कौन लड़का है जिसकी दिली ख़ाहिश नहीं कि चाँद-सी जोरू मिले। मगर इसको ख़ूबसूरत की इतनी ख़ाहिश नहीं थी जितनी इस बात की ख़ाहिश थी कि पढ़ा-लिखा, समझदार, तरबियत-याफ़्ता हो, और उसके ख़यालात दक़ियानूसी न हों।

कई जगह से कामिनी के लिये पैग़ाम आए। जब पयाम आता था, तो कामिनी दूर ही दूर से चुपके-चुपके सुनती थी। पहले एक लड़के का पैग़ाम आया। सिन कोई चौदह बरस का। । उर्दू में "मुफ़ीद्उल-इंशा" पढ़ता था। अंग्रेज़ी से कोई बहस नहीं। बाप ज़मींदार, कोई सौ-सवा सौ की माहवारी आमदनी। रात को गजराज सिंह, उनकी बीवी और शिवरानी और इन्द्रबिक्रम सिंह और उनकी बीवी खाना खाने के वक्त आपस में बातें करती थीं; और कामिनी सुना करती थी। जब इस लड़के की निसबत सुना कि चौदह बरस का सिन है और 'मुफ़ीदउल्-इंशा' तक लियाक़त, तो दिल से मनाने लगी कि माँ-बाप को यह घर न पसन्द आए। सबके पहले इन्द्रबिक्रम सिंह ने कहा, कि कामिनी के लिए बीस-बाइस बरस का लड़का होना चाहिए। सब ने इस राय को मान लिया, और कामिनी दिल में बड़ी ख़ुश हुई। दूसरे रोज़ फिर दो जगह से पैग़ाम आया। एक क्षत्री की दो हज़ार की ज़मींदारी। लड़का सोलहवें में। अंग्रेज़ी में मिडिल फेल। उसके यहाँ से पैग़ाम आया। दूसरा पैग़ाम एक और ठाकुर के हाँ से। ग़रीब आदमी, लड़का पचीस बरस का। पुलिस में तीस रुपये का सब-इंस्पेक्टर। लियाक़त नदारद। टूटी-फूटी उर्दू गोद-गाद के लिख लेते थे। कामिनी को दोनों घर नापसन्द, मगर उफ़् नहीं कर सकती थी। जब दो-तीन दिन के बाद उसको मालूम हुआ कि माँ-बाप की मर्ज़ी इस पुलिसवाले से ब्याहने की है, तो दिल में कुढ़ने लगी; एक तो उर्दू अंग्रेज़ी फ़ारसी सब लूटे वीरान, पढ़ा-लिखा नहीं, जाहिल, उजड्ड; दूसरे पुलिस की नौकरी ने और भी उजड्ड कर दिया होगा। इन्द्रबिक्रम और उनकी बीवी दोनों इस पैग़ाम के खिलाफ। तीन-चार दिन तक आपस में रद्दोबदल रही।—

इन्द्र—जनाब, एक तो पचीस-तीस रुपल्ली की औक़ात; दूसरे करिया अच्छर भैंस बराबर। फिर आपने लड़की को इतना पढ़ाया-लिखाया काहे को?

गजराज—ऐसा ख़ान्दान न मिलेगा। और यह जो तुमने कहा, तीस रुपल्ली का नौकर है, यह फ़िज़ूल बात है। क्या हम जागीर नहीं दे सकते? हमारी लड़की परेशान नहीं रह सकती, उनके पास चाहे एक अद्धी भी न हो।

इन्द्र—और जाहिल अनपढ़ गधे के साथ कामिनी की शादी हो जाए? यह दिल में कुढ़ेगी नहीं?

गजराज—इसको यह समझना चाहिए कि हम जो काम करेंगे उसके भले ही के लिए करेंगे। न उसकी इतनी समझ है न तुम्हारी।

कामिनी की यह कैफ़ियत थी कि रोज़-बरोज़ पल्लियों ख़ून उसके बदन से घटता जाता था। दो हफ़्ते तक यही बहस घर में थी। शिवरानी न इधर बोलती थी, न उधर। एक दिन बाप-बेटों में बड़ी देर तक बहस हुई, तो शिवरानी ने इन्द्रबिक्रम सिंह को अलग ले जाकर समझाया कि बड़ों के मुँह लगना बुरी बात है। माना कि पढ़ा-लिखा नहीं है, मगर यह बताओ कि तुम्हारे घर में पढ़े-लिखे कितने हैं? फिर कोई मोहताज है? कोई बेकार है? सब खाते-पीते हैं। कोई ज़मींदार, कोई माफ़ीदार, कोई रिसाले में नौकर। यह लड़का जो पुलिस में नौकर है तो क्या बुरा है? आज तीस पाता है, तो चार दिन में सौ हो जाएँगे, दो सौ पाने लगेगा। तुम्हारे चचा-ससुर तो बारह के हेड कांस्टेबिल से पाँच सौ के डिप्टी हो गए थे, और इसी की बदौलत एक गाँव के मालिक बने बैठे हैं।

ग़रज़ यह कि कामिनी को दो-ढाई महीने में पूरा-पूरा यक़ीन हो गया कि इसी उजड्ड जाहिल के साथ उसको अपनी ज़िन्दगी बसर करनी होगी। इस ग़म ने उसको आज़ार की तरह घुला दिया। बिलकुल घुल के काँटा हो गई। दिन-रात इसी फ़िक्र में डूबी रहती थी कि क्या करूँ, क्या न करूँ। कुछ करते-धरते नहीं बनती थी। बाप-माँ की मर्ज़ी के खिलाफ़ कोई कार्रवाई नहीं हो सकती थी। भाई-भावज खुदमुख़्तार आज़ाद नहीं। मुँह खोल के खुद कुछ कह नहीं सकती। अब सुनिए कि शादी यहाँ तक पक्की हो गई कि सुर्ख़ काग़ज़ पर शादी के रुक़्क़े छपवा लिये गये।

कामिनी का दिल किसी वक्त ठिकाने नहीं रहता था। और सबसे बढ़कर ज़ुल्म इस बेचारी पर यह ढाया गया कि शिवरानी के छोटे देवर ने जो सिन् में नौ-दस बरस का था, एक रुक़्क़ा लाके कामिनी को दिया, कि ज़रा पढ़ के हमको सुना तो दो। कामिनी ने जो रुक्का देखा—तो रुक़्क़ा-ए-शादी! अभी तक यह नहीं समझी कि यह क्या मामला है। पढ़ा तो टप-टप आँसू निकल पड़े। वह लड़का समझा कि अपनी शादी का हाल सुनकर मारे ख़ुशी के हँसी को ज़ब्त न कर सकी। बच्चा तो था ही और सिखला-पढ़ा के भेजा गया था, दौड़ता हुआ चला और सबमें ढँढोरा पीट आया कि कामिनी बहन अपने ब्याह का हाल पढ़के हँस दीं! महरी की लड़की, बूढ़ी बारन की पोती, और दो-एक बराबरवालियाँ गयीं कि जाके कामिनी को दिल्लगी-दिल्लगी में बताएँ। वहाँ जाके देखते हैं तो कुछ और ही गुल खिला हुआ है।

—"अरे! बिटिया! अरे, यह तो रो रही है!" कामिनी ने फ़ौरन ज़ब्त किया, और जब तक कोई और आवे, जल्दी से मुँह धो डाला। शिवरानी ने आके कहा—कुछ बावली हो गई है लड़की? रोना दुश्मन को पड़े। हँसी-खुशी की बातों में रोना क्या? अब कामिनी बेचारी किससे कहे, कि जिसको तुम हँसी समझती हो, वह उसकी मौत है।

रात भर कामिनी तड़पा की: हाय, मुझे ये लोग कहाँ झोंके देते हैं! एक अठवारे के अन्दर इधर-उधर से मुबारकबाद के खत आये। बस इस खत का आना था कि कामिनी के दिल पर और भी सदमा पहुँचा कि बिलकुल सिड़न हो गई। बुत बनी हुई; साड़ी सर से खिसक गई तो इसकी भी परवा नहीं, और कुर्ती मैली हो गई तो इसकी भी फ़िक्र नहीं। कुछ कानों से भी कम सुनने लगी! दस दफ़ा बातें करो तो शायद दो दफ़ा जवाब दे, और वह भी ऊल-जलूल।

एक महीने तक यही हाल रहा। कैसी शादी और किसका ब्याह:—जिन-जिनके पास शादी के रुक्के भेजे गए थे, उन सबको लिख भेजा गया कि कन्या के बीमार हो जाने के सबब से शादी मुल्तवी की गई।

कामिनी की तबीअत रोज़-ब-रोज़ खराब होती गई। डाक्टर, हकीम, वैद्य सब हार गये; थक गये; आजिज़ आ गये। सबने जवाब दे दिया। होम्योपैथिक इलाज से भी फायदा न हुआ। दिन-रात या तो रोया करती थी, या चुप। रोना शुरू किया तो बराबर रोती गई; और चुप्पी साधी तो होंठ तक नहीं हिलाती। घर भर परेशान। खाना-पीना हराम। दवा और दुआ किसी से भी आराम न हुआ।

आखिरकार हकीमों की सलाह से कामिनी को देहात में ले गये, और हर तरह से दिल बहलाना शुरू किया। इस बात की बड़ी कोशिश की कि बाहर-वालों को कानों-कान खबर न हो। ऐसा न हो कि सिड़न समझकर कोई ब्याह न ले जाए। सबको अफ़सोस था कि कैसी परी लड़की और कैसी पढ़ी-लिखी और क्या हाल हो गया।

इधर गजराज सिंह के घर में तो एक तरह का मातम-सा छाया हुआ था: लड़की जीती-जागती और घर भर में रोना कि हाय, चाँद-सी लड़की और यह हाल। घुल के काँटा हो गई थी।—मगर ठाकुरों में किसी को इस हाल की खबर नहीं। वहाँ कामिनी के ब्याहने की फिक्रें हो रही हैं। सब इसी पर लट्टू।

—:०:—

चौथा अध्याय

कामिनी की दिलरुबा अदा पर एक गबरू बिन देखे ही शैदा

ठाकुरों में घर-घर यही चर्चा था कि गजराजसिंह क्षत्री के यहाँ देवी पैदा हुई है। जिस औरत ने कामिनी को देखा, बस यही जी चाहा कि उसके पाँव धो-धो के पिये। हम एक बड़े खान्दानी ठाकुर के ज़नानखाने में जो बातें कामिनी को लेकर हुईं, नाज़रीन की नज़र करते हैं:—

धन्नो ठकुराइन इस ठाकुर की बड़ी बहू का नाम है।

दुलारी (दाई)— बीबी, अच्छी रहीं? हम तो कल आने को थे, मगर हमारा दामाद कम्पू से आ गया; फिर न आ सकी। और कहो ख़ैरियत?

धन्नो—इस वक्त कहाँ से आती हो, बुआ दुलारी?

दुलारी—पकड़िया टोले से आती हूँ। ठाकुर गजराजसिंह के घर गई थी। बहुत दिन बाद गई थी। पुरानी सरकार है। आजकल घर-भर गाँव पर है। लड़का यहाँ है।

धन्नो—भला तुमने उनकी लड़की कामिनी को देखा है, वह जो सबसे छोटी है।

दुलारी—ए बीबी, जनाया किसने? मेम तो पीछे आई थी।

धन्नो—सुना कि बड़ी ख़ूबसूरत, लाखों में एक है। मगर कहते हैं ज़रा उम्र में बड़ी है।

दुलारी—ए बीबी, अभी बच्चा है। हिन्दू की कुँआरी लड़की की उम्र क्या होगी? उठती जवानी, उभार के दिन। एक दिन नहा के, खली से सर धोके, शरबती की आधी बाहों की कुर्ती फाल्साई पहने, मलमल का प्याजी दोपट्टा ओढ़े, तारों की खड़ाऊँ में, पुरी की बनी हुई सोने की नथनी, जिसमें एक चुन्नी, एक मोती पड़ा था, पहने, ज़नाने ग़ुसलखाने से बाहर निकली तो मालूम हुआ कि इन्दर के अखाड़े से कोई अप्सरा उतर आई। मुखड़ा जैसे चन्द्रमा। चन्द्रमा। छरेरा बदन। लाँबा क़द। और बड़ी शर्मीली लड़की है। एकाएकी औरतों की तरफ़ भी आँख उठा के नहीं देखती। मैं कई बरस के बाद गई तो पहले-पहल नहीं पहचाना। ज़रा झिझकी, समझी कि कोई ग़ैर है। तब उनकी बड़ी बहन ने कहा—ए इनसे क्या पर्दा है: ये तो ज़ैनब की माँ हैं। अभी से भूल गईं? मुस्कराकर आके पलंग पर बैठी। मैंने कहा—बेटा, अपनों ही को भूली जाती हो? मैं ज़ैनब की माँ हूँ। तुमको, तुम्हारी बहन को, तुम्हारी ख़ाला की बेटियों को गोदियों खिलाया, नेहालचे धोए, हैं।

उनकी माँ बोलीं, दुलारी, सयानी लड़की को शर्म ज़रूर चाहिए।

मैंने कहा—ओई! ऐ तो हमही से शर्म!

मेम ने पढ़ाया है, कई इलिम जानती है। सीने-परोने में बर्क़ है। खाना खूब पकाती है। उसके हाथ का हलुआ हमने खाया: पिस्ते की हवाई पड़ी हुई; अल्लाह जानता है, ऐसा हलुआ कभी नहीं खाया था।

धन्नो—भला कितनी बड़ी होगी? हमारी बिन्नो के बराबर है?

दुलारी—ऐ बीबी, उनसे माशाअल्ला सियानी है। और जौ-भर कद निकलता ही होगा। आँखें देखने से ताल्लुक़ रखती हैं। बिलकुल हिरनी की-सी। पुतली काली भौंरा।

धन्नो—महरी, तुम भी तो उनके यहाँ रह चुकी हो। तुम उस लड़की को कैसा समझती हो? दुलारी तो बड़ी तारीफ़ें करती हैं।

महरी—दुलारी सच कहती हैं। जस मन्सेधू की येह मेहरारू हों, उसके जानो भाग खुल गए। और बड़ी सोधी लड़की है। हम पंच से कभी टेढ़ी बात नहीं की। उनकी माँ बड़ी लड़ाका है। मगर यह बेचारी किसी को आधी बात नहीं कहती। और शकल-सूरत तो ऐसी पाई है कि लाख-दो लाख में न होगी। और कैसी जल्द यह लड़की देखते ही देखते बढ़ी है, कि मैं क्या कहूँ। अभी कल की बात है कि तुलसिया के बराबर थी। अब—जीती रहें—ऐसा डील बढ़ा है कि मुझसे निकलती ही होंगी।

धन्नो—लड़की की बाढ़ और ककड़ी की बाढ़ एक होती है। आज नखून के बराबर तो दो दिन में ताड़।

इतने में बारन आई। धन्नो बीबी ने पूछा—कहाँ से आती हो बुआ?

इसने कहा—पकड़िया टोला से आवत हौं। पड़ाइन दादी के साथ गई हती।

धन्नो ने कहा—पकड़िया टोले में ठाकुर गजराज सिंह की औरतों को जानती हो?

वह बोली—ठाकुर गजराज सिंह तो हमारे जजमान हैं। उनकी एक बिटिया कुआरी सयानी है। उसकी बातें हो रही हैं। दोनों बहिनें सूरज-चन्द्रमा हैं। छुटिकी सबसे सुन्दर है। नगर भर माँ ऐसी लड़की नहीं।

ज़ैनब की माँ ने कहा—और नाम भी चुन-चुन के रखे हैं। बड़की का नाम पद्मिनी। छुटिकी का नाम, कामिनी। दोनों सचमुच की पद्मिनी और कामिनी हैं। चाँद सूरज की जोड़ी।

महरी—हैं तो दोनों की अच्छी सूरतें; मुदा हमको छुटिकी बहुत अच्छी लगती है। हाथ, पाँव, डील-डौल, आँख-ओ-नाक, शकल-सूरत—एक अच्छी, और एक बहुत अच्छी। छरेरा बदन और गोरे-गोरे गाल।

धन्नो—हमने भी बड़ी तारीफ सुनी है। हमारे नैयर में आयें तो जानें।

ज़ैनब की माँ—कौन बड़ी बात है! जो वो, वो आप। ठाकुर गजराज सिंह

के पास गाँव-गिराँव हैं तो क्या, तुम्हारे पास किसी बात की कमी है? अल्ला का दिया सब कुछ है। बइल है, छकड़े हैं, लढ़ियाँ हैं, घोड़ा हैं, जैदात है, गाँव है, बाग हैं। नानकार है। और फिर सबसे बड़ी देन अल्ला की ये है कि लड़के सब होनहार हैं। माँ-बाप के कहे में, और होशियार। आज-कल के लड़कों के-से नहीं।

धन्नो—मैंने इस लड़की को बचपन में देखा था। पहले तो मुझे धोखा हुआ कि किसी मेम की लड़की है। फिर सुना हमारे ठाकुरों की लड़की है। अब जो आता है, वह दो बातें बढ़ा ही के कहता है। कोई जतन ऐसा करो कि यह लड़की जाने न पाए। जब से सयानी हुई, तबसे हमने नहीं देखी।

महरी ने कहा—देखो कहाँ से? कहुरिया नशने तक को तो दरिया जाने नहीं पावत है। बस चारदिवाली माँ बन्द। कोउ देखै तो कहाँ से देखै?

जैनब की माँ बोली—ये महरी की बहुरिया हैं और हमारी बिटिया।

धन्नो ने कहा—हाँ, तो महरी को हमारे नहर से कौन मतलब है। इसने तो हमको सुसराल ही में देखा है। भला यह तो बताओ, सरजू की दुलहन अच्छी है कि कामिनी? सरजू की दुल्हन भी गोरी-चिट्टी है।

जैनब की माँ—ऐ बेटी, खुदा-खुदा करो! सरजू की दुल्हन उसके पासंग को नहीं पहुँचती। कहा ना कि लाख-दो लाख में एक है। पतली कमर सचमुच बल खाती है। बाल भँवरे के-से, कमर के नीचे तक लहराते हुए, लटकते हैं। जो नवाबी होती, बीबी, और वजीर-बादशाहों की नजर पड़ती, तो जबर-दस्ती छीन ले जाते। खून-खराबा होता। पद्मिनी-कामिनी दोनों बादशाह के महल में होतीं। बस, सूरत देखते ही जैसे एक प्यार-सा हो जाता है। इस देस में तो ऐसी लड़की नहीं है।

महरी बोली—जो अच्छे घर जाए तो बात है। ऐसी लड़की अच्छे घर जानी चाहिए। अच्छा लड़का हो, कमाता-धमाता हो। कुन्दिया के मर्द का-सा न हो, दाढ़ीजार। रोटी का न कपड़े का, सेत-मेत का भर्रा।

धन्नो—भाट को उनके घर भेजें। देखें क्या संदेसा लाता है।

जैनब की माँ—मैं कहने ही को थी। बात तुम मेरे मुँह से छीन ले गईं। लड़की तो ऐसी है कि अँधेरी रात को अँधेरी कोठरी में बिठाओ तो मालूम हो हीरा चमक रहा है। गजराज सिंह एक दिन कहने लगे कि हम लोग लड़-कियों को मार डालते हैं; मगर इन दोनों को कोई फूल की छड़ी से भी छुए तो मूड़ काट के फेंक दूँ। लड़के का इतना प्यार न होता होगा जितना उनको इन लड़कियों का है। और हुआ ही चाहे।

ये बातें ठाकुर बलजोर सिंह के मकान पर हो ही रही थीं: धन्नो ठकुराइन उनकी बड़ी बहू थी, रनबीर सिंह की भावज। धन्नो ठकुराइन के देवर रनबीर

सिंह की निसबत सब वाक़िफ़ हैं कि बहुत ही ख़ूबसूरत नौजवान था : हाथ-पाँव सुडौल, डँड़-मुगदर का शौक़; कुश्ती बड़ी बाँकी लड़ता था। लकड़ी फेंकने के वक्त ऐसे अच्छे तेवर रहते थे कि जो देखता था अश-अश् करता था। तलवार और ढाल से लकड़ी के करतब इस सफाई से दिखाता था कि गोया फूल की छड़ी हाथ में है। तीन-चार आदमी अगर नंगी तलवारें लेकर इससे लड़ते, तो यह सिर्फ गतके से आन की चोटें फुर्ती से बचाता, और अपनी चोटें लगाता। गोलचस ऐसा ज़बरदस्त कि निशाना कभी ख़ता ही नहीं करता था। जिसे ताका, उसे मारा। शेर का शिकार पाठे पर सवार होके करता था। बेधड़क सूअर के शिकार में जान पर खेल जाने को तैयार। घोड़े पर ऐसा सवार होता था कि अच्छे-अच्छे शहसवार पिचकते थे। घुड़दौड़ की बाजियाँ जीत चुका था। इससे यह न समझिएगा कि उजड्ड सिपाही ही था। नहीं, नहीं, पढ़ा-लिखा आदमी था। नागरी, फारसी, अँग्रेज़ी में अच्छी महारत और लियाक़त थी। दिन-रात सिवाय पढ़ने-लिखने या सिपाहगिरी के शौक के और कोई शग़ल न था। यह होन-हार लड़का अपने माँ-बाप के पुतलियों का तारा, घर-भर में सबसे प्यारा था।

अब सुनिए कि जिस वक़्त इसकी जेठानी धन्नो रानी महरी और बारन और ज़ैनब से इस प्यारी लड़की की बातें करती थी यह सब सुन रहा था, और उस परी-रू कुँआरी की उठती जवानी और जोबन और शर्मीलेपन और नज़ाकत का ज़िक्र सुनकर हज़ार जान से आशिक हो गया। सोचा कि भाई की बीवी को हमारा ज़रा ख़याल नहीं। अपने भाई के ब्याह का बड़ा ख़याल है। ज़ब कहा, यही कहा कि वह लड़की किसी जतन से हमारे नैहर में आये। भावज की इतनी ख़ाहिश, और देवरानी के आने का ज़रा भी ख़याल नहीं। दालान के बाहर आन के कहा—

भाभी, यह किस लड़की की बातें हो रही थीं, कि नाज़ुक-बदन है, और छरेरी है, और अँधेरी रात में बिठा दो तो मालूम हो जैसे हीरा चमक रहा है। वह कौन परिस्तान की परी है, इन्दर की अखाड़े की अप्सरा। शायद आजकल भाई साहब ने तुमको छुट्टी दे दी है; मेहनत का कोई काम नहीं लिया जाता। जभी यह दूर की सूझती है। अपने भाई का तो इतना ख़याल, कि महरी से सिफ़ारिश उठाई जाती है, ज़ैनब की माँ से सलाह-मश्विरे होते हैं, बारिन से सलाह ली जाती है कि वह प्यारी लड़की हमारे नैहर में आवे; और यह ख़याल ही नहीं कि हम भी कुँआरे हैं। अच्छा इस लड़की ही की राय पर रखो। हम दोनों जा के सामने खड़े हों ; जैसे अगले ज़माने में स्वयम्बर होता था। जिसको पसन्द करे, उसके साथ भँवरी फेरी जाय। भला ऐसे ख़ूब-सूरत जवान के होते-साथी तुम्हारे भाई को काहे को पसन्द करने लगी। हमारा सीना चौड़ा ; उसकी कमर अभी से दुहरी हो गई है।

इसकी भावज ने हँस के कहा—बड़े सुन्दर बन के आये हैं। अपने मुँह मियाँ मिट्ठू। और जो कहीं सूरत अच्छी होती, तो धरती पर क़दम ही न रखते। और भी इतरा चलते।

देवर ने जवाब दिया—भाभी, अच्छी-बुरी सूरत का हाल तो तुम ही अपने दिल से पूछो। अगर भाई के साथ शादी न हुई होती और कोई हमको दिखा देता तो पानी मुँह में भर आता; जादू-टोना करतीं; सैकड़ों मिन्नतें मानतीं, कि परमेश्वर करे, इस गोरे-गोरे लड़के के साथ हमारी भँवरी फेरी जाय!

भावज ने कहा—घर की पिड़की और बासी साग। ज़री जाके मुंह धो आओ। गोरा-गोरा लड़का, अपने नगीच बड़े गोरे हैं! कोई औरत पूछती तो है ही नहीं—चलो, अब अपने मुँह मिया मिट्ठू बनने से भी गये-गुज़रे? शर्म नहीं आती? बिज्जू की-सी ज़रा-ज़रा-सी आँखें, कछुवे की-सी गर्दन; उस पर इतना घमंड!

गो यह लड़का निहायत हसीन था, नक-सिख से दुरुस्त, हर बात में चालाक-औ-चुस्त; जवान औरतें वाक़ई दिल में कहतीं कि क्या अच्छा गबरू है। मगर बेऐब खुदा की जात है। मोर की सब तारीफ करते हैं—हीरे-नीलम के-से पंख होते हैं, मगर पाँओं को देखो तो नफ़रत होने लगे! इस लड़के में एक ज़रा-सा ऐब यह था कि आँखें छोटी थीं, और हँसने के वक्त ज़रा-ज़रा बन्द हो जाती थीं। भावज के इस फ़िकरे पर कि बिज्जू की-सी आँखें हैं, बड़ा क़हक़हा पड़ा, और जितनी बैठी थीं सब हँस पड़ीं। और रनबीर सिंह साहब बहुत झेंपे। झेंपकर मुस्कराते हुए बाहर आए। और कपड़े पहनकर अपने एक दोस्त ठाकुर बलभद्र सिंह के मकान पर गये।

रन—अरे यार आज कलेजे पर साँप लोट रहे हैं। वल्लाह बुरा हाल है।

बलभद्र—क्यों, खैर तो? बुरा हो दुश्मनों का, आखिर बुरा हाल क्यों है?

रन—भाई कुछ इश्क और हुस्न का झगड़ा है।

बलभद्र—वाह-वा! बहुत अच्छी शुरुआत है। इस कूचे में हुज़ूर का गुज़र हुआ। खैर, मुबारक है। यह नई बात सुनने में आई। तुमको लड़न्त और लकड़ी और डँड़ और पढ़ने-लिखने से क्योंकर फ़ुर्सत मिली, कि इश्क के कूचे में क़दम रखा। मालूम होता है किसी परिया ने घायल कर दिया। बुरे फँसे, भाई साहब!

रन—फिर अब तो जो हुआ सो हुआ; इश्क के मरज़ ने धर दबोचा।

बलभद्र—यह बताओ कि दर्द ला-दवा है, या इलाज हो सकता है? घर-गिरस्त है, या बाज़ारी औरत है? ब्याही है कि कुँआरी? किस क़ौम की है? तुमने कहाँ देखी?

रन—तारीफ सुनी है। देखी-भाली नहीं। मगर सुनते ही दिल हाथ से जाता रहा। कुँआरी है, और हमारे-आपके क़ौम की। और सयानी और नेक है; जैसे भलेमानुसों की बहू-बेटियाँ होती हैं। तुमसे सलाह लेने आए हैं।

बलभद्र—अब साफ़-साफ़ कह चलो। मगर एक बात का ख़याल रखिएगा कि इधर-उधर बकते न फिरियेगा? हाँ अब खुल पड़ो।

रनबीर सिंह से कुल माजरा सुनकर बलभद्र ने कहा—अजी, एक तस्वीर हम तुमको दिखाएँ, भूख-प्यास बन्द हो जाए। यह भी कुँआरी लड़की है। मगर वह सूरत पाई है कि शायद दो-तीन हज़ार कोस के गिर्द में कोई उसको पहुँच सके। मज़ा आ जाएगा। ज़रा सँभलते हुए! (तस्वीर दिखाकर) न कहिएगा!

ठंडी साँस भरके रनबीर सिंह ने कहा—यार, यह मस्नुई तस्वीर है। ऐसी सूरत इन्सान की कहाँ होती है – अगर ऐसी औरत सचमुच होगी तो हज़ारों को क़त्ल कर डाले। और एक बड़ा लुत्फ़ यह है कि हया और शोख़ी दोनों मौजूद हैं। यह बात करोड़ों औरतों में दो-एक को हासिल होती है—सादगी के साथ बाँकपन—बहुत मुश्किल है।

बलभद्र सिंह ने कहा—बन्दानेवाज़, यह मस्नुई नहीं है। इसी शहर में मौजूद है। मैंने तो कहा ही था, कि देखते ही भूख-प्यास बन्द हो जाएगी। (सर पर हाथ रखकर) इस सर की क़सम यह एक कुँआरी लड़की की तस्वीर है, और बड़े शरीफ़ ख़ान्दान की है।

इतने में ठाकुर गुमान सिंह तहसीलदार आये। उनको रनबीर ने तस्वीर दिखाई, और कहा—है अस्ल परी, या नहीं?

तहसीलदार ने तस्वीर देखकर कहा—कामिनी, पद्मिनी की बहन। गजराज सिंह की लड़की।

यह सुनते ही रनबीर सिंह के चेहरे की रंगत बदल गई; और दिल में सोचा कि वाह, यह तो कामिनी ही निकली! घर बैठे भगवान ने सूरत दिखाई। अच्छी सायत है। और नेक शगुन है।

गुमान सिंह ने कहा—हमने इस लड़की को कोई दस बरस हुए जब देखा था। तब क़द इतना न था। लड़की जल्द बढ़ती हैं। मगर सच यों है कि ख़ुदा ने अपने हाथ से बनाई है। चकोर और हिरन में यह छल-बल कहाँ? इसको हुए भी दो बरस। यह थोड़ा ज़माना नहीं होता। अब तो कुँआरपने के सबब से बेगानों-परायों से छिपती और पर्दा करती होगी। क्या कहते हैं, अब तो सयानी हुई; क़द बाढ़ पर आया है। जब में और अब में बड़ा फ़र्क़ है। लड़की बाँस की तरह बढ़ती है। अब तो इसकी शादी की फ़िक्र करनी चाहिए।—ख़ूब याद आया। अरे मियाँ रनबीर सिंह, तुम यार क्यों नहीं डोरे डालते? वल्लाह, चूकते हो; बहुत चूकते हो! ऐसी परी दूसरी न मिलेगी; हूर है। किसी बड़े ख़ुश-नसीब के हाथ आएगी। ख़ुदा जाने, ख़ुद भी ख़ुशनसीब है, या नहीं। अगर अच्छे लड़के से ब्याह हुआ तो ख़ुशनसीब है, वर्ना बदक़िस्मत, बदनसीब। भाई, गप्पा ज़रूर लड़ाओ! क्योंजी बलभद्र सिंह?

वह बोले—तुमने तो यार भरभंडा ही फोड़ दिया। जाओ भी! ये बड़ी देर से कामिनी की तारीफ कर रहे थे। किसी की जबानी तारीफ़ सुनी थी। बस लट्टू थे। मैंने यह तस्वीर दिखाई। ग़ौर से देखकर कहा, भई यह फ़र्ज़ी तस्वीर है। ऐसी सचमुच की सूरत हो तो हज़ारों क़त्ल हो जायँ। मैंने उनके सर की क़सम खाई कि यह फ़र्ज़ी नहीं है।—तुमने आन के भर-भंडा ही फोड़ दिया। (रनबीर सिंह की तरफ़ घूमकर) कहिए, भाई साहब, क्या नक्शे हैं? जाइए अब आपका जोड़ी हिलाने का वक्त आया। कुछ पढ़िए-लिखिए। आपको इस आशिकी और माशूकी की बातों से क्या सरोकार है?

उन्होंने कहा—भई इश्क-विश्क तो हम जानते नहीं, हम तो शादी-ब्याह का ज़िक्र करते हैं। आखिर हम शादी करेंगे या नहीं?

गुमान सिंह ने क़हक़हा लगाकर कहा—अरे क्यों, तुम जाके लँगोटा बाँध के कुश्ती लड़ो, लेज़म हिलाओ या किताब के कीड़े बनो। शादी किसके लिये करोगे, मोहल्लेवालों के लिए?

रनबीर सिंह ने कहा—अब कोई अच्छी सलाह दो; फिर दिल्लगी कर लेना। हमारी तो जान जाती है। यह मालूम ही न था कि एक परी इस शहर में रहती है—जिस क़दर तारीफ़ सुनी थी, उससे बढ़के पाया। तस्वीर से शोख़ी और बाँकपन और सादगी दोनो ज़ाहिर हैं। घर में औरतों ने जो आपस में बातें की, और सबने तारीफ़ों के पुल बाँध दिये, तो मुझे शौक़ चर्राया कि भई सुनूँ तो यह किस कोहकाफ की परी का ज़िक्र है। कान धर के सुना किया; और बिन देखे इश्क की आग दिलमें भड़कने लगी। अब तस्वीर भी देख ली। सिर्फ आप दोस्तों की सलाह की ज़रूरत है। कोई सूरत ऐसी निकालिए, कि निशाने पर तीर पहुँच जाए।

गुमान सिंह ने जवाब दिया—बन्दानेवाज, निशाने के खता होने की तो कोई वजह नहीं मालूम होती है। जो बातें लड़कीवाले देखते और चाहते हैं, वह सब तुममें मौजूद हैं। कमसिन, पढ़े-लिखे, होनहार। कोई ऐब नहीं। नक-सिख से दुरुस्त। करारे हाथ-पाँव। कसरती आदमी। जिस्म सुडौल। न मोटे भदभद, न दुबले-पतले गले-हपने। न थुलथुल भद्दे कि दो क़दम चले और हाँप गये, न मुर्दा शल, कि फूँक मारी, उड़ गये। ख़ूबसूरत आदमी—नोक के जवान हो। खासे अच्छे गबरू। मसें भीगती हैं। औरत से कोई सरोकार नहीं। बुरी सोहबत से नफ़रत। कोई जिस्मी ऐब नहीं। वरजिश का शौक। सिपाही आदमी। नशेबाज नहीं। फिर जागीर खाने भर का सहारा। कोई बीस-बाइस हज़ार रुपया साल की गाँव की आमदनी; और नक़द रुपया, ज़ेवर, मकानात, बाग़, नौकर-चाकर, सवारी-शिकारी। इसके अलावा ख़ान्दान कैसा नामी। बाप-दादा आली ख़ान्दान; नाना-नानी आली-ख़ान्दान। सबब क्या जो उनके माँ-बाप इनकार

करें। और भई अगर वह छोकरी तुमको एक नजर देख ले तो, वल्लाह, बेह-याई करके अपनी माँ से कहे कि मुझे यही गबरू पसन्द है।

बलभद्र सिंह की राय इस राय से नहीं मिली; कहा—इनके हसीन और कमसिन होने में कोई शक नहीं। मगर इसके क्या मानी कि जो औरत देखे एक दफे लिपट जानेको ज़रूर जी चाहे। ऐंसी औरत को गोली मार देना धर्म है। भुट्टा-सा सर काट ले—

रनबीर सिंह और गुमान सिंह दोनों इस बात पर खिलखिलाकर हँस पड़े। कहा—यार, राजपूत की रग ने जोश किया। आ गये छत्रीपने पर। लगे सर काटने। अरे भाई, यह जवानी और जोश और हुस्न अजीब चीज़ है। इसको कोई रोक नहीं सकता।

—:०:—

पाँचवाँ अध्याय

ब्याह का संदेसा

अब कामिनी का हाल सुनिए कि देहात की आबोहवा और खुले हुए मैदान में रहने से ज़रा-ज़रा फ़ायदा हुआ। दिल को तफ़रीह देनेवाली चीज़ें—मुरब्बे, अर्क़, सोने-चाँदी के वरक़। बर्फ़-शोरा बहुत-सा मँगवा लिया जाता था। दो महीने देहात में रहने से कामिनी की तबीयत ज़रा-ज़रा सँभल चली। सूरत से तो वही वहशत बरसती थी, मगर गालों के रंग का पीलापन अब सुर्ख़ी-सफ़ेदी से बदल गया था। भूख भी मालूम होती थी ; बातें भी करती थी। अच्छे-बुरे की समझ भी थी, अपने-पराये को पहचानती थी।

दो महीने के बाद एक रोज़ घरू महरी और कामिनी घर के एक बड़े बाग़ में जो बड़ी फ़िज़ा की जगह थी, रविशों में चहल क़दमी कर रही थीं, तो कामिनी ने एक ठंडी साँस भरी। घरू ने देखा तो यह कोई मामूली साँस न थी। ताड़ गई कि इस तरह से जो बेकसी के साथ उसने ठंडी साँस ली, उसका कोई सबब ज़रूर है। जी कड़ा करके जो कुछ पूछना था, वह पूछ ही बैठी।

घरू—बीबी, एक बात पूछूँ, जो बताओ।

कामिनी—(घबराई-सी) हाँ पूछो। (फ़िर एक साँस भरके) उफ्!

घरू—बस यही पूछती हूँ कि इसका क्या सबब है, यह ठंडी-ठंडी साँसें क्यों भर रही हो?

कामिनी ने फिर ठंडी साँस भरी, मगर अबकी ज़रा दबाके। घरू ने कुछ समझकर उस वक्त बात टाल दी और थोड़ी देर के बाद कहा—यहाँ की-सी बहार और लुत्फ़ और यह हवा शहर में कहाँ।

कामिनी ने कुछ जवाब न दिया।

फिर घरू ने छेड़कर बात की। अबकी पूछा—फूलों में कौन अच्छा है? हमको तो गुलाब का फूल पसन्द है।

कामिनी ने इसका भी कुछ जवाब न दिया। फिर घरू ने पूछा—बीवी, शरबत पियो तो ले आऊँ।

इसका जवाब भी नदारद। अब घरू जान-बूझ के बाग़ से जाने लगी। जब दूर निकल गई और कामिनी अकेली रह गई तो उसने घरू को पुकारा। घरू ने खड़े होकर कहा—क्यों? पूछा—कहाँ जाती है?

घरू—यहाँ क्या करूँ? तुम तो बीवी बुत बनी हुई हो। बात करो, तो जवाब नहीं देतीं। मैं यहाँ बातें किससे करूँ? दीवारों से?

कामिनी—यहाँ आओ।

घरू—बड़ी बात। बोलीं तो। बीबी हमको इतना तो बता दो कि यह सबब क्या है—क्यों ठंडी साँसें भरती हो?

कामिनी—क्या बताऊँ?

घरू—यह क्या हुआ?

कामिनी—तकदीर का फेर (ठंडी साँस भरकर) और क्या बताऊँ कि क्या हुआ। दिनों की गर्दिश। और क्या हुआ।

घरू—यह क्या बात है? राम ने सब कुछ दिया है। खाने को, पीने को पहनने को ओढ़ने को। रुपया-पैसा, दौलत, सवारी-शिकारी, चैन-सुख, आराम, धन-औलाद, नाम, चाँदी-सोना, गहना। कमी काहे की है। फिर ये साँसें कैसी?

कामिनी—अरी घरू, मैं बताऊँ?

घरू—सुन्दर ब्याह होने को था, वह भी रोक दिया गया।

बस इतना कहना था कि कामिनी फूट-फूट के रोने लगी, और ज़ोर से रोई कि एक दफा तो दूर तक आवाज़ गई; और शिवरानी और एक ब्राह्मणी चौकन्ना हुईं कि यह रोने की आवाज कहाँ से आई। आवाज पूरब से आई थी, मगर उनको मालूम हुआ, पश्चिम की जानिब कोई रो रहा था। एक छोकरी से कहा, जाके देख तो कौन रो रहा है। इतने में रोने की आवाज बन्द हुई; और उसने आके कहा, यहाँ कोई नहीं रोता। उधर रोने को तो कामिनी रोई और रोना ज़ब्त न कर सकी, मगर फिर सोचा कि ऐसा न हो कि घर तक आवाज़ जाए; ज़रा-ज़रा ज़ब्त किया।

घरू ने तालाब पर ले जाकर मुँह धुलवाया और कहा—बीवी, अब हमको

तो तुमसे डर मालूम होता है। मैंने तो कोई बात ऐसी कही ही नहीं और तुम बेवजह बेसबब रोने लगीं। यह भी कोई बात है?

अब कामिनी खुली। कहा—ब्याह का नाम क्यों लिया? (रोकर) अरी नासमझ, भला मूरख बिन-पढ़े मर्द से मेरा ब्याह हो तो रोने की बात है या नहीं। मैं तो मर जाना इससे अच्छा समझती हूँ। हाय, यह मेरे माँ-बाप को क्या हो गया।

यह बात सुनकर घरू ताड़ गई। बात टाल दी। रात को अकेले में शिवरानी से सब हाल कहा। वह रोने की आवाज़ सुन ही चुकी थी, अब उसकी समझ में आ गया कि कामिनी की इस बीमारी का क्या सबब है। मालूम हुआ कि जिस पुलिसवाले के साथ बात ठहरी वह जाहिल अनपढ़ होने के सबब से उसको पसन्द नहीं है। लड़की है पढ़ी-लिखी, और पढ़ी-लिखी भी ऐसी कि शहर भर में कोई उसके पासंग को नहीं पहुँचती। गजराज सिंह और उनकी बीवी और घर की औरतों ने सलाह की और सबने एक राय से कहा कि बेशक यही वजह है।

दूसरे दिन से कामिनी के सामने कहना शुरू किया कि दो सँदेसे आज आये हैं; एक लड़का बी. ए. है, अभी पास किया है, कोई बाईसवाँ साल है; और दूसरा लड़का एम. ए. है; आजकल अवध में मुंसिफ है। रोज इसी तरह की बातें कीं, तो कामिनी की तबीयत धीरे-धीरे असली हालत पर आ गई। घरू रोज पूछती थी कि कहो बीबी, अब तो अच्छे अच्छे पैग़ाम आने लगे, और कामिनी हँसकर खुश हो-होकर कहती थी, कि हाँ अब जान में जान आई। इसके एक महीने बाद गाँव से फिर शहर में आये; कामिनी ख़ासी भली-चंगी, तनदुरुस्त।

एक रोज़ दोपहर के वक्त खाना खाकर कामिनी के बाप ठाकुर गजराज सिंह ने घर में आकर अपनी बीवी से कहा, कि कामिनी के लिये आज कहाँ से पैग़ाम आया है? हमने घरू महरी की जबानी सुना कि कोई आज पैगाम लेके आई थी।

उनकी बीवी ने कहा, हाँ एक औरत जैनब की माँ को लेकर आई थी। शिवरानी को समझा दो कि लड़ न पड़ा करें। जिसके घर में बेरी होगी, वहाँ ढीले आयें ही गे। इसमें कौन ऐब है?

गजराज सिंह ने शिवरानी, अपनी भतीजी, को समझाया — बेटी, इसमें लड़ पड़ने और बुरा मानने की कौन बात है? यह तो दुनिया-संसार के कारखाने हैं। ऐसी ही होती आई है और ऐसी ही होती रहेगी। बक़ौल तुम्हारी चची के, जहाँ बेरी होगी, जरूर ढीले वहाँ आयेंगे। अब वह जहालत का ज़माना नहीं जब हम क्षत्री लोग लड़कियों को मार डालते थे। हमारे क्षत्रीपने का ज़ोर तो

कम हो गया, मगर शिवरानी का ठकुराइनपना अभी वैसा ही है। उस औरत ने ज़रूर बुरा माना होगा।

इतने में घरू ने आन कहा—ठकुराइन, वह लड़का इधर से जात रहैं, तौन तहसीलदार होइ कै, वह जौन हियाँ आये हैं, ओइ हमका देखकर कहेन कि 'यह तुम्हारे सुसराल की कहारन है।'—हमका बड़ी हँसी छूटी।

शिवरानी बोली—देखो तो इन शोहदों की बातें! अभी सूत न कपास और कोरी से लट्ठम-लट्ठा। बात चीत भी अच्छी तरह नहीं हुई, और सुसराल कहने लगे। इन्हीं बातों से तो मैं जलती हूँ। बस, पराई कन्या को गाली देना क्या बात है? जब बात पक्की-पोढ़ी हो जाय, तब भी एकाएकी मुँह से न निकालना चाहिए। न यह, कि अभी ठौर न ठिकाना, और राह चलते हुए बीच में छेड़ने लगे। क्या किसी को लड़की यहाँ भारू पड़ी है? या एक उन्हीं का घर है? कोई और लड़का हमें न जुड़ेगा? इतना मुल्क पड़ा है! एक-से एक बढ़ के ठाकुर हैं।

गजराज सिंह ने घरू को समझाया कि ऐसी बातें शिवरानी से उनके सामने न कहा करो। यह नाक पर मक्खी नहीं बैठने देती हैं। जरा-सी बात का बतंगड़ बना दिया। पहले तो उनकी बेवकूफी; अभी बात न चीत, बेतुकी वाहियात बकने लगे! ये लौंडेपन की बातें हैं। उस दिन गुमान सिंह साहब को तहसीलदार पहुँचाने आये थे, और घरू उनके लिये पान लाई थी। इससे पहचान गया कि यहाँ की महरी है। मगर रास्ते में यह कहना क्या ज़रूर था कि तुम्हारी सुसराल की महरी है। लौंडे को तहसीलदारी का ज़ौम है। तुम घरू कहाँ से समझ गईं कि वह लड़का भी साथ था?

घरू बोली—मैं रधिया के घर से बयना लेके जाती थी, लड़का बड़ा सुन्दर है। अच्छा सयाना है। जोड़ी बुरी नहीं है। हमका देखके मुस्काया।

अब सुनिये कि गजराज सिंह ने अपने भतीजे इन्द्रविक्रम को बुलवाया।

गज—बेटा तुमने ठाकुर बलज़ोर सिंह के लड़के को देखा है? स्कूल में तुम्हारे साथ पढ़ता ही होगा।

इन्द्र—जी हाँ, इनके दो लड़के हैं—बड़े का नाम भानसिंह, छुटके का नाम रनबीर सिंह है। बड़का तो यों ही—सी अँग्रेज़ी जानता है। छुटके ने एम. ए. पास किया है और रिसाले में भरती होनेवाला है। जनरल साहब ने उसका इम्तहान लिया है। घोड़े पर ऐसा सवार होता है कि बड़े-बड़े घुड़दौड़िये मुक़ाबला नहीं कर सकते। गोली लगाने में बर्क़ है। तीन शौक़ हैं। एक लिखना और पढ़ना, दूसरे कुश्ती और लकड़ी, तीसरे शहसवारी और चाँदमारी।

गज—यह तो सब अच्छी बातें हैं। और न उजड्ड ही। पढ़ा-लिखा भी है। और सिपहगिरी के फ़न भी जानता है। कोई जिस्मी ऐब तो नहीं है?

इन्द्र—जी नहीं, जनाब। दीदा-रू जवान है। बहुत ख़ूबसूरत लड़का। हज़ार में एक और बहुत तबीअतदार। अब रिसाले में भरती होने का शौक़ है। साहब ने वादा भी किया है। क़वायद भी सीखी है।

गज—सोहबत किन लोगों की है?

इन्द्र—फौज के अंग्रेज़ों की सोहबत ही ज्यादा है। और आलिमों और शायरों की। ठाकुर बलभद्र सिंह से बड़ा याराना है।

गज—उम्र क्या होगी? मैंने इस लड़के को एक दफ़ा अस्पताल में देखा था। तब बच्चा था। बलज़ोर सिंह अपने साथ लाया था। अब मुझे याद आया, बहुत ख़ूबसूरत लड़का है।

शिवरानी—(इन्द्र से) कामिनी के लिये बात आई है—तुम क्या कहते हो। तुमसे दोस्ती है, देख-भाल के काम करना चाहिए। सुभ-घड़ी दोस्ती-याराने पर न जाओ। देखो कि कामिनी की उम्र सकारत हो और अच्छे ठिकाने लगे। गाय को चरने छोड़ते हैं तो हरी-भरी खेती देख के। और यों तो 'यू करम-लेख ना मिटै, करौ कोउ लाखन चतुराई।'

इन्द्र—नहीं, बहन। दोस्ती-याराना और बात है, और लड़की की शादी-ब्याह और बात। हम कामिनी को कहीं ऐसी-वैसी जगह थोड़ी ही झोंक देंगे। ऐसा लड़का नसीबों से मिलता है। हमारी खुशनसीबी, अगर कामिनी का दूल्हा हो।

शिवरानी—अच्छा अभी इन वाहियात बातों से कौन मतलब है? तुम लोगों के ज़बान में लगाम नहीं।

गज—फिर बिगड़ गई। यह लड़की बात-बात पर बिगड़ती है। हवा से लड़ती है।

शिव—अजी तो ऐसी बात क्यों करे कोई। अभी कौन ठीक! बने न बने। जब सब ठीक-ठाक हो जाय, तो गाओ चाहे ढोलकी बजाओ!

इन्द्र—हम तो बड़े खुश हों अगर यह बात ठीक हो जाय। कामिनी को इससे अच्छा दूल्हा नहीं मिल सकता। इसमें चाहे हमारी बहन बिगड़ जाएँ। जनाब आप खुद उस लड़के को देख लीजिए, ऐसा होनहार और लायक़ और चलन का लड़का छत्रियों में दूसरा नहीं है। मैं तो कहता हूँ, कि हजार काम छोड़ के इस काम को कीजिए। पद्मिनी भी अच्छे घर गई है, कामिनी भी ठिकाने लगे, अच्छा। कामिनी से पूछ न लो, उसको पसन्द है कि नहीं।

गज—(हँसकर) तुम्हारी बहन है, तुम पूछो।

शिव—तूने अपना ब्याह देखभाल के किया था? कलयुग तो है ही। अंग्रेज़ी पढ़ के इतना भी न हो, तो क्या हो! फेरी मुँह पर लोई, तो क्या करेगा कोई! कामिनी बिचारी को इससे क्या काम, जहाँ हम मुनासिब समझेंगे

वहाँ ब्याहेंगे। कुँआरी बोल सकती है भला? अभी कलजुग ने अँगूठा ही निकाला है। अभी यह ढिठाई कुँआरी लड़की में नहीं हो सकती। लड़के बेहया और ढीठ होते जाते हैं, और थोड़े दिन में लड़की-लड़के सब एक-से हो जाएँगे। अब माँ-बाप का डर तो रहा ही नहीं है। जिसका जो जी चाहता है, करता है। अब इन्दरजी बड़ी बहन के सामने छोटी बहन से कहते हैं कि अपना दूल्हा पसन्द कर लो। वाह!

गज—मैं बैठा हूँ, मेरे सामने तो कहता ही है; यह बड़ी बहन लिये फिरती है। बाप के सामने तो चूकता ही नहीं।

शिव—बेहया कहीं का। चल, जा यहाँ से। तू इन बातों में दखल न दिया कर। (मुस्कराकर) तू अपनी जोरू से बेहयाई कर। भलेमानसों में ये बातें नहीं होती हैं।

इन्द्र—मैं जाके इस लड़के की तस्वीर लाता हूँ। कामिनी को चुपके से दिखाऊँगा।

शिव—मैं कहती हूँ, इसको क्या हुआ है? अरे, तू बिलकुल सिड़ी ही हुआ जाता है? कहीं तस्वीरें भी कुँआरी लड़कियों को दिखाई जाती हैं?

ठाकुर इन्द्रबिक्रम सिंह चचेरी बहन और बाप से बातें कर के सीधे अपने दोस्त रनबीर सिंह के यहाँ आये। यहाँ बलभद्र सिंह और गुमान सिंह तहसीलदार और एक मुंशी साहब बैठे शतरंज खेल रहे थे। इनको देखकर कहा—आओ भई, खूब आये। सुबह से तहसीलदार साहब और मुंशी को चार मात दे चुका हूँ।

क्यों नहीं!—तहसीलदार ने कहा—यार अब हम लोग इस फ़िक्र में हैं कि रनबीर की शादी करें और उनको आदमी बनाएँ। उनके लिये कोई उन्हीं-सी खूबसूरत लड़की होनी चाहिए। मगर ज़रा सयानी हो; बिलकुल बच्चा न हो, कि इनके पाले पड़े।

बलभद्र ने भी साथ दिया और शतरंज उठा डाली, और मुंशी को रुख़सत करके अकेले में बातें होने लगीं।

गुमान सिंह ने खुल कर रनबीर और इन्द्रबिक्रम सिंह दोनों को बनाना शुरू किया। भाई, इनकी शादी की तुम ही फ़िक्र करो। हाँ साहब, भाई इन्द्रजी, हमारे खान्दान में तो कोई लड़की इस क़ाबिल है नहीं, वर्ना हम तो ब्याह देते। लड़का बे ऐब, खान्दान बे ऐब। दधियाल बे ऐब, ननिहाल बे ऐब। पढ़ा-लिखा आदमी, और इसमें शक नहीं कि हसीन है। औरतें देखें तो खुश हो जायँ। बीवी खुश हो जाय कि वाह क्या मियाँ पाया है! सास खुश कि क्या दामाद मिला है! सालियाँ बश्शाश कि क्या अच्छा बहनोई है! पास-पड़ोस की औरतें दूल्हा को देखके आपस में बातें करें कि कामिनी बिटिया का दूल्हा बड़ा सुन्दर लड़का है, चाँद-सूरज की जोड़ी है। और रास्ते में जो नौशे को

देखे, कहे यह किसी बड़ी खुशक़िस्मत को ब्याह के लिये जाता है, कि ऐसा दूल्हा पाएगी! और ये तने हुए घोड़े पर रान-पटरी जमाए बैठे हैं।

बलभद्र का मारे हँसी के बुरा हाल था, मगर ज़ब्त करते थे। गुमान सिंह का यह कहना कि भई हमारे खान्दान में तो कोई लड़की इस क़ाबिल नहीं है, वर्ना हम तो ब्याह देते, इन्द्रविक्रम सिंह की तरफ़ इशारा था कि तुम अब अपनी बहन उनको ब्याह दो; और यह खबर ही न थी कि इन्द्रबिक्रम सिंह खास इसी काम के लिए आया था, कि रनबीर सिंह की तस्वीर ले जाके बाप और बहन कामिनी को दिखाए। ये लोग गोल-गोल बातें और इन्द्र की चोरी से आपस में इशारे करते जाते, और वह खुद अपने दिल में सोचता था कि माँ-बाप पर बड़ा ज़ोर डालूँगा। थोड़ी देर के बाद इनसे न रहा गया। कहा, अरे यार रनबीर ज़रा अपना अलबम तो मँगवाओ! उस्ताद तुम्हारी कोई तस्वीर हमारे पास नहीं है।

बलभद्र—दे दो मियाँ, दे दो; ये अपने अलबम में लगाएँगे।

गुमान—उम्दा-सी तस्वीर देना। न हो, तो खिचवा लो।

बलभद्र—होगी क्यों नहीं। जंटलमैन कैसे, जो तस्वीर ही न हो!

रन—एक नहीं बीस। इन्द्रसिंह का कहना हम भला टाल सकते हैं। वह-वह तस्वीरें दूँ, कि खुश हो जायँ। घोड़े पर सवार....किसी में अंग्रेजी लिबास में। किसी में पंजाबी ड्रेस। कहीं मिस के काँधे पर हाथ है।

गज—लाओ, लाओ, फिर। लाओ, लाओ, दिखाओ!

रन—रामचरन, जाके अहमद से कहो कि अलबम दोनो ले आए। सुनहरी, और रुपहली दफ़्ती की। तुम उसको हमारे पास भेज दो। कहो जाके सुन लो! अहमद आये। वह सुनहरा अलबम जो खूबसूरत-सा बना हुआ है, और उसके साथ का दूसरा अल्बम रुपहली दफ्ती का, ले आओ।

गज—भई, हमको देना। (एलबम खोल कर) ओहो-हो-हो! यह कौन औरत है, भई?

बलभद्र—यह पहाड़ की एक पातुर है, कन्थी, खूब नाचती है।

गज—कौन पहाड़, नैनीताल या अल्मोड़ा?

बलभद्र—नैनीताल, अल्मोड़ा, रामगढ़, सब एक है। ऐसा अच्छा नाचती है कि वाह!

गज—खैर, अब आप मियाँ रनबीर सिंह साहब अपनी तस्वीर निकालिये तो। देखें। जो सबसे उम्दा हो वह तो इन्द्रजी बहादुर को दीजिए कि ये अपनी जान-पहचान की लड़कियों और उनकी माँ-बहनों को दिखाएँ और रिझाएँ और आपकी खाना आबादी की फ़िक्र करें। मियाँ इन्द्रसिंह, तुम्हारी एक बहन तो अभी बिन ब्याही है। जैसी तुम्हारी बहन, वैसी हमारी बहन।

गुमान सिंह आखिर उगल ही पड़े। न रहा गया। एक ख़ूबसूरती के साथ इन्द्रबिक्रम सिंह की बहन का ज़िक्र ज़बान पर लाये, और इस लुत्फ़ से कहा कि बुरा भी न मालूम हो। झप से अपनी बहन भी बना लिया।

बलभद्र सिंह और रनबीर ने आपस में इशारा किया और इन्द्रबिक्रम सिंह ने कुछ गौर करके बड़े ढंग के साथ बात को रखा; कहा—भाई यह तो ज़ाहिर है कि लड़की सयानी है, और शादी होवे हीगी, और जल्द होगी। और यह भी ज़ाहिर है कि रनबीर सिंह से अच्छा लड़का और कौन है। मगर भाई हम लोगों में ये मामले औरतों के ताल्लुक हैं। हमको इन बातों से कौन सरोकार। औरतें जानें, उनका काम जाने। हम दख़ल देनेवाले कौन।

गुमान सिंह ख़ुश हुए कि इतने ढर्रे पर तो लाये। अब जब इतने सर बदले, तो आयन्दा और बातें भी होंगी।

बलभद्र—इन्द्र ने बात अक्लमन्दी की कही। ये मामले औरतों के मुताल्लिक तो होते ही हैं, मगर मर्द भी राय देते हैं; नेक-बद को ज़्यादा समझते हैं, और औरतों को सलाह-मश्विरा देते हैं। औरतें अपनी ख़ुशी से थोड़ा ही कोई काम करती हैं। संदेसा उनके घर से जाए। औरतों के ज़रिये से औरतों में संदेसा जाय, और इन्द्रसिंह सिफ़ारिश करें।

गज—हम भी यही कहेंगे। बहुत मुनासिब बात है।

बलभद्र—तो भाई साहब, अब क़तई वायदा कीजिए। निकल न जाइएगा।

गज—पहले रनवीर सिंह से तो पूछो शादी मंज़ूर है या नहीं। संदेसा-पैग़ाम तो हुआ करेगा; पहले उनकी राय तो मालूम हो जाय।

बलभद्र—उनको मंज़ूर है। आखिर शादी न करना क्या मानी?

गज—शादी तो ज़रूर ही होगी; न होना क्या मानी। मगर हाँ अब यह ज्योतिषी से पूछने की बात नहीं कि कहाँ होगी। कोशिश तो यही है कि जाने-बूझे घर हो।

गज—बस, बस, हम समझ गए जी। एक बहुत बड़ी पार्टी हम देंगे। उम्दा-उम्दा बकरे अपने गाँव से तहसील के चपरासी की मारफ़त मँगवाएँगे, और कश्मीरी बावर्चियों को बुलवा के पकवाएँगे। और आला दर्जे की शाम्पैन पिलवाएँगे और जलसा दिखाएँगे। रनबीर सिंह हमारे यार ख़ास। उनकी शादी ख़ाना आबादी हो, और इनकी बहन का जो ख़ुद हमारी छोटी बहन है, ब्याह हो तो भला हम जलसा क्यों न दिखाएँ, दावत क्यों न दें।

बलभद्र सिंह ने कहा—हम भी दावत करेंगे। हम बकरा-वकरा हलाल करना और कश्मीरी बावर्ची को बुलाना-बुलाना नहीं जानते। हम तो भाई साहब सीधे होटल में दावत करेंगे। सूप, मछली, कटलेट, रोस्ट, बतख़, कोफ़्ते, आलू, टर्की, शामीकबाब, पारसन्दे कबाब, नूरमहल पुलाव, मुर्ग़ पुलाव, मुतंजन;

इसके बाद मेवा खुश्क व तर, और दूधिया चाय और सिगोड़े। और रनबीर सिंह से एक हफ़्ते तक दावत लेंगे। पूरा जलसा। खूब धमा चौकड़ी रहे। खाना और शराब हमसे उम्दा से उम्दा लीजिए। मगर जलसा हम न दिखाएँगे। जलसा गुमान सिंह दें, और तायफ़े हम तजवीज करें—बी जद्दन और कालका वाली बग्गन, और काली उमराव, और नज़ीर जान की छोकरी; और खिलौना का लड़का। चार ज़नाने तायफ़े, और एक मर्दाना।

गज—क्यों साहब, यह आप क्यों जलसा न दिखाएँगे?

बलभद्र—दावत भई आला से आला हो, और शराब चोखी से चोखी। मगर जलसा न देंगे।

गज—फिर वही, अरे मियाँ वजह तो बयान करो।

बलभद्र—वजह यह कि हमको जल्सा देने से नफ़रत है। खुदा जाने क्या सबब है; दावत में चाहे दो सौ उठ जाएँ।

गज—यह अच्छी वजह है! वल्लाह आपकी ऐसी-तैसी। चोट्टेपन की बातें करते हो। आपके तो बाप से जलसा लिया जाएगा।

रन—उनकी तरफ से हम दे देंगे। चलो छुट्टी हुई।

बलभद्र—अरे यार वह दिन तो आने दो, वह नेक घड़ी तो आने दो कि ये नयी दुल्हन को ब्याह के लायें, और हम लोग जश्न करें और शादी का दिन मनाएँ। अभी से क्यों कटे मरते हो। जलसा नहीं, जल्से का बाप ले लेना।

गज—तो यार रनबीर सिंह भाई, अब तुम फिक्र करो। अपनी देवरानी जेठानी बहन किसी से कहो कि तुम्हारी माँ से कहें और बात शुरू कर दें। अब देर न लगाओ! हाँ! और इन्द्रबिक्रम सिंह तो सिफारिश करेंगे ही।

गज—ज़रूर।

बलभद्र—तुम क्यों खामोश हो, इन्द्रजी।

गज—बोलो यार, आखिर कहते क्या हो। खुल कर कहो।

इन्द्र—ग, किसी की लड़की रह तो जाती नहीं। शादी तो होवेगी। और यह कौन नहीं जानता कि रनबीर सिंह लायक़ होनहार नौजवान है। और यह कौन नहीं चाहता कि लड़की अच्छे घर जाय। मैं ज़रूर पिताजी से जिक्र करूँगा बल्कि तस्वीर भी अंग्रेज़ी ड्रेसवाली लिये जाता हूँ।

गज—हाँ, चाहे बहन को भी दिखा दो।

इन्द्र—ए ज़रूर।

——:o:——

छठा अध्याय

नागपंचमी

इन्द्रबिक्रम सिंह तस्वीर लेकर खुश-खुश रवाना हुए। घर आये। महरी से सबके सामने कहा—दो रुपये छै आने की जरूरत है।' उसने उनकी बीबी स्मृति से कहा। स्मृता ने दो रुपये छै आने दे के आहिस्ता से पूछा—ये किस हिसाब में लिखे जायँगे? उन्होंने कहा—एक तस्वीर ली है। शिवरानी ने पूछा—किसकी तस्वीर?

इतने में कामिनी बोल उठी—इस तस्वीर पर मुझे याद आया कि जब ईरान के बादशाह विलायत गये थे तो बड़े नामी करोड़पति आर्टिस्ट की कोठी में तस्वीर देखने गये। देखते-देखते एक गधे की तस्वीर देखी। यह मालूम होता था कि सचमुच का गधा है। क़ीमत पूछी। सुना, पच्चीस हज़ार। मुस्कराकर बादशाह ने जवाब दिया—पचीस हज़ार में तो गधों की एक पल्टन की पल्टन तैयार हो सकती है।

इन्द्रबिक्रम सिंह ने मुस्कराकर कहा—और इत्तफाक कुछ ऐसा हुआ है कि मैंने भी गधे की तस्वीर ली।

शिवरानी बिगड़कर बोली—फ़िजूल खर्ची इसी को कहते हैं। दो रुपये छै आने में तस्वीर ली तो किसकी, गधे की! वाह, भैया, वाह!

इन्द्रबिक्रम सिंह ने जवाब दिया—यह दो रुपये छै आने ही लिये फिरती हैं। और यह खबर ही नहीं कि सात रुपये जो मेरे पास थे, वह पलेथन हैं। नौ रुपये छै आने को ली है।

स्मृता—(आहिस्ता से) हूँह! गधे की तस्वीर और नौ रुपये छै आने! मैं कुछ कहने को थी, मगर बड़ों का लिहाज़ करती हूँ।

शिव—इसमें कहना और सुनना ही क्या है। वह तो खुली हुई बात है। नौ-दस की गधे की तस्वीर कोई गधा ही लेगा। और किससे यह गधापन होगा?

कामिनी, शिवरानी, स्मृता, महरी सब हँस पड़ीं और स्मृता ने महरी से कहा—ज़रा तस्वीर माँग लो! अल्बम में रखने के काबिल होगी; या कोई अक़्लमन्द आदमी अपने कमरे में सजवा दे!

इन्द्रबिक्रम सिंह ने तस्वीर महरी को दे दी। महरी ने स्मृता के हवाले की तो क़ीमती-क़ीमती पीले रंग के काशानी मखमल में! सबको ताज्जुब हुआ, और हँस पड़ीं, कि वाह गधे की तस्वीर और मखमली गिलाफ़! मगर स्मृता ने गिलाफ़ से तस्वीर निकाली तो धक् से रह गई, और मुस्कराकर इन्द्र

बिक्रम सिंह की तरफ देखा, और वैसे ही कामिनी ने तस्वीर छीन ली। देखा तो यह भी मुस्कराई, और शिवरानी को दे दी। शिवरानी ने देखी तो हँसने लगी। महरी ने भी झुक के देखा। और सबकी सब मिलकर हँसीं।

शिव—यह गधे की तस्वीर है?

इन्द्र—जी नहीं, आदमी की।

स्मृता—(मुस्कराकर) यह तस्वीर तो दो लाख को भी मँहगी नहीं। (झेंप कर) मुझे कहना न चाहिए।

इन्द्र—(बनावट के साथ बिगड़कर) क्या कहा ?

कामिनी—है तो भाई यही बात !

शिव—(तस्वीर को ग़ौर से देखकर) जैसे नारायन का रूप है।

स्मृता—चाहे कोई कुछ अपने दिल में समझे, मैं यही कहूँगी कि दो लाख की भी महँगी नहीं है।

इन्द्र—सुनती जाओ, बहन। ये तारीफ़ें मियाँ के सामने हो रही हैं एक मर्द की, और ग़ैर मर्द की !

शिव—यह तुम जानो, तुम्हारी जोरू जाने। मगर इसमें कोई शक नहीं कि कितना ख़ूबसूरत लड़का है।

कामिनी—है कोई हिन्दू।

महरी—ए बीबी, यह तो उनका लड़का है, वो जो पकड़िया टोले के पास रहते हैं, वह ठाकुर।

शिव—(मुस्कराकर) अरे! अच्छा अब मैं समझी।

स्मृता—हाँ (तस्वीर को फिर देखकर) क्या सूरत है!

शिव—कामिनी को फिर दिखाओ।

कामिनी—(समझ गई) मैं नहीं देखती। (मुँह फेरकर) तुम ही देखो।

सब औरतों ने तस्वीर गौर से देखी। मगर कामिनी वहाँ से चली गई। कामिनी की माँ ने भी तस्वीर देखी, और गजराज सिंह को भी बुला के दिखाई। उन्होंने कहा—मैं तो इस लड़के को देख चुका हूँ। बहुत अच्छा लड़का है; और इन्द्रबिक्रम सिंह पढ़ने-लिखने की बड़ी तारीफ़ करते हैं।

इतने में ज़ैनब की माँ आई। इन्द्रबिक्रम सिंह कह रहे थे कि—लड़का बहुत अच्छा पढ़ा-लिखा है; होनहार, होशियार, कोई ऐब नहीं। हम तो दिल से चाहते हैं कि यह बात हो।

गजराज—इसमें कौन मुश्किल बात है। पैग़ाम आही चुका है।

ज़ैनब की माँ—वह तो घी के चिराग़ जलाएँ जो ऐसे घर की लड़की उनके यहाँ जाय; और फिर कैसी लड़की, कामिनी की-सी।

गजराज—इनका ख़ान्दान क्या कुछ बुरा है? वह भी ख़ान्दानी हैं।

जैनब—ऐसी अच्छी जोड़ी है कि मैं क्या कहूँ, जैसे अल्लाह ने दोनों को अपने हाथ से बनाया है।

शिव—धन्नो तो लड़ाका नहीं है! माँ इस लड़के की कैसी है! सीधी है कि तुनुक-मिज़ाज!

जैनब—ए सरकार उनके यहाँ कोई लड़का नहीं है। सब सीधी और मिलनसार। लड़ाई झगड़ा तो वहाँ कोई जानता ही नहीं। घर भर में एक। घर तो धन्नो रानी का ही है। उनके मियाँ दूसरे दिन आते हैं। रेल के डाक घर में बड़ा ओहदा है। पाँच सौ पाते हैं। शाम को आते हैं, सबेरे फिर चले जाते हैं। उनको किसी काम से सरोकार नहीं। सब काम धन्नो रानी के सपुर्द हैं।

गजराज सिंह और उनकी बीबी और शिवरानी और स्मृता की सलाह हुई कि ज़ाब्ते के तौर पर सन्देसा भेजा जाय और बात पक्की की जाय।

इधर तो ये मामले हो रहे थे अब इधर रनबीर सिंह के यहाँ का हाल सुनिये कि धन्नो ठकुराइन आज उधार खाये बैठी हैं कि अपनी सज-धज से गजब ही ढाकर रहेंगी। जिधर निकल जाएँगी चाल की नाजुकी से दिलों को पामाल करती जायँगी। आज इन पर ग़ज़ब का निखार है।

एक तो पैदा ही हुई हसीन, चन्द्रमुखी; दूसरे कम उम्र; तीसरे अच्छा साज-सिंगार; चौथे वज़ादार। इस पर शोखी व चालाकी। अब इस निखार और बनाव-चुनाव का सबब सुनिये।

सावन का महीना और उजाले पाख की पंचमी; और बृहस्पत के दिन की चहल-पहल भी यादगार रहेगी। गुड़िया-पंचमी का त्यौहार बड़ी खुशी का दिन है। बलजोर सिंह के लड़के गो नये फैशन के थे, मगर पुराने त्यौहारों में उनकी एक नहीं चलती थी। और औरतें पुरानी ही लकीर पीटे जाती थीं।

रनबीर सिंह की बड़ी भावज धन्नो ठकुराइन ने तड़के उठकर महरानी नाउन को बुलवाया। बालछड़ का मसालेदार बटना बनवाया, जिसकी खुशबू मोहल्ले भर में जाती थी। जनाने ग़ुसलखाने में जाकर नाउन ने बालछड़ से सर धोया, बटना मला, नहलाया, बाल सुखाये। सुखाने के बाद नाउन ने चोटी सँवारी, बाल गूँछे, पाँव में महावर लगाई, माँग बुन्दों से भरी, सेन्दूर का टीका लगाया; टीके के पास बिंदिया लगाई, सोने का जड़ाऊ टीका बाँधा। सर से पाँव तक गोंदनी की तरह लदी हुई थी। झूमर, सली, झुमके, करनफूल, बाले, बाली, पात, चम्पाकली, जुगनू, तिलाई, चूड़ियाँ, नौरतन, जोशन, पाँव में छड़े कड़े, पोर-पोर छल्ले। इसके बाद गाज का सब्ज़ दोपट्टा, चार हाशिया आंड़ी बेल, आबी अतलस की चोली, ज़री-बूटी की बसन्ती कुर्ती, जरी-गरन्ट का सुर्ख़ लहँगा। इस ठस्से से बनाव-चुनाव किया, और खस का इत्र मला, बालों में हिना का तेल छोटे गन्धी की दूकान का पड़ा था। उधर बालछड़ और नागर

मोथे और छैल-छबीले की खुशबू, इधर उस मशहूर दूकान का हिना का तेल। छत पर बालों में आधे मील तक लपटें जायँ। और इन सब पर तुर्रा यह कि खस का फ़र्मायशी इत्र--ले ही तो उड़ा। जैसे सोने पर सुहागा। एक अजब लुभावनी अदा के साथ छमाछम करती, सोते फ़ितने जगाती, क़मायत ढाती बाहर आई, तो छोटे देवर रनबीर सिंह ने मुस्कराकर कहा--इस वक़्त सरकार ने बन ठनकर कहाँ की तैयारी की है ?

आती नये अन्दाज़ से इक सब्ज़ परी है
लब सुर्ख़ हैं, पर सब्ज हैं, पोशाक हरी है !

धन्नो--नाचना अब सीखो; थिरकना सीखो। जैसे कहार शादी-ब्याह में हुड़क बजा-बजा के किसी एक मर्द को औरत बना के नचाते हैं, तुमको हम नचाएँगे।

रनबीर--तुम तो नचाय रही हो। हमको और हमारे भाई दोनों को तिगनी का नाच नचा रही हो, और आज तो शहर भर को नचाओगी।

धन्नो--बड़ा बेहूदा होता जाता है।

रनबीर--हमें तो तुम लोगों की बातें बुरी मालूम होती हैं। यह गँवारिनों को ही सजता है।

धन्नो--तुम अपनी जोरू को सात पर्दों में रखना।

रनबीर--अरे, बग्गी पर जाओ, फ़िनस पर जाओ।

धन्नो--हाँ, यह माना। मगर किसके घरों की औरतें मिन्नत नहीं मानतीं ! किसके यहाँ रस्म-रिवाज नहीं। कोई दरगाह, कोई जनून की मस्जिद ; कोई गिरजाघर, कोई शिवाला, कोई मन्दिर। तुम अपनी जोरू को क़ैद में रखना।

रनबीर--हम शादी ही न करेंगे, और अगर करेंगे तो उसके साथ जो परिस्तान की परियों को शरमाए, लाखों में एक, करोरों में फ़र्द हो; और नेक। और बाहर न निकले। जाये भी तो डोली, फ़िनस, बग्घी पर, और पढ़ी-लिखी हो। शीन-क़ाफ़ दुरुस्त। गँवार न हो। नमकीन हो; गोरी हो। छरेरी हो, खुश-सलीक़ा हो।--अच्छा, अच्छा, खैर यह तो जो कुछ हुआ सो हुआ, आप यह तो बताएँ, सरकार, कि यह इन गोरे गालों पर सितारे क्यों नहीं चुने गये ?

धन्नो--कौन अच्छे-भले चंगे मुँह को बुरा करे। गोंद की चिप-चिप से जी घबराता है।

रनबीर--अच्छा अब इसी बात पर एक (चुम्बन का इशारा कर के) तो दे दो !

धन्नो--गढ़ैया में मुँह धो आओ। ऐसे बड़े सुन्दर !

रनबीर--इतनी देर बकवाया; अगर जरा होंठों का इशारा हो जाय, तो क्या हर्ज है ? कुछ होंठ घिस न जाएँगे।

धन्नो—ये होंठ जिसके वास्ते हैं, उसके वास्ते हैं। ब्याह करके जाके सास का मुँह चूमो। हमारे मुँह चूमने के लिये जाके मुँह बनवाओ।

रनबीर—अगर तुम गोरी-चिट्टी होतीं, तो सीधी बात भी न करतीं।

धन्नो—ऐसी गोरी हूँ कि तुम्हारे कुनबे में कोई नहीं है। मेरे पाँव को तुम्हारा मुँह नहीं पहुँचता। तुम्हारे घर भर के भाग खुल गए, हमारे आने से।

रनबीर—तुमको कोई पूछता भी था। भाई साहब मुफ़्त में फँस गये।

धन्नो—क्या हमें कोई लड़का ही नहीं जुड़ता? उनसे हज़ार दर्जे अच्छे मिलते। तुम लोग हो क्या बिचारे! अब जाओ यहाँ से। आज लड़ाई को जी चाहता है!

रनबीर—हाँ! बाहर न जाया करो।

धन्नो—यह तो दुनिया भर का रिवाज है!

रनबीर—सच कहती हो। दिल का पर्दा चाहिये।

धन्नो—ए क्यों नहीं! बिज्जू की-सी आँख और यह घमंड!

इतने में बलज़ोर सिंह आये तो धन्नो कोठरी में छिप रही, और रनबीर सिंह बाहर आये। और धन्नो ठकुराइन भारी कामदानी की गुलाबी चादर ओढ़ कर हमजोलियों, सहेलियों, नाउन, महरी और बारिन को लेकर सूरजकुंड गुड़ियाँ सराने चलीं। सींक की रंगीन डलिया नाउन के हाथ में थी। इसमें कपड़े की गुड़िया बनी हुई, छोटा-सा कमखाब का लहँगा, गुलनार दुपट्टा, उसमें लचक और लेस टकी हुई। डलियों में गेहूँ और चना और जौ। गुड़िया लड़कों ने पीटीं। नाउन ने उनको चना और गेहूँ दिया। सूरजकुंड की मट्टी ली और हमजोलियों ने आपस में पान और गोटा, एक-दूसरे को दिया और झूला झूलीं। और तीन-तीन चार-चार मीठे गलेवाली तर्रार तरहदार कमसिनों ने मिल-मिलकर अपने-अपने झूलों से सच्ची तानें लगानी शुरू कीं।

पिया बिन हुई बिरहा की पीर!

दूसरे झूले से दो-तीन परियों ने नाजुक-आवाज़ों के साथ यों गाना शुरू किया—

रह-रह के दिल रूँधो आवे,
बिजुरी की चमक तड़पावे-डरावे।
पिया बिन घटा नहीं भावे,

एक सिम्त पीपल के बहुत बड़े दरख़्त में झूला पड़ा हुआ था, और उस पर दो नौजवान तन्नाज़ बड़े नाज से तनी-ठनी और बनी-ठनी बैठी थीं। इन्होंने बड़े ऊँचे और मीठे सुर से यह सावन अलापा--

दिलको मर्ग़ूब है ठंडी जो हवा सावन की.....
अब्र भागा हुआ जाता है; ख़ुदा ख़ैर करे!
आज बदली नज़र आती है हवा सावन की!

झूले से उतरकर धन्नो ठकुराइन ने, जो कि सबसे शोख और तर्रार थीं, एक हमजोली की नाक पकड़कर कहा—अपने दूल्हा का नाम बता! वह बड़ी देर तक झेंपती रही! आखिरकार आहिस्ता से धन्नो के कान में कहा—मुरालीलाल, धन्नो ने नाक छोड़ दी, तो वह फुर्ती के साथ वह हो रही, और तीन औरतों ने जोर से खिलखिलाकर कहा—धन्नोरानी धोखा खा गईं। उनके दूल्हा का नाम मुरालीलाल नहीं है, गनेश है! धन्नो ने कहा—चलो अच्छा, पराये मर्द को अपना भतार तो बना लिया। ऐसी औरतों का कोई ठीक नहीं है, जिसने ज़बान से ऐरे-गैरे को अपना मियाँ कहा। उसका कौन भरोसा। अब तो ये मुरालीलाल की जोरू बन गईं। मुरारीलाल की दुलहिन, तनिक इधर आवो! तुम्हारे दूल्हा मुरालीलाल कहाँ हैं?

इस पर और भी ठट्ठा हुआ। इसके बाद दो-तीन औरतों ने धन्नो की नाक दबाई और कहा, दूल्हा का नाम बताओ! धन्नो ने बेझिझक फौरन कह दिया—मानसिंह!

इस चुहल और मजाक के बाद अपने-अपने घर गईं, और धन्नो के देवर ने हँसना शुरू किया।

रनबीर—तुम लोग बन-ठन के सोलह सिंगार करके मर्दों को अपना जोबन दिखाने जाती हो कि देखो ऐसे हैं; मर्द घूरते हैं।

धन्नो—बुरी नज़र से देखें तो आँखें हम निकाल लें। झाँसी की रानी मर्दों से कैसा लड़ी थी! तलवार और बन्दूक़ की लड़ाई! औरत होके मर्दों से लड़ी। और बदी ही मर्द के दिल में हो, तो हो! वही नरक में जाएगा। हमारा क्या बिगड़ेगा?

रनबीर—हम तो अपनी बीवी को सात पर्दों में रखेंगे।

धन्नो—इससे क्या होता है? पर्दे-वर्दे रखे ही रहते हैं। रहे तो आपसे, नहीं सगे बाप से।

रनबीर—यह तो सच है, मगर पर्दा भी कोई चीज है। हजारों रुपये का जेवर लादे, अच्छे-अच्छे कपड़े पहने, मुँह खोले, छम-छम करती चली हैं—बाज़ार भर की नज़र पड़ती है।

धन्नो—अजी तो बाज़ार भर घूरे तो क्या होता है। अपनी आँखें फोड़ें, मुए। उनके माँ-बहन नहीं हैं? सब निगोड़े नाठे हैं?

रनबीर—एक बात हम ज़रूर कहेंगे, भाभी; चाहे बुरा मानो।

धन्नो—कह डालो, कह डालो! तुमको दहने हाथ का खाना हराम है। हम भी तो सुनें, कहोगे क्या?

रनबीर—जितनी औरतें आज ताल गईं थीं, तुमसे ज्यादा मटक-चटक की कोई न होगी। बोटी-बोटी फड़काती जाती होगी! चुलबुली हो ना!

धन्नो—कैसी कुछ! रग-रग में चुलबुलापन भरा है। कूट-कूट के। और जहाँ किसी ने पूछा, यह चमक्को कौन जाती है? मैं बारन नाउन महरी को समझा देती हूँ कि कहो—यह रनबीर सिंह ठाकुर की बहन हैं—सगी बहन।

रनबीर—जोरू नहीं कहतीं? मेहरारू कहा करो, जो सच्ची बात है!

धन्नो—घर की पटकी और बासी साग! हम ऐसे चुन्धों की मेहरारू नहीं बनते। तुम अपनी कामिनी को दुल्हन बनाओ। हमारे दूल्हा क्या कुछ बुरे हैं। सौ-पचास में एक।

इधर धन्नो ठकुराइन यह चुहल कर रही थीं; उधर रसोई में बाम्हनी ने खाने का सामान लैस किया। पूरी, कचौड़ी, भिंडी, सीताफल (कद्दू), घुइयाँ, तुरई की तरकारी, दही, शक्कर; कई तरह का अचार, चटनी, मुरब्बा, दूध, सिवैयाँ, बालाई; और दो क़िस्म का कलिया। ठाकुर बलज़ोर सिंह ने दो बकरे का बलिदान किया था। बाज़ार का गोश्त यह नहीं खाते थे। सब परजाओं को पूरी-कचौरी-तरकारी दी गई। शाम को एक बहुत बूढ़ा ब्राह्मण जो ठाकुर गजराज सिंह के यहाँ आता-जाता था, आया।

ब्राह्मण—बहुरिया, आज तो ठाकुर गजराज सिंह की बखरी माँ मानो जुन्हैया निकली है। सम्पूरन चन्द्रमाँ। एक तो महालक्षमी सहाय है। और परमेशर का दिया सब कुछ है। दूध-पूत। और सबसे बढ़कर दौलत यह है कि लड़के सब होनहार, बुद्धिमान। और ठाकुर को दान-पुत्र का बड़ा खियाल है। बुद्ध को अन्धों और पाहिजों और मँगताओं को दो-दो डबल देते हैं, और अपने और लड़कों की बरस-गाँठ के दिन ब्राह्मणों को खिलाते और दक्षिना देते हैं। और बरस में दुई बिरिया बड़ा बरस-भोज होता है। मंगलवार को बन्दरों को गुड़-धानी भेजते हैं। और कन्याओं को महीने में एक दिन खीर और पूरी-भजिया खिलाते हैं। और कई कन्या-दान करा दिये। गर्मी में पौसाले बिठा देते हैं। बैलों को घी और गुड़ खिलाते हैं। एक धरमसाला है। और घर भर में मेल। लड़के लड़कियाँ दोनों सूरज और चन्द्रमा! एक अभी कुँआरी कन्या है। तुम्हारे घर में आये, तो उसका भाग और भी खुल जाए। और सच पूछो तो जो है सो, जिसको ब्याह ले जाए, उसका भी भाग खुल जाए। और अब ब्याह के जोग हैं। सयानी भई है। और जो है सो, बात-चीत तो यहाँ से रनबीर सिंह की गई है।

धन्नो—तुम पंडितजी कुछ ज़ोर लगाओ। कहीं और से तो नहीं बात आई है?

पंडित—चाहे, जो है सो, जहाँ से बात आई हो, परन्तु इस घर से अच्छा और कोई घर नहीं है। गजराज सिंह नाहीं जानत हैं। और गंगा-सौगन्द, रनबीर सिंह हीरा है, हीरा-रतन।

महरी—पंडित महराज, यह जोड़ी देव अपने हाथ बनाई है।

पंडित—यह माँ कौन सन्देह है। कामिनी सचमुच कामिनी है। चन्द्रमा में मैल है, और उसमें मैल नहीं। और आँख नीची रहती है।

इतने में जैनब की माँ आई, मुस्कराती हुई। धन्नो ने कहा—आज तो बाँछें खिली जाती हैं; क्या पाया?

उसने हँसकर कहा—तुम्हारे देवर के लिए दुल्हन ढूँढ़ने गई थी—लो, फ़तेह है, बहुरिया! हमने आज जरा टटोला; तुम्हारा घर इतना नामी है कि कोई एकाएकी 'नहीं' नहीं कर सकता। और लड़के का जो हाल सुनता है वह कहता है कि वह कई इल्म जानता है, और चार पैसे कमाने का शौक है। और अभी माशाऽल्ला कमसिन। अठारह बरस का बच्चा। मसें भीगती हैं। बहू सच कहती हूँ, अँधेरे में कामिनी को बिठा दो तो उजाला हो जाय।

धन्नो ने कहा—अरे यह तो हम सब सुन चुके हैं। मतलब की बात कहो।

जैनब की माँ बोली—अब यहाँ तक तो हुआ, कि शिवरानी ने ठाकुर से कहा; उन्होंने लड़के को बुलाया। लड़के ने कहा—हम और रनबीर सिंह साथ पढ़ते थे; मास्टर लोग सब उनको अच्छा जानते थे, और किसी ने कभी इस लड़के को बुरी सोहबत में नहीं देखा, सिवाय भलेमानसों के पास के। और रिसाले में नौकरी करनेवाला है; और तोप खूब चलाता है।......

'तोप' के लफ़्ज पर धन्नो और पंडित और महरी को बड़ी हँसी आई कि रनबीर सिंह को गोलन्दाज बना दिया। यह तो कहा नहीं कि तलवार के सब करतब जानते हैं; गोलचले बहुत अच्छे हैं; शहसवारी में बर्क़ हैं—कहा तो यह कहा कि तोप खूब दागते हैं।

धन्नो को यह बात सुनकर तसल्ली हुई कि गजराज सिंह के लड़के इन्द्र-बिक्रमसिंह ने उनके देवर की तारीफ़ की। गो पहले धन्नो अपने भाई के वास्ते रिश्ता करने को थीं, मगर देवर की तबीअत का रुख देखकर अब उसके लिये कोशिश करने लगीं।

—:o:—

सातवाँ अध्याय

प्यारी प्यारी बतियाँ

अब सुनिये कि जब कामिनी के ब्याह का मामला पक्का-पोढ़ा हो गया तो बहुत-सी औरतें रनबीर सिंह को देखने को गईं; यानी वह औरतें जो किसी न किसी बहाने से जा सकती थीं। और वजह उसकी यह थी कि कामिनी की निस्बत बहुत से घरों से पैग़ाम आ चुके थे, और सब यही चाहते थे कि यहाँ आये। उसके हुस्न की दूर-दूर तक तारीफ थी। जो औरत रनबीर सिंह को जाके देखती थी वह गजराज सिंह के यहाँ आके मुबारकबाद देती थी, कि

जोड़ी हो तो ऐसी। और कामिनी और शिवरानी, घर-भर खुश होता था, कि जो आता है लड़के की तारीफ़ ही करता है, कि ऐसा खूबसूरत पढ़ा-लिखा और लायक़ और मिलनसार और खूबसूरत लड़का है।

शिवरानी—कामिनी तो लड़कपन ही से गोरा-गोरा दूल्हा ढूँढती थी।

कामिनी—जैसे तुमको मेरा लड़कपन याद ही तो है।

शिव—नहीं, तू तो मेरी अम्मा के बराबर है। मुझे तेरा लड़कपन कहाँ से याद है?

इन्द्र—पहले तो दाई ने कहा, लड़का हुआ! लड़का हुआ! फिर सुना कन्या भवानी तशरीफ लाई हैं। हमने कहा, खैर भई अच्छा; लड़की ही सही।

कामिनी—तुम तो भई बातें करते हो! अब मैं इतनी ज़रा-सी हो गई कि तुमको मेरा पैदा होना तक याद है।

इन्द्र—अपने सर की क़सम याद है।

शिव—कहती थी कि मेरा दूल्हा, चाँद-सा होगा, और सबेरे उठके मेरी पूजा करेगा।

इन्द्र—है तो चाँद ही-सा। यह बात तो सच निकली।

शिव—तो फिर पूजा भी करेगा। अब आने तो दो। लड़का तो क़िस्मतों से मिला है।

गजराज—एक दिन जब यह ज़रा-सी थी तो एक खोंचेवाले से मैंने जलेबी लेके उसको दी। माँ ने पूछा अरे यह मिठाई कहाँ से आई? कहने लगी—जलेबी दूल्हा भेजी। यानी, दूल्हा ने मेरे वास्ते जलेबी भेजी।

शिव—अब हम कहला भेजेंगे, कि भई तुम्हारी बहू को जलेबी लड़कपन से पसन्द है। इसके लिये रोज सबेरे उठके जलेबी भेजा करो।

कामिनी—इनको आज नई बातें सूझती हैं। बड़ी देर से बखेड़े की बातें कर रही हैं। तुमने मुझे कब जलेबी खाते देखा?

इन्द्र—अच्छा तो किस चीज़ की फर्माइश करें?

कामिनी—तुम्हारी सुसराल से किस चीज़ की फर्माइश आई थी?

इन्द्र—हमारी सुसरालवाले तो गँवार हैं।

स्मृता—(इन्द्र विक्रम की बीवी) हाँ, गँवार तो हैं ही। गँवार न होते तो (आहिस्ता से) तुम गँवारों के यहाँ ब्याहते क्यों?

इन्द्र—(हँसकर) सुना मैंने। कुछ सुनती हो?

शिव—फिर भाई जिसको तुम कहोगे वह तुमको भला छोड़ देगा?

इन्द्र—पद्मिनी जब ज़रा बड़ी हुई और उसने देखा कि अब घर भर कामिनी को प्यार करता है तो एक दिन बड़ी हसरत से कहने लगी—कि जब से कामिनी हुई, घर भर मेरा दुश्मन हो गया।

कामिनी—मैं छोटी थी ना। मुझे सब बहन से ज़्यादा प्यार करती होंगी। छोटे बच्चे का प्यार होता है। बस वह बिगड़ गईं, कि सब मेरे दुश्मन हो गए। बच्चे की बुध कितनी? मैं बचपन में कभी रोती नहीं थी।

शिव—परमेश्वर न करे! तू तो माँ के पेट ही से हँसती हुई निकली थी।

स्मृता—जैसे भाँड़ नक़ल करते हैं कि हमारा घोड़ा माँ के पेट ही से कुलेलें करता निकाला था।

इन्द्र—यह तो दाइयों वाइयों और घर में सबने कहा था, कि यह लड़की बड़ी गोरी होगी। वैसी ही गोरी हुई।

कामिनी—हमारे घर में तो कोई काला दिखाई नहीं देता।

शिव—जो कोई इसके छेड़ने को कहे कि तोर दूल्हा तो काला है, तो यह रो-रो के ढेर करे, कि वाह, काला क्यों है? जैसी मैं गोरी हूँ वैसा ही वह भी गोरा है। पूछा, अरी कामिनी तेरी सास कहाँ है? तो कहती, सास चूल्हे गई, चूल्हे गई सास!

कामिनी—(मुँह फेरकर मुस्कराकर) कितना सच बोलती हो बहन!

शिव—अब न सास को चूल्हे डालना कहीं!

कामिनी—तुम पर एक दिन बड़ी मार पड़ी थी, मुझे याद है।

शिव—हाँ, क्यों नहीं। तुझे तो अपनी छठी भी याद होगी।

कामिनी—हाँ, उस दिन नौबत रखी गई थी, नाम रखा गया था, मिठाई भी बटी थी। मैं सबसे बातें करती थी।

शिव—हाँ, बातें तो तू पेट में आने से पहले ही करती थी। भला इसके दूल्हा को मालूम है कि यह अंग्रेजी उर्दू नागरी पढ़ी है।

इन्द्र—क्या खूब! यह अच्छी कही। वह अंग्रेजीदाँ आदमी, पूरे साहब लोग। उसको खूब मालूम है। पढ़ी-लिखी न होती, तो वह साफ़-साफ़ कह देता कि मैं शादी न करूँगा। दो-एक बूढ़े बुजुर्गों ने जो पुराने फैशन के हैं बातों-बातों में कहा था कि इनको इन बातों में क्या दखल। जहाँ बाप-माँ चाहेंगे, वहाँ शादी होगी। उसने फौरन पलट के जवाब दिया—सुनिये, क़िबलाओ-काबा, आपकी और हमारी तहज़ीब, हमारे-आपके खयालात, हमारे और आपके तौर और चलन में बड़ा फर्क है। मैं शादी अपने लिये करता हूँ, न कि माँ-बाप के लिये।

शिव—बड़ों से ऐसी बातें करना कौन-सी अक़्लमन्दी है?

स्मृता—आजकल के अंग्रेजी पढ़े हुए किसी को नहीं मानते।

इन्द्र—क्या खराब रस्म हम लोगों में है, कि दूल्हा-दुल्हन से कोई बहस ही नहीं। उनकी राय किसी शुमार-क़तार ही में नहीं। अब, बाप चचा चची ने जिसके साथ चाहा ब्याह कर दिया, पसन्द-ग़ैर पसन्द से कोई वास्ता ही नहीं।

और इस से बढ़के और कौन बेवकूफी होगी कि ज़रा-ज़रा से बच्चों की शादी कर देते हैं। यह बड़ी जहालत है। लड़का कम-से-कम अट्ठारह बरस का तो हो, और लड़की तेरह बरस की। यह नहीं कि आठ बरस का लौंडा और छै बरस की लौंडिया।

स्मृता—(भावज से) यह तो बुरी बात है। इतनी कमसिन लड़की का ब्याह तो न करना चाहिए ; न इतने कमसिन बच्चे का।

शिव—घरवालों का दो घड़ी का खेल होता है। खेलते हैं, हँसते हैं।

इन्द्र—वाह रे खेल! शादी-ब्याह भी दिल्लगी है!

स्मृता—इसमें बड़ी खराबी होती है। जो लड़का जाता रहा, तो लड़की विचारी छै बरस की मासूम उमर भर को गई-गुजरी!

इन्द्र—दीन-दुनिया दोनों से गई-गुजरी। इधर की रही न उधर की रही। और दस बरस के अन्दर ज़रा लड़कों का ज़्यादा खौफ रहता है।

स्मृता—सच; यह तो बड़ी बुरी रस्म है!

इन्द्र—मर जाना लड़की का इससे अच्छा, कि उम्र भर रँडापे में काटे। और छै-सात बरस की उम्र में बेवा हो जाय जब वह अच्छी तरह समझती भी नहीं कि क्या हो रहा है, और क्या मुसीबत उस पर पड़ रही है। कितने अफसोस का मुक़ाम है। शादी हमेशा बढ़के करना चाहिए। लड़का अट्ठारह बरस का, लड़की कमसे कम तेरहवें में—बल्कि चौदह बरस की। बच्चे भी ताक़तवर पैदा हों। और शादी के जो मानी हैं, उस तरह पर शादी हो। गुड़िया-गुड्डों का खेल न हो। यों तो बेवकूफ लोग कपड़े के बच्चे बना के ब्याह रचते हैं, बिल्ली की शादी करते हैं। अगर इन्सान की शादी के भी यही मानी हैं तो इस अक़्ल पर तीन हरफ़! शादी-ब्याह भी एक खेल हो गया!

स्मृता—हम तो इस उम्र की शादी में खुश। मियाँ जाने, बीवी पाई; बीवी मियाँ को जाने। नाखून के बराबर बच्चों की शादी क्या, खिलौना हुआ। बड़ों-बड़ों की जिन्दगी का एतबार नहीं। इन ज़रा-ज़रा से बच्चों की जिन्दगी का क्या एतबार हो सकता है?

शिव—आपस में मियाँ-बीबी एक हो गये।

इन्द्र—अच्छी बात है, बुराई क्या है?

इतने में एक बूढ़ी मुसलमान औरत आई। स्मृता और शिवरानी और इन्द्र बिक्रम ने कहा—बुआ, सलाम! उसने दुआएँ दीं, जीती रहो! सदा-सुहागिन राज करो, भैया तुम नौकरी पर नहीं गए? इन्द्र बिक्रम ने कहा—नहीं, आज तातील है। पूछा—कामिनी कहाँ है? कामिनी ने सलाम किया। इन्द्र बिक्रम ने कहा—अब कामिनी का ब्याह है। बुढ़िया बोली—मबारक। मैं सुन चुकी हूँ। लड़कपन में कामिनी बिटिया कहा करती थी कि सुन्दर दूल्हा आयेगा। तौन सुन्दर ही मिला।

कामिनी—इस बुढ़िया को भी मेरे लिये ज़बान आई। और किसी बात का होशो-हवास नहीं है, बस यही याद है।

शिव—यह कहती है, तुम झूठ कहती हो।

बुढ़िया—हाँ, ठीक। जो कोई ज़रा कह दे कि तेरा दूल्हा काला आयेगा तो बस महनामथ मचाने लगती थी, कि वाह! काला क्यों आयेगा? जैसी मैं हूँ, वैसा आयेगा। एक दिन किसी के बच्चे को हाथी पर सवार जाते देखा। यह दुलारी दाई की गोद में बैठी थी। वह लड़का बड़ा गोरा था। ज़रा-सा लड़का था। कामिनी बिटिया कहने लगी—यह हमारा दूल्हा है! हाथी पर यह हमारा दूल्हा आया है।

शिव—तो यह और भी वाक़िफ़कार आई! अब बताओ!

कामिनी—(आहिस्ता से) इस बुढ़िया का सर। हाथी भी याद है। लड़का भी याद है। अभी बाप का नाम कोई पूछे तो न याद निकले। मेरा बचपन याद है। झूठी कहीं की।

बुढ़िया—बड़ी बिटिया, जैसा यह चाहती थी, वैसा ही लड़का मिला। बुरी नज़र से अल्लाह बचाए, ऐसी सूरत है कि चाँद में दाग़ है, उसमें नहीं! अल्लाह इनकी जोड़ी बरक़रार रखें!

स्मृता—तुमने कहाँ से देखा? क्या आती-जाती हो?

बुढ़िया—ए दुल्हन, हमारे लड़के की सरकार है। हाथी पर नौकर है। आठ रूपै और खाना। और बरस में दो जोड़े। और शिकार पर खाना रसोई से आता है।

शिव—क्या हाथी भी हैं? खुश हैं अपने घर से। भरे-पूरे....

इन्द्र—दो हाथी हैं। एक हाथी और एक पाठा अभी मोल लिया है। क्या सब हमारी सुसरालवालों की तरह से कँगले ही होते हैं?

कामिनी, शिवरानी और इन्द्र बिक्रम सिंह मुस्कराए। स्मृता को बुरा मालूम हुआ। और उसके छेड़ने के लिये तो इन्द्र बिक्रम ने कहा ही था। स्मृता तुनुक गई। "क्या सबके घर में हाथी ही झूमते हैं? यहाँ हाथी पले हैं! मेरे मैकेवालों के दुश्मन कंगाल हों! कंगाल वह, जो दान न दे। इससे बढ़ के दान वह क्या देते कि इत्ती बड़ी लड़की दे दी। हम आज ही वह सुरंग घोड़ी खुलवा के मैके भेज देंगे। दे ऐसे को जो जस माने। और जो खाये और गुर्राए और फिर कंगाल बनाए, उसको देना अकारथ है। कंगाल हों उनके बैरी।"

कामिनी, इन्द्र बिक्रम, शिवरानी, बुढ़िया सब औरतें हँसने लगीं। स्मृता भी मुस्कराने लगी। स्मृता के मैके से इन्द्र बिक्रम सिंह को सुरंग घोड़ी जहेज़ में मिली थी।

इन्द्र बिक्रम ने कहा—यह अच्छी दिल्लगी है। लड़की दी तो क्या ऐहसान किया। हमारे-से आली खान्दान क्षत्री उसको मिलते कहाँ। और अगर सुरंग घोड़ी ले

जायँ, तो फिर किसी रोज़ यह सुनहरी घोड़ी (जोरू की तरफ इशारा करके) भी खोल ले जायँ।

देर तक आपस में यही नोक-झोंक रही। स्मृता ने कहा—किसी को लड़की भारी नहीं पड़ी थी। जब हज़ारों खुशामदें कीं, हाथ जोड़े, पाँव पड़े, तब मेरे मैकेवालों ने लड़की दी।

इस पर कामिनी और शिवरानी ने भाई का जुम्बा किया और बड़ी दिल्लगी हुई। कहा—यह क्या कहती हो। ए हम तो वो लोग हैं, अच्छे-अच्छे अपनी लड़कियाँ डाली लगाते हैं। तुम बीवी हो किस ख़याल में!

बुढ़िया—ए तो दुल्हन, हाथी पाले से कोई कंगाल हो जाता है?

कामिनी—(बहुत हँसकर) यह क्या जाने क्या ऊँग रही थी! उलटा समझी।

इन्द्र—इन्होंने इधर-उधर से एक बात पैदा करके यह हाँक लगा दी।

बुढ़िया—इसमें हँसी की कौन बात?

इन्द्र—हाथी तो हमने सुना रनबीर सिंह खुद चला लेता है।

बुढ़िया—हाँ, भैया, वह तो खेदे के शिकार को जात हैं। फीलवान हैं पूरे-पूरे। जंगली हाथी को पकड़ते हैं। नैपाल गये, खेरीगढ़ के जंगल गये, नानपारे के नीचे उतर गये। वह क्या डेरात थोड़ा ही हैं? तोबा, तोबा!

शिव—लो, अब क्या है! मियाँ ठाकुर के ठाकुर, फीलवान के फीलवान!

कामिनी—हाँ, तो लल्लू ठाकुर कोचवान हो गये। अब हम कोचवान लिखा करेंगे।

शिवरानी का पति ठाकुर लाल बहादुर सिंह घोड़े की अच्छी सवारी करता था, और घोड़े और जोड़ी निकालने में भी एक ही था।

शिव—क्यों बुआ, उनके घर की औरतें कैसी हैं? लड़ाका तो नहीं हैं?

बुढ़िया—नहीं बीवी! अरे, बड़ी मिलनसार। घमंड नाम को नहीं! बड़ी देनेवाली। वो जो धन्नो ठकुराइन हैं, वही घर की मलकिन हैं। सास दुखिया कुछ नहीं करतीं। बड़ी भक्तिन हैं। धन्नो दुलहिन तो कामिनी बिटिया को कलेजे में रख लेंगी। हैं बड़ी तेज़। नाक पर मक्खी नहीं बैठने देतीं। उनके सामने किसी की चल नहीं सकती। बड़ी घर-गिरस्त हैं। कमला उनकी नन्द बड़ी हँसमुख लड़की है। अच्छे घर गईं। अल्ला राज करना नसीब करे।

स्मृता—तो आज यह एक नई बात मालूम हुई, कि रनबीर सिंह हाथीवान भी हैं। अच्छा तो है। कामिनी को हौदे पर बिठा लेंगे, और खुद हौदे पर।

बुढ़िया—बिटिया भी 'भैल, बिरी, धत्' सीख जायँगी।

कामिनी—(आहिस्ता से)—तेरी नानी की आँख! लाई वहाँ से 'बिरी धत्त'!

इन्द्र—रनबीर सिंह के यहाँ का हाथी छोटा है।

बुढ़िया—अभी बढ़ेगा। कोई बीस बरस का होगा।

शिव—हाथी की, सुना, उम्र बड़ी होती है।

बुढ़िया—ए बिटिया, सवा सौ बरस तलक जीता है। होता भी तो है ढऊ का ढऊ!

इन्द्र—बहुत से जंगल हैं—हम खेदे में गये हैं। मोरंग, कजली बन, सिलहट, रंगून।

शिव—मस्त हाथी तो सुना खूनी हो जाता है।

इन्द्र—मकना हाथी सबसे ज्यादा उम्र का होता है। उसके दाँत नहीं होते। और इस किस्म के हाथियों के पाठों के दतली निकल आती है।

स्मृता—दतली किसे कहते हैं?

शिवरानी—दतली छोटे-छोटे दाँतों को कहते हैं।

इन्द्र—बस, वह दाँत दूध पीने के वक्त हथनी के चुभते हैं। इससे वह दूध नहीं पिलाती। और ज़्यादा दिन तक दूध पीने से मकना और हाथियों से ज़्यादा ताकतवर हो जाता है; और इसी बायस से हरामज़ादा होता है।

शिव—भई हम तो रनबीर सिंह से कहेंगे, कि भैया हाथी का चलाना छोड़ दो। जोखम है।

इन्द्र—एक बादशाह का हाथी लखनऊ में एक दफ़ा बिगड़ गया। फीलवान बादशाह-पास गये। बादशाह ने जलेबियाँ हाथ में रखीं, और चुमकार के बुलाया। हाथी बकरे की तरह से, बस, कान दबा के आ गया। पकड़ के बाँध दिया।

बुढ़िया—वह कंजल हाथी था। मैंने देखा था।

स्मृता—कंजल हाथी कैसा होता है?

इन्द्र—बहुत बड़े हाथी को कहते हैं।

शिव—यह देव के देव पकड़े क्योंकर जाते हैं?

इन्द्र—सहल तरकीब है। खेदे में आसानी से पकड़ लिये जाते हैं। हाथी के जंगल में शिकार को चले। बीस-पच्चीस, सौ दो सौ हाथी साथ हैं। आदमी और फँदैत बन्दूकें और आतिशबाज़ी लिए हुए हमराह। खबर आई, फलानी झाँकी पर हाथी है। दो-तीन तरफ से लोग बन्दूकें और आतिशबाज़ी ले के पहाड़ पर चढ़ गये; और बन्दूक़ सर की। हाथी घबराया, और भागा। दूसरी तरफ़ से फिर बन्दूक़ चली, और आतिशबाज़ी दोनों तरफ छूटने लगी। अब हाथी और भी परेशान हुआ। बौखला के उस तरफ़ आया जहाँ शिकारी हाथी खड़े हैं। उनके पास से होके निकला, तो दो हाथियों के बीच में आया। अब शिकारी हाथियों पर आगे फीलवान बैठा है, पीछे फँदैत। फँदैतों के पास फंदे होते हैं। इस हाथी के फँदैत ने फंदा मारा, और जंगली हाथी की गर्दन जकड़ गई। और वैसे ही दूसरे हाथी के फँदैत ने फंदा मारा। अब दोनों हाथियों से जंगली हाथी जकड़ गया, और भागा। इधर फीलवानों ने अपने हाथियों को मूगरी से मारना शुरू किया।

शिव—यह क्यों? अपने हाथी को क्यों मारते हैं?

इन्द्र—जिसमें खूब तेज चलें, और उस जंगली को भगा ले जायँ।

स्मृता—और फंदों से गर्दन में फाँसी नहीं लग जाती?

इन्द्र—फंदे अपने क़ाबू में होते हैं। जब चाहा, तंग करके गर्दनें कस दीं और जब चाहा ढीली कर दीं।

कामिनी—और जो जंगली हाथी ज़ोर से भागे, तो फँदैत गिर न जाय?

इन्द्र—फंदों को अपने हाथी की पीठ से बाँध देते हैं। दो हाथियों को एक हाथी क्योंकर खींच ले जायगा? किसी छाल के फंदे होते हैं। बड़े मज़बूत।

कामिनी—भला, मुगरी को हाथी क्या मानते होंगे। वही मुगरियाँ जिससे छत कूटी जाती है?

इन्द्र—इमली की बनी होती है, और उनमें कीलें लगी होती हैं। खैर। बस वह हाथी दौड़ते-दौड़ते थक गया और थक के ठहर गया। हमने भी अपने हाथियों को रोक लिया। वह चरने लगे। और वह भी साथ साथ चरने लगा। फिर उसको थान या पड़ाव पर ले गये। वहाँ अपने हाथी से फंदा खोल के बड़े तनावर दरख़्त से उस फंदे को बांध दिया; और फिर दूसरे हाथी के फंदे को दूसरे दरख़्त से बाँध दिया। अब जंगली हाथी जकड़ा हुआ है।

कामिनी—भाग के कहाँ जाए, और किधर से भागे।

इन्द्र—अब वह भड़क रहा है और बेचैन है। नयी मुसीबत पड़ी है ना। अब उसको सोने नहीं देते।

शिव—यह क्योंकर? हाथी कोई बटेर तो है नहीं, कि रात को कू करके जगा दिया!

बुढ़िया—नगाड़ा बजाते हैं। सोने नहीं पाता। हाथी तो यों भी बहुत से आदमियों में सोता नहीं। अकेले में आराम से सोता है।

इन्द्र—हाँ, बस कई दिन तक जगाया करते हैं। हाथी को सोना हराम हो जाता है। एक तो क़ैद, जिसका आदी नहीं; दूसरे नींद हराम। नशा-सा चढ़ता है। तीसरे, जकड़ा-जकड़ाया; फंदे पड़े होते हैं। चौथे, आदमी और पालू हाथी। खाना न पीना; और हर वक़्त नक़्क़ारे और सूप और आतिश-बाज़ी का सामान।

शिव—देव को क़ाबू में करना है।

कामिनी—जो ज़रा बिगड़ जाए तो फंदा धरा ही रहे।

शिव—आदमी की क्या हक़ीक़त है भला!

बुढ़िया—आदमी उसके आगे एक भुनगा है।

शिव—जब रनवीर हाथी पर फीलवान की जगह बैठते हैं, तो तुम्हारा लड़का भी साथ होता है या अकेले ही चलाते हैं?

बुढ़िया—यह उनके मन की मौज है।

इन्द्र—अजी वह ख़ासा अच्छा फीलवान ख़ुद है।

बुढ़िया—आज तो इधर ही से हाथी पर बाग़ जाएँगे। लड़का मेरा आजकल बीमार है। अपने आप ही हाथी ले जाएँगे और इसी तरफ़ से जाएँगे।

शिव—(इन्द्र से) हम भी देखते, किस वक्त जाएँगे।

बुढ़िया—बस, कोई चार बजे। मैं चुपके से कह जाऊँगी।

शिव—हाँ, मेरी अच्छी बुआ, ज़रूर कह जाना!

बुढ़िया—कह जाऊँगी। पीछे एक चरकटा होगा, पैदल; और आप मस्तक पर। कभी झूल होती है, कभी खाली गद्दी। कभी गंगा जमनी हौदा। कभी सूंड़ पर से चढ़ते हैं। बड़े जियाले हैं।

अब सुनिये, कि ठीक चार बजे वह बुढ़िया आई। कहा—बीवी, हाथी तैयार ड्योढ़ी पर झूम रहा है। अब सरकार बरामद हुआ ही चाहते हैं। शिवरानी और स्मृता और घर की नौकर-चाकर औरतें कोठे पर गईं, और कामिनी को इस बहाने से जगाया कि एक सहगी धूम की निकलने वाली है। कोठे के कमरे पर दोहरी-दोहरी चिकों से देखेंगी।

कामिनी—किसकी सहगी निकलने वाली है, बहन?

शिव—कोई जौहरी है, परागदास।

कामिनी—मालूम होता है, अभी देर है। आवाज़ नहीं आती।

स्मृता—(मुँह फेरकर मुस्कराती हुई) इसमें भी खेदे के पकड़े हुए हाथी होंगे!

शिव—(हँसी ज़ब्त करके) लो! ज़रूर होंगे।

बुढ़िया—वह सहगी क्या, जिसमें हाथी न हों!

शिव—एक निशान का हाथी बरात के आगे-आगे होगा, और पीछे पीछे भी बहुत से हाथी होंगे।

स्मृता—तुम हाथी चला लेती हो, बुआ?

बुढ़िया—हाँ, मैं खेदे से बेफन्दे के हाथी पकड़ लाऊँ।

कामिनी और शिवरानी और स्मृता बहुत हँसी। इतने में बाज़ार से किसी ने बांसुरी बजाई, और बुढ़िया ने कहा 'अब आते होगें' कि वैसे ही हाथी आया।

कामिनी—ऐं। यही सहगी हाथी! वाह!

स्मृता—यह हाथी भी सहगी में जाता है।

कामिनी—अच्छी सहगी है, देखी तेरी कालपी औ' बावन पड़े उजाड़।

जब हाथी क़रीब आया तो ज़रा बिगड़ा। इन सबने देखा कि रनबीर सिंह फ़ीलवान की तरह मस्तक पर सवार हैं। हाथी ज़रा बिगड़ा तो उसने सँभाल लिया। और उसी मुक़ाम पर रोककर इन्द्र बिक्रम सिंह को बुलाया। जब तक आदमी जावे और वह कपड़े पहनें और आयें तब तक सब इस हाथी और इसके फीलवान को देखा कीं। कामिनी ने भी पहचाना, मगर किसी पर ज़ाहिर नहीं

किया। जान-बूझ के बेवकूफ बनी रही। जब इंद्र बिक्रम हाथी पर सवार हो लिये और हाथी रनबीर सिंह ने चलाया तो इधर चुहल की बातें होने लगीं; और कामिनी को सबने छेड़ना शुरू किया। और कामिनी अपने दिल में हँसती थी कि ये अपने जान मुझे बनाती हैं और मैं उनको बनाती हूँ।

स्मृता—फीलवान का लौंडा बड़ा खूबसूरत है।

शिव—कामिनी का ब्याह उससे हो जाय तो कैसा?

कामिनी—(जान बूझकर) क्या तुम को हो गया है! बड़ी बहन होके शरम नहीं आती है; छोटों से दिल्लगी करती हो!

बुढ़िया०—इसमें दिल्लगी की कौन बात है, रानी?

कामिनी—यह बुढ़िया तो और भी बारह बरस की बनी जाती है।

स्मृता—लड़का तो गोरा है। बहुत खूबसूरत।

शिव—हाँ। और कामिनी की और इस फीलवान की जोड़ी भी अच्छी है।

स्मृता—फीलवान-सा मालूम भी नहीं होता।

शिव—हम तो आज इन्द्रजी से कहेंगे कि हमको यह फीलवानवाला बहुत पसन्द है। कामिनी के वास्ते रिश्ता भेजो।

कामिनी—अब मैं उठके चली जाऊँगी।

स्मृता—तुमको इन बातों में क्या दखल है; लड़की की ज़ात को!

कामिनी—बड़ी वो बन के आई हैं।

स्मृता—अच्छा तुमने इस फीलवान को देखा कि नहीं?

कामिनी—फीलवान ऐसे ही होते हैं? मुझे सिड़न बनाती हो? फीलबान मखमल का ऐसा कोट पहनते हैं कहीं?

बुढ़िया—ए रानी-बेटी! हाथी पर जो काम करते हैं उनको सुल्तानी बानात की वर्दियाँ मिलती हैं।

कामिनी—यह बुढ़िया फिर बोली।

स्मृता—अच्छा, फीलवान नहीं, तो फिर कौन है?

कामिनी—किसी बड़े रईस का लड़का मालूम होता है, तुम चाहे फीलवान छोड़के चरकटा बता दो।

इस पर बड़ा फ़रमाइशी क़हक़हा पड़ा। स्मृता और शिवरानी के पेट में बल पड़-पड़ गये। बुढ़िया भी बहुत हँसी। और और वे भी हँसते-हँसते लोट गईं।

स्मृता—यह अच्छी फबती कही। पराये लड़के को कोई ऐसा कहता है?

कामिनी—तुम्हीं यों कहो, तुम्हीं वो कहो।

शिवरानी—अच्छा यह बताओ कि लड़का कैसा है?

कामिनी—मुझे दोहरी-दोहरी चिकों से क्या मालूम होता?

शिव—इसके साथ ब्याह हो तो कैसा?

कामिनी—मुझे हँसते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती?

स्मृता—हँसते ही घर बसते हैं। तुम इसी फीलवान की घर-बसी हो।

कामिनी—तुम आज खूब गालियाँ दो!

बुढ़िया—गालियाँ नहीं, सच कहती हूँ!

शिव—मगर आज तक सिवाय फीलवान के और किसी को मस्तक पर बैठ कर हाथी चलाते न सुना, न देखा।

स्मृता—नई बात तो है।

शिव—कामिनी खूब हाथी पर हवा खाया करेगी।

स्मृता—ले ओ अब फीलवानन बनके भी न हवा खाएगी तो कब खायेगी।

शिव—चलो गई फीलवान को तो क्या हुआ, ऊँची सवारी तो मिली।

स्मृता—और क्या। फीलनशीन तो कहलाएगी।

बुढ़िया—पाठा बड़ी दिल्लगी करता है। अभी बहुत छोटा है। नौ सौ को लिया है। इसमें तीन सौ बीच का दलाल खा गया। अब सवारी होने लगी इस पर। यह जब बहुत छोटा-सा था, तब बिकने आया था। किसी ने मोल न लिया। जब सस्ता मिल जाता। अब दो हाथी हैं। दो आदमी हाथी पर हैं, और दो चरकटे। गाँव से गन्ना कट-कटकर आता है, वही खिलाते हैं। और आठ सेर की रोटी बड़ा पाता है और छै सेर की छोटा। शाम को रोटी दी जाती है। एक-एक रोटी सबेरे के लिये बचा रखते हैं।

रात को कोई आठ बजे के बाद इन्द्र बिक्रम सिंह वापस आये और अपने मकान पर ही उतरे, जब हाथी उनके लिये रोक लिया गया। घर में आये तो शिवरानी ने कहा—मालूम होता है तुम खाना खा के आये हो। नहीं तो तुम और इतनी देर तक बे खाये रहते! इन्द्र बिक्रम ने कहा—हमारे दोस्त ने बाग़ में सबेरे से शाम के खाने का इन्तज़ाम किया था। वह अंग्रेज़ी ख़यालात का आदमी है। खाना-पीना, पोशाक, नौकर, सामान सब अंग्रेज़ी ढंग का। मेज़ पर खाना खाता है; मगर हिन्दू आदमी और नौकर। सब अंग्रेज़ी साफ़-सुथरे कपड़े पहने हुए। मछली पकी थी। बटेर, हिरन के कबाब। हरमुल का कोरमा। दो एक अंग्रेज़ी फ़ैशन के खाने। अच्छा खाने का शौक़ रखता है। कई क़िस्म के मेवे।

शिवरानी ने पूछा—उड़ी भी होगी। उसके बग़ैर तुम्हारे खान्दान के छत्री कब रहने वाले हैं।

इन्द्र बिक्रम ने कहा—वह भी थी, मगर कम-कम, और हलकी विलायती शराब। थोड़ी-थोड़ी, एक ज़रा सरूर के लिये—यह नहीं कि बोतल की बोतल चढ़ा गये।

शिवरानी ने पूछा—हाथी कहीं और तो नहीं बिगड़ा था?

कहा—नहीं बहुत सीधा हाथी है। पूछा—जब एक छोड़ दो हाथीवान हैं तो अपने आप फीलवान बनने से क्या फ़ायदा? मुफ़्त की जोखम।

इन्द्र विक्रम ने कहा—जोखम कुछ भी नहीं है। मश्क है। जिस्म में फ़ुर्ती आती है। कभी घोड़े पर सवार होकर दो-ढाई कोस कड़कड़ा दिया, कभी हाथी पर हवा खाने निकल गये, बिरी-धत करते हुए। फीलवान या चरकटा भी साथ हो लिया।

आराम करने का वक्त आया तो सब अपने-अपने ठिकाने गये। कामिनी लेटे-लेटे सोचा की अब तक तो कुल बातें शादी के सम्बन्ध में मेरी मर्ज़ी के माफ़िक़ हो रही हैं। लड़का ऐसा अच्छा मिला कि शहज़ादियों को भी न मिलेगा। एक तो पढ़ा-लिखा; उजड्ड जाहिल नहीं, दूसरे चाल-चलन अच्छा। हज़ार सिफ़तों की एक सिफ़त तो यह है। और खान्दान का अच्छा। फिर जवाँमर्द छत्री। और ख़यालात उम्दा। खाने-पीने का शौक़। और इस पर लख-लट नहीं। मुझे देख ही चुका है, और न भी देखता तो पसन्द करता। हम दोनों में खूब निभेगी।....सुना तो यही है कि धन्नोरानी बड़ी मिलनसार हँसमुख हैं। ज़रा मिजाज़ की तेज़ तो हैं। इससे मुझे क्या। सुना, उनकी बहन कमला भी सीधी है। हैं-है! अगर मैं किसी जाहिलों के घर जाती, जो औरतों के पढ़ने-लिखने को गुनाह समझते होते, पूरे उजड्ड छत्री होते, कि लड़की मार डालने में ही पुन्न समझते—किसी के साले न बनेंगे!—तो भूत से बत्तर हाल हो जाता। परमेशर ने अच्छी सुन ली। अब मेरे जौहर की, थोड़ा हो या बहुत हो, कहीं क़द्र तो होगी। जैसा मैका है, वैसी ही सुसराल।

इन खयालात में कई मर्तबा करवटें जो बदलीं तो शिवरानी ने एक दफ़ा पूछा—कम्मन, आज तुम्हें नींद नहीं आती? यह क्या बात है, जब मेरी आँख खुली, तुमको जागते ही पाया।

कामिनी—बहन, मैं आज दिन को ज़रा सो गई थी।

शिव—हाँ, जब ही करवटें बदल रही हो। सोने का ध्यान करो।

कामिनी—सो रहूँगी। कुछ बेचैन थोड़ा ही हूँ।

इतने में बारह पर दो बजे।

शिवरानी—अरे, दो बज गये!

कामिनी—हाँ, एक जब बजा तो हमने सुना था।

और एक—दो बजने को कोई दो मिनट गुज़रे हुए होंगे, इतने में कमरे की क्लाक घड़ी में भी दो बजे। कामिनी ने कहा—बस यही घंटा ठीक दो बजे—और वह दो-चार मिनट उधर क्या और इधर क्या—दो का वक़्त है।

शिवरानी—बारह पर दो बजे। अब सो रहो।

एक रोज़ कामिनी के चचा की लड़की राधिका, जो सिन में कामिनी से कोई दो-डेढ़ बरस बड़ी होगी, देहली से, जहाँ वह ब्याही थी, अपने चचा

गजराज सिंह के यहाँ यानी अपने मायके आई। राधिका कई बरस के बाद मायके आयी थी। कामिनी की हमजोली साथ खेली हुई तो थी ही, अकेले में इन दोनों की बातें हुईं।

राधिका—कामिनी, जब मैंने सुना कि कामिनी की शादी होनेवाली है तो खुशी तो हुई, मगर सोचती थी कि क्या जाने दूल्हा कैसा हो, सास से कामिनी की बने, न बने। अच्छा घर है, कि बुरा घर है। एक दिन मेरी सास ने कहा कि बहू, तेरी बहन ऐसे अच्छे घर जाती है कि राज करेगी; एक और बात यह है कि ऐसा लड़का न मिलेगा। उसने लड़के की इतनी तारीफ की कि मेरा जी खुश हो गया [illegible]ह तारीफ़ें करती थी और मेरा कलेजा हाथ भर का हुआ जाता था। उसने कहा, बलज़ोर सिंह का घर बड़ा भरा-पूरा घर है। दूध-पूत, धन-दौलत सब है; और इस लड़के की निस्बत कहा कि मालूम होता है कि जैसे नारायन ने अपने हाथों बनाया है। नारायन का सरूप है और असल छत्री।

कामिनी—बहन, पहले तो मुझे एक ऐसे खूँटे बाँधे देती थीं, जो गँवार का लट्ठ और उजड्ड, मूरख जाहिल है। सुनते ही मेरे दिल पर ऐसा असर हुआ कि बेक़ाबू हो गया, बिलकुल, और हाथ से जाता रहा। सोचती थीं कि हे परमेश्वर अब क्या करूँ, किससे कहूँ! कौन बचानेवाला है।

राधिका—ग़ज़ब ही हो गया था। हमें सुनकर रंज हुआ । यह इनको सूझी क्या थी?

कामिनी—भाई लड़ते थे कि हम ऐसे जाहिल को न देंगे। मगर और कोई उनकी तरफ से नहीं बोलता था। सबने एका कर लिया था। मैं दिन-रात रोया करती थी।

राधिका—वह था कौन, और इन सबको आखिर हो क्या गया था? जान-बूझ के झोंके देते थे। बड़ा ही गजब हो गया था। मैंने भी कुछ-कुछ सुना था।

कामिनी—मैं तो बिलकुल सिड़न हो गई थी। होश बाकी नहीं थे। मुझे अपना हाल अच्छी तरह याद भी नहीं है, कि मैं क्या सिड़नपन करती थी और किस तरह रहती थी।

राधिका—अब उसका ज़िक्र ही न करो। मैं लड़के को देखती। मगर कहाँ से देख सकूंगी। बड़ी तारीफ़ सुनी है। अब देख ही लेंगे। कोई जल्दी थोड़ा ही है।

कामिनी—एक बात कहूँ?—नं कहूँगी!

राधिका—कहो, कहो। मेरा मुर्दा देखे, जो न कहे। बता।—अब यही तो बुरा मालूम होता है, बस, हाँ। क्या?

कामिनी—तुम कहीं कह दो तो मुझे बराबरवालियाँ बनाने लगें; और मुझे शर्म आये।

राधिका—तुम सिड़न हो। बताओ, कलेजा न पकाओ। अच्छी बात का छिपाना क्या?

कामिनी—मैं देख चुकी हूँ:

राधिका—हाँ ? (खुश होकर) कहाँ देखा ? रास्ते में जाते हुए ?

कामिनी—यह न बताऊँगी। बस इतना कह दिया, कि मैं देख चुकी हूँ।

राधिका—अच्छा यह बताओ कि है कैसा ? जैसी तारीफ़ सुनी वैसा ही है ना ?

कामिनी—बेशक है। बल्कि जो सुना, उससे अच्छा, और कहीं अच्छा। सच यों है, कि तारीफ नहीं कर सकती। एक अच्छा और एक बहुत अच्छा। मैं, तो बस देख के दंग हो गई।

राधिका—बड़ा जी खुश हुआ। भला, लाडली का-सा है ? उम्र में तो लाडली बड़ा है, मगर शकल-सूरत उसी की-सी है या नहीं ?

कामिनी—अरी बहन, लाडली कौन चीज़ है। लाडली की अस्ल हक़ीक़त क्या है ? लाडली उसके मुक़ाबिल में कोई चीज़ नहीं है। मैंने तो ऐसा देखा नहीं।

राधिका—हाँ ? अच्छा ? अब यह भी बता दे कि कहाँ देखा, क्योंकर देखा, किसने दिखाया।

कामिनी—इधर से हाथी पर सवार होकर जाता था। मुझे इन सबने दिखाया। अपने जान तो चकमा देते थे, मगर मैं ताड़ गई। उन्होंने अपने नज़दीक मुझको चकमा दिया और मैंने उनको चकमा दिया। मैं तो दिलो-जान से चाहती थी कि किसी तरह देखूँ। मुझसे कहा, कामिनी, यहाँ चिक के पास आओ, देखो, एक हाथी जाता है। पहले तो आपस में कुछ काना-फूसी की। मैंने सुन लिया—दो हाथी हैं। और एक नई बात यह सुनी कि हाथी वह खुद चलाता है। और सुना क्या मानी, अपनी आँखों देखा। भाई को लेने आया था। यहाँ हाथी को ठहरा लिया। भाई भी सवार हो लिये। भाई से बड़ी दोस्ती है।

राधिका—यह कहो, तो तुम देख चुकी हो।

कामिनी—हाँ, देख चुकी हूँ। और न कहूँगी।

राधिका—बस यही तो ऐब है। मैं मार बैठूँगी। मुझसे क्यों छिपाती है। मुझे उलझन होती है। मैं जो कोई अच्छी बात सुनूँगी तो खुश हूँगी कि बुरा मानूँगी ?

कामिनी—खुश होगी।

राधिका—ए तो फिर इतना छिपाती क्यों थी ?

कामिनी—शर्म आती थी।

राधिका—वाह री शर्म। अच्छी शर्म है। और शर्म किससे, मुझसे। वाह, यह भी कोई बात है।

कामिनी—राजदुलारी को बुलवाते।

राधिका—बुलाओ।

कामिनी—मगर वहाँ कई और भी बराबरवालियाँ हैं। बराबर बराबर की हमजोलियाँ।

राधिका—कमला को तुम जानती हो?

कामिनी—मुझे क्या मालूम?

राधिका—अच्छी औरत है।

कामिनी—वह कौन है?

राधिका—तुम्हारी ननद।

इतने में किसी ने एक गीत की तान छेड़ी।

कामिनी—नींद आती है।

राधिका—अब रात को सोना।

कामिनी—जब हाथी को देखा तो जी खुश हो गया। उनमें से एक बोली, हमारी शादी न हुई होती तो हम माँ-बाप से कहते कि इसी के साथ हमारा ब्याह हो। दूसरी बोली, जो औरत इसको ब्याह के जाय, वह बड़ी खुशनसीब है।

राधिका—उसने तुझको नहीं देखा?

कामिनी—नहीं! वह कहाँ से देखते। मैंने खूब गौर से देखा, और सच यह है कि कोई ऐसी ही बड़ी वह हो तो हो, नहीं तो इसमें कोई शक नहीं, बहन, कि अगर देखो तो जी चाहे कि उम्र भर देखा ही करो। और सच तो यह है कि अँधेरे-उजाले अगर लिपटा भी ले तो चूँ न करो, पी जाओ; मैं सच कहती हूँ।

राधिका—तुम तो रीझ गईं।

कामिनी—और क्या तुम न रीझ जाओ! हज़ार जान से आशिक़ न हो जाओ तो सही।

राधिका—जो तुम्हारा प्यारा है वह हमारा प्यारा है।

कामिनी—घरू तक रीझी।

राधिका—ए घरू सुई काहे में है। जब तुम्हारी-सी खूबसूरत चाँद-सी लड़की देखते ही रीझ गई तो और की कौन कहे। और घरू कम्बख्त काहे में है!

कामिनी—हाथ-पाँव ऐसे सुडौल हैं कि मैं क्या कहूँ—देखने से ताल्लुक़ रखता है।

राधिका—उम्र क्या है?

कामिनी—ए होगा यही कोई बीस-इक्कीस बरस का।

राधिका—जोड़ अच्छी है, इसमें शक नहीं।

——:०:——

आठवाँ अध्याय

ऐन किरयाल में गल्ला।

एक रोज़ एक पुरानी नाउन ने शिवरानी से पूछा कि कामिनी बीबी के ब्याह का क्या हुआ। शिवरानी ने उस नाउन से कहा—कामिनी का ब्याह तो ठीक-ठाक हो गया; अब पंडित साइत देख दें तो शुभ घड़ी भँवरी फेरी जावे। नाउन धक् से रह गयी। पूछा, दूल्हा यहीं है, या कहीं बाहर। मालूम हुआ कि यहीं है। नाउन ने खोद-खोद के पूछना शुरू किया। शिवरानी को क्या मालूम था कि यह किस फेर में आई है। सब हाल साफ-साफ बता दिया। उसने सुनकर ज़रा नाक-भौं चढ़ाई, तो शिवरानी ताड़ गई कि कुछ दाल में काला ज़रूर है। यह नाक-भौं चढ़ाना बेसबब नहीं है। इसमें कोई न कोई भेद है। नाउन से बातों-बातों में यह भी ज़िक्र किया कि सुनती हूँ, लड़का बहुत खूबसूरत है और हाथ-पाँव सुडौल हैं। उसने भी तारीफ़ की कि लड़के के अच्छे होने में कोई शक नहीं, मगर एक बात बुरी है। शिवरानी को अब मजबूर होकर पूछना पड़ा कि वह बात क्या है। नाउन बोली—ए बीबी, मैं क्यों बीच में बुरी बनूँ। आप लोग अपने आप दरयाफ़्त कर लीजिए। मैं परजा, आप राजा। आप की जड़ बुरी करूँ, सबसे बुरी बनूँ। रही-सही जजमानी भी जाय। शिवरानी ने बड़ा इसरार किया, बहुत-सी क़समें दीं, और वादा किया कि भरपूर इनाम दूँगी। इस पर नाउन ने कहा—ऐ बीबी, देखने में तो लड़का बहुत अच्छा है। मगर दो बड़े ऐब हैं। एक तो, थू! थू! —मिरगी आती है। दूसरे खूनी बवासीर है। और तीसरा बहुत बुरा ऐब यह है कि जुलाहिन, चमारिन, गड़िन-बेड़िन किसी पर बन्द नहीं। कोई हो! अब आजकल एक घोसिन आती जाती है। गोरी-सी; लाम्बी-लाम्बी। सैकड़ों ही रुपये उसको खिला दिये, और खिलाता है, और वह चैन करती है। तुमने देखी होगी। दूध बेचने के बहाने जाती है। कहो तो मैं आज ही शाम को दिखा दूँ। बस कोई दो घड़ी में वहाँ जायगी, और आठ-नौ बजे उसके घर से अपने घर जायगी। उसका मर्द जाता रहा है। शिवरानी को ये ख़बरें सुनकर रंज हुआ। कुछ देर दिल में सोचा कि इन्द्र विक्रम और चचा से कहें कि दरयाफ़्त तो करें; मगर ख़याल हुआ कि शायद झूठ हो, पहले उस घोसिन को तो आने दो। उसकी चाल-ढाल से ही मालूम हो जायगा। नाउन को इजाज़त दी कि घोसिन को लेकर बगिया के दरवाजे की तरफ से आना, उधर से न आना। जब वह चली गई तो स्मृता ने आके पूछा—भाभी, आज इस नाउन से क्या सलाह-मशिवरे हो रहे थे। घंटों बातें

ख़त्म ही न हुई। शिवरानी ने सब हाल बताया, और क़स्में देकर कहा, किसी से कहना नहीं; अभी ज़बान से न निकालना, वह घोसिन आये तो बातों-बातों में उससे पूछेंगे। चलो बगिया में बैठें। एकान्त में स्मृता और शिवरानी बगिया में गईं और घर की तरफ का बगिया का दरवाज़ा बन्द कर लिया, जिसमें और कोई न सुने, और घोसिन और नाउन की राह देखने लगीं। नाउन अपने वादे पर ही आई और घोसिन को साथ लाई। घोसिन कोई बीस बरस की औरत बड़ी गोरी-चिट्टी, गोल बदन, लम्बा क़द; सफेद बगुले के पर की-सी धोती, जिसका काला, चौड़ा-चौड़ा किनारा था, पहने हुए आई। दूध की मटकी सर पर। शिवरानी ने कहा—घोसिन, तू बड़े सलीक़े से रहती है। वह मुस्कराकर बोली—सरकार ही लोगों की बदौलत अपना और गोरु का पेट पालते हैं। मैं अकेली घर में हूँ। एक आदमी को नौकर रख लिया है। वह बैलों-गायों की सेवा करता है। मैं दूध दही मलाई बेच के आध सेर आटा पैदा करती हूँ, और पड़कर अपने घर सो रहती हूँ। किसी न किसी तदबीर से पेट पालती हूँ।

शिवरानी ने जो उसको ग़ौर करके देखा, तो यक़ीन हो गया कि औरत बाँकी है। पूछा—तुम्हारे यहाँ गाय ज्यादा हैं कि भैंस?

घोसिन—भैंस कोई नहीं है। दो जोड़ी गोंईं से खेती होती है, और गैयन का दूध-दही खिलाती हूँ।

शिव०—यह दूध कहाँ लिये जाती है?

घोसिन—ए बहू, यह रातब है। सेर भर दूध ठाकुर के बेटवा के लियें शाम को जात है।

शिव०—कौन ठाकुर के बेटवा?

घोसिन—रनबीर सिंह नाम है।

शिव०—उनकी औरत कहाँ है, घर ही में रहती है?

घोसिन—उनका तो बिया ही नहीं हुआ। धन्नो ठकुराइन उनकी बड़ी भावज हैं।

शिव०—धन्नो कितना दूध रोज लेती हैं?

घोसिन—वह हमको अन्दर जाने नहीं देतीं। कहती हैं, यह रनबीर सिंह की दुल्हन है, और जाने क्या औल-फौल लगाती हैं। एक दिन मैं गई थी, कहने लगीं—जा, जा, हमको ऐसी बाँकी घोसिन नहीं चाहिए।

स्मृता—तुम्हारा मियाँ तो है नहीं, फिर तुम यह बन-ठन के क्यों रहती हो? मिस्सी की धँड़ी भी जमी है, और सुर्मा भी आँखों में लगा है और मेंहदी भी रची हुई है। घोसिन तो मालूम ही नहीं होतीं।

घोसिन—ए बहू, हमको भी पहनने-ओढ़ने का शौक़ है। मर्द नहीं रहा, नहीं सही। हम मर जाते तो वह क्या करता, दूसरी करता या न करता? हमको जब हँसने-बोलने को उससे अच्छे मिलते हैं तो हम घोसी काहे को ढूंढ़ें।

स्मृता—इससे तो दाल में काला-काला पाया जाता है। रनबीर सिंह से साँठ-गाँठ ज़रूर है।

घोसिन—बीवी, लो अब हम किसी बड़के आदमी को किस तरह न चाहा करें। वह तो मेरे ऊपर जान देत हैं। कोई सत्तर का महीना पड़ जाता है। फिर मैं उनको छोड़ के कहाँ जाऊँ। भला घोसी दाढ़ीजार क्या खाके देगा ?

शिव०—रोज जाती है ?

घोसिन—रस्सिया तुड़ा के वह तो मुझे घर डाले लेता है !

शिव०—और औरतें भी आती होंगी।

घोसिन—और कोई आये तो लहू पी लूँ। ब्याह करने का था, मैंने जाके कह दिया कि अपना और उस लड़की का लहू-पसीना एक करूँगी। हाथ जोड़ के कहने लगा कि वह लौंडी, तुम रानी होके रहना। हमने कहा, बस उसका नाम न लेना।

शिव०—ब्याह कहाँ होने को था ?

घोसिन—कोई ठाकुर हैं।

स्मृता—तो तुम शादी नहीं होने देतीं !

घोसिन—कभी न होने दूँगी। और जो होगी, तो मैं भी घर पड़ जाऊँगी, और आधा-आधा बटा लूँगी। औलाद तो उसके उस जोरू से होगी नहीं। मिरगी की बीमारी है। और मैं कहीं न कहीं से औलाद की फिक्र कर लूँगी। ले, अब देर हो गई, जाने दीजिए। वह अमरैयों के तले सैकड़ों चकफेरियाँ कर चुका होगा और बहुत झल्लाएगा। फिर हाथ जोड़ेगा और कसमें लेगा। कल फिर आऊँगी।

यह तो उधर चलती बनी इधर नाइन ने कहा—सुन लिया, बीवी ?

शिवरानी ने कहा—हाँ, सुना। औरत बड़ी निधड़क और बेहया है।

नाउन बोली—उनका काम ही यह है। ये तो लश्कर के साथ रहनेवालियाँ हैं।

स्मृता ने कहा—मगर है अच्छी; बुरी नहीं है।

इतने में नाउन भी उठकर चल दी। और शिवरानी और स्मृता ने बगिया का दरवाज़ा खोला तो स्मृता को उसके पति इन्द्रविक्रम सिंह ने देखा। उसको यह नहीं मालूम था कि उसकी बहन शिवरानी भी वहीं थी। दिल्लगी-दिल्लगी में बीवी के कान में कहा—मालूम होता है किसी मर्द को इस बगिया में बुलाया था, जभी दरवाज़ा बन्द कर लिया। वह मुस्कराकर बोली—भैना से पूछो अपनी; उन्होंने ही किसी अपने अगले-पिछले को बुलाया होगा। शिवरानी को जो बगिया के अन्दर जाके देखा तो झेंप गया और सोचा कि बीवी बहुत तेज कह गई। और इधर स्मृता ने और ज़्यादा झेंपाने के लिये शिवरानी से कहा—अरे भाई देखो, तुम्हारे कुलतारक छोटे भाई क्या पूछते हैं; कुछ शक

हुआ है। मियाँ और भी झेंपे। कहा—नहीं, मैं कुछ नहीं पूछता। न बड़े का लिहाज, न छोटे का।

स्मृता बोली—फिर ऐसी बात क्यों कही? और लिहाज जो तुम्हारे घर में सबने भून खाया है। हम भी वैसे ही हो गये।

शिवरानी—वाह, भैया, वाह! अच्छे घर कामिनी को झोंका था।

इन्द्र—क्यों, क्यों खैर तो? यह क्या बात हुई?

स्मृता—कामिनी का परमेशर ही मालिक है। बड़े-बूढ़ों ने ढील दे दी, और छोटों का यह हाल है। कितनी तारीफ़ें थीं। ऐसा है और ऐसा है। आज सब सुन लिया।

इन्द्र—अरे भाई, कुछ कहोगी भी?

स्मृता—उसको कोई बीमारी है?

इन्द्र—किसको? रनबीर को? ठाकुरों में तो कोई ऐसा तन्दुरुस्त आदमी नहीं। यह तुमने क्या सपना देखा?

शिव—सपना नहीं देखा। कानों से सुना और उसका सबूत हो गया।

स्मृता—ये सपना ही लिये फिरते हैं।

इन्द्र—अच्छी पहेलियाँ बुझवाती हो, वाह! जिसका सर, न पैर। ऊल-जलूल।

शिव—अच्छा, इसी बात पर जाके देखो तो वह लड़का इस वक़्त क्या करता है। दौड़ते जाओ।

इन्द्र—अच्छा, यह माना।

रास्ते में सोचा कि इसके मानी क्या! इन्द्र बिक्रम ने वहाँ जाकर सुना, कल से गुमान सिंह तहसीलदार के घर पर हैं। वहाँ गये—सलामालेकुम, कल से कहाँ हो, मियाँ!

रनबीर—अजी एक बेगार में फँसे हैं। मरदुम शुमारी का झगड़ा है। उसी में हम भी मदद दे रहे हैं।

थोड़ी देर बैठकर यह चला आया, और आके सब हाल कहा, और क़समें खायीं कि लड़का अच्छा है।

शिवरानी—अजी लड़का चाहे करोड़ों रुपयों में तोलने के काबिल हो, इससे क्या होता है। जब मिरगी आती है और खूनी बवासीर है तो लड़की को भाड़ में तो झोंका न जायगा।

शिवरानी—परमेशर ने बहुत बचाया। हमारी आबरू रख ली। नहीं, हम तो कामिनी को दे ही चले थे। कामिनी तो दुश्मनों को गई ही गुजरी थी। अपनी क़िस्मत से बच गई। यों तो कोई क्या जानता है कि किसके करमों में क्या बंदा है। मगर जान-बूझके तो कोई अपने बच्चे को झोंक नहीं देता।

खैर! इन्द्र बिक्रमसिंह तो कलकत्ते चले गये, इधर हँडिया पकने लगी। गजराज सिंह ने भी सुना और एक हफ़्ते के अन्दर ही अन्दर कुछ औरतों को बलजोर सिंह के यहाँ भेजा कि इधर-उधर की बातें करके यह ज़िक्र भी छेड़ें कि गजराज सिंह ठाकुर तो कहते हैं कि हम अपनी लड़की बलजोर सिंह के यहाँ न देंगे। इन औरतों ने यही जाके कहा। कोई आज गई, कोई कल गई। इसी तरह कई औरतें गईं, और सबने यही कहा। तब तो धन्नो चकराईं कि यह क्या बात है। उनके यहाँ एक बूढ़ा होमी कल्यान नाम का नौकर था। उसका लड़का गजराज सिंह के यहाँ माली था। धन्नो ने टोह लेने के लिये उसको भेजा। उसने आन के कहा कि ख़ैर, ठीक है; यहाँ वह लड़की न देंगे। धन्नो ने जैनव की माँ को कहला भेजा। उसने भी अफ़सोस के साथ आके यही कहा। धन्नो को बड़ा रंज हुआ। इत्तफ़ाक़ से उसी वक्त रँनबीर सिंह बाहर से आये, और धन्नो कुछ कहने भी न पाई थीं कि उसने खुद हसरत के साथ कहा—लो भाभी, हमारी शादी का तो फटाका हो गया। धन्नो ने कहा—हम सात-आठ दिन से सुन रहे हैं। खाना-पीना हराम हो गया। रनबीर सिंह ने एक ठंडी साँस भरी और चले गये। सब मामला भरभंड हो गया था।

बना बनाया घर ही बिगड़ गया शेख़ चिल्ली का! मनसूबा होकर बिगड़ गया था। मगर बड़ी खेरियत की बात हुई। सिविल सर्जन ने एक दफा खुद गजराज सिंह से बातों-बातों में कहा कि आपके ठाकुरों में रनबीर सिंह नाम का जो लड़का है, उससे बढ़ के तवाना तो इस शहर भर में कोई भी नहीं है। गजराज सिंह ने बहुत से सवाल किये तो पूरा-पूरा यक़ीन हो गया कि जो हमने सुना था वह ग़लत है। आके बीवी से कहा। वह बड़ी खुश हुई। इतने में कामिनी की खुशनसीबी से इन्द्रबिक्रम सिंह का ख़त आया कि वह नाउन कुटनी है और ठाकुर जगजीत सिंह डाकू का लड़का उसको पढ़ा-पढ़ाकर भेजता है, ताकि कामिनी का ब्याह उसके साथ हो जाय। औरतों ने जो खोज-बीन की तो यह खबर सही निकली, और नाउन को एक रोज इस क़दर ज़लील किया और इतना बुरा-भला कहा कि फिर कभी उसने मुँह न दिखाया और जब बाहर निकली तो एक ठाकुर ने अँधेरे में नाक उड़ा दी—हात्तेरे की! और सारे शहर में उसके कुटनेपने का हाल मालूम हो गया। और गजराज सिंह ने खुद बलज़ोर सिंह के पास आके उनसे कहा कि बहादुरों और मर्दों का क़ौल वह होता है कि जान से फिर जायँ, मगर क़ौल से न फिरें। हमने लड़की आपके यहाँ दी, और आपके नामी-गरामी घराने से जो पैवन्द हमसे हुआ वह हमारे लिये बड़े भारी फख्र की बात है।

——:o:——

नवाँ अध्याय

परियों का झुरमुट

फूल खिले, फले शजर ; अब्र उठा, हवा चली।
आ गई फस्ले-नौबहार—अक़्ल पियादा-पा चली।

—पियादे के पाँव से चली तो कहाँ पहुँची? सीधी ठाकुर गजराज सिंह के मकान पर। ठाकुर गजराज सिंह का मकान आज परिस्तान बना हुआ है। सारी खुदाई की परियों का आज यहाँ झुरमुट है। परिस्तान की परियों को भी शरमानेवाली परियों का आज यहाँ जुटाव है। इन्द्र के अखाड़े की जितनी थीं, सबका आज यहीं जमाव है।

यह झुरमुट और जमाव और जुटाव बेवजह नहीं हो सकता। इसकी कोई ख़ास वजह जरूर है। वह वजह यह है कि जब कामिनी के दिल पर बड़ा धक्का पड़ा था, जब उसका सोना-खाना हराम था, और अगर सोती भी थी तो सोते से चौंक-चौंक पड़ती थी, जब कामिनी अपने आपे में न थी, जब कामिनी बिलकुल बेबस और बिलकुल बेकस हो गई थी, जब उसको खुदा जाने क्या हो गया था, जब कामिनी कभी रोते-रोते आँसुओं का तार बाँध देती थी और कभी आप ही आप बश्शाश होकर, हँस देती थी, मगर किसी की समझ में नहीं आता था कि इस बेमहल हँसने-रोने का सबब क्या है, जब कामिनी की सारी शोखियाँ वहशत से बदल गई थीं, जब कामिनी-सी परी, कामिनी-सी हूर की सूरत ऐसी भयानक हो गई थी कि देखने से डर मालूम होता था—वह कामिनी जिसको एक बार देखने से इन्सान की भूख-प्यास बन्द हो जाती थी, उसी कामिनी की अब यह कैफियत है कि सूरत देखने को जी नहीं चाहता; वह कामिनी, जो हरदम हँसती और हँसाती रहती थी, अब अगर उससे पूछिये कि इस आह भरने और आँसू बहाने का सबब क्या है, तो अपने टूटे हुए और दुखी दिल से यही जवाब देती—

दिल में इक दर्द उठा, आँखों में आँसू भर आए ;
बैठे-बैठे हमें क्या जानिये क्या याद आया!

वह कामिनी जो चुलबुलाहट और शोखी के मारे एकदम कहीं नहीं बैठती थी अब घंटों जहाँ बैठ जाती है, वहाँ से हिलती नहीं।

यह उस ज़माने का ज़िक्र है जब कामिनी को आशिकी-माशूकी से कोई बहस न थी, यानी जब दुश्मनों के नसीब से कामिनी बीमार हो गई थी, और उसकी माँ ने मिन्नत मानी थी कि जिस रोज नीलकण्ठ देखूंगी, उसके

सातवें दिन बलिदान करूँगी और बहुओं-बेटियों, लड़कों-बालों को बुलवाकर खाये-पियेंगे—आज वही मुबारक रोज़ है और शुभ दिन है। यह जलसा भी यादगार रहेगा। इस रोज़ जो कमसिन बराबरवालियाँ बन-ठन के आई थीं, उनका हाल सुनिये।

शिवरानी निहायत ही नमकीन औरत। सिन कोई चौबीस बरस का। लड़कौरी; मगर काठी ग़ज़ब की पाई थी। ज़ेवर से गोंदनी की तरह लदी हुई। सर से पाँव तक गहना। बेटी भी मालदार की, बहू भी मालदार की। उसके रूप और निखार की बड़ी धूम थी।

स्मृता जवान कमसिन, कोई उन्नीसवाँ साल, लाम्बा क़द, परीज़ाद। उसकी चाल ग़ज़ब की थी—इस तरह झूमती हुई चलती थी कि जो देखता था उसका जी खुश हो जाता था।

लाडो, पन्द्रह साल की। एक-एक अदा दिल में खुब जानेवाली। ग़ज़ब की शोख़ी। बोटी-बोटी फड़कती थी। दम-भर एक जगह नहीं बैठती थी। पारे की ख़ासियत। और बड़ी हाज़िर-जवाब, तेज़ तबीअत।

जन्नो, बड़ी प्यारी छोकरी। अंग-अंग साँचे का ढला हुआ; प्यार करने के क़ाबिल। बीस बरस का सिन; मुरादों के दिन।

केसर, बाइसवाँ साल। मियाना क़द; गेहुँआ रंग, नमकीनी और बाँकपन लिये हुए—जिस वक़्त सीना उभारके चलती थी, एक आलम को क़त्ल करती थी। हर घड़ी कंघी-चोटी से दुरुस्त। उसके शौहर की उस पर जान जाती थी। ज़ुल्फ सियाह, काली जैसे भँवरा। एड़ी तक लटकती हुई उसकी चोटी की सजधज बिरादरी भर में मशहूर थी।

मोती, पच्चीस बरस का सिन, छै बच्चों की माँ। इसी सबब से उम्र के दिन की दोपहर ढल गई थी। मगर चुलबुलापन ग़ज़ब का था; बल्कि उम्र के साथ वह भी दूनी तरक़्क़ी करता जाता था। हर बात में चुलबुलापन। अपना मर्द मुट्ठी में था। उसके सामने मियाँ की एक नहीं चलती थी। मर्दों से बात-चीत करने हँसी-मज़ाक़-दिल्लगी चुहल में बन्द नहीं। इत्र की बड़ी शौकीन। आज इत्र-रूह-ख़स दस रुपये तोलेवाला लगाके आई थीं। जिस रास्ते से आई, महक गया। दूर तक लपटें आती थीं। कई नौकरानियाँ साथ थीं। जहाँ जाती थी बड़े ठस्से से जाती थी।

कुन्दन, चौदह बरस की उम्र, नाज़ुक बदन, मस्त चाल, पिस्ता से होंठ।

खुमारी की अँखियाँ, वो अँगड़ाइयाँ।
वो जोबन के आलम में सरसाइयाँ॥

पद्मिनी, बाईसवाँ साल। इनके हुस्न के चर्चे थे। दिलरुबा; हर बात में बर्क़; ख़ूबियों की खान। गोरे-गोरे गाल, लम्बे-लम्बे बाल। भड़कीली सजधज,

इत्र की बू-बास। गम्भीर कुछ ज्यादा, शोख़ कम ; मगर सूरत देखने के क़ाबिल। बदन आइना-सा दमकता हुआ ; गुलेबाग़े-खूबी लहकता हुआ।

सीता, रँगीली, सजीली, नुकीली छैल-छबीली। उससे ज्यादा बाँकी अदा किसी की न थी, उसके बाँकपन की क़सम खानी चाहिए। वज़ा बिलकुल सादी। ज़ेवर क़ीमती, मगर कम। पोशाक बहुत उम्दा, मगर सूफ़ियानापन लिये हुए। रंग खिलता हुआ। इनके मियाँ को पर्दे का बड़ा ख़याल था।

तारा, हसीन मगर भद्दी, थुलथुल। चेहरा चूमने के क़ाबिल, सुर्ख़-सफ़ेद। मर्दों को घूरने की शौक़ीन, मगर बद नहीं। हँसमुख। ठठोल हर बात में, एक नज़ाकत के साथ; मगर बदन की भारी।

बड़ी बूढ़ी और अधेड़ औरतें तो मकान में रहीं, मगर ये कमसिन नौ उम्र बाग़ में आयीं। बाग़ मकान से मिला था। पक्की चारदीवारी, हर क़िस्म के मेवों के दरख़्त। दूब बड़े सलीक़े और ख़ुशनुमाई से जमी हुई ; हरी-हरी घास। तालाब छलकता हुआ, पक्का। लाल-लाल मछलियाँ कसरत से।

लाडो—सुमिरता बहन की चाल कैसी मस्त है। यह मालूम होता है कि मुरैला बदली देखके बाग़ में झूमता चलता है।

केसर—हाँ, क्या अच्छी चाल है। एक बात कहूँ?—न कहूँगी।

लाडो—न कहे तो हमारा ही मुर्दा देखे।

केसर—और जो न कहने की बात हो?

लाडो—(शोख़ी के साथ गुदगुदाकर) कहो, कहो। मैं एक न मानूँगी।

केसर—(मारे हँसी के बुरा हाल था) कहती हूँ, दम तो लेने दो।

लाडो—अच्छा कहो!

केसर—वह एक दिन कहते थे कि जब मैं इन्द्र बिक्रम सिंह की बीबी को चलते हुए देखता हूँ तो जी ख़ुश हो जाता है और घंटों घूरने को जी चाहता है! यह मालूम होता है कि मोर झूमके चल रहा है।

मोती—यह कहो! मैं तो तुम्हारे मियाँ को बड़ा सीधा समझती थी। यह तो अब मालूम हुआ कि इस क़िस्म के आदमी हैं।

स्मृता—और हमारे मियाँ हमसे कहते थे कि जब केसर सीना उभारके और तनके और बनके चलती है तो मेरा बेअख़्तियार जी चाहता है कि गले से लगा लूँ।

इस पर बड़ा क़हक़हा पड़ा।

मोती—अच्छा तो इससे मालूम हुआ कि केसर के मियाँ सुमिरिता पर रीझे हुए हैं, और सुमिरता के मियाँ केसर पर।

लाडो—हर्ज क्या है। दोनों तरफ़ बराबर हो गया ; अब काहे का गिला।

मोती—हमारे मियाँ जो किसी औरत पर रीझें तो हम साफ़-साफ़ कह दें कि तुमको वह औरत मुबारक—हमको अख़्तियार है—

केसर—अरे, तुम जो न करो वह थोड़ा।

मोती—मेरे मियाँ तुम्हारी चोटी पर आशिक़ हैं। कहते थे कि केसर की-सी चोटी, देखी न सुनी।

बन्नू—चोटी तो इनकी अच्छी है, मगर ये बनाती-सजाती भी खूब हैं। इतनी लम्बी चोटी यहाँ किसी की न होगी। और यों तो हम सब जवान हैं, कोई बुढ़िया नहीं। मगर जितनी केसर की चोटी काली है, उतनी किसी की नहीं है।

लाडो—यह तुमने क्या कहा, कि यहाँ कोई बुढ़िया नहीं। और यह (मोटी की तरफ इशारा करके) किन जवानों में जवान हैं?

शिव—ये तो कुछ ऐसी बूढ़ी जप्पट हो गई हैं कि सचमुच अधेड़ मालूम होने लगी हैं। मेरी इनकी उम्र एक है।

बन्नू—अरे! तुम तो अभी खासी जवान हो। इनमें तुममें दुनिया का फ़र्क़ है; मगर चुलबुलापन नहीं गया है!

केसर—ये इत्र कहाँ से मँगवाती हैं? हम चाहे जितना ख़र्च करें हमें ऐसा इत्र नहीं मिलता। यह खस का इत्र इस वक़्त सितम ढा रहा है। बाग़ भर महक गया।

पद्मिनी—मैं जानती हूँ, ये घर में खिंचवाती हैं।

केसर—सुमिरता, हम तुम्हारे हाथ जोड़ते हैं, एक दफ़ा हमारे मियाँ के सामने खूब मस्त होके अकड़ती हुई चलो।

सुमिरता—हाँ, और हम तुम्हारे पाँव पड़ते हैं जरा हमारे मियाँ को एक दिन अपनी चोटी को चूमने दो।

पद्मिनी—(हँसकर) वह अपने मियाँ की सिफ़ारिश करती है, ये अपने मियाँ की। दोनों के मियाँ जो सुनें, तो कितने खुश हों।

लाडो—मर्द बड़े शक्की होते हैं। फलाने से क्यों हँसी, ढमाके से क्यों बोली, अमके से क्यों बातचीत की।

बन्नू—सच कहती हो, मगर तुम्हारे मियाँ तुम पर रीझे हुए भी हैं।

पद्मिनी—और वह कौन है जिसके मियाँ उस पर रीझे हुए नहीं हैं।

बन्नू—(बहुत हँसकर) इसके ये मानी कि इनके मियाँ भी इन पर रीझे हुए हैं। और रीझे ज़रुर ही होंगे। सूरत-शक्ल ही ऐसी पाई है। मैं जो मर्द होती और केसर मेरी बीवी होती, तो मेरी तो जान उसपर जाती। चोटी तो ऐसी किसी ने पायी ही नहीं। बस, दिन-रात चोटी ही को चूमा करती।

पद्मिनी—यह मैं नहीं समझती, कि मियाँ के रीझने के क्या मानी। अगर इसके मानी ये हैं कि बीवी खूबसूरत है, इससे मियाँ रीझे हैं, तो यह एक अजब तरह की बात है। वह बीवी खूबसूरत हो या बदसूरत, अगर मियाँ का बीवी

पर रीझना सिर्फ़ इसी सबब से है कि बीवी गोरी-चिट्टी है तो ऐसे मियाँ से बीवी को क्योंकर दिली मोहब्बत हो सकती है ?

बन्नू—यह क्यों ? गोरी बीवी को कौन मियाँ पसन्द न करेगा ?

पद्मिन—यह मैं नहीं कहती। मेरा मतलब यह है कि मियाँ और बीवी में गोरे और काले की क्या ब्रहस है ? जो बीवी गोरी न हो, तो मियाँ उसे मोहब्बत न करे, तो ऐसे मियाँ भी कोई चीज हैं ? मैं कहती हूँ कि मियाँ और बीवी की मोहब्बत ऐसी होनी चाहिए कि काले और गोरे की तो कोई बहस ही न रहे।

बन्नू—यह तो खाली-खूली बातें हैं।

पद्मिनी—नहीं, नहीं ! बातें नहीं हैं। सच कहती हूँ।

बन्नू—गोरी औरत फिर गोरी ही है, और भोंडी औरत भोंडी। गोरी और काली औरत में तुम्हारे नज़दीक कोई फ़र्क ही नहीं।

पद्मिनी—अच्छा और जो मियाँ काला-कलूटा, और बेढंगी सूरत का हो, तो औरत भी उससे मोहब्बत न करे—इसके ये मानी हैं ? ऐसी औरत को तो भट्टी में झुलस दे।

बन्नू—खूबसूरत मियाँ पाया है, जो चाहो सो कह लो।

केसर—हाँ ! यह तो तुमने बड़ी हसरत की बात कही। मालूम होता है कि तुम्हारे मियाँ खूबसूरत नहीं हैं, और जो हैं भी तो तुमको पसन्द नहीं।

बन्नू—तुम्हारी समझ पर से नोन राई उतारनी चाहिए।

केसर—तुम कहती ही ऐसा हो।

बन्नू—केसर अगर तुम्हारी चोटी ऐसी न होती तो तुमको कोई न पूछता।

केसर—(हँसकर) इसकी फिक्र तो तुमको रहती होगी कि कोई पूछे। अजी कोई हमको पूछे या न पूछे, किसी से हमे क्या बहस है ! हमको तो बहस अपने मियाँ से है। वह अगर हमको न पूछें, तो जहर खाने का वक्त हो जाय, और वह जो हमको दिल से प्यार करें, तो हम खुश हमारा खुदा खुश।

बन्नू—(बहुत ही हँसकर) 'खुदा खुदा' ! यह 'खुदा' का लफ़्ज कहाँ से सीखा ?

केसर—जैसे खुदा, वैसे राम, वैसे परमेश्वर, वैसे अल्लाह।

कामिनी—वैसे गाड।

पद्मिनी—केसर भी फ़ारसी पढ़ी है। उसके मियाँ ने उसको फ़ारसी पढ़ाई है। फ़ारसी तो हम भी पढ़ते मगर अब कौन इस झंझट में पड़े।

कामिनी—पढ़ने-लिखने की बातें करो तो अच्छा, या कि यह कि फलानी के मियाँ ढमकी पर रीझे हुए हैं, फलानी का घरवाला ढमकी पर जान देता है।

कमला—क्या जाने ये मर्द आपस में बैठके क्या बातें करते हैं। हम लोगों का जिक्र तो जरूर होता होगा।

बन्नू—क्या जाने क्या वाही-तबाही बकते होंगे। फ़लाने की जोरू गोरी है, ढमके की काली है; अमके की ऐसी है, ढमके की वैसी है; अमके की बद है, ढमके की नेक है।

पद्मिनी—अच्छा फिर, कहते हैं तो कहें।

बन्नू—तुम पर सबके सब लट्टू होंगे। तुम्हारे ऊपर सबके दाँत होंगे। और हमारे मियाँ तो तुम पर जान ही देते हैं। वह तो मुझसे कहते थे कि तुम दूसरा ढूँढ़ लो, हम तो पद्मिनी को भगा लायँगे।

पद्मिनी—बड़ी फूहड़ हो।

स्मृता—तुम सब तो दिल्लगी करती हो, मगर मैं सच कहती हूँ कि केसर की चोटी और सीना उभारके जाना हमारे मियाँ को बहुत पसन्द है।

केसर—और तुम्हारी मस्ताना चाल पर सब मर्दों की जान जाती है।

कमला—तुम मेरे मुँह से ले गईं।

पद्मिनी—भई हम तो जाते हैं। कैसी-कैसी वाहियात बातें हो रही हैं।

इतने में स्मृता ने पद्मिनी का हाथ पकड़ लिया, और कहा—कैसी रूखी-फीकी हो। सूरत-शक्ल तो ऐसी पाई, मगर गँवारपना न गया। हँसी-दिल्लगी की बातें हो रही हैं। इसमें कौन-सी बुराई है। कोई गालियाँ नहीं बकता, कोई बेहूदा बातचीत नहीं करता। अपने मियाँ की जो किसी ने हँसी में तारीफ़ की तो इसमें क्या बेजा है। अभी तो बीस-बाइस बरस का ही सिन है। अभी से बुढ़िया बनी जाती हो।

पद्मिनी—(मुस्कराकर) अरे तो इसके क्या मानी कि जो है वह दूसरे को अपने मियाँ के साथ ब्याहने को मौजूद।

मोती—अच्छा अपने-अपने जोड़े पर सबको अख़्तियार है।

इस पर बड़ा क़हक़हा पड़ा और पद्मिनी बिगड़ती हुई बाग़ से मकान के अन्दर जाने लगी। मोती दौड़ी कि पद्मिनी को रोक ले, मगर न पा सकी—और मोती का पाँव जो काई में फिसला तो लुढ़क गई; और वह फरमायशी क़हक़हा पड़ा कि दूर तक आवाज़, और मोती बहुत झेंपी।

पद्मिनी—और दौड़ोगी? मुझे भी कोई तारा समझ लिया था कि मारे मुटाई के हिल न सकूँ, गिर पड़ूँ।

तारा—तुम लाख मोटी और थुलथुल और भारी मुझे बनाओ, मैं कोई सिड़न नहीं हूँ कि बुरा मानूँ। तुम लोगों में एक तो मुझे पहुँचती नहीं। मुझे क्या, मेरे, पासंग को नहीं पहुँचती। पहले तुम लोग अपनी-अपनी सूरतों को तो देखो। तुम सब कहती हो कि हमारे मियाँ इस पर रीझे हुए हैं और उस पर रीझे हुए हैं। हमने भी कभी कहा? तो वजह क्या? वजह यह कि हमारे मियाँ कहते हैं कि तरूँ तुम्हारे गाल ऐसे हैं कि हमने देखे ही नहीं, हमारे बड़े नसीब हैं कि तुम-सी जोरू पाई।

सबने मिलकर कहा—अख्खाह! घर की टपकी और बासी साग! और एक और क़हक़हा पड़ा। तारा भी मुस्कराईं। इस पर केसर ने कहा—एक बात जो तारा ने कही वह किसी ने सुनी ही नहीं—इनके मियाँ इनको तरूं कहते हैं।

इस पर सबकी सब हँस पड़ीं।

बन्नू—कहो बीवी तरूं! तरूं कि तरारू!

सीता—तारा से तरूं हुई।

लाडो—अब तुरई या कद्दू! लानत। भद्दू कब होगी?

इस पर भी बड़ी हँसी हुई।

तारा—यह तुम लोग तरूं क्यों कहते हो। तरूं हमारे मियाँ ने नाम रखा है, अपने पुकारने के लिये।

सीता—ए क्या 'मियाँ-मियाँ' कहती हो! मुसलमान के घर क्यों न जनम लिया! घरवाला क्यों नहीं कहती हो, दूल्हा क्यों नहीं कहती हो! तरूं के घरवाले ने तो यह नाम रखा है। नहीं मालूम तरूं ने अपने मियाँ का नाम क्या रखा है?

तारा—हमने अपने मियाँ के नाम दो रखे हैं। दिन को घुग्घू, रात को चिड्डा-गुलखैरू।

इस पर इस ज़ोर से क़हक़हा पड़ा कि शिवरानी और कुन्दन जो घर के अन्दर चली गई थीं, वह भी बाग में आ गईं।

कुन्दन—यह क़हक़हा किस बात पर पड़ा? जल्दी बताओ। पेट में चूहे छूटे हुए हैं। बहुत बड़ा क़हक़हा पड़ा, मैं कूदती हुई भागी कि देखूँ कौन बात है।

केसर—अच्छा, तुम और शिवरानी अपने-अपने घरवाले का नाम बताओ।

शिवरानी—इसके क्या मानी?

केसर—तारा के मियाँ का नाम जानती हो?

शिव—हाँ, हाँ, ए लो हम नहीं जानते?

केसर—वह नाम नहीं। वह नाम, जो तारा ने रखा है।

शिवरानी—यह भी होता है? एक नाम बाप-माँ रखें, एक नाम कहीं-कहीं सास-ससुरा रखें; एक नाम किसी-किसी का लाड का होता है। नाम है। सरूपनाथ, कहलाते हैं नन्हें। नाम है बिशेशर दयाल, कहलाते हैं बबुआ साहब। अब आज यह मालूम हुआ कि जोरू भी नाम रखती है। अच्छा, वह नाम भी सुन लें।

केसर—दिन का नाम उन्होंने अपने मियाँ का रखा है घुग्घू!

इतना सुनना था कि कुन्दन और शिवरानी मारे हँसी के लोट गईं।

शिव—मार डाला। घुग्घू की एक ही कही।

कुन्दन—और यह मियाँ को ख़िताब मिला है।

शिव—यह दिन का नाम है। और रात का नाम क्या है?

केसर—रात का नाम, चिड्डा गुलखैरू!

फिर देर तक हँसी रही और सबके पेट में बल पड़-पड़ गये। दिन का नाम घुग्घू, रात का नाम चिड्डा-गुलखैरू!

केसर दुपट्टा सर से हटाकर आहिस्ता-आहिस्ता गाती हुई बढ़ने लगी।

इधर केसर खुले सर झूमती-इठलाती हुई शेर पढ़ती थी, उधर दूसरी तरफ़ से आवाज आई—

रहे किन सौतनियाँ की ओर!
किदर पिया आये न सेजिया मोर,
किदर साँ आये न सेजिया मोर!

यह तारा के गाने की आवाज़ थी। बाग़ में इन हमजोलियों के सिवा और कोई भी न था। न मर्द, न लड़का तक। न कोई ग़ैर औरतें। जो थीं, नौकर। और कोई बड़ी-बूढ़ी भी न थी, कि लिहाज होता, कि उसके सामने न गाएँ। सब बराबर की थीं। इनमें दो-चार के गले में मिठास भी थी। नाज़ुक आवाज़। दो एक रँगीली, दो एक बाँकी। कोई इठलाती थी, कोई रंग-रलियाँ मनाती थी। कोई छल्ली-छलिया खेलती थी, कोई एक-दूसरे से योंही-सी हाथा-पाई करती थी। मालूम होता था एक-एक बोतल चढ़ाए हुए हैं। जवानी के नशे में चूर, और सब खुश, कि कामिनी अच्छे घर जायगी। सबसे ज्यादा कामिनी खुश कि अब सब मामला लैस हो गया।

——:०:——

दसवाँ अध्याय

'तनी झाँकी–झूँकी कियो मोरे बलम!'

जब सब कार्रवाई ठीक और मामला लैस हो गया तो रनबीर सिंह ने अपनी एक रिश्तेदार राजदुलारी के हाथ जोड़े कि हमें कामिनी को एक दफा पास से दिखा दो तो उम्र भर एहसान मानूँ। यह कामिनी की भी दूर के रिश्ते से कुछ लगती थीं। धन्नो और कमला और राजदुलारी ने आपस में साँठ-गाँठ करके कामिनी को राजदुलारी के घर पर बुलाया। पहले तो उसकी माँ ने भेजने से इनकार किया, मगर जब राजदुलारी खुद डोली पर सवार होकर गई तो मजबूर होकर भेजना पड़ा। घर की पालकी-गाड़ी में दोनों सवार हुईं। एक महरी गाड़ी के अन्दर बैठी; दूसरी बाहर, राह में।

राजदुलारी ने कामिनी को छेड़ना शुरू किया—कहो रनबीर सिंह को जानती हो?

कामिनी ने कहा—जो दिक़ करोगी तो हम इसी गाड़ी पर घर की राह लेंगे।

राजदुलारी बोली—वाह! चला जाना क्या दिल्लगीबाज़ी है?

कामिनी ने कहा—गाड़ी हमारी, गाड़ीवान हमारा; नौकर, साईस हमारे। अभी हुक्म दूँ, अभी गाड़ी फेर लें।

राजदुलारी ने हँसकर फिर छेड़ा—लाए, तो भाग जाने का सबब क्या? ऐसा गोरा-चिट्टा दूल्हा मिले कि भूख-प्यास बन्द हो जाय। हम लोग इस फिक्र में हैं कि तुम्हारे दूल्हा से बढ़के और किसी का हमारे कुनबे में न हो।

इतने में गाड़ी घड़घड़ाती हुई राजदुलारी के दरवाज़े पर पहुँची, वहाँ धन्नो और कमला भी थीं। राजदुलारी ने कहा—कामिनी, अगर तुमको हमारी मोहब्बत है तो इनसे पर्दा न करो। हमारी प्यारी बहन, मैं वारी! इतना कहना मानो, नहीं तो हमें रंज होगा।

कामिनी इससे बिलकुल नावाकिफ कि यहाँ क्या गुल खिला है। राजदुलारी के कहने से नीची नज़रें किये हुए एक मसहरी पर जिसपर क़ालीन खुशनुमा बिछा हुआ था, बैठ गई। कामिनी गो बहुत बनी-ठनी न थी, कुँआरी लड़की, और यह समझ के भी न आई थी कि कोई उसको प्यार की नजर से देखने आयगा, मगर—एक सादगी में लाख जोबन थे, सुभाव की शोख़ी ग़ज़ब ढाती थी।

आड़ में रनबीर सिंह उसके जमाल का नज़ारा कर रहे थे। उसकी एक-एक आवाज़ पर लोट था। कभी भावज जाके, मुस्कराके कहती थी—पसन्द हैं? और वह मुस्कराकर कहता था—भला यह चीज़ भी ऐसी है कि कोई इसको पसन्द न करे? कभी बहन किसी बहाने से जाके पूछती थी—देखी? है वैसी ही लड़की, जैसा मैं कहती थी?

कामिनी इनके बार-बार उठ जाने से कुछ ताड़ गई और ग़ौर से देखने लगी।

कामिनी—यें तुम घड़ी-घड़ी उठ-उठके जाती कहाँ हो?

भावज—एँ! अब रँग लाई, गिलहरी!

कमला—क्या हुआ? क्या कहती है?

भावज—पूछती हैं, ये तुम दोनों उठ-उठके जाती कहाँ हो?

कमला—है-है; यह क्या जाने अपने दिल में क्या समझी।

भावज—अरे परिन्दा तो यहाँ पर मार नहीं सकता।

कमला—क्या मजाल; और तुमको शक हो तो देख लो।

कामिनी—घड़ी-घड़ी जो उठ-उठके जाओ और मुस्कराती हुई आओ तो मेरे दिल में शक पैदा हुआ।

महरी—कुँआरी सयानी लड़की, यह बातें तो सोचा ही चाहें।

भावज—यह बुढ़िया महरी भी दिवानी हो गई है।

कमला—तुझे कौन सूझ पड़ा, महरी?

महरी—नाहीं, बीबी, हियाँ कोउ आ सकत है भला!

कमला—टाँगें काट डाली जायँ। एक के दस मुँह हो जायँ। यहाँ यह बात हो सकती है?

बहन (भावज से)—अपनी वह तस्वीरोंवाली किताब तुमने वहुत दिन से नहीं दिखाई हमें।

भावज—वह क्या रखी हुई है।....अच्छा बताओ, इन तस्वीरों में सबसे अच्छा कौन मर्द है और सबमें खूबसूरत कौन औरत है?

कमला और भावज ने जो एलबम की तस्वीरें उलटना शुरू कीं, तो उनके साथ-साथ कामिनी भी देखने लगी। कमला ने जान-बूझ के अपने पति की तस्वीर पर उँगली रखी, और कहा—मर्दों में तो हमको सबसे ज्यादा यह पसन्द है, और अपनी तस्वीर को दिखाकर कहा—औरतों में यह पसन्द है।

कामिनी (मुस्कराकर)—यह तो तुम्हारी ही तस्वीर है। और यह मर्द कौन तुमने पसन्द किया!

कमला—पसन्द नहीं किया। ऐसी बातें न करो, कि हमारा आदमी सुने तो बदगुमान हो जाय। बस एलबम भर की तस्वीरों में हमको यह सबसे अच्छा मालूम होता है।

कामिनी—क्या तुम्हारे दूल्हा की तस्वीर इसमें नहीं है?

कमला—है क्यों नहीं! (स्वामी दयानन्दजी की तस्वीर दिखाकर) यह है।

कामिनी—ए नहीं! यह तो किसी सन्यासी की तस्वीर मालूम होती है। यह तो बूढ़ा आदमी है।

कमला—ए कुछ खबर है तुमको? हमारे चौदह बरस के पति को बूढ़ा बनाए देती हो!—और सन्यासी-फकीर बना दिया।

भावज मारे हँसी के लोट-लोट गई कि कमला ने अपने पति को तो ग़ैर मर्द कहके उसकी तस्वीर पसन्द की और स्वामीजी महाराज की तस्वीर दिखलाकर अपने पति की बताई। लाख हँसी ज़ब्त की, मगर ज़ब्त न हो सका। भावज ने औरतों में एक मेम की तस्वीर पसन्द की, और मर्दों में अपने एक चचेरे भाई की जिसको कामिनी ने नहीं देखा था। अब इन दोनों ने कामिनी से इसरार किया कि तुम बताओ किस मर्द किस और औरत की तस्वीर तुमको पसन्द है। उसने इधर-उधर देखकर कहा—हमको तो इससे अच्छी सूरत इस अलबम भर में किसी की नहीं मालूम होती। यह तस्वीर रनबीर सिंह की थी।

कमला ने भावज को आहिस्ता से चुटकी ली। भावज ने कमला की तरफ इशारा किया और ऊँची आवाज़ में कहा—और जो यह ख़ूबसूरत लड़का तुमको मिल जाय, तो कैसा?

कामिनी ने शर्माकर कहा—ऐसी वाहियात बात का हम जवाब नहीं देते।

कमला—अख़्खाह! मन भाए, मुड़िया हिलाए!

भावज—छत्री का लड़का है। छत्रियों भर में धूम है इसकी।

कमला—भला ही-सा नाम है इसका—देखो—याद नहीं आता!

भावज—मगर पसन्द अच्छा किया। अभी कुँआरा है।

कमला—शेर की-सी क़लाई, चीते की-सी कमर, हँसमुख, हाथ-पाँव सुडौल। अच्छे को पसन्द किया।

भावज—परमेशर करे इसी के साथ कामिनी का ब्याह हो जाय।

कामिनी (झेंपकर)—ए, क्यों गालियाँ देती हो?

कमला—भई, उससे बढ़कर खुशकिस्मत कोई औरत न होगी जो इसको ब्याह के जाय।

भावज—हमारी शादी न हुई होती तो बाप-माँ से कहते कि अगर यह हमारा दूल्हा और हम इसकी दुल्हन न हुए तो हम ब्याह न करेंगे।

कामिनी—इतना रीझ गईं।

भावज—अच्छा तुम ही बताओ, इत्तों में सबसे अच्छा है कि नहीं?

कामिनी—मैंने ऐसी सूरत आज तक नहीं देखी। आँखों में मोहनी है। (दबे दाँतों) औरतें इसको जरूर प्यार करें!

इस फ़िक़रे पर उन दोनों ने जोर से क़हक़हा लगाया। कामिनी बहुत शर्माई। कहने को तो कह गई, मगर फिर सोचा कि यह मैंने क्या कहा, यह ज़बान से क्या निकल गया। भावज से कहा—तुम लोग खोद-खोद के पूछते हो, और फिर हँसने को तैयार।

भावज—हँसते ही घर बसते हैं। अब हमको फ़िक्र हुई।

कमला—इनकी बड़ी बहन से कहो।—और तुम खुद ही क्यों न कहो।

भावज—हमारी देवरानी अपने भाई के लिये कह रही है। मैं आज अम्मा से जिक्र करूँगी।

कमला और भावज दोनों की मिली-भगत थी। कामिनी अच्छी तरह समझी नहीं कि यह क्या कह रही हैं। ये गोल-गोल बातें करने लगीं।

एक ने कहा—कामिनी की बहन से इस लड़के की बातचीत करो।

दूसरी बोली—अम्मा से कहूँगी। और यह कामिनी को मालूम ही न था कि एक इस लड़के की चचेरी बहन है और एक भावज और वह खुद ही आड़ में से घूर रहा है और ठंडी साँसें भर रहा है। रनबीर सिंह बातों और

करीने से समझ गए कि हो न हो हमारा ही ज़िक्र-खैर है; इस पद्मिनी-सितम की छोकरी ने हमीं को पसन्द किया। बेताब और बेक़रार थे कि कहीं जल्द मालूम हो जाता कि यह किसका ज़िक्र हो रहा है। कहीं ऐसा न हो कि किसी और को पसन्द किया हो। भावज बहाने से चल दीं। कमला और कामिनी अकेली रह गईं। भावज ने जाकर रनबीर सिंह से कहा—सच कहना, कैसी परी लड़की है। परमेशर करे यह हमारे घर में आए। आधी रात को, जिस कोने में बिठा दो, उजाला हो जाय। चाँद में मैल, इसमें मैल नहीं। रनबीर सिंह ने कहा—यह तो बताओ, पसन्द किसको इस अलबम में किया? किसकी क़िस्मत खुल गई, किसका सितारा चमका? उसने कहा—तुम्हारी तस्वीर पसन्द की। सुन नहीं रहे थे? रनबीर सिंह ने कहा—देखो भाभी, भाँजी न मारना। तुम्हें कहीं यह हसद न दिल में पैदा हो कि देवरानी हमसे गोरी क्यों आई है। सबसे बढ़ के रहे। जो कोई घर में आये, कहे कि सब बहुओं में यही अच्छी है। वह बोली—बड़े बेईमान तुम लोग होते हो! मैं तो इन तरकीबों से टिप्पस लड़ा रही हूँ। लड़की दिखा दी; उससे तेरे सामने कबुलवा लिया, कि इस मर्द को औरतें जरूर प्यार करें—और तू ये बेएतबारी की बातें करे! अच्छा यह झगड़ा हमारा-तुम्हारा तो होता ही रहेगा। सच यह है कि छोकरी बड़ी क़यामत की है। यह तो अगर सचमुच पान खाये तो सुर्खी गले से दिखाई दे। वाह रे सूरत। रनबीर ने कहा—मैं भाई से जरूर कहूँगा और गंगा उठा लूंगा कि भाभी कहती थीं कि अगर मेरी शादी न हुई होती तो तेरे साथ ज़बरदस्ती ब्याह कर लेती। उसने कहा—नेकी का बदला तो बदी होता ही है। मैं कमला को उसके पास छोड़ आई हूँ कि बराबरवालियाँ हैं, खुलके बात करें। चलो एक बात तो मालूम हो गई कि तुमको वह और उसको तुम पसन्द हो। देखो यह बात पक्की हुई जाती है।

रनबीर सिंह ने कहा—अगर यह बात पक्की हो जाय तो हम माँ-बाप की खुशामद करके तुमको अपने भाई के पास भिजवा दें। बहुत दिन से तरस रही हो।

वह हँस के बोली—बस चुप रहो। हम क्या खुद नहीं जा सकते। ये बड़े सिफारिश करनेवाले आये वहाँ से!

रनबीर सिंह ने कहा—जैसी तस्वीर हमने देखी थी वैसी ही पाया। अब और भी बरस-भर ज़्यादा हुआ।

भावज ने ताना दिया—तुम तो कहते थे कानी है, फुल्ली है, यह है, वह है, अब अपने हाथों से अपने गालों पर थप्पड़ लगाओ।

रनबीर सिंह ने कहा—हमसे दो-एक बदज़ातों ने आके कहा था कि पहले यह लड़की ऐसी थी कि चाँद को मात करती थी। मगर अब कोई पाँच-छै महीने से, जब से चेचक निकली, सूरत बिगड़ गई, और एक आँख करीब-क़रीब जाती रही।

बस मैंने सोचा कि कानी से कौन ब्याह करे। जीती मक्खी हो तो आदमी जान-बूझ के नहीं निगलता। अगर बे-जाने कानी से ब्याह हो जाय तो मजबूरी है।

भावज बोलीं—तुम्हारी अक़ल क्या सपाट मैदान की चराई को गई थी? इतना न सोचा कि तेरह-चौदह बरस की लड़की और बड़ी चेचक। अब इस अंग्रेज़ी में किसी पढ़े-लिखे आदमी के घर में भी बे टीका लगाए कोई बच्चा रह सकता है? मगर तुम पढ़े-लिखे बेवकूफों को कोई क्या करे। वह लोग तो अपना मतलब निकालते थे और तुम सिड़ी-सौदाई बनते थे।

देवर-भावजों में तो यह बातें होती थीं और इधर कमला और कामिनी में और ही गुफ़्तगू मजे-मज़े से हो रही थी। जब भावज टाल के चली गई और कामिनी और कमला अकेली रह गईं, तो कमला ने उसके दिल का भेद लेना शुरू किया।

कमला—देखो बहन, हम-तुम बराबर की हैं। वो दो-चार बरस छोटाई-बड़ाई हुई तो क्या। यह कोई बड़ाई-छोटाई नहीं कहलाती। हमारी भावज भी बराबर की हैं। वह हमसे भी पाँच-सात बरस बड़ी हैं। उनका ज़रा हमको तुमको दोनों को लिहाज़ है। अब वह तो इस वक्त हैं नहीं। हम ही तुम ह। यह बताओ कि इस लड़के में क्या ऐब है?

कामिनी (शर्माकर)—मुझे नहीं मालूम। कोई और बातें करो।

कमला—अच्छा इस बात का तुम हमको जवाब दे दो, और बस।

कामिनी (मुँह फेरकर)—हम जवाब नहीं देते।

कमला (गुदगुदाकर)—देखें तो कैसे जवाब नहीं देतीं।

कामिनी (हँसती हुई)—ए, मैं क्या जवाब दूँ, बहन। शर्म-हया भी कोई चीज़ है कि नहीं। हम क्या जानें।

कमला—अरे बेवकूफ, अपनी तौर पर पूछती हूँ कि यह लड़का पसन्द है या नहीं। ऐसा परिया लौंडा न मिलेगा!

कामिनी—ए, परिया न कहो; कोई सुन लेगा। कहेगा, यह कैसी हुड़दंगी लड़कियाँ वाही-तबाही बक रही हैं।

कमला—कुछ सिड़न हुई हो? यहाँ सुनने कौन आता है, दीवारें? बताओ? अरी, यह मौका हाथ से न जाने देना। कहती हूँ, पीछे पछताएगी, देख लेना। ऐसी जोड़ न मिलेगी।

कामिनी—तुमने अपना ब्याह वर देख के किया था?

कमला—उसने हमको नहीं देखा था, हमने उसको देखा था। हमारे भाई ने हमें दिखाया था। मैं खिड़की की चिकों से देखा की। हमारे यहाँ बिलकुल 'अंग्रेज़ीपन' है—जैसे अगले वक्तों में स्वयम्बर होता था।

कामिनी—ए बहन, हमारे मैके में भी यही हाल है। बाप-भाई सबको अंग्रेजी जैसे चरी हुई है। पर्दे का बहुत खयाल नहीं। मगर हाँ, जो ज़रा कोई जा से बेजा हो तो सर काटने को तैयार। हमारे बाप का क़ौल है कि लड़की दूर से लड़के को देख ले, उसको पसन्द हो और घर के मर्दों-औरतों को पसन्द हो तो बस झट-से ब्याह हो जाय; जिसमें लड़की को इस शिकायत का मौका न मिले कि हमारी मर्जी के बग़ैर हमको झोंक दिया।

कमला—कितनी अच्छी बात है। भला कोई हिन्दू ऐसा काहे को करने लगा।

कामिनी—कहाँ की बातें। कोई कहे तो आदमी मार बैठे।

कमला—अच्छा, अब बता दे बहन। क्या बुरा क्या है?

कामिनी—अब तुम चाहती हो कि शरम को दूर रखूँ।

कमला—अब बताओ, नहीं मार बैठेंगे।

कामिनी—(लजाती हुई)—भला कोई भी ऐसा है जो अच्छी चीज़ को बुरा कहे, या जिसको अच्छा मर्द न पसन्द आये। इतने मर्दों में मैंने यह तस्वीर कुछ तो समझ के छाँटी—कि बे-समझे बूझे छाँटी? और यह लड़का लाखों-करोड़ों में एक है। इसको कौन पसन्द न करेगा? खासकर कुँआरी औरत।

कमला—कोई शक नहीं कि इस लड़के की जोरू बड़ी नसीबवाली औरत होगी। शेर है शेर।

कामिनी—रन में सिपाही की जान क्या है, अच्छी विलायती तलवार, जो खूब काट करे। शहसवार की जान क्या है उम्दा अरबी घोड़ा। बाप-माँ की जान क्या है, होनहार लड़का। विद्यार्थी की जान क्या है, विद्या का खूब जानना। इसी तरह कुँआरी लड़की की जान क्या है, अच्छा वर। वह पति जो सूरत में लाख दो लाख में एक हो और सुभाव और गुन में सूरत से बढ़ चढ़ कर।

कमला—हमारे दिल की बात तुमने कही।

कामिनी—तुम घड़ी-घड़ी पूछती क्या थीं?

कमला—फिर हम कोशिश करें?

कामिनी—क्या सचमुच छत्री है?

कमला—छत्री, छत्री। असल छत्री। यह छत्री, इसका बाप छत्री।

कामिनी—क्या जानें कौन छत्री है।

कमला—जो हम-तुम हैं। कहो गंगा भी उठा लूँ? बोलो—है मर्जी? कोशिश करूँ?

कामिनी (फिर शर्माई)—बहुत छेड़ो नहीं, बहन।

कमला—अब मैं मार बैठूँगी, हाँ।

कामिनी—मैं भला क्या कर सकती हूँ। अपनी मर्ज़ी की तो हूँ नहीं। कुँआरी लड़की कुछ ज़बान से निकाल सकती है?

कमला—यह मतलब नहीं है। इतना मालूम हो गया कि तुमको पसन्द है। बस, अब हम तुम्हारी माँ-बहन से रिश्ते की बातचीत करेंगे। वह अपने यहाँ के क़ायदे के माफिक तुमको वर दिखाने की कोशिश करेंगे, तुम कह देना—

कामिनी—बहन, हमारे मैके की इस रस्म का हाल किसी और से ज़बान पर न लाना; नहीं मुफ़्त की बदनामी होगी।

कमला—मेरे यहाँ तो ख़ुद यही रस्म है।

कामिनी—तुमको इस लड़के से क्यों इतनी मोहब्बत है ?

कमला—अच्छी सूरत सब ही को भली मालूम होती है।

कामिनी—नहीं, कोई बात है ज़रूर।

कमला—अब साफ़-साफ़ कह दूँ ?—न कहूँगी !

कामिनी—कहो, तुम्हें क़सम है, सचमुच, कहो—कि तुमसे इससे क्या नाता है। तुम क्यों इसकी तरफ से घड़ी-घड़ी कहती हो ?

कमला—यह मेरा भाई है। चचा का लड़का; बहन को मोहब्बत न होगी तो फिर किसको होगी ? अब आज से हम तुमको दुल्हन कहेंगे।

कामिनी (हँसकर)—सूत न कपास, कोरी से लट्ठम-लट्ठा। अभी से दुल्हन कहने लगीं। ले, अपनी भावज से यह सब बातें न कहना; नहीं हमसे बनेगी नहीं।

कमला—वह कोई ग़ैर तो है नहीं। वह ख़ुद ख़ुश होंगी। मगर अच्छा, हम उनसे इतने खुले-बन्दों न कहेंगे।

जब भावज ने अच्छी तरह देख लिया कि बातचीत हो चुकी, तो उनके पास आईं। कमला ने पूछा, यह इतनी देर कहाँ रहीं। कहा—धोबिन के कपड़े लिखती थी। तुम्हारी इनकी क्या बातें हुईं। कमला ने कहा—यह इधर-इधर की बातें हुईं, दुनिया की। कहीं अलबम देखा, कहीं इस लड़के का ज़िक्र किया, कहीं कुछ, कहीं कुछ। एक बात अलबत्ता तुमसे कहने के काबिल है। वह यह कि, अब आज से हम उनको दुल्हन कहेंगे। भावज ने मुबारकबाद दी। कामिनी ने बनावट की ख़फ़गी के साथ कहा—हमें डोली मँगवा दो, हम जायेंगे।

कमला बोली—रो दे, बनिया गुड़ देगा; हँस दे, बनिया छीन लेगा। भावज भी मुस्कराई—कामिनी, कहने से तुम बुरा मानोगी क्या ? बुरा क्या है, जी ? हम तुम्हारी बहन हैं, कि नहीं। हम भला यह चाहेंगे कि तुमको किसी ऐसी-वैसी जगह झोंक दें ? और सच यों है कि मेरा देवर कमला का भाई है। मैं चाहती हूँ, तू मेरी ही ससुराल में आए। अच्छा, चलो, अब शहनशीं में चल के बैठो। तुम्हारी महरी कहाँ है, कामिनी ? महरी ! अपने घर जाके थोड़ा-सा बसा हुआ कत्था हमारे नाम से माँग ला। महरी को यों टाल, कामिनी और कमला को शहनशीं में ले गई। जब मसहरी पर कामिनी बैठ गई, तो एक दफा ही भावज ने क़हक़हा लगाया। कामिनी देखती है तो एक मर्द सामने !

जल्दी से कमला को लिपट गई और थरथर काँपने लगी। भावज ने यह कैफ़ि-यत देखकर झटपट एक दुलाई ओढ़ा दी और देवर से इशारा किया कि ज़रा हट जाओ। कामिनी से कहा—आँखें खोलो, कोई नहीं है। कामिनी वही दुलाई ओढ़कर सिकुड़-सिकुड़ाकर फुर्ती के साथ महसरी के नीचे उतर आई।

कामिनी—(बहुत आहिस्ता से) डोली मँगा दो।

कमला—(मसहरी के पर्दे गिराकर)—अब बिलकुल आड़ है। प्यारे से प्यारे की क़सम खा के कहती हूँ कि अब बिलकुल ही आड़ है।

कामिनी (बहुत ग़ुस्से में)—यह भी कोई भलमंसी है?

कमला—अपनी आँखों की क़सम, इसमें कोई बदी की बात नहीं थी।

कामिनी—चलो बस, चुप रहो। यह सारा फ़िसाद लाजदुलारी का है। न यह हमको बहाने से बुलाती, न तुम ग़ैर मर्द का और हमारा सामना करातीं। मेरी आँखों में ख़ून उतर आया।

कमला—यह तो मेरा भाई है। मुझे नहीं मालूम था कि ये यहाँ बैठे हैं। यह सब हमारी भावज के करतूत हैं।

भावज—यह तो मुझी को धरवा दिया!

इतने में रनबीर सिंह से न रहा गया। पुकार ही उठा कि यहाँ घूँघट और हया आख़िर कब तक? कमला और भावज दोनों मुस्कराईं कि यह बीच में कहाँ से बोल उठा। कामिनी बहुत शर्माई। कहा—जो कहीं मेरे भाई को मालूम हो, तो ख़ून करने पर तैयार हो जाय। रनबीर ने कहा—वह भी राज़ी हैं। उनसे आमने-सामने बातचीत हो चुकी है। यह बीवी हैं किस खयाल में? कामिनी ने भावज से कहा—लाजदुलारी कहाँ जाकर बैठ रही। हमको ज़लील करने को बुलाया। वाह अच्छी बहन है! राजदुलारी जान बूझ के इस मामले में न पड़ी; कि अगर इस इतनी बातचीत से कामिनी बिगड़ जाय तो मैं समझा लूंगी कि बहन जाने दो। इतने में वह भी आई। देखा तो कामिनी एक दुलाई ओढ़े मसहरी के नीचे ख़फा बैठी है, और भावज और कमला समझा रही हैं। जब उसको मालूम हुआ कि रनबीर सिंह और कामिनी की चार आँखें हुईं तो यह राजदुलारी को भी बुरा मालूम हुआ। उसने कहा—अब तुम लोग बहुत बढ़ गईं। यह बात हमारे भी नापसन्द हुई। पराये मर्द का इस तरह देख लेना वाहियात बात है।

भावज—तो बहन, आपस में इतना पर्दा न चाहिए। एक क़ौम, एक नस्ल! दर्द-दुख, मरने-जीने के शरीक, कोई ग़ैर कौम का हिन्दू नहीं। कोई मुग़ल-पठान नहीं। धोके में ज़रा सामना हो गया।

कमला—हाँ, यह तो कोई ऐसी बात नहीं है कि इतना बुरा मानें।

कामिनी—मुझे अपना तो बिलकुल ख़याल नहीं है। मेरा तो दिल साफ़

है। एक छोड़ अगर सौ भी हों, तो क्या; मैं आँख उठा के न देखूँ। मगर बात अच्छी नहीं है। जो सुने वह क्या कहे।

कमला—भाई-देवर का यह हाल हम गली-कूचे कहते फिरेंगे? तुम्हारी अक़्ल को क्या हो गया है? तुम तो पढ़ी लिखी हो।

भावज—ए, हाँ हमारे दिल का तो इन बातों से कँवल खिलता है, और, तुम जाने क्या समझती हो।

कमला—इनको चोरी पड़ी है; जब भँवरी फिरोगी, तब झुकके सलाम करूँगी कि अब कहो कामिनी बीवी वह दिन याद है?

कामिनी—ब्याह के बग़ैर तुमने दूल्हा से पड़-पड़ बातें की होंगी!

कमला—कौन? हमारी भली कही! हम तो उस घर की हैं जहाँ स्वयम्बर तक जायज़ है। गो होता नहीं। मगर बूढ़े भाई अब तक उसकी तारीफ़ करते हैं। और यहाँ हमारे-तुम्हारे सिवा और कौन ?

राज—अच्छा कामिनी, अब गुस्सा थूक दो। और ज़रा ज़रा लहरा-लहरा कर 'इन्दर-सभा' के शेर तो पढ़ो। गला अभी अच्छा है।

कामिनी—बड़ी बी तो बड़ी बी छोटी बी सुभान-अल्ला! ये और सब में तेज़ निकलीं! मैंने सुना तुम नाचती खूब हो।

राज—अब ये बातें करोगी तो तिगनी का नाच नचाऊँगी।

कमला—हाँ, अब राज़ी होंगी।

भावज—एक साथ की पढ़ी हुई हैं न!

राज—अगर बड़ी शर्म है तो तस्वीर काहे को पसन्द की? मैं सुन रही थी कि इसको सब औरतें प्यार करेंगी! तुमको ऐसा लड़का मिले कहाँ!

कामिनी—अख़्ख़ाह! एक तुम और एक (दबे दाँतों) वह लड़का—बस दो ही तो हैं!

राज—जी में तो खुश हो गई होंगी।

कमला—हाँ, कहती ही जो थीं।

भावज—तस्वीर देख-देख के सिसकियाँ भरती थीं।

इस पर बड़ा क़हक़हा पड़ा। और कामिनी खुद भी मारे हँसी के बेताब हो गई। कहा—जो किसी और के सामने कहो तो उसको यक़ीन आ जाय कि बड़ी हुड़दंगी लड़की है। फिर कामिनी को हँसी आई।

भावज—बड़ी खुश है। वह, ठीक-ठीक बात हुई ना!

कामिनी—अब मैं कुछ कह बैठूँगी। (मुस्कराकर) पराई लड़की को अकेला पाकर बनाने लगीं मिल के सब की सब।

राज—कुछ चोर तो तुम्हारे दिल में ज़रूर है।

कामिनी—मैं कहती हूँ, कहीं कोई जाके अम्मा या हमारे भाई से न जड़

दे। बड़ा डर मालूम होता है। तुम हमें जाने दो; महरी को न मालूम होने पाये।

भावज—कैसी पगली लड़की है। महरी मुई है कहाँ!

कमला—हम तो अपने मियाँ को ब्याह के पहले ही लिपट गई थीं। जब अपना ही है तो चोरी काहे की?

राज—बस, हज़ार बात की एक बात कही! बी कामिनी, बस इसी बात पर जाके चूम लो, तो जानूं मैं!

कामिनी—तुम ही न जाओ। चूम लो जाके।

इस पर सबको बड़ी हँसी आई, कि झल्ला के कामिनी से न रहा गया, बोल ही उठी।

भावज फिर ज़ीने के पास गईं। उसने कहा—भाई परमेशर जानता है, यह लौंडिया लाख-दो लाख में फ़र्द है। तदबीर पट न पड़े। भावज ने कहा—कुछ ख़ैर है, अब तो सब पक्की-पोढ़ी हो गई है। किसकी मजाल है कि बीच में भाँजी मारे। अब ब्याह की तैयारियाँ हो रही हैं। हमने तुम्हारी ख़ातिर से दिखा दी। वह सच कहती हैं कि जो उसके मैकेवाले सुन लें तो बड़ा बुरा मानें। रनबीर ने कहा—इस बेचारी को बहुत छेड़ो नहीं। इस पर भावज ने ज़ोर से क़हक़हा लगाकर कहा—कमला, यह कहते हैं कि इस बेचारी को बहुत न छेड़ो! अपनी आँखों की क़सम।' इस पर ज़ोर से क़हक़हा पड़ा।

थोड़ी देर की चहल-पहल के बाद कामिनी अपने घर आई। घर की औरतों ने पूछा—कौन-कौन था। उसने कहा—किसी ग़ैर को नहीं बुलवाया था। बुलवाने को तो बहुतों को थे मगर मेरे सबब से नहीं बुलवाया। यह कहकर कोठे पर गई। हंसिया से सारा कच्चा चिट्ठा कह दिया, और दिल ही दिल में सोचने लगी कि अगर इससे ब्याह न हुआ तो ज़िन्दगी तलख़ हो जायगी; बल्कि जीना मुहाल हो जायगा। अब मेरी ज़िन्दगी का दारोमदार इसी बात पर है। जो इससे भँवरी फिर गई तो जी गई, और नहीं तो कुढ़-कुढ़ के मर जाऊँगी। यह यूसुफ़ है तो मैं ज़ुलैख़ा—ऐसी सूरत ही मैंने आज तक नहीं देखी। देखना क्या मानी, ज़रा भी ख़याल न था कि ऐसी सूरतें भी परमेश्वर ने बनाई हैं। मगर अन्धा जब पतियाए, जब दो आँखें पाये। अभी कौन जानता है। हाथी छूटे, घोड़ा छूटे, साईं के सौ खेल।

—:०:—

ग्यारहवाँ अध्याय

चाँद-सूरज की जोड़ी यानी दूल्हा-दुल्हन एक संग

बलज़ोर सिंह, ठाकुर गजराज सिंह, मानसिंह, इन्द्र बिक्रम सिंह, ठाकुर शमशेर बीरसिंह, सिद्धमान सिंह, जगपाल सिंह, नीलकंठध्वज सिंह, बलभद्र सिंह, गुमान सिंह, पहलवान सिंह, ज़ालिम सिंह, रनसूर सिंह, ख़ूँखार सिंह—ये सब राजपूत एक जगह बैठकर खा-पी रहे थे। सब जंग-जू, ख़ूंखार। कोई घर के युद्ध देखे हुए, कोई मोर्चों पर गोली और तलवार खाया हुआ, किसी के मैदाने-जंग में दस दस टाँके लगे हुए, कोई गोली की बारिश देखे हुए, कोई फौज में भर्ती होने के लिये तैयार। गरज कि इस सोहबत में सब फौजी ही लोग थे। मगर बिलकुल उजड्ड नहीं। सब तलवार के धनी और थोड़ा-बहुत पढ़े-लिखे और सोहबतयाफ़्ता।

बलज़ोर सिंह ने कहा—हमारा लड़का बारात ले जाने पर राज़ी नहीं होता। कहता है, अंग्रेज़ी क़ायदे से शादी होनी चाहिए। कोई बच्चा नहीं है, कि मारूँ-पीटूँ। बारह बरस के को बैद क्या करे, और सोलह बरस के को क़ैद क्या करे। और फिर होनहार लड़का। मुझसे हर तरह अच्छा। इलाक़े का इन्तज़ाम ऐसा अच्छा किया कि तारीफ़ से बाहर है। इन सब में एक बुड्ढा ठाकुर अलबत्ता उजड्ड थे। ठाकुरों के बद नजर से बचाने के लिये, उनमें पुराने ज़माने का उजड्डपन बाक़ी था। उम्र उनकी नब्बे से कम न थी। नीमजान, मगर बूढ़ा तीखा बुड्ढा। चीन-काबुल, ब्रह्म, दक्कन की लड़ाइयाँ देखा हुआ। उन्होंने जो सुना कि लड़का बाप का कहना नहीं मानता, तो बिगड़ गये और आव देखा न ताव, गुल मचा के कफ़फन फाड़ के चीख़ उठे—मूड़ काट ले सारे का ! अंग्रेज़ बने चले हैं ! फिर अंग्रेज़ के घर में जनम क्यों न लिया !

सब हँसने लगे। इतने में एक बूढ़े और ठाकुर जिनका बायाँ हाथ चिलियन वाला की लड़ाई में कट गया था, बिगड़ गये—सुनो भाई, रनसूर सिंह, वह लड़का सच कहता है। हम सिपाहियों को ढोल दमामे और पीं-पीं और नौबत और धूँसे-कक्कड़-झैंयड़ से क्या काम ! हमारा बाजा कड़कैतों का कड़का, जिससे ऐनों-बैनों के दिल में हो धड़का ; सच कहता है लड़का।

एक ने कहा—वाह रे बुड्ढे, तुकबन्दी अच्छी की ! और उसने फिर रनसूरसिंह से कहा—सुनो भाई, यह बाजा-वाजा बारात के साथ बनियों और लक्खीचन्दों को ही सुहाता है—लड़के को गहने पहना के घोड़े पर बिठा दिया ! हमारा लड़का गहना पहने, तो मूड़ काट लूँ सारे का ! मियाँ भाई नौशा बना के, सुथन्ना पहना के, रँगे कपड़े, माँझे का जोड़ा डाँट के ब्याहने जाते हैं। हम

तो अपने लड़के को बारात के दिन दोहरी तलवारें बँधवाएँगे, और बाजे के वजाय सरकार से तोप साथ ले जायँगे। दुल्हन के दरवाज़े पर संख और बाजे के बजाय तोपें दग़ेंगी और नौबत की जगह वर्दी बजेगी, दोपहर को बिगुल होगा।

नीलकंठधज सिंह ने यह सुनकर जरा छेड़ने के लिये दिल्लगी की बातें कीं—तो ज़रूर ठाकुर खूँख़ार सिंह के लड़के की शादी में तोप ज़रूर हो! बल्कि एकाध मोहल्ला उड़ा दिया जाय, ताकि शहर भर में यह बात यादगार रहे कि मोहल्ले के मोहल्ले खाक-सियाह हो गये; और दो-एक राहचलतों को तोपदम भी कर दीजिए, ताकि और नामवरी हो। पीरूमल ने लखूखा रुपये सर्फ़ करके सहँगी निकाली, नाम किया; अब तुम इसमें नाम करो। और बिगुल तो वाक़ई ज़रूर हो। बल्कि आधी रात को समधियाने में आग लगा दीजिए और आग लगने का बिगुल फ़ौजी क़ायदे से बजाइए ताकि आधी रात को लोग सोते से चौंक उठें तो सुनें कि ऐसे सूरमा छत्रियों की बारात आई कि मोहल्ले के मोहल्ले सुरंग से उड़ा दिये गये और जो इधर-उधर मिला, तोप के मोहरे उड़ा दिया गया, और समधियाने का झगड़ा ही पाक कर दिया। ऐसी आतशबाज़ी छुड़ाई और आग लगी कि बाँस और शहतीरें जो फटें, लोगों को आवाज़ आये।

इस पर इस ज़ोर का क़हक़हा पड़ा कि दूर तक आवाज़ गई। बैकुंठधज सिंह एक ठठोल हँसोड़े ठाकुर थे। रनसूर सिंह की तक़रीर सबको नागवार गुज़री थी। मगर खूँख़ार सिंह की ज़ीट उससे बढ़ गई। देर तक दिल्लगी रही। गुमान सिंह तहसीलदार ने खूँख़ार सिंह की ख़िदमत में अर्ज़ की कि—हज़ूर के बुलन्द-इक़बाल की बरात जिस दिन निकले, इस ख़ादिम को इत्तला हो जाय, ताकि छुट्टी ले लूँ। वर्ना हाकिम अफ़सर कहेंगे कि तहसीलदार बारात के साथ और आग लग गई।

जगपाल सिंह बोले—ठाकुर साहब, मुझे भी इत्तला कर दीजिएगा; मौक़े-वारदात के वक़्त समधियाने से भाग जाऊँ।

सिद्धमान सिंह ने हँसकर जगपाल सिंह की बात यों काटी—अरे, साहब, वह समधियाने से अगर आप बच भी गये तो फ़ायदा! और जो रास्ते में तोप मोहरे से उड़ा दिये गये! बेहतर तो यह है कि बारात में शरीक ही न हों। ख़ैरियत इसी में है।

बलभद्र सिंह ने इनकी भी काट की—इसमें बचाव नहीं है। न समधियाने से भाग आने में ही ख़ैरियत है। बारात में शरीक न होने से भी आप नहीं बच सकते हैं। ख़ैरियत बस इसी में है कि शहर छोड़ दीजिए। क्योंकि यह भी तो अन्देशा है कि मोहल्ले के मोहल्ले उड़ा दिये जायँगे। न जाने आप उस वक़्त किस मोहल्ले में हों।

जब तक यह सोहबत रही, तब तक यही दिल्लगी, यही चुहल रही। हँसते-हँसते लोग लोट-लोट गये, पेट में बल पड़-पड़ गये; खासकर नीलकण्ठ धजसिंह की तक़रीर सुनकर तो किसी से हँसी जब्त न हो सकी। यह जलसा तहसीलदार साहब गुमानसिंह ने इस ग़रज़ से किया था कि सब जाने-माने हुए बड़े-बड़े ठाकुरों की सलाह से यह बात तय पा जाय कि ठाकुर रनबीर सिंह की बारात न निकले, और अंग्रेजी क़ायदे से हो। शादी हो, भँवरी ज़रूर फेरी जायँ। धार्मिक रस्मों पर कोई रोक नहीं लगाता, मगर यह बाजा और आतशबाज़ी, घोड़ों का स्वाँग—इससे माफ़ रखे जायँ।

यहाँ वह गुफ़्तगू छिड़ गई कि चुहल और दिल्लगी के सबब से इसकी नौबत ही न आने पाई और खा-पी के लोग अपने-अपने घर चल दिये। दूसरे दिन रनबीर सिंह की सलाह से गुमान सिंह और बलभद्र सिंह, उनके पिता बलज़ोर सिंह के पास गये और कुल हाल बयान किया कि कल तो वह बात दिल्लगी में टल गई, अब आज हम लोग आपके पास आये हैं। रनबीर सिंह की दिली ख़्वाहिश यह है कि बारात न निकले, इसमें आपकी क्या सलाह है। बलज़ोर सिंह ने इस सुधार को क़बूल किया कि छत्री का धर्म तो बस तलवार है। यह बारात और ढोल और ताशा और नौबत और धौंसे से कौन ग़रज़ है। हमारी नौबत और धौंसा बस कड़कैत का कड़का है। मगर यह हम मंजूर न करेंगे कि वह कहें कि पूजा न हो, पंडित न आयें, भँवरी न फेरे जाँय। यह हम न मानेंगे। बारात न हो, न सही। अब रहा औरतों का ख़याल; हमारे यहाँ औरतों की कम चलती है। जब बारात दूल्हन के घर पहुँचे, शगून के लिये कुछ बजा दिया जाय। बाक़ी रस्में जैसी कि पुराने ज़माने में होती आई हैं, वैसी ही हों। तुम लोग अपनी राय के मुताबिक कार्रवाई करो, हम खाना खाने के वक़्त अपने दोस्तों और अज़ीज़ों को लेकर समधियाने जायँगे और खा-पी के चले आयँगे। तुम रात भर रहना।

औरतों ने भी इस राय को मान लिया। दोनों घरों की औरतें समझदार थीं मगर उनके रिश्तेदारों की घरवालियों ने इस क़िस्म की शादी पर नुक़्ता-चीनी की, कि अगर ठाकुर की लड़की ब्याहती है तो हमारे बाप-दादा के रस्म के माफिक कार्रवाई की जाय, और जो मेम के साथ शादी करनी हो तो वह दूसरी बात है। हम लोग ऐसी शादी में शरीक न होंगे। आखिर में यही बात तय पाई कि गजराज सिंह के गाँव में शादी हो। और वहाँ खेमों और शामियानों और मकानों का बन्दोबस्त हो गया और शादी के दस दिन पहले गजराज सिंह और इन्द्रविक्रम सिंह और गजराज सिंह की भतीजी शिवरानी और उनके मियाँ लाल बहादुर सिंह और गजराज सिंह की बहू स्मृता और कामिनी की बड़ी बहन पद्मिनी और उनके पति शिवदत्त सिंह और कण्ठधज सिंह और

शमशेर बीर सिंह और खूँख़ार सिंह और उनके घर की औरतें, नौकर-चाकर, सिपाही, गाँव में गये। और बलज़ोर सिंह की तरफ से बलभद्र सिंह ने सब के ठहरने का इन्तज़ाम पूरा-पूरा किया। शादी के तीन रोज़ पहले बलज़ोर सिंह, मय नौशा और अपने दूर और नज़दीक के रिश्तेदारों और दोस्तों के, तशरीफ ले गये। शादी के दिन रनबीर सिंह और बलभद्र सिंह और मानसिंह और रनबीर सिंह के दो भाई और एक चचेरे भाई और कमला के पति सरूप सिंह घोड़ों पर सवार होकर दुल्हन के मकान गये। शहनाई वाले रास्ते में दुल्हन के मकान के पास खड़े थे। ये बलज़ोर सिंह की तरफ से थे; ताकि औरतों को अपशकुन का खयाल न हो। ड्योढ़ी पर शहनाई बजी और दूल्हा साहब घोड़े से उतरे, तो तलवार कमर से लटकती हुई; जामे की सजधज के साथ केसरिया पाग बाँध, दूल्हा मियाँ, या ठाकुर दूल्हा, या सिपाही दूल्हा, या कप्तान नौशाह साहब घोड़े की पीठ से ज़मीन पर उतरे। उनका घोड़े से उतरना था कि गजराज सिंह के सिपाहियों ने बन्दूक़ों की सलामी सर की और उधर रनबीर सिंह की तरफ से भी उनके आदमियों ने बन्दूक़ें दाग़ीं। खाना खाने के वक़्त कुल बिरादरी के लोग जमा हुए, जिनमें अक्सर फ़ौजी अफ़सर थे। खाने के बाद दूल्हा ज़नाने मकान में गये। वहाँ रस्में अदा हुईं, और जिन-जिनको हँसी का रिश्ता था, उन्होंने हँसना शुरू किया (सालियों सलहजों ने):

ये भँवरी फेरने आये हैं या पैंतरे बदलने।

हमको तो जायस का यह बहुरूपिया-सा मालूम होता है।

कचलोहिया बन्दूक़ मियान में रख ली, चलो ठाकुर बन गये: कौन लड़ाई फतह की है, ठाकुर साहब?

उमैठा सिंह की कितनी होती है! अब ये बकरे पर चढ़ा ही चाहते हैं।

कहीं कोई छींक न दे!

इन दोनों फबतियों पर बड़ा क़हक़हा पड़ा, और देर तक मियाँ उमैठा सिंह खुद भी दिल में बहुत ही झेंपे; और छींक की भी खूब ही हुई। मगर एक बूढ़ी ठकुराइन को बुरा मालूम हुआ। कहा—लड़कियों, ज़रा समझके, ज़बान सँभालके, बात करो। छींकनें-वींकने का नाम न लो; नाकों को काट डालो! ये तो कहकर चल दीं, और उधर रनबीर सिंह को दिल्लगी हाथ आई। कहा—ये बाजी साहब नाहक़ कहती हैं कि अपनी-अपनी नाक काट डालो। यहाँ नाक-कान इतने में है क़िसको? देखने की नाक सब हैं, मगर सब—बस, समझ जाओ। इतना सुनना था कि एक शोख ने अजब दिलरुबा अदा से कहा—ए वाह मियाँ नक्कू! वाह मियाँ बड़नक्कू, वाह! दूसरी बोली—मुँह के आगे नाक! यह कोई फबती न थी मगर सब की सब इस तरह बेतहाशा हँस दीं कि रनबीर सिंह झेंप गये, और उनको कहना पड़ा कि हम तुम लोगों

से नहीं जीत सकते। एक कहती हैं और सब की सब हँस देती हैं। हम हारे!

उनमें से एक बोली—हात् तुम्हारे की! दोहरी-दोहरी सरोहियाँ बाँध के आये थे। आखिर हार माननी पड़ी!

सुबह को नौशा दुल्हन को लेकर अपने घर आये। दुल्हन के बाप-माँ भाई बहनों के रोने और आँसू बहाने ने दुल्हन के बिदा होने के वक़्त असर का रंग जमाया कि बड़े-बड़े बाँके ठाकुर और तलवरिये राजपूतों तक को रोना आ गया। अब रात का हाल सुनिये।

अपने ख़ान्दान की पुरानी रस्म के मुताबिक धन्नो ठकुराइन दो महरियों को साथ लेकर कामिनी को कोठे पर ले गईं। कामिनी गर्दन झुकाए, चुपचाप, दबे पाँव साथ हुई। धन्नो ने उसको पलंग पर लिटा दिया और खुद चली गईं और कामिनी के मैके की तुलसा की छोकरी हँसिया से कहा कि जब इनके दूल्हा आयें तब तू नीचे चली आना। रनबीर सिंह को छिपे तौर पर इत्तला दी गई। ये तो, क्या पूछना है, इस तरह आये, जैसे गोला तोप से छूटता है, या तीर कमान से बाहर निकलता है। छत पर आये तो हँसिया ने मुस्करा के कहा—अपनी अमानत—खबरदार! रनबीर सिंह भी मुस्कराये। हुक्म दिया कि तुम बाहरवाली छत पर लेटो, हम दरवाजा बन्द कर लेंगे। शायद कोई ज़रूरत हुई। सब दरवाज़े एहतियात के साथ बन्द करके रनबीर सिंह पलंग पर आये। कामिनी मुँह छिपाए करवट से सो रही थी। पोशाक बहुत क़ीमती; बनारसी साड़ी, सब्ज़ रंग, चारो हाशियों पर कलाबत्तू का काम किया हुआ, बीच में आड़ी बेल; कारचोब की कुरती, आसमानी रंग, फँसी आस्तीनोंदार; ज़ेवर से गोंदनी की तरह लदी हुई; सिर पर छपका, बेंदी; माथे पर झूमर; चोटी में सीसफूल; नाक में नथ, सच्चे मोती-जड़ा, और कील; कानों में करन-फूल, झुमके, बालियाँ, पत्ते; गले में चम्पाकली, कण्ठा, पचलड़ी। हाथों में मेंहदी का शोख़ रंग। पोर-पोर छल्ले, पहुँचियाँ, कंगन। डँड़ पर नौरतन, जोशन। कमर में तागड़ी। पावों में कड़े-छड़े पाजेब। चोटी से पाँव तक एक नूर का आलम था।

जो खुद ही सर से पाँव तक मस्त हों, उनकी मस्ती का खुदा हाफ़िज़ है। सोलह बरस की दुल्हन बाईस बरस का दूल्हा। दोनों की उठती जवानी। दूल्हा की मसें भीगती थीं, और दुल्हन के उभार के दिन, मुरादों की रातें। उठती कोपल, नई जवानी। जोबन फटा पड़ता था।

कामिनी ने जो आँखे बन्द कीं और एक करवट से सोई तो फिर वह कर-वट न बदली। रनबीर सिंह ने गले से लगाकर कहा—प्यारी यह हया और शर्म कब तक, और किससे? उससे जो सैकड़ों औरतों मर्दों के सामने हाथ पकड़ चुका; जिसके साथ सैकड़ों गवाहों के सामने भँवरी फेरी? उससे

पर्दा कैसा। (ज़बरदस्ती चूमकर) तुम तो पढ़ी-लिखी हो। अच्छा, इस गर्मी में हमारे हाँ की जाहिल औरतों ने ज़री और कारचोब और गहने से लाद दिया; इससे तुमको बेहद गर्मी मालूम होती होगी। हमारा इतनासा कहना मान लो कि कमरे में जाके सादे कपड़े बदल आओ!

यह कहकर रनबीर सिंह ने दरवाज़ा खोलकर हँसिया को चुपके से बुलाया और कहा—इनके कपड़े तो बदलो। ज़री और कमख़ाब के कपड़े इस गर्मी में और परेशान करेंगे। हँसिया ने ज़रा झिझकते हुए कहा—सरकार, या तो उधर खुले हुए में निकल जायँ या छत पर चले जायँ। मैं भी अभी बिलकुल जवान हूँ। उम्र में बीवी से भी कम। और आप भी जवान आदमी। ऐसा न हो बीवी को शक हो, तो मैं कहीं की न रहूँ। रनबीर सिंह मुस्करा के हट गये, और हँसिया ने, जाके कामिनी से कहा—चलके कपड़े बदल लो। मुझे जगाके भेजा है।

कामिनी ने पहले बर्फ़ का ठंडा पानी पिया। इसके बाद कमरे में जाके कपड़े बदले। शरबती की सफ़ेद साड़ी। अद्धी की कटाव की हुई आस्तीनोंदार कुरती पहनकर आई और फिर उसी तरह लेट रही। हँसिया दबे पाँव कमरे के बाहर गई। रनबीर सिंह ने मुस्कराकर कहा—हँसिया तुम हमारी सुसराल की हो। इस हिसाब से मेरी साली हुईं। और साली आधी जोरू होती हैं। हँसिया ने हँसकर कहा—मैं लौंडी हूँ आपकी।

रनबीर सिंह ने जो अब पत्नी को देखा तो बेअख्तियार कह उठा—

जेवर है सादगी तेरे रुख़सार के लिये!

शरबती की साड़ी और अद्धी की कुरती में भी वह जोबन था कि नूर बरसता था। रनबीर सिंह ने गले लगाके कहा—जानी, अब इस क़दर सख़्ती न करो।...

पाँच बजे तारों की छाँव में कामिनी दबे पाँव जाने लगी। दूल्हा ने दो-तीन बोसे लिये, और हँसिया के साथ कामिनी चुपके से नीचे जाके एक पलंग पर, जो धन्नो बीवी के पलंग के पास बिछा था, सो रही।

—:०:—

बारहवाँ अध्याय

अपनी बीवी उन्हें दिखा दा

रनबीर सिंह आठ बजे बिस्तर से उठे और ऊपर ही ऊपर होते हुए बाहर आये और बाग़ की कोठी में जाके पहुँचे। और कपड़े पहनकर इत्र मलकर गोल कमरे में आये, तो वहाँ बलभद्र सिंह और गुमानसिंह बैठे थे। एक दूसरे को देखकर मुस्कराया।

बलभद्र—हुज़ूर की खिदमत में कोर्निश!

र०—(मुस्कराकर)—तस्लीम!

गुमान सिंह—बाछें आप ही आप खिली जाती हैं।

र०—फिर आप जल मरिये।

ब०—रात को शायद हुज़ूर को नींद नहीं आई। आँखें सुर्ख हैं। कहिए ख़ैरियत तो है?

ग०—अब भला क्यों किसी को ख़ामख़ाह झिपाते हो?

र०—बजा इरशाद हुआ। झेंपनेवाले कोई और ही होते होंगे।

ग०—बेहयाई की बला दूर।

ब०—वल्लाह, तुम मेरे मुँह से ले गये। मैं कहने को था।

ग०—मगर हुज़ूर के चेहरे का रंग कुछ और ही कह रहा है।

र०—(हँसकर) हमारी समझ में नहीं आता कि यह आप लोग बकते क्या हैं?

ग०—तुम लाख बातें बनाओ, मगर सच कहना हम कैसा ताड़ गये!

र०—क्या ख़ूब! अब आप लोगों ने गोया हमको बना लिया!

ब०—उस्ताद, चेहरा कुछ उतरा-सा नज़र आता है। इसका क्या सबब?

र०—शेरों के चेहरे कहीं उतरते हैं? ये चेहरे उतरनेवाले हैं भला? एक घूँसा तान के दूँ तो हाथी का दम निकल जाय।

ब०—बचा, अब यह बताओ कि इस वक्त शर्माए-झेंपे हुए क्यों हो?

र०—पागल हो? कौन? हम कहीं शर्मानेवाले जवान हैं?

ब०—भई, तहसीलदार ज़रा इनकी सूरत देखना। फटकार बरसती है।

क्या जानिए विसाल में क्या बात हो गई;
आँखें नहीं मिलाते हैं, शर्माए जाते हैं!

रनबीर—अरे मियाँ, छत्री लोग किसी से शर्मानेवाले हैं? जैसे शेर बच्चे पहले बने हुए थे वैसे ही अब बने हुए हैं।

ब०—अब यह बताओ, बीवी वैसी ही खूबसूरत है जैसी सुनते थे ?

र०—एँ, तस्वीर ही देख चुके हो। तुमसे क्या छिपा हुआ है। यार सबसे ज्यादा खुशनसीबी यह है कि नागरी खूब जानती है! और शीन-क़ाफ भी दुरुस्त है। ठाकुरों की लड़की और ज़बान यह शुस्ता! अंग्रेजी में बर्क़; यह और कमाल।

ब—क्या आते ही पटर-पटर बातें करने लगी? बड़ी शोख़ लौंडिया मालूम होती है। दो-तीन रात तो कुछ शर्म चाहिए।

गुमान—तो अब हुए भी तो आठ पहर। क्या थोड़ा ज़माना है?

ब०—बजा इरशाद हुआ। आठ पहर गोया बरसों हो गये।

र०—गँवार आदमी हो ना। अरे शर्म-हया भी शर्म हया-सी होनी चाहिए। यह नहीं कि दस-दस दिन जबान से बोलती ही नहीं। हमें तो वहशत हो जाय। मगर कि जो लोग अक़्लमन्द हैं, वह एक घंटे में अपने रंग और ढर्रे पर ला सकते हैं।

गुमान—हो बड़े खुशक़िस्मत, यार। चाँद-सी बीवी पाई। चैन लिखता है, 'हनीमून' के लुत्फ़ उठाओ! मगर यह सब कार्रवाई बलभद्र सिंह की है।

बलभद्र—एहसान फरामोशी न करना। और कुछ नहीं तो एक दफा झमकड़ा ही दिखा दो। हम बलाएँ लेंगे। हमें ख्वाजासरा समझो। बस, और किसी को न दिखाओ।

गुमान—आप में कौन-सी पीरी है, और हमने क्या गुनाह किया है? इन्द्रबिक्रम से तो हमने पहले ही पहल ज़िक्र किया। तुम कहाँ बीच में कूदे पड़ते हो। हमको अबलत्ता कम से कम बोसे लेने का हक़ है।

रनबीर—क्यों नहीं! एक नहीं, बल्कि दो। मुँह धो आओ, जाके। बहू-बेटियों के बारे में बेहूदा बातें बकते हो।

गुमान—अब रंग लाई गिलहरी। शादी हो गई ना।

बलभद्र—पाजी के साथ कभी एहसान न करे, बस!

ग०—देखते हो यार; अगर हम तुम इतनी कोशिश न करते तो यह प्यारी दुल्हन कहाँ से मिलती।

रनबीर—कुछ वाही हो गया? चलो अपनी राह लो।

गुमान—वाह रे सूम!

एक बोसा हमने माँगा, राहे-मौला, वाह जी,
फूटे मुँह से यह न निकला, लेते जाओ शाह जी!

रनबीर—(मुस्कराकर) शाह जी इस वक्त फिर माँगो, और घर देखो।

बलभद्र—लीजिए, बन्दानवाज, मँगता तो बन गए।

गुमान—अरे ज़ालिम हमारा कोई हक़ है या नहीं? तेरे कारन किस-किस से लड़े, किस-किस से बुरे बने!

रनबीर—अब यह बताइये कि बलभद्र सिंह ने और आपने जो पार्टी देने का वादा किया था वह कब दी जाएगी?

बलभद्र—कल ही, या अबकी हफ़्ते पर रखिए। सनीचर के दिन दावत हो जाय। हम तो होटल में पकवाएँगे। जिसका जी चाहे आए।

रनबीर—अजी हम तो खुले-बन्दों खायँगे, कुछ पर्वा नहीं!

गुमान—और हम कब चूकनेवाले हैं भला। अब तो हिन्दुस्तान भर में रिवाज है। कलकत्ते से इसकी कार्रवाई शुरू हुई और अब तो आम है। मरहटा, ब्रह्मन, बड़ी-बड़ी चोटियाँ किये हुए—वेद-पार्टी और छुरी-काँटा होटल में चल रहा है। इसको ऐब नहीं समझते। और ब्राह्मो और फ्रीमैसनों के सबब से होटल-बाज़ी का रिवाज हिन्दुओं में और भी ज्यादा हो गया। याने जिनके-हाँ गोश्त का नाम भी कोई नहीं लेता, वह मुर्ग़ और टर्की उड़ाते हैं। फर्माइशें होती हैं कि मुर्ग़ के कटलट पकें, डक रोस्ट हो। बाप-दादा सालन के नाम से भागते थे, साहबजादे नाम रोशन कर रहे हैं। अब तो हवा ही ऐसी चली है कि कोई क़ौम इस तूफान-बेतमीजी से बची नहीं है। हाँ अलमोड़े की तरफ अब भी पुराना फैशन है। वहाँ के बी. ए. और एम. ए. सब पुराने फैशन के। खाने-पीने में वही पुराना रंग; मगर ख़यालात अच्छे।

रनबीर—अच्छा तो पहले तो इतवार को बलभद्र सिंह की जानिब से दावत है, और तुम भई गुमान सिंह अपनी कहो।

गुमान—हमारी लियाक़त उनके बराबर नहीं। हम तो छुट भइयों में से हैं।

बलभद्र—बाईस-तेइस बरस की उम्र तें तहसीलदारी करते हो और कहते हो, नालायक़ हूँ। छुट भइया हूँ। रुपया खर्च करने के वक्त छुट भैया बन गये। आप कश्मीरी बावर्ची बुलवाइये और उम्दा-उम्दा खाना खिलवाइये।

गुमान—यह तो सब-कुछ होगा, मगर यह तो फ़रमाइये कि जिसने इतनी कोशिशों के बाद चाँद-सी दुल्हन पाई है और ऐसी नवेली कमसिन—

बरस पन्द्रह या कि सोलह का सिन,
जवानी की रातें, मुरादों के दिन!

—उनसे बग़ल गर्माती है—उससे पहले दावत लेनी चाहिए या हमसे?

बलभद्र—भइ हाँ, इन्साफ़ के तो यही माने हैं!

रनबीर—मैं आपके साथ और हम कब बन्द हैं। दो वक़्ता दावत लीजिए। सुबह को सीख के गोला-कबाब, ख़मीरी रोटी, कमरख की चटनी लहसुन और प्याज और बोतल भर हींग भुनी हुई उसमें मिला दी जावेगी।

गुमान—भइ वाह-वाह! हींग क्या ज़रा-सी बताई है! बोतल भर हींग के लिये मन भर चटनी चाहिए। आपकी दावत भी आल्हा-ऊदल की रसोई हो गई, कि एक वक्त में नौ मन हींग से दाल बघारी जाती है।

बलभद्र—मगर दावत ज़रा देखिए कैसी आला दर्जे की है। गोला कबाब और ख़मीरी रोटी और चटनी, वाह साहब, वाह! इस क़दर फ़ज़ूलखर्ची! दिवाला निकालोगे!

गुमान—भई दिल्लगी जाने दो। अपनी-अपनी दावत का सामान बताओ, कि क्या-क्या होगा। और इसमें आपस में तरमीम की जाय।

बलभद्र—हम तो साफ़-साफ़ कह चुके कि होटल में दावत होगी। अंग्रेज़ी और मुसलमानी दो क़िस्म का खाना और हर शै फ़र्स्ट क्लास। चाहे जो खर्च हो। शैम्पेन पार्टी।

रनबीर—खाली-खूली शैम्पेन से क्या होगा?

गुमान—नाम शैम्पेन पार्टी होता है। और पीने को जो जी चाहे वह पियो।

बलभद्र—जी और क्या। व्हिस्की ब्रांडी, जो चाहो पियो। मगर पहले शैम्पेन ही खुलेगी।

गुमान—चाहिए तो यह कि सबसे पहले हम एक खूबसूरत ग्लास में शैम्पेन अपने हाथसे बी कामिनी जान को पिलाएँ। और उसके बाद वह अपने प्यारे-प्यारे गोरे-गोरे हाथों से हमको शैम्पेन का जाम पिलाए। हमको भी कुछ यों ही सरूर हो, और उनकी आँखों में भी लाल डोरे रंग जमाएँ; माशूक़ और आशिक़ एक दूसरे की जवानी के लुत्फ़ उठाएँ।

रनबीर—अब आप पिटेंगे।

बलभद्र—(हँसकर) गुमानसिंह तो अब खरी-खरी खोटी-खुली कहने लगे। अजी ख़ैर मज़ाक तो हो चुका अब रनबीर सिंह कोई दिन दावत का मुक़र्रर करें और पागलपने की बातें छोड़कर सीख के गोल कबाब और खमीरी रोटी की दावत करें।

इतने में खिदमतगार ने आनकर गुमान सिंह से कहा—तहसीलदार साहब, आपका चपरासी आया है, और कश्मीरी बावर्ची को लाया है। हुक्म हुआ, उन दोनों को हाज़िर करो। कश्मीरी बावर्ची से तहसीलदार ने कहा—कहो, पंडत, क्या-क्या चीज़ पका सकते हो?

उसने कहा—सरकार जो हुक्म हो, सब बन सकता है। हज़ूर का पैसा, हमारी मेहनत।

तहसीलदार—भई जो कहो वह मँगवा दें। उम्दा से उम्दा। मगर भई पकाओ जी लगाके।

बावर्ची पंडत—सरकार, हज़ूर की अमलदारी है। जहाँ से जो चाहे मँगवा लीजिए। कित्ते आदमियों का खाना चाहिए और कब चाहिए। हम तीन तरों का पकाते हैं। एक, उठाऊ चूला, दूसरे मामूली खाना; और तीसरे तोहफ़े—कि बरसों याद रखें। जिस क़िस्म का कहिए पक जाय। दगल-फ़सल हम नहीं जानते। हमारा बाप महाराजा के दरबार में बख़्शी था। हम पर यह बिपता पड़ी है, रसोई बनाने लगे। . . .

तहसीलदार—हाँ तो पहले खाने का मामला तय कीजिए।

बलभद्र---और वही तोहफ़ा खाना पकाइए, कोई पचास आदमियों के लिये।

इतने में रनबीर सिंह के एक दोस्त तूर, के हाँ से बग्गी आई और ख़िदमतगार ने कहा---हुज़ूर को बुलाया है। गुमान सिंह और बलभद्र सिंह से रुख़्सत होकर रनबीर सिंह तूर के मकान पर गये, जहाँ नूर भी बैठे थे।

नूर---सच कहना! कैसी सूरत है? है चाँद का टुकड़ा?

रनबीर---वाक़ई, चाँद का सरूप, और चाँद का टुकड़ा और वह सब सुना करते थे, मगर अब आँखों देखी।

नूर---(मुस्कराकर) भला महफिल की देखी हुओं में किससे सूरत मिलती है!

रनबीर---दत् नामाक़ूल!

तूर---क्या बातें हो रही हैं भई। यह दूद-दबक कैसी?

नूर---हमने इनसे पूछा कि तुम्हारी बीवी चाँद का टुकड़ा है या नहीं। इन्होंने कहा---बेशक है। मैंने पूछा, भला महफ़िल की देखी हुओं में किससे सूरत मिलती है।

रनबीर---और मैंने जवाब दिया, कि उनकी बहनजी से।

तूर---(क़हक़हा लगाकर)---भली दोनों ख़ूब हुईं, वल्लाह।

नूर---अच्छा एक बात बताओ। (कान में कुछ कहा)

रनबीर---(मुस्कराकर) अब आप पिटेंगे।

नूर---(फिर कान में कुछ कहा) सच बताना।

रनबीर---अपनी बहन से जाके पूछो।

तूर---यह कानाफूसी कैसी? कुछ राज़ो-नियाज़ की बातें हो रही हैं?

रनबीर---गालियाँ बक रहा है, वाही-तबाही। अब यह मेरे हाथ से पिटेगा।

नूर---पीट लो भाई। मगर एक बात पूछते हैं बता दो। इसमें तुम्हारा कौन हरज है। आख़िर दोस्त हो कि नहीं?

तूर---इनकी बीवी के हसीन होने में तो कोई शक नहीं। मगर यह इनकी भलमनसी है कि तुम लोगों को नहीं दिखाते।

रनबीर---तुम अपनी बीवी हमको दिखा दो फिर हम भी दिखा दें।

तूर---हमारी बीवी अब बूढ़ी होने आईं। उनको देखा, क्या; न देखा, क्या।

नूर---और क्या। हम लोगों की बीवियाँ अब फ़क़त नस्ल बढ़ाने के लिये बच्चा पैदा करने के काम की हैं। चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ी हुईं; रूप न रंग।

रनबीर---आपके कहने से रूप-रंग नहीं है। कोई हमारी आँखों से देखे।

नूर---हमारा मकान होता तो हम अपनी बीवी दिखा देते। अरे मियाँ दोस्तों से काहे का पर्दा है।

तूर---अच्छा भई अगर हमारी बीवी राजी हो जायें तो क्या मुज़ायका है। देखो, अन्दर जाके कहते हैं। शायद राजी हो जायें।

यह कहकर उठे और पर्दा उठाकर अन्दर गये। उनकी बीवी ने कहा यह कौन-सा शोहदापन है। उन्होंने एक बूढ़ी मामा से कहा—तुम जरा जरा सिकुड़-सिकुड़ाके दरवाज़े से झलक दिखा दो। घर में बड़ी हँसी हुई। मामा ने कहा—सरकार मैं वहाँ मर्दों में कहाँ जाऊँ; भला कोई काम न काज। बुढ़िया से दिल्लगी कैसी। ये बोले काम-काज इससे बढ़कर क्या होगा कि हमारी बीवी बनके चलोगी। इस पर बड़ा क़हक़हा पड़ा, और उनकी बीवी तक हँस दीं, और यह सलाह दी कि खासदान लेके और कोई भारी-सा दोपट्टा ओढ़ के जाय और खासदान देके, एक झलक दिखा के चली आये। तुम कहना—ले हमारी बीवी को तो आप लोग देख चुके अब हमको अपनी बीवी दिखाइये। इस पर मामा राज़ी हो गईं। मियाँ नूर बाहर गये। कहा—भली, हमने राज़ी कर लिया। मगर दूर-दूर की देखा-भाली है। उनसे मैंने कह दिया है कि वहाँ कोई नहीं है, गिलौरियाँ बनाके लेती आओ। जनाना मकान हो गया है; ज़रा देर वहीं बैठो।....इतने में मामा जी एक भारी दोपट्टा ओढ़े हुए खासदान लेके आयीं और जल्दी से पटक के चली गईं।

र—देख लीं! अब अपनी बीवी दिखाइये;!

नूर—ये आपकी बीवी हैं या आपकी अम्माजान की नानी की फूफी अम्मा?

रनबीर—अब ज़पट बुढ़िया को कहाँ से पकड़ लाए भई?

नूर—बुढ़िया है तो हमारी है और जवान है तो हमारी है। हमने अपनी बुढ़िया दिखा दी, अब आप—जैसा इक़रार हुआ है—अपनी जवान दिखाइये।

रनबीर—ये आपके बाप की बीवी हैं या आपकी?

र—क्या बकते हो? गालियाँ देते हो?

नूर—नहीं, वाक़ई इनके बाप की बीवी है। मालूम होता है किसी मामा या साईसनी पर रीझे थे।

नूर—अब हमारी और आपकी लपाडगी होगी। यह भी कोई शराफत है भला? पराई जोरू देख ली और अपनी जोरू से पर्दा। बड़े वह बनके आये हैं। अब चलिए अपने अपने घर और दिखाइये!

नूर—अच्छा, चलो। तुम भी क्या कहोगे, हम भी वह दिखा दें कि याद करो उम्र भर।

सबके सब नूर के मकान पर गये। मकान पास ही था। पैदल ही गये।

नूर—ले, बिस्मिल्लाह, अपनी जौज़ा साहबा को बुलवाइये। कहिये कि झमक्कड़ा दिखायें।

नूर—अभी, अभी। मगर उसी तरह जिस तरह आपकी वालदा थीं, बीवी थीं, कौन थीं, वह आई थीं; जैसे कठपुतली के तमाशे की पुतलियाँ आती हैं।

रनबीर—भई खूब कही। जो कहता है, ऐसी ही कहता है।

नूर—बेशक। ख़ासदान पटक के भागीं और इस तेज़ी के साथ कि गोया कोई दुश्मन उनको गिरफ़्तार करने आता था। और उस क़ीमती और भारी दोपट्टे की जोड़ का पायजामा कितना माक़ूल था; भई वाह!

रनबीर—(क़हक़हा लगाकर)—वल्लाह, मैं कहने ही को था। मेरी ज़बान से आप ले गये! मालूम होता है किसी मामा या बूढ़ी दिवानी को उनकी बीवी ने अपना या किसी का दोपट्टा ओढ़ा दिया है।

यहाँ से नूर अन्दर गये। वहाँ से सिखा-पढ़ाकर एक साँग बनाकर लाये। यें दोनों सोच ही रहे थे कि देखें, ये किस जप्पट को लाते हैं। यह मालूम था कि कोई पागल तो है नहीं कि अपनी बीवी को लाके दिखा दे।

कोई न कोई दिल्लगी ज़रूर होगी। रनबीर ने कहा—भई, कोई नई बात ज़रूर होनी चाहिए। अगर मियाँ नूर भी कोई बुढ़िया इसी तरह दोपट्टा या दोशाला या लिहाफ़ उढ़ाकर ले आये, और वह भी ख़ासदान पटक और फेंक के चल दी तो कोई बात न हुई। तूर ने कहा—बेशक!

इतने में नूर तशरीफ़ लाये। कहा, भई वह राजी नहीं होतीं। वह कहती हैं, तुम योंही रोज़ सुबह को जाकर सबकी जोरुएँ एक सिरे से देखते आओगे तो मैं इसी की हो रहूँगी कि सबको सूरत दिखाती फिरूँ। बन्दी बाज़ आई। तुम दूसरा निकाह पढ़वा लो और सबको दिखाते फिरो। अब मैं इसको क्या करूँ। कहो फिर जाके कहूँ? ख़ैर! तुम्हारी ख़ातिर है—अभी आती हैं। कह दिया है कि मैं तुम्हीं से भिड़ के बैठूंगी, किसी और के पास न बैठूंगी। तो भाई साहब अगर आप दोनों साहबों में से किसी साहब को ख़ाहिश हो कि हमारी बीवी साहब से भिड़के बैठे तो बन्दे के कपड़े पहन लीजिए। वह ख़ामख़ाह मेरे धोखे में आन के भिड़के बैठेंगी। मगर हाथा-पाई की सनद, नहीं, दिल्लगी दूर-दूर की अच्छी होती है।

रनबीर सिंह ने कहा—हज़रत, बन्दे को इससे मुआफ़ रखिये। आपकी बीवी आपको मुबारक।

नूर ने कहा—अरे भाई जवान औरत है। उन्होंने जवाब दिया—वह जवान हों चाहे बारह बरस की, हुज़ूर ही को मुबारक रहें। मियाँ तूर ने कहा—हमको अपने कपड़े दे दीजिए; हम भिड़के बैठेंगे।

तूर ने उनके कपड़े पहन लिये, और नूर के पास के घुटने से घुटने मिला लिये। इतने में बीवी साहब तशरीफ लाईं, और तूर के जानू से जानू भिड़ाके बैठीं। नूर ने नौकर से कहा, तलवार उठा ला; और क़ब्ज़े पर हाथ रखकर बैठे। कहा—ख़बरदार, अगर हाथ लगाया, तो सर ही काट डालूँगा। भुट्टा-सा सर उड़ा दूँगा।

इतने में नौकर ने आके कहा—वह नवाब साहब आये हैं जो मन्सूर नगर

की चढ़ाई पर रहते हैं। नूर फौरन् उनकी अगवानी को गये, और दो ही मिनट में गाड़ी के घड़घड़ाने की आवाज आई।

नौकर—मियाँ तो सवार हो गये।

इतना सुनना था कि नूर की बाँछें खिल गईं।

नूर—(नौकर से)—अरे मियाँ अहमद, क्या आज आपके यहाँ रमज़ान शरीफ है। न हुक्का, न पान, न ख़ातिर-तवाज़े।

नौकर—(बाहर से) हाज़िर करता हूँ।

नूर—कहिये बी साहब, आप हमसे पर्दा क्यों करती हैं। वह तो हैं नहीं। ज़रा मुखड़ा न दिखा दो; मैं सदक़े!

औरत (उनकी रान से रान भिड़ाकर आहिस्ता से कहा)—ये जो सामने बैठे हैं, उनको हटा दो!

नूर—अमे ओ राजपूत के. . . . ज़रा हट जा यहाँ से।

रनबीर सिंह आड़ में चले गये तो क्या देखते हैं कि नूर खड़े मुस्करा रहे हैं।

नूर—(उँगली से इशारा करके) ख़ामोश! (मुस्कराकर) देखो तो क्या दिल्लगी होती है।

रनबीर—मैं तो समझा ही था।

जब रनबीर सिंह भी कमरे से बाहर आ गये, तो ये दोनों आड़ में से इस तरह से देखते थे कि नूर उनको नहीं देख सकते थे। अब सुनिये, मौक़ा पाकर मियाँ नूर साहब ने इस औरत की दौलत पर हाथ रख ही तो दिया और कहा—तुम कितनी सीधी सादी औरत हो। अरी ज़ालिम, तुम्हारे मियाँ तो हमसे कह गये थे कि तुम जानो, तुम्हारा काम जाने। बस इसके मानी समझ जाओ।

उसने भी बड़े प्यार से उनकी रान पर हाथ रखा और उनको बड़ी मोहब्बत के साथ इस ज़ोर से दबाया कि उनकी ज़बान से आप से आप निकल गया 'आह!' और 'आह' कहकर उन्होंने आव देखा न ताव, जल्दी से लिपटा ही तो लिया। और वैसे ही नूर तलवार लेके गुल मचाते कल्ले पर पहुँचे—'ख़बरदार, मार ही डालूँगा!' रनबीर सिंह भी हँसते हुए पीछे-पीछे गये। नूर वाक़ई डर गया और एक दफा ही काँप उठा। तलवार की आँच बुरी होती है। हाथ जोड़ के उठा और भागने को था कि उस औरत ने बुर्क़ा फेंक दिया और रनबीर सिंह और मियाँ नूर साहब ने ज़ोर से कहकहा लगाया और नौकर और सिपाही भी आँगन में हँसने लगे। बुर्क़ा उठते ही मियाँ नूर साहब क्या देखते हैं कि जिसको वह औरत समझे थे वह मियाँ अनवर अली खाँ ख़ाजासरा निकले। नूर इस क़दर झेंपे कि जिसकी हद नहीं। इधर ये लोग क़हक़हे पर क़हकहा लगाते थे और मारे हँसी के लोट-लोट जाते थे। जिसको देखो लोटन-कबूतर बना हुआ। अब जो आता है, पूछता है—

१—अरे भई क्या पड़ा पाया ?

२—या इलाही! हँसी एक ही नहीं रुकती। आख़िर कोई सबब तो मालूम हो, हम भी हँसें।

३—कोई बड़ी दिल्लगी की बात है। मालूम होता है मियाँ नूर उल्लू बनाए गये हैं। जभी चुपचाप खड़े हैं ।

४—चुपका बैठा है कबूतर मेरा उल्लू की तरह।

नूर—मौलवी नूर साहब, क़िबला, तस्लीम!

ख्वाजासरा—उई इन मूँडी काटे मर्दों की ढिठाई तो देखो, मैं इनकी ब्याहता जोरू सामने खड़ी हूँ और दिल्लगी करते हैं।

नूर (हँसकर)—आदाब अर्ज़ है, जनाब। अजी इधर देखिये, बन्दानेवाज।

रनबीर (बहुत हँसते हुए)—क्यों बच्चा, ये पराई जोरुओं को घूरना क्या माने?

नूर—घूरना? घूरना कैसा? रान पर हाथ रख दिया।

ख्वाजासरा—आपने बड़ी जल्दबाजी की वर्ना मादरजाद नंगा देखते।

रनबीर—भई वाह, जल्दी कर गये! लाहौल—

ख़ा—सारा मजा किरकिरा कर दिया।

नूर—अभी ये और बढ़ते, मगर सच कहना! तलवार देखकर कैसा डरा है! अबे वा बे गीदी! हात्-तेरे की!

ख़ा—अब मैं नालिश करने जाता हूँ कि मेरी रान पर हाथ रक्खा। क्या दिल्लगी है।

रनबीर—आख़िर तुम समझे क्या थे! ये समझे थे कि नूर ने वाक़ई अपनी बीवी और ब्याहता बीवी की डाली लगा दी!

नूर—अरे यारो, क्यों और ज़लील करते हो। इतनी ही ज़िल्लत क्या थोड़ी है?

नूर—क्यों बे बेईमान, तेरी दोस्ती का एतबार क्या! आख़िर तू क्या समझा था। अगर मेरी बीवी समझा, तो यह क्या बात थी। और अगर कोई और बुढ़िया-सुढ़िया समझा, तो यह एकाएक मज़े में आना क्या मानी। इसका जवाब दीजिए।

रनबीर—हाँ, सच यह आदमी खोटा मालूम होता है।

नूर—अब हम आज से याराना ही छोड़ देंगे।

ख़ा—अहा हा हा! और सुनियेगा। जो कोई अपनी बीबी की इन ऐसे शोहदों से हिफ़ाज़त करे तो आप उससे याराना छोड़ दें। यह एक ही हुई। वाह, भैया, वाह!

रनबीर—तो जनाब हमसे आपसे आज ही याराना तर्क! जब तक शादी नहीं हुई थी, जब ही तक याराना ठीक था।

नूर—वल्लाह, मारे हँसी के बुरा हाल था।

रनवीर—पहले तो मेरी समझ में खुद न आया, कि ये दिल्लगी छोड़के चले कहाँ गये। फिर मैं समझा कि यह गाड़ी भी दिल्लगीबाजी है।

नूर—अरे भई, नवाज़गंज से ज़नानी सवारियाँ आई थीं। पस, जब गाड़ी से जनानी सवारियाँ उतर गईं और गाड़ी जाने लगी, मैंने फौरन अहमद से कहा—कि फौरन जाके कह देना कि मियाँ तो चले गये।

तूर—(मुस्कराकर) लाहौल विला कुव्वत!

नूर—ले अब दिल्लगी तो हो चुकी,—यह फ़र्माइये कि आप बने कैसे?

तूर—अरे यार, मैं सीधा-सादा मुसलमान, आ गया चकमे में! लाहौल विला कुव्वत!

नूर—यह नहीं बताते कि इस बुर्क़ापोश औरत को कौन औरत समझे थे।

तूर—अजी अब क्या बताएँ, कौन औरत समझे थे। अपना सर समझे थे। इसके सिवा और क्या कहें। ऐसे उल्लू कभी नहीं बने थे।

रनबीर—नहीं, एक आपने दिल्लगी की, बुढ़िया जप्पट मामा को अपनी बीवी का दोपट्टा ओढ़ाकर भेजा। भोंडी बात! दूसरी भोंडी बात बुढ़िया मामा चली आती हैं।

नूर—जी हाँ, मगर सच कहना, क्या सूझी।

तूर—अब यह दोनों की साठ-गाँठ थी या नूर ही को सूझी!

नूर—रनबीर सिंह से पूछ लेना!

रनबीर—मुझे तो कुछ नहीं मालूम था। और मैंने तो उनसे कह ही दिया था कि अगर अबकी वही मामावाली दिल्लगी हुई तो कोई लुत्फ़ न आयेगा।

तूर—हाँ कहा था! वल्लाह इस क़दर झेंपा कि मैं ही जानता हूँ। पहले यह सूझी क्या। बस इसी को दो घड़ी का जनून कहते हैं। न यह फ़िक्र है कि क्या जाने यह कौन है, न यह ख़याल कि दिन का वक़्त है, दरवाज़े खुले हैं। यह क्या हिमाक़त है। जैसे एक जनून-सा हो गया है।

नूर—अब चलो रनबीर सिंह के यहाँ, उनकी बीवी को देखें!

तूर—बस माफ कीजिए, जनाब।

नूर—अरे मियाँ, नई दूल्हन है।

तूर—होने दीज़िए।

नूर—अब ऐसी नफरत हो गई? वजह क्या, कि ये हमारी आपकी बीवी को देखें और हम आप उनकी बीवी को न देखें?

तूर—तो आप शौक़ से देखें। बन्दे को माफ़ फ़र्माएँ। बिल्ली बख़्शे, चूहा बेचारा लँडूरा ही होके जिएगा।

रनबीर—चलिये तो हमें कोई उज्र नहीं है।

नूर—मियाँ नूर को ले जाइये। बन्दे ने भर पाया। देखता हूँ, इधर तो एक शख़्श नंगी तलवार लिये कल्ले पर सवार है, और उधर बुर्क़ा जो हटा तो मियाँ साहब की पाकीज़ा सूरत नज़र आई।

इस पर बड़ा बड़ा क़हक़हा पड़ा।

ख़ाजासरा—मुझ बूढ़े ख़्वाजासरा पर तो हुज़ूर इस क़दर रीझे थे कि मैं जवान होता तो जागीरें लिखवा लेता। मुझ पर तो हुज़ूर के दुश्मनों की जान ही जाती थी, और मेरा मारे हँसी के बुरा हाल था।

नूर—लाहौल विला कुव्वत!

रनबीर—भला आज की दिल्लगी भी याद रहेगी।

—:०:—

तेरहवाँ अध्याय

जंगल में मंगल

शादी के एक महीने के बाद रनबीर सिंह अपने इलाक़े गये। कामिनी और कमला को भी साथ लेते गये। रनबीर अपने क़ीमती वेलर घोड़े पर सवार और बीवी और बहन और हँसिया घर के रथ पर। रथ भी क़ीमती। नागोड़ी बैलों की जोडी, सींगों पर पीतल चढ़ा हुआ। पर्दा नया और बहुत साफ़। दरी-क़ालीनें और चाँदनी का फ़र्श। पानी की सुराही, उस पर चाँदी का आबख़ोरा, मुरादाबाद का पानदान। उम्दा-उम्दा देसावरी पान। सफेद कत्था बसा हुआ। चूना छना हुआ, केवड़ा पड़ा हुआ। लखनऊ के मीर निसार हुसैन के दूकान की मशहूर तम्बाकू की गोलियाँ, कि शीशी खोलते ही मुश्क की खुशबू आये। उन पर चाँदी के वरक़ लगे हुए, बिलकुल जैसे मोती। देखने में भी अच्छे और खाने में भी अच्छे। डली कतरी हुई। छोटी इलायची सफेद, बड़े-बड़े दाने, चौघड़े की इलायची। रथ के साथ एक सिपाही, बड़ा-सा लट्ठ लिये हुए। एक पासी। पीछे छकड़ा, उस पर तुलसा महरी, घर की बारन। एक औरत रोटी पकानेवाली, ब्राह्मनी। एक महरा, एक बारी। असबाब की दो बहँगियाँ—एक पर कामिनी का लिखने-पढ़ने का सामान, 'रामायण' 'भागवतगीता', 'प्रेमसागर', 'बारहमासा' नागरी में, और उर्दू में, 'फ़िसाना-आज़ाद', 'जामे-सरशार', 'मस्नवी', गुलज़ारे-नसीम', 'मस्नवी मीरहसन', 'गृहस्थ आश्रम', 'सैरे-कुहसार', 'अलिफ़-लैला', 'पद्मावती', 'हिसाब की किताब', 'जुग़राफ़िया', 'तारीख़-ए-हिन्द', 'जामे-जहाँनुमा', 'तारीख़-रूस', और अंग्रेज़ी की कुछ किताबें; एक बहँगी पर कुछ

नमकपारे, कुछ शकरपारे, पूरियाँ, तरकारियाँ, अचार, चटनी, मुरब्बा, तली हुई मछली और कबाब।

गर्मी के दिन थे। रनबीर सिंह ने रात के तीन बजे से सफर का इन्तज़ाम किया, यानी तीन बजे रथ और छकड़ा रवाना कर दिया, और दो सिपाही हथियार-बन्द इसलिये साथ कर दिये कि तड़का होते हुए वापिस आयें। और खुद भी रथ के साथ घोड़े पर चले। अँधेरी रात, पिछला पहर; मशाल साथ। हवा तेज़ थी।

रनबीर सिंह ने चलते वक़्त व्हिस्की के दो जाम ठंडे पानी के साथ पिये और एक शीशी में आधी बोतल से कुछ कम पतलून की जेब में रख ली। पौ फटने के वक़्त इन दोनों सिपाहियों को रुख़सत किया। सिर्फ़ एक सिपाही और पासी गया। सुबह को घोड़ा बढ़ा के रथ के पास गये। कमला ने कहा, बड़ी खुनकी है आज, जैसे सर्दी के दिन होते हैं। उन्होंने कहा—एक तो ठंडी-ठंडी हवा, दूसरे जंगल का वास्ता; खुला हुआ मैदान। और ज़रा खुनकी आज है भी। चले भी तो पिछले पहर थे। अब इस वक़्त भी खुनकी है। धूप निकलने दो, फिर कैफ़ियत देखना। हमने तो चलते वक़्त दो जाम पी लिये थे—तबीअत रास्ते भर बश्शाश रहेगी। घोड़े की सवारी का क्या कहना!.....तुम लोगों को तकलीफ तो नहीं हुई कुछ? कमला ने कहा—नहीं तकलीफ कैसी? पूछा—'यह बताओ कि खाने को क्या साथ है?' कमला ने कहा—'घबराओ नहीं, तुम्हारे पसन्द की चीजें हैं। तली मछली और कबाब और पकवान हैं। रनबीर सिंह ने कहा—'कोई ग्यारह बजे, बल्कि दस बजे ही तालाब पर पहुँच जायेंगे। वहाँ पर्दे का मकान भी है। वहीं जरा नहाएँगे, खाना खायेंगे; बर्फ़ हमारे साथ है। बस फिर कोई चार बजे ठंडे ठंडे चलेंगे। शाम होते-होते गाँव पहुँच जायँगे। वहाँ कम-से-कम एक अठवारे तक चैन से रहेंगे।....बी कामिनी साहब क्या आराम में हैं? कमला ने हँसकर, कहा—पूछो! .....आराम में तो नहीं हैं। खासी कटोरा-सी आँखें खुली हुई हैं!

कामिनी ने मुस्कराकर रथ का पर्दा ज़रा योंही उठाकर रनबीर सिंह को देखा, और दोनों हँसे।

कामिनी—मालूम होता है कुछ मसाला पास भी है।

कमला—कुछ मसाला! यह नहीं कहतीं कि बोतलों की बोतलें—और पीपे के पीपे साथ होंगे।

कामिनी—साथ का ज़िक्र नहीं है। मैं कहती हूँ इस वक़्त घोड़े पर साथ है। यकीन न आये तो पूछ लो।

रनबीर सिंह—(पतलून से निकालकर) बस इतना मसाला है।

कमला और कामिनी दोनों खिलखिलाकर हँस पड़ीं। कामिनी ने कहा—

में तो समझ ही गई थी कि कुछ न कुछ जेब में जरूर होगा। कमला ने हँसकर कहा—तुमने महीना भर में खूब पहचान लिया। यह तो शीशी की शीशी साथ लगाये हुए हैं। क्या रास्ते में [illegible]? रनबीर सिंह ने कहा—नहीं! नहीं! उस वक़्त से छुई [illegible] वक़्त अलबत्ता उड़ाई थी।

कमला—कहीं दुल्हन को न [illegible] अंग्रेजी पढ़े हो। देवी-देवता को मानते नहीं। तुम लोग [illegible]?

कामिनी—पीनेवाली कोई और ही होती होगी।

कमला—ए मैं हँसती हूँ। अब ज़रा-ज़रा ठंडक कम हुई। जब चले थे तो बड़ी खुनकी थी। और हवा से और तेज़ हो गई थी।

कामिनी—अब कै बजे होंगे? धूप तो सारे में फैल गई।

रनबीर सिंह—ठीक आठ बजे हैं। बस दो घंटे में दोपहरिया मनाएँगे।

कमला—छकड़ा कहाँ है? बहँगिया कहाँ हैं?

रनबीर सिंह—सब साथ ही, बीवी। कहो, यहीं ज़रा दम ले लें?

कमला—कहो दुल्हन, क्या कहती हो?

कामिनी—अब उसी तालाब पर गाड़ी रोकना —और चाहे ज़रा सुस्ता लें।

रनबीर सिंह ने रथवान से कहा—भीकम रथ रोक लो। और कमला से कहा—ज़रा यहाँ हुक़्क़ा पी लें, तुम लोग चाहे खा-पीलो। कोई जल्दी तो है नहीं। कमला ने कहा—भैया, ऐसी जगह ज़रा रथ रोको कि एक तरफ़ का पर्दा उठाने के क़ाबिल हो। दम घुट गया।

रनबीर सिंह ने कहा—इससे अच्छी पर्दे की जगह न होगी। तुम पर्दा उठा दो। छकड़े से तुलसा और बारन उतरीं। रथ के पास आयीं। कामिनी और कमला से बातें होने लगीं।

तुलसा—ए दुल्हन, मैं ऐंठ गई।

हँसिया—हमको तो सुरसुरी मालूम ही नहीं होती।

तुलसा—रथ के अन्दर पर्दे डाल के बैठी और मुझ बुढ़िया को खुले हुए छकड़े में बिठाया, मैं ऐंठ गई।

कमला—हमको तो सरदी ज़रूर मालूम हुई, मगर पर्दे बन्द करने से आराम मिला। अच्छा अब पानी मँगवाओ। मुँह धोके तो घर से चले ही थे मगर फिर धो लें तो क्या बुरा है।

रनबीर सिंह—और हमको ज़रा-सी मछली दे दो तो हम अपना मसाला निकालें। इतने में बहँगी के कहार ने एक प्याले में तली हुई मछली दी और रनबीर सिंह ने एक चाँदी के कटोरे में शीशी से उँडेल के पानी मिलाकर पी और मछली खाई। कहा—तुम लोग चाहे नाश्ता भी कर लो। कामिनी और कमला ने मुँह धोकर पान बनाके खिलाए, और कहा—हम लोग अब उस

तालाब ही पर पहुँचकर खाएँगे। तुम नाश्ता कर लो। अब थोड़ी देर तो है है ही। रनबीर सिंह ने मुंह-हाथ धोकर नाश्ता किया और घोड़े पर सवार हुआ। इधर रथ और छकड़ा तैयार हुआ। कहारों ने बहँगिया लैस करीं। काफिला रवाना ही होने का था कि सिपाही ने कहा—सरकार जरा ठहर जाइये। गोरों का रिसाला जाता है, निकल जाने दीजिए। रनबीर सिंह ने बहन और बीवी से कहा—देखो आज एक नई चीज तुमको दिखायें जो कभी न देखी हो। अंग्रेजी फौज जाती है।

कमला—है है, ये मुए उजड्ड गोरे कहीं रथ को तो न छेड़ेंगे?

कामिनी—ए रथ को आड़ में कर दो।

रनबीर सिंह—नहीं जी! मजाल है बोल सकें। अफसर साथ होंगे। कोई लूट पड़ी है? यह भी नवाबी की फौज हुई, कि जिधर निकल गई सुथराव कर दिया? तुम लोग पर्दा थोड़ा-थोड़ा उठाके देखो। यह कैफियत कभी न देखी होगी।

कमला—तुम जानो। हमको तो डर मालूम होता है। हाथी छूटे, घोड़ा छूटे....

इतने में रिसाले के घोड़े दिखाई दिये। कामिनी और कमला ने पर्दे में से देखना शुरू किया। घोड़े सब सुरंग यकरंग। सवारों के गाल साफ। दाढ़ियाँ एक सिरे से नदारद। सब रान-पटरी जमाए, चुस्त-चालाक, हथियारों की चमक और आवाज और वर्दियों की शान अजीब लुत्फ दिखाती थी। कामिनी और कमला ने वाकई यह समाँ कभी नहीं देखा था। जब उन्होंने देखा कि सवार बराबर चले जाते हैं, कोई किसी से बोलता-चालता नहीं, तो बे झिझक पर्दा हटा कर देखने लगीं। सवारों को रथ एक नयी चीज थी। रथ और बैलों और रथ के अन्दर की परियों को शौक से देखते जाते थे; क्योंकि कामिनी और कमला पर तो पूरा जोबन था ही, मगर हँसिया भी सितम ढाती थी। सवारों के बाद तोपखाना आया। बड़े-बड़े गरांडील, खूबसूरत जवान। गाड़ियों की खड़खड़ाहट से कान पड़े आवाज नहीं सुनाई देती थी। सबके बाद बड़ी-बड़ी डोलियाँ आयीं, जिन पर जख्मी गोरे लड़ाई में लादे जाते हैं। अँग्रेजी फौज निकल गई, तो कमला और कामिनी बातें करने लगीं—

कामिनी—बस, इसी तरह दूसरी तरफ की फ़ौज आती होगी। कैसे-कैसे जवान रन के मैदान में जूझते होंगे! बस नन्हीं-सी गोली काम तमाम कर देती होगी।

कमला—जिस वक़्त गोला चलता हो, तो क्या जाने क्या-क्या बिचारे सोचते होंगे।

रनबीर सिंह—कुछ नहीं, उस वक़्त सिवाए आगे बढ़ने और मारने के और कुछ नहीं सूझता।

कमला—ऐसा सत्त सवार हो जाता है ?

कामिनी—क्या जाने इनमें कौन-कौन राँड़-बेवों के पूत होंगे जिनकी ज़िन्दगी और रोटियों का दारोमदार इन्हीं पर होगा। कौन उनमें से अपनी नयी ब्याही हुई दो दिन की दुल्हन को इस उम्मीद पर छोड़ आये होंगे कि हिन्दोस्तान से बुला लेंगे, और क़ौन-कौन यहाँ से ज़िन्दा जाए और कौन न जाय !

रनबीर सिंह—जहाँ लड़ाई छिड़ जाय, वहाँ भेज दिये जायँ और जाना पड़े। सिपाही की जान हरदम हथेली पर। लड़ाइयों के जो नक्शे विलायत के तस्वीर-दार अख़बारों में छपते हैं, उनके देखने से रंज होता है कि कैसे-कैसे गुलबदन ख़ूबरू जवान दम के दम में दम तोड़ते हैं। देखो, मैं भी जल्द रिसालदारी लेता हूँ।

कामिनी (ठंडी साँस लेकर)—क्षत्री का तो धर्म ही यह है।

कमला—हाँ फिर यह तो है ही। राजपूत की जान तलवार है।

रनबीर सिंह—हमारे नाना ने कैसा नाम किया था। काबुल में आज तक उनकी धाक बँधी है। छत्रियों में वह और सिक्खों में गुरु गोबिन्द और कश्मीरी पंडितों में नन्दराम जिसने अपना सिक्का तक चलाया था, मशहूर है—"सिक्का ज़द दर काबुलिस्तान नन्दराम" क्षत्री लाख गया गुज़रा हो, फिर क्षत्री है।

इतने में गोले की आवाज़ आई—धनन्ना ! फिर आवाज़ आई। थोड़ी देर में गोलियों की बाढ़ चलने लगी। कमला और हँसिया डरीं। रनबीर ने कहा—मालूम होता है, कहीं का धावा है। मिली हुई लड़ाई है। मगर जाड़े की फस्ल तो है नहीं। क्या जाने क्या बात है।

कमला—तुम तो चार बजे चलने को कहते थे। अभी से क्यों उठ खड़े हुए ?

रनबीर सिंह—हम समझे थे बड़ी गर्मी होगी।

हंसिया—भैया, कोई डर तो नहीं है ? इधर गोली-वोली तो न आएगी ?

रनबीर सिंह—दीवानी हुई है ! वह तो पहुँचे होंगे दो कोस अब।

दो घंटे बाद फिर वहीं फ़ौज मिली। अबकी तोपखाना आधा सड़क पर आधा और तरफ, वहाँ से ज़रा दूर। और सवार भी फैले हुए थे। उनमें से होके जो रथ निकला, तो औरतों को ज़रा खौफ़ मालूम हुआ कि कहीं गोरा हाथ न डाल दे। कमला ने कहा—भैया, इन भूतों-बन्दरों में से कहाँ चलते हो ? कहीं कोई हाथ न डाल दे। गले का हार न निकाल ले। मुए हूश तो होते ही हैं।

रनबीर सिंह ने कहा—अगर यह खौफ़ होता तो मैं कोई सिड़ी था कि जोखम की जगह औरतों को लेके आता ? ज़रा तिरछी नज़र से कोई देखे तो भुट्टा-सा सर काट लूँ। छत्री नहीं कोई अनिये-बनिये हैं क्या ?

कमला—(हँसकर) राजपूत की रग जोश में आ गई। तुम अकेले क्या बना लोगे ?

रनबीर सिंह—जो अकेले-वकेले का खयाल करे, वह छत्री नहीं। छत्री वह जो बाघ से कछार में जाके लड़े। हमारे नाना पैदल बनैले का शिकार करते थे। हम उनके नवासे हैं।

कमला—हाँ, बनैले का शिकार तो पैदल करते थे।

रनबीर सिंह—इस फ़ौज को देखकर जी भुरभुराता है, कि जंगी वर्दी हम पहने होते। भगवान ने चाहा तो वह दिन भी आया चाहता है। इस वक़्त ऐसा जोश है कि जी चाहता है कि जिसे छेड़ के लड़ पड़ूँ।

कामिनी—(मुस्कराती हुई) पागलपन।

इस पर कामिनी और कमला और हँसिया और ख़ुद रनबीर सिंह हँस पड़े। इतने में दूर से गोले की आवाज़ आई, और इधर से भी गोला दाग़ा; तो साथ के सिपाही ने कहा—गोला बजै लाग हजूर। इसी झील के पास हमारी दगलेवाली पल्टन से चरखारीवाले जमींदार के नाती से गोला चला था। (दाहिनी रान दिखाकर) यह गोली हमारे लगी थी। यह वही भूमि है। गिरधारा सिंह चकलेदार खैराबाद से और पंडित दल्लेराम काश्मीरी चकलेदार—दो चकलेदार भेजे गये थे। हम भी सिपाहियों में थे। वह जो सामने उतरालँग ऊँचा-ऊचा टीला है वही गढ़ी थी। अटारी पर से गर्द देखकर उसने गोला बरसाया। दल्लेराम के साथ किदारनाथ काश्मीरी थे। वह आग बरसते ही में फाँद पड़े, और राजा भाग गया। यह वही जगह है। आज कितनी बरसों बाद यहाँ सिपाही देखे।

रनबीर सिंह—तो यहाँ गढ़ी थी? हमको अब तक नहीं मालूम था।

सिपाही—कई लड़ाइयाँ हुईं सरकार यहाँ।

रनबीर सिंह—भला तुम्हारी दगलेवाली पल्टन इस फ़ौज का मुक़ाबला कर सकती?

सिपाही—हजूर, तोड़ेदार बन्दूक की इनके रफ़ल की कौन बराबरी। इतना तोड़ कहाँ। ऐसी तोप कहाँ थीं। हाँ, तलवार की लड़ाई खुले में हो तो ये एक न ठहरें। आड़ में जाके खाकी वर्दी पहनके दायँ-दायँ झोंक दिया—सुथराव कर दिया! खुले मैदान में तलवार सूतके आयें तो जानें; और यों सिपाही तो हैं ही। तलब अच्छी पाते हैं। गोश्त भर-पेट मिलता है। जोरू-बच्चों को खाना-कपड़ा मिलता है। रम शराब पीने को, सुन्दर छोलदारी रहने को।

झील जब एक गोली के टप्पे पर रह गई तो रनबीर सिंह ने अपने वैलर घोड़े को कड़कड़ा दिया। फौज से रथ दूर निकल आया था। कमला ने कहा—यह हमको अकेला छोड़के कहाँ घोड़ा दौड़ा के चल दिये? बूढ़े सिपाही ने कहा—बहूजी कुछ चिन्ता नहीं है। गाँव सामने है, कोई डेढ़ घंटे की राह पर। सामने गोली भरके टप्पे पर झील सरकारी है, और गोरे तो दूर हैं। कोई डर की बात नहीं।

कोई आधे घंटे से कम में झील के तरफ से गोली की आवाज आई। सिपाही ने कहा—यह सरकार ने बन्दूक़ चलाई। बड़ी चिड़ियाँ इस झील पर मिलती हैं! मुरग़ाबी और पिड़किया और हरियल, कबूतर, गिरगिर और जंगली मुर्ग़ी।

इतने में दूसरी गोली चली। रथवान को कामिनी ने हुक्म दिया—भीकम, तेज चलो! उसने बैलों को सनकार दिया। नागोरी बैल, अरबी घोड़ों के-से तेजगाम चले तो पलक मारते में झील पर थे। छकड़ा पीछे रह गया। सिपाही भी गिरता-पड़ता पहुँचा। उन्होंने देखा कि रनबीर सिंह शिकार खेल रहे हैं। थोड़ी देर में दो कबूतर और पाँच मुर्गाबियाँ और बारह चहे लादके आदमी चले। रथ और छकड़ा और कहार सब झील के पास एक बाग़ में गये। इसमें इमलाक भी थी: दो दालान नीचे और एक बड़ा और एक छोटा कमरा ऊपर। दोनों कुछ अंग्रेज़ी, कुछ हिन्दोस्तानी फ़ैशन से सजे हुए। हर चीज क़रीने के साथ। और कमरों के सामने एक खुशनुमा बरामदा। यहाँ से झील बड़ी पुरलुत्फ़ दिखती थी। कामिनी और कमला ने खाना खाया। उधर रनबीर सिंह ने चार चहों का कबाब बरहमन से पकवाया और खाना खाके उसी बरामदे पर कुरसियाँ बिछवाईं; और खुद भी बैठा और बीवी और बहन को भी बिठाया।—कि इतने में वही फौज क़रीने के साथ डबल कूच करती हुई जाने लगी। इस ऊँचाई से फ़ौज का सफ़ बनाकर मौज मारते हुए दरिया की तरह से जाना, और तोपों की आन-बान और विलायती हथियारों का चमकना और घोड़ों के शान और लुत्फ़ देखने क़ाबिल थे। और इन दोनों को अच्छा मौक़ा मिला कि पर्दे की क़ैद से आजाद होकर, घूँघट हटाकर, इस जमात को देखें। अपना बाग़, अपना घर, अपना इलाक़ा, अपना गाँव, आदमी, नौकर-चाकर, सिपाही, औरतें, बावर्ची, वावर्चिन, महरियाँ, सब मौजूद।

पाँच बजे के क़रीब रनबीर सिंह मछलियों के शिकार को चले। कमला और कामिनी बरामदे से मैदान और झील और बाग और जंगल की सैर कर रही थीं। बारिन, तुलसा, हँसिया, बाम्हनी वग़ैरह के अलावा गाँव की दो काछिनें और एक गद्दन भी अपने मालिक को देखने आयीं; कि इतने में ज़ीने से आवाज आई—

'वाह रानी साहब, हमको छोड़ के चली आईं। बन्दगी!'

सबको हैरत हुई। 'अरे जैनब की माँ, तुम यहाँ कहाँ!'

उसने फिर बन्दगी करके हँसते हुए कहा—एँ। मेरा वहाँ कब जी लगता भला। हम जो कोई आठ बजे गये तो सुना वह बाग़ गईं। बस वहीं से इक्का किया। राह में मुए गोरे मिले। दम ही तो फ़ना हो गया। जब वह निकल गये, भीड़ की भीड़, तब चले।

कमला—ले, इक्केवाले को डेढ रुपया दे दो।

कामिनी उसके आ जाने से बड़ी खुश हुई। कहा—हमने तो एक जगह रथ-वथ खोल दिया था। मगर फिर सलाह हुई, चले भी चलो।

उसने पूछा—गोरों की पल्टन मिली थी ?

कामिनी—दो दफा। अभी तो इधर से पल्टन गई।

ज़ैनब—गोलन्दाज़ भी थे। बड़ा रिसाला था।

कमला—ए, भुच के भुच बने हुए थे।

हँसिया—एक बार तो हम उनके बीच से आये।

जैनब—हम तो अकेलेपन के सबब से बहुत डरे। उन हूशों का एतबार क्या ? जंगली तो हैं ही।

कमला—बोले-बाले तो कुछ नहीं। मगर हाँ, घूरते हुए गये।

कामिनी—नहीं। रथ को ही ज़्यादातर देखते थे।

जैनब—वर्दियाँ कित्ती अच्छी थीं। साज-सामान से लैस। मैं तो पन्द्रह दिन पल्टन में रह चुकी हूँ। ज़ैनब के अब्बा वहाँ अस्पताल में कम्पौंडर थे ना !

कमला—(मुस्कराकर) खैर। मैं तो कुछ और ही समझी थी।

ज़ैनब—ओई, तुम क्या समझी थीं बेटा कि कोई गोरा-वोरा हमको उड़ा ले गया ? मुँह जला दूँ पकड़ के मुए का। छावनी में उनसे कोई नहीं डरता।

इतने में कमला ने कहा—ए तुलसा बुआ, ये सारस है ना.... तुलसा ने कहा—'हाँ, बेटा, सारस की जोड़ी है। पूछा—क्या पालू है ? गद्दन ने कहा—नाहीं। पलाउ हियाँ जंगल माँ कहाँ ! कामिनी और कमलापती ने ग़ौर से देखा। कहा—मियाँ-बीवी हैं। नर कौन है इनमें ? जैनब की माँ ने कहा उधरवाला नर है। इनमें एक अजीब खासियत है। जो एक मर जाय, तो दूसरा फुटियल रहता है। फिर जोड़ा न दिखाई देगा। नर मर जाय, तो मादा अकेली रहेगी — और मादा मर जाय तो नर टुटरु-टूँ। इतनी मोहब्बत उसको अपने जोड़े से होती है कि फिर दूसरा नहीं होने पाता। इसी से शिकारी लोग इस पर गोली नहीं चलाते। और इसके जोड़े का भी यही हाल है। वह भी बस एक ही के सर होता है। उसका भी कोई शिकार नहीं करता। तरस आता है। लोग कहते हैं कि किसी जंगल में एक सारस को किसी बेरहम ने गोली से मार डाला, तो दूसरे ने जो मादा थी उसके सोग में घास-फूस, पेड़ों की लकड़ी जमा कर के उसकी लाश को तोपा; और चोंच में आग लाके उस ढेर को जलाया; और जब शोले निकलने लगे तो आप भी उसमें जल मरी।' कमला को बड़ा ताज्जुब हुआ। कहा, यह तो सत्ती हो गई। वाह-वा, यह जानवरों तक में इत्ती मोहब्बत होती है। कुछ ठिकाना है ! कामिनी उस जोड़े को ग़ौर से देखा की। कि थोड़ी देर में एक जोड़ा और दिखाई दिया; और फिर

एक तीसरा जोड़ा झील के पास देखा। देर तक सारस और हंस की बात होती रहीं।

तुलसा ने कहा—यह तो हमने अपनी आँखों देखा है कि चकवा-चकवी का जोड़ा रात को बिछड़ा रहता है। दरियाव हो, नदी हो, झील हो—नर पानी के इधर, मादा उधर। चकवा इधर से बोलता है, चकवी उधर से। रात भर सवाल-जवाब रहते हैं। और लोग तो कानों सुनी कहते हैं कि चकवा-चकवी कहानियाँ कहते हैं—कि रात कहीं खत्म हो, तो बिछुड़े हुए मिलें। जैनब की मा ने कहा—देखो इन जानवरों में अपने जोड़े से ऐसा प्यार होता है, और आदमियों को देखो कि मियाँ बीवी जान के दुश्मन हो जाते हैं। जहर खिला दें, कुएँ में ढकेल दें, लोगों को लगा दें कि मार डालो; उम्र भर एक-दूसरे की सूरत न देखें। और इन जानवरों को देखो कि जोड़ा जाता रहा तो बस दुनिया से कोई मतलब नहीं। दिन भर चुगा, चरा, खाया-पिया; रात को सो रहे। यहाँ सत्तर-सत्तर करती हैं। और रात-दिन की दाँता-किलकिल अलग। कामिनी ने कहा—जब जोड़ा मर जाता होगा तो कैसी बिपता पड़ती होगी! बस इनकी ज़िन्दगी ही तलख़ हो गई। जो ऐसों का शिकार करे उससे बढ़के बेरहम कोई नहीं। एक तो शिकार ही करना कौन अच्छी बात है; मगर मर्द कब मानते हैं। दूसरे ऐसे बेचारे जानवरों का शिकार करना तो बड़ी ही बेरहमी की बात है। यह बात हो रही थी कि बन्दूक़ की आवाज़ आई। तुलसा ने कहा—भैया तो मछली के शिकार को गये हैं, यह बन्दूक़ कहाँ से चली। मालूम हुआ, कि एक साही निकली है; उसका शिकार हुआ। फिर खबर आई कि साही ज़ख्मी होके भाग गई।

जैनब की माँ दो-तीन औरतों को साथ लेके बाग़ देखने गई, तो अकेले में ननद भावजों में यों चुहल होने लगी:

कमला—अरे ख़ूब याद आया! मैं आज सोऊँगी कहाँ?

कामिनी—यह क्यों? इसी बरामदे में! हम-तुम इस बड़े पलँग पर सोएँगे। इसमें तो पल्टन की पल्टन समा जाये!

कमला—चलो बस, ऊपर के दिल से बातें न बनाओ! (मुस्कराकर) बहुत झूठ न बोलो!

कामिनी—और सुनो! अच्छा फिर कहाँ सोओगी, हमको अकेला छोड़कर?

कमला—ए क्यों बनाती हो? बड़ी वहाँ से वह बनके आई है। हम तुम को अकेला छोड़ देंगे, कि तुम रस्सियाँ तोड़कर भागोगी?

कामिनी—(खिलखिलाकर) तुमको यह हो क्या गया इस वक्त? हमको तो शर्म आती है। अब हम ऐसे बेहया हो गये कि तुमको छोड़के चले जायँगे?

कमला—यह तो परमेशर ही ने रचा है। तुम्हारी जोड़ी सलामत रहे!

कामिनी—चकवे-चकवी क्या करते हैं? क्या उनकी रात नहीं कटती?

कमला—हाँ, अच्छी बात तो है। इधर से तुम कहानी कहो, वह 'हूँ!' करें; फिर तुम 'हूँ, हूँ,' करो, वह कहानी कहें।

कामिनी—मैं तुम्हारा मतलब समझ गई। अच्छा आज सिफ़ारिश करूँगी कि नन्दोई को बुला दिया जाय। कहूँगी, बहन अकेली है; बहनोई को भी बुला लो।

कमला—आप माफ़ कीजिए। हम लोग अब पुराने हो गये।

कामिनी—ओफ़्फ़ोह! बड़ा रंज है इसका। (हँसकर) बड़ी ठंडी साँस भरी।

कमला—ज़ैनब की माँ कहाँ धम्म से पहुँच गई!

कामिनी—उसको हमारे बग़ैर चैन कहाँ? बड़ी नेक औरत है, और बेउज़र। किसी काम में बद नहीं। इसी को भिजवाके नन्दोई को बुलवा लें।

कमला—चलो, बातें न बनाओ। दुआएँ माँग रही होगी कि कहीं रात जल्द आये। हमारे भाई को बहुत छेड़ा न करो।

कामिनी—हम तुम्हारी बातों से साफ़ समझ गये कि सिफ़ारिश चाहती हो। ध्यान तड़के से उन्हीं की तरफ़ है। अब आज तो रात किसी तरह काटो। कल हम न बुलवा दें तो हमारा जिम्मा!

कमला (हँसकर)—आज शाम देर में होगी।

ज़ैनब—क्यों देर में होगी शाम। वाह, तुम अकेली हो, इससे शाम देर में हो।

कामिनी—जब से तुम गई हो, तब से ये हमको छेड़ रही हैं कि शाम आज देर में होगी।

इतने में रनबीर सिंह आये। एँ! ज़ैनब की माँ यहाँ कहाँ? उसने कहा—जहाँ राजा, वहाँ परजा। जहाँ सरकार, वहाँ लौंडी। बहन से पूछा, खाने को यहाँ क्या पका है? उसने कहा—चावल, रोटी, गोभी और लौकी की भजिया। सरसों का साग। उरद की दाल। आलू का भर्ता। मुर्ग़ाबी और चहे। कल बकरा ज़रूर मारा जाय। रनबीर सिंह ने कोठे पर से आवाज़ दी—ज़रा दरयाफ़्त तो करो, नीचे क्या पका है! आदमी ने कहा—सरकार, मछरी तली जात है; और गरम-गरम कबाब।

जब खाना पक गया तो नीचे का खाना भी रनबीर सिंह ने मँगवा लिया और व्हिस्की के साथ पहले कबाब और मछली खाई। फिर दूसरे कमरे में जाके रोटी और मुर्ग़ाबी और चहे और थोड़ा-सा साग खाया; और कैथे की चटनी उसी वक्त बनवाई। इधर कामिनी और कमला चौके में खाने बैठीं। रनबीर सिंह को खाने-पीने का बहुत विचार न था कि चौके ही में खाएँ और कपड़े ज़रूर उतारें। बुज़ुर्गों के सामने लिहाज़ के सबब से कभी जाहिरदारी करनी पड़ती थी; वर्ना आज़ादी का ख़याल ज़्यादा था, और सोहबत भी ज़्यादातर इसी ख़याल के लोगों से थी। कोई आठ बजे के वक़्त जब मालिक और नौकर

सबने खाने से छुट्टी पायी तो कमला ने कहा---मालूम होता है इन सारसों की जोड़ी इस बाग़ में रहती है। एक टहल रहा है; कुछ चुग रहा है : अच्छी तरह दिखाई नहीं देता। कामिनी ने ग़ौर कर के देखा। कहा---एक उधर वाला एक ही टाँग से खड़ा है। इस पर जैनब बोली---सरकार, एक बावर्ची अपने मालिक के लिये एक दिन मुर्ग़ी पका के ले गया---तो उसमें एक ही टाँग। दूसरी टाँग बावर्ची चख गया। बावर्ची चोर तो होते ही हैं। पूछा---अरे इसकी टाँग कहाँ है? बावर्ची बोला---सरकार सुना नहीं, मुर्ग़ी की एक ही टाँग! दूसरी टाँग तो उसके होती ही नहीं। मालिक ने झल्ला के बावर्ची को साथ लिया, और घूरे के पास जाके कहा---ले, एक टाँग की मुर्ग़ी हमें दिखा तो दे! इत्तफ़ाक से एक मुर्ग़ी उस वक़्त एक ही टाँग से खड़ी थी। बावर्ची ने कहा---यँह देखिये, यह एक ही टाँग की मुर्ग़ी खड़ी है। मालिक ने लकड़ी से ज़रा 'हुश' जो किया, तो मुर्ग़ी दोनों टाँगों से भागी। उसने कहा---देख वो दोनों टाँगें मौजूद हैं। ज़रा से 'हुश' कर देने में दोनों टाँगें दिखाई दीं कि नहीं। बावर्ची बोला---सरकार को जब यह तरकीब मालूम थी, तो दस्तरख़ान पर 'हुश' क्यों न कर दिया, दूसरी टाँग भी हो जाती। मुझे पकाते वक़्त यह तरकीब मालूम न थी; नहीं, मैं भी 'हुश' कर देता, दूसरी टाँग भी पक जाती। ज़रा से 'हुश' कर देने में मेरा क्या नुक़सान था!

कामिनी और कमला और हँसिया बहुत ही हँसीं, और रनबीर सिंह ने भी दाद दी कि बावर्ची बड़ा हाज़िर जवाब था। टाँग की टाँग चट कर गया और मुर्ग़ी की एक टाँग क़ायम रखी। अच्छा लतीफ़ा हुआ। एक शख़्स अपने पड़ोसी की बकरी हलाल कर के चख गया। उसके दोस्त ने कहा, यार चखने को तो तुम चख गये, मगर पड़ौसी क़यामत के दिन बकरी की गवाही अल्ला मियाँ के सामने दिलवाएगा, कि यही चुरा के हलाल करके खा गये। उन्होंने कहा---आप तो पागल हैं, जब कि पड़ौसी शिकायत करेगा, मैं कान पकड़के बकरी उसके हवाले कर दूँगा, कि लो अपनी बकरी; और क्या किसी की जान लोगे! इस लतीफ़े पर भी क़हक़हा पड़ा।

जैनब---ए हाँ, अपनी मुर्ग़ी बुरी न हो तो पराये घर अंडे क्यों दे?

रनबीर सिंह---और क्या। यह तो बताओ, तुम लोगों ने मछली भी खाई?

कमला---हाँ खाई। अब आज हम अपने हाथ से पकाएँगे। अब सर्दी के दिन आये। मछली की बहार है।

जैनब---एक तरह देखो तो सर्दी शुरू हो जानी चाहिए थी। दो दिन से पुरवाई जो नहीं चली है। नहीं तो दस बजे रात तक गर्म हवा परसों तक चली थी।

रनबीर सिंह---इस मौसम में दुलाई की सर्दी हो जाती थी।

कामिनी---कल क्या जाने काहे का शिकार होगा।

रनबीर सिंह—हम तो इसी झील पर खेलेंगे। और शिकारियों को हिरन के शिकार को भेज देंगे। बस शाम को कबाब पकें।

कामिनी—बटेर और चहे और फ़ाख़्ता और हरियल सबसे हिरन अच्छा। एक की जान जाय तो दस आदमियों का पेट भरे।

कमला—हाँ, है तो ऐसा ही। और मुट्ठी भरके जानवर मारे तो क्या! क्या पिद्दी और क्या पिद्दी का शोरबा। मुर्ग़ी की जान गई और खानेवाले को मज़ा न आया।

रनबीर सिंह—हरियल और चहे और फ़ाख़्ता का गोश्त ख़ूब होता है।

ज़ैनब—और तीतर का गोश्त राजा कैसा होता है।

रनबीर सिंह—बहुत अच्छा। खास तौर से काले तीतर का।

कामिनी ने अपने पति से बड़ा इसरार किया कि कल जिस तरह हो हिरन का गोश्त ज़रूर पके। बहुत दिन से नहीं खाया है : कोई साल भर हुआ होगा। रनबीर सिंह ने कहा, आज से महीना भर तक खाओ। तुमने पहले क्यों न कहा? हम कल से हिरन का गोश्त पाट देंगे। यह कौन मुश्किल बात है।'

कोई ग्यारह बजे के क़रीब सबने आराम किया, और खुले मैदान और जंगल बयाबान की हवा ने वह लुत्फ़ दिखाया कि गोया घोड़े बेचके सोये थे। रनबीर सिंह शिकारियों को लेकर चार बजे से तारों की छावँ में शिकार खेलने गये। सब सामान शिकार का साथ था। शाम को रनबीर सिंह शिकार से वापिस आये। दो हिरन और कई मुर्ग़ाबियाँ और इसी तरह के जानवर साथ। कई क़िस्म का गोश्त पका। हिरन के कबाब कामिनी ने बड़े ज़ायके के साथ खाये; और दूसरे दिन तारों की छावँ में शहर रवाना हुए। दो दिन यहाँ रह कर कमला अपनी सुसराल गई।

चौदहवाँ अध्याय

बोसेबाज़ी पर तकरार

बिगाड़ भी नहीं उनका बनाव से खाली
न जाओ आशिक़ो-माशूक़ की लड़ाई पर!

आशिक और माशूक के लफ्ज की इन उर्दू शायरों ने ऐसी मिट्टी पलीद की कि अब लोग बुरे मानों पर इसको इस्तैमाल करते हैं; हालाँ कि इन दो लफ्जों से बढ़के प्यारा और कोई लफ्ज़ सारी दुनिया में नहीं है। अब यह फ़रमाइए

कि कामिनी और रनबीर सिंह में आशिक़ कौन है और माशूक़ कौन? आप कहिएगा कि रनबीर सिंह आशिक़ और कामिनी माशूक़। हम कहते हैं, यह गलत है। दोनों आशिक और दोनों माशूक़। कामिनी रनबीर सिंह पर जान देती थी या नहीं? बेशक, रनबीर सिंह के नाम पर आशिक़ थी। रनबीर सिंह को तहे-दिल से कामिनी का इश्क़ था या नहीं? ज़रूर था। इससे कोई इनकार ही नहीं कर सकता कि इस दर्जे का इश्क़ किसी को कम होगा। कामिनी की एक-एक अदा पर उनकी जान जाती थी; हरेक छब दिल को लुभाती थी; पस, कामिनी रनबीर सिंह की आशिक़, और रनबीर सिंह कामिनी के आशिक़। रनबीर सिंह कामिनी के माशूक़ और कामिनी रनबीर सिंह की माशूक़। दोनों आशिक़ और दोनों माशूक़ हुए या नहीं?

जिस रंग-ढंग और जिस लिबास, जिस पोशाक में कामिनी होती थी, रनबीर सिंह को उसकी सूरत देखते ही गोया कारूँ का खज़ाना मिल जाता था। और रनबीर सिंह की बातचीत कामिनी को हर हालत में प्यारी लगती थी। एक रोज़ कामिनी घर के कोठे पर हँसिया से बातें कर रही थी और कह रही थी कि क्या जाने कहाँ चले गये। इस वक़्त जी नहीं लगता। वह होते तो उनके ख़ाली देखने ही से तबीअत बदल जाती। अगर इस वक्त आ जायँ तो जान में जान आये। हँसिया ने कहा—आते ही होंगे। इन्हें तुम्हारे बग़ैर कब चैन आयेगा? कहीं यारों-दोस्तों में बैठ गये होंगे।—इतने में घोड़े के टापों की आवाज आई, और हँसिया ने कहा—वह आ गये! कामिनी की बाछें खिल गईं। रनबीर सिंह सीधे कोठे पर आये। हँसिया से कहा—साईस से जाके हमारा रेशमी रूमाल ले आ।' हंसिया का जाना था कि कामिनी को लिपट कर चूमके कहा—तुम्हारे बग़ैर दम भर चैन नहीं आता। खाना खाकर जब अकेले में बैठे तो यों बातें होने लगीं।

कामिनी—इस वक्त जी नहीं लगता: आओ 'नक्श' खेलें!

रनबीर सिंह—हम कहने ही को थे।

कामिनी—मगर तुम बेइमानी करने लगते हो।

रनबीर—बजा। हम बेइमानी करते हैं कि तुम?

कामिनी—हम बद-बद के खेलेंगे।

रनबीर—तो फिर शुरू हो, बिस्मिल्लाह। हम कब बन्द हैं।

कामिनी—घी कहाँ गया? खिचड़ी में।

रनबीर—घी-वी मैं नहीं जानता; और खिचड़ी और दानेदार घी रहने दो। हम तो बोसा बदते हैं। दस-दस बोसे!

कामिनी—वाह, बड़े होशियार! हर तरह अपनी ही जीत।

रनबीर—यह काहे से? अगर हम जीते तो हम तुम्हारे प्यारे-प्यारे गालों

के बोसे लें। तुम जीतो तो तुम अपने होंठों से हमारे गोरे-गोरे गाल चूम लो।

कामिनी—अल्लाह, बड़े गोरे। अच्छा मंजूर।

'नक्श' खेलने लगे। कामिनी तीन बार जीती; और तीनों बार मुस्करा-मुस्कराकर पति को चूमा।

रनबीर—हमको शर्म आती है कि हम मर्द होके औरत से 'नक्श' में हार जायँ।

कामिनी—चलो बस, अब बनाओ न बहुत।

रनबीर—तुमको चौसर भी प्यार करता है।

कामिनी—इसमें क्या शक है।

रनबीर—तुम औरतों में ऐसी हो, जैसे पत्तों में यह पत्ता (पान की बिबिया दिखाकर)।

कामिनी—(मुस्कराकर) मुझे भी सब बीबियों में पान ही की बिबिया अच्छी मालूम होती है।

रनबीर—हुस्न के साथ बाँकपन लिये है ना!

चौथी बार रनबीर सिंह ने 'नक्श' में बे मानी की। उनका क़ायदा था कि शतरंज, चौसर, गंजीफा, पचीसी, चाहे जिसके साथ खेलें, उसमें बेइमानी जरूर करते थे। और बद-बदके कभी नहीं खेलते थे। 'नक्श' में उन्होंने यह बेइमानी की कि अपने पत्तों में से एक पत्ता फेंक दिया और कहा: इक्कीस का नक्श! कामिनी उनकी घातों से वाकिफ थी; उसने देख लिया, और कहा: वह पत्ता फेंका, मैंने देख लिया! बड़े बेइमान हो! रनबीर ने कहा: हम कुछ नहीं जानते, हमारा इक्कीस का नक्श है। यह कहकर बोसा लेने ही को थे कि कामिनी जन् से वह हो रही। यह भी पीछे दौड़े। मगर उसने दरवाजे बन्द कर लिये। औरतें जो घर में नौकर थीं, उनको मियाँ-बीवी के तनहाई के कमरों से क्या काम। मगर हँसिया दराजों से देख रही थी। उसने अपनी हमजोली रधिया से यों बातें कीं:—

हंसिया—देखती हो क्या छुली-छुलैया हो रही है मियाँ-बीवी में।

रधिया—फिर इसके दिन ही हैं। मगर राम ने यह जोड़ी अपने हाथ से बनाई है।

हँसिया—मियाँ तो पलँग पर लेटे; बीवी अभी रूठी हुई हैं।

रधिया—ए रूठना-मनाना कैसा! मियाँ और बीवी की लड़ाई जैसे सावन-भादों की झड़ी।

हँसिया—आज बड़ी ठंढक है!

रधिया—तभी तो यह छुली-छुलैया की उमंग है!

अब सुनिये कि रनबीर सिंह एक पलँग पर लेटे और कामिनी ने अपने कमरे के दरवाजे बन्द कर लिये और इनके-उनके सवाल-जवाब होने लगे।

कामिनी—जब देखो, बेइमानी।

रनबीर—झूठे की ऐसी-तैसी।

कामिनी—बेश बाद।

रनबीर—ले अब दरवाज़ा खोलो!

कामिनी—(मुस्कराकर) हम बेइमानों से बात नहीं क़रते!

रनबीर—अच्छा, खेल को जाने दो। यों बोसा दो, लो आओ!

कामिनी—ना, हरगिज़ नहीं। जब तुमको दो-एक दिन बोसे को तरसाऊँगी तब यह पत्ते उड़ा देना और बेइमानी करना छोड़ोगे।

रनबीर—अच्छा, अब ऐसी बात न होगी; मैं सदक़े, दरवाजा खोलो।

कामिनी—(तुनुककर) हज़ार बार समझाया कि 'सदके' का लफ़ज न कहा करो, मुझे बुरा मालूम होता है; मैं अलबत्ता तुम पर से वारी हो जाऊँ तो बात है।

रनबीर—अच्छा अब इसी बात पर बोसे दे दो!

कामिनी—यह न होने का। हमें भी ज़िद आ गई।

रनबीर सिंह ने दूसरे कमरे में जाकर एक पर्चे पर लिखा—

'मैं सदक़े और तुम पर वारी प्यारी
हमें दस बोसे अज़-बहरे-ख़ुदा दो!'

यह लिखकर हँसिया को दिया और कहा जाके दे दे। यह कहकर एक कमरे के अन्दर से होकर छत पर मसहरी पर लेटे। छत ऊँची, दीवारें नीची, बाग़ के तरफ का पूरा-पूरा लुत्फ़ मसहरी पर से आता था। मसहरी बहुत क़ीमती और इतनी बड़ी कि तीन आदमी आराम से आराम करें। फ़र्श सुथरा साफ़-शफ्फाफ, सफ़ेद। छत पर वही मुश्कों से छिड़काव किया हुआ। चाँदनी के नीचे मसहरी पर फूल, और चँगीरों में से चमेली के हार, पानी से तर-बतर। चाँदनी ख़ूब निखरी हुई। कोरी सुराहियाँ बालू की बनी हुई—फ़िल्टर के पानी से लबालब भरीं। उनमें असगर अली की दूकान का केवड़ा पड़ा हुआ; सफ़ेद साफ़ कपड़ा लपेटा हुआ—सिरहाने के पास रक्खी हुई। एक छोटी और खुशनुमा मेज़ पर एक ख़ूबसूरत से कन्टर में असली 'गुलाबी' रखी हुई। और कीमती क़ीमती कट-ग्लास, और बर्फ़। पान्दान उम्दा क़रीने से रक्खा हुआ; तम्बाकू की गोलियाँ, मोती की-सी आबोताब; कत्था केवड़े से बसा हुआ, चूना साफ़ किया हुआ, छोटी इलायची चौघड़े की।

अब इधर का हाल सुनिये कि हँसिया रुक्का लेकर गई। कहा—सरकार खोलिये, चिट्ठी लेके आई हूँ। कामिनी ने पूछा—सच बताना, कोई और तो साथ नहीं है। उसने कहा—जी नहीं, और कोई नहीं है। कहा, अगर और कोई हुआ तो मार ही डालूँगी। यह कहकर दरवाज़ा खोल दिया और रुक्का पढ़ा, तो फड़क गई। और कुछ देर बाद जवाब यों लिखा:—

'हमें ज़िद है कि हम बोसा न देंगे,
कभी हरगिज़ न कुछ तुमसे बदेंगे।'

हँसिया ने रनबीर सिंह को जवाब में यह पर्चा दिया तो पढ़कर मुस्कराये और दिल में बहुत ही खुश हुए, और सोचने लगे: 'न देंगे' और 'बदेंगे'—कितना अच्छा क़ाफ़िया है। इसका जवाब यों लिखा—

'तुम्हें ज़िद है कि मैं बोसा न दूँगी;
अगर हम आप से ले लें तो क्या हो?'

कामिनी ने भी जवाब को नज़्म करके भेजा:

'पराये माल पर लछमी नरायन!
बड़े वह बन के आये हो, च-खुश! वाह!'

इसका जवाब:

'कभी अब तक न की ज़िद हमसे लेकिन
न मानी आज तुमने बात जानी;
लिपट जाओ गले से आज झटपट,
हसीनों की हो तुम सरताज, जानी!'

पढ़कर कामिनी दरवाजे बन्द करके दबे पाँव उस छत पर आई जहाँ रनबीर सिंह लेटे थे और दबे पाँव जाकर बोसा लिया।

रनबीर—अब क्यों आईं? अब वह ज़िद कहाँ गई?

कामिनी—(एक और बोसा लेकर) ज़िद कैसी?

रनबीर—ज़िद काहे की थी?

कामिनी—ज़िद यह थी कि 'नक्श' का बोसा हम न देंगे। 'नक्श' के जो बोसे हमसे माँगोगे तो हम न लेने देंगे, और यों हम चाहे अपनी खुशी से हज़ारों बोसे तुम्हारे लें और तुम हमारे लो। बस यही ज़िद है।

रनबीर—रूठ बहुत जल्द जाती हो।

कामिनी—तुम्हारी नाक।

इस बातचीत के बाद रनबीर सिंह ने एक नौकरानी को पुकारा और बर्फ़ के दो टुकड़े माँगे। खुद जामे-शराब ढालकर पिया और बीवी को सुराही के पानी में बर्फ़ डालकर पिलाया। जब नौकरानी चली गई, तो रनबीर सिंह ने कहा—हम दोनों को उस वक्त क्या हो गया था? जरा-सी बात पर रूठ गये; भई वाह! और यह न समझे कि हमने बोसा लिया तो क्या, और तुमने लिया तो क्या! तुमको यह ज़िद, कि हम ही जीत में रहें! बात की बात। अब तुम अपनी अक़्लमन्दी को देखो कि मैं हारता तो फ़ायदा तुम्हारा होता; और मैं जीतता तो कौन-सा नुक़सान तुम्हारा था। बस, एक दफ़ा ही रूठीं तो—

इन तिलों तेल ही न था गोया: आपसे मेल ही न था गोया!

कामिनी—पहले तो मैं समझी कि तुम हुँसिया को समझा-बुझाके लाए हो। मैंने उसको क़स्में दीं और जब खूब यक़ीन हो गया कि वह अकेली ही आई है तब मैंने दरवाज़ा खोल दिया। उसने वह पर्चा मुझे दिया। पढ़ते ही मैं फड़क गई: 'तुम्हें ज़िद है कि मैं बोसा न दूँगी: अगर हम आपसे ले लें, तो क्या हो!'

रनबीर—यह कोई बहुत उम्दा शेर नहीं है। लेकिन एक बात इसमें ऐसी पैदा हुई है कि मज़ा दे जाती है। अगर पुराने फैशन के किसी शाह के सामने यह पढ़ो तो वह इसको पसन्द न करे।

कामिनी—अजी, वह पसन्द करे या न करे, हमको तो पसन्द है। बस पढ़ते ही मैं खुश हो गई। फड़क उठी। तुम्हारी इन्हीं बातों पर मेरी जान तुम पर जाती है। परमेशर जानता है कि यह शेर पढ़कर फिर मुझसे न रहा गया।

रनबीर—रूठे दिलवर को मनाना कोई हमसे सीख ले।

कामिनी—हाँ यह तो ठीक है, इसके तो हम भी क़ायल हैं।

रनबीर—अब यह बताओ कि आज का रूठना-रिसाना हमारी तुम्हारी दोनों की बेवकूफ़ी थी या नहीं?

कामिनी—नहीं, बेवकूफ़ी नहीं। यह एक जिद की बात थी। और यों देखो तो वह बात ही क्या थी। दस-दस बोसों का झगड़ा। अब हँसी आती है।....

रनबीर—(हँसकर) क्या दिल्लगी की बात है!

कामिनी—मुझे खुद हँसी आती है।

रनबीर—यह रूठना खुद तुम्हारा लौंडियापन था।

कामिनी—(तुनुककर) मेरा लौंडियापन था और तुम्हारा लौंडापन नहीं था?

रनबीर—मैं जो तीन बार हारा तो जरा झल्ला गया।

कामिनी—यह तुमसे कहा क्योंकर जाता है?

रनबीर—यह क्यों?

कामिनी—तुम हारे तो तुम्हारा क्या बिगड़ा। अरे, मैंने तीनें दफ़े बोसे लिये तो तुम हार में काहे में रहे?

रनबीर—(गले लगाकर) अपने सर की क़सम खाके कहता हूँ कि मैं खुद यह सोचता था। मगर उस वक़्त शैतान सर पर सवार था।.....और उस वक़्त बेअख़्तियार जी चाहता था कि बोसे लूँ।

कामिनी—अजी अब जाने भी दो। कुछ हँसी आती है, कुछ रंज होता है।

रनबीर—यह दिल्लगी भी उम्र भर याद रहेगी।

कामिनी—और मैंने जो वह बेवकूफ़ी की पर तुमको क्या सूझी!

रनबीर—क़सम से, रूठने में वह मज़ा आता है कि दिल ही कुछ उसके मज़े खूब लूटता है।

कामिनी—है तो ऐसा ही।

रनबीर—कितनी रूठी हुई थीं कि मालूम होता था, दो दिन तक न बोलेंगी। लो, जरा ठंडा-ठंडा पानी तो पिलवाओ।

कामिनी—(गिलास में सुराही से पानी उँडेलकर) लो।

रनबीर—बे वर्फ़ के तो हम पानी पीते ही नहीं।

कामिनी ने एक औरत को बुलाया। उसने बर्फ़ का पानी पिलाया। एक तो योंही पानी बर्फ़ हो रहा था। अब इतना ठंडा हो गया कि अगर कोई और पीता तो दाँतों का ख़ुदा ही हाफ़िज़ था। मगर ये इसके आदी थे। डेढ़ गिलास पी गये। आधा गिलास जो बचा था वह कामिनी को दिया। मगर ये दो घूँट से ज़्यादा न पी सकीं।

रनबीर—हम कितने ख़ुशनसीब हैं। चाँदनी रात कैसी निखरी हुई कि वाह, वाह! और इधर बग़ल में एक चाँद, उस चाँद से कहीं बढ़के जिस पर निखार है। उधर कामिनी, जिसको मनोकामिनी भी कहते हैं, फूली हुई। बाग़ क्या मोहल्ला भर महक रहा है; और इधर कामिनी, अस्ल कामिनी की ज़ुल्फ़: अंबर की लपटें आ रही हैं। बाग़ के फूलों की ख़ुशबू के अलावा जूही, बेले चमेली के फूल और हार जो पलंग पर बिछे और इधर-उधर रखे हुए हैं; उनकी ख़ुशबू अलग मस्त कर रही है। अजीब बहार की रात है। इस वक़्त जैसे किसी ने हमको करोड़ों रुपये दे दिये हैं। एक बात इस वक़्त सोचता हूँ कि जिन बदनसीब औरतों के प्यारे पति जाते रहते हैं उन बेचारियों के दिल पर क्या गुज़रती होगी। हमारी सलाह तो यह है कि....

रनबीर सिंह अभी पूरी बात कहने भी न पाये थे, कामिनी ने यों इनकी बात काटी:

कामिनी—चलो, बस, अब चुप रहो। यह तुमको क्या सूझी। कहाँ हँसी-ख़ुशी की बातें कर रहे थे, कहाँ बीच में यह बकने लगे।

रनबीर—अच्छा अब और तरफ ध्यान करो।

कामिनी—यह तुमको सूझा क्या?

रनबीर—चलो जाने दो।

कामिनी—किस ख़ुशी और आराम में इस वक़्त लेटे हुए थे और क्या तुमने तबीअत को परीशान और मज़ा किरकिरा कर दिया। (ठंडी साँस भर कर)—क्या सूझी।

रनबीर—वह गोरों की फ़ौज याद है, जहाँ बाग जाते थे, उस दिन देखी थी?

कामिनी—हम तो सुनते थे कि बड़े हूश होते हैं, मगर उनमें से कोई मिनका तक नहीं। कान दबाए चले गये।

रनबीर—यह अंग्रेज़ी राज है। सोना उछालते चले जाइये, अन्धेर नगरी

थोड़ा ही है। जब अफ़सर साथ होते हैं और फ़ौज जाती है, तो गोरे मिनक नहीं सकते। हाँ, अकेले जब बिला-अफ़सर के तीन-चार गोरे शिकार खेलने जाते है, तब अलबत्ता ज़रा दाँद मचाते हैं। तो वह भी कभी कभार।

कामिनी—तुमने कभी कोई लड़ाई देखी है?

रनबीर—हाँ, मसनूई* जंगें देखी हैं।

कामिनी—अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है। तुमको तो मैं जानती हूँ कोई फ़ौज में अभी भर्ती भी न करे।

रनबीर—वाह-वा! क्यों न भरती करे! अब ऐसे नन्हें भी नहीं हैं। और गोरों में तो हमसे कहीं छोटे-छोटे भरती होते हैं।

कामिनी—तुम फ़ौजी वर्दी में बिलकुल अंग्रेज़ मालूम होने लगो।

रनबीर—और तुमको अगर मेमों की पोशाक पिन्हा दी जाय तो यह मालूम हो किसी बड़े अंग्रेज़ अफसर की मिस बाबा है।

कामिनी—(बहुत मुस्कराकर) अब तो तुम गालियाँ देने लगे। नहीं, सच कहती हूँ, फौज की वर्दी तुम पर बहुत सजे, और तलवार-वलवार और ये और वो—पूरे साहब बहादुर मालूम होने लगो।

रनबीर—खुदा वह दिन दिखाए कि हम फौज में भर्ती हो रहें।

कामिनी—तुम ऐसे को तो फ़ौज में नौकरी न करनी चाहिए।

रनबीर—यह काहे से?

कामिनी—जिसको घर में खाने भर को रोटियाँ हों, उसको जान-जोखम की नौकरी न करनी चाहिए।

रनबीर—और यह जो बड़े-बड़े करोड़पति अंग्रेज फौज में भर्ती होते हैं?

कामिनी—करोड़पति तो काहे को होते होंगे?

रनबीर—अर्ल और ड्यूक के लड़के वो-वो नौजवान जिनके पास साठ-साठ घोड़े हैं और हज़ारों रुपये की बाज़ी हार जाते हैं और उफ़् तक नहीं करते।

कामिनी—फिर नौकरी क्यों करते हैं?

रनबीर—उनको बहादुरी का शौक़ होता है। नाम पैदा करने का वलवला, क़ौमी जोश, मुल्क पर जान क़ुरबान करने का दिली ख़याल। कुछ रुपये के लिए थोड़ा ही सब नौकरी करते हैं। वह ढाई-सौ की माहवारी तनख़ाह में भला पचास-पचास घोड़े कोई पाल सकता है? दो सौ रुपये तनख्वाह के तो दस घोड़ों के बाँधने में निकल जायँ, और हार-जीत के हज़ारहा अलग।

कामिनी—तो ये नाम के वास्ते फ़ौज में भरती होते हैं? अपने मुल्क पर गोया सदक़े हो जाते हैं।

---

* क़वायदवाली झूठमूठ की जंग, जिनमें सिपाहियों को असली लड़ाइयों के लिये चुस्त और होशियार बनाया जाता है। (अनु०)

रनबीर—और क्या। हमारे दिल में बड़ा वलवला पैदा हुआ है कि किसी जंग में शरीक हों;—और छोटी नौकरी किया न चाहें—रिसालदारी एकाएकी मिला न चाहे। हाँ, अगर बहुत बड़ी सिफ़ारिश हो, तो शायद शिप्पा लड़ जाय, वर्ना बहुत मुश्किल है। कायदे के ख़िलाफ।

कामिनी—अगर तुम फ़ौज में भर्ती हो तो हम कहाँ रहें ?

रनबीर—जहाँ हम रहें, वहाँ तुम रहो।

—:०:—

पन्द्रहवाँ अध्याय

चाँदी के पायों के तीन बादी चोर

रनबीर सिंह ने उठके जिन शराब और अदरक की शराब (जिंजर वाइन) और नीबू का अरक (लेमन जूस) मिलाकर एक गिलास बनाया, और बहुत-सी बर्फ़ उसमें डाली, और आधा गिलास पीकर बीवी को दिया और कहा—हमीं को रोए जो इसको न पिये। कामिनी धक से रह गई। सोचा, कि यह आज इनको हुआ क्या! आज तक कभी ऐसी ज़िद न की थी—आज यह क़समा-क़समी कैसी! मगर क्या करती, प्यारे पति ने इतनी बड़ी क़सम दी थी, ये अगर ज़हर भी देते तो उसे अमृत समझकर पी लेती। मजबूर है। फौरन् गिलास लेकर आँखों से लगाया और एक घूँट पीकर कहा—कि जैसे कलेजे तक को ठंडा कर दिया। योंही ठंडक क्या कम थी, और इसने तो बिलकुल ठिठुरा ही दिया। रनबीर सिंह ने कहा—तुम्हारे कलेजे को ठंडक पहुँचायी है, मगर हमारे कलेजे का तो हाल कहो, कि उसको कितनी ठंडक पहुँची, कि तुमने बिला-उजर हमारा कहना मान लिया। कामिनी ने जवाब दिया—यह कौन बड़ी बात है। अगर संखिया दो तो अमृत समझकर आँख बन्द करके पी जाऊँ। तुम्हारा कहना न करूँ, भला यह भी कोई बात है। मगर एक बात मुझे कहनी है, वह इस वक़्त न कहूँगी, फिर कहूँगी। रनबीर सिंह ने फिर इसरार किया कि तुम तो बस एक घूँट पीके रह गईं। कोई कड़वी चीज़ तो है नहीं। उम्दा ज़ायकेवाली चीज है। ऐसा शरबत भी कभी न पिया होगा। कामिनी ने दो घूँट और पिये, और बाक़ी रनबीर सिंह पी गये, इसके बाद उन्होंने ब्रांडी का जाम बर्फ़ के साथ लिया और कामिनी से कहा—जानी! कौन देखने आता है—ज़रा-सी पी लो! इससे कामिनी ने इनकार किया, मगर जब रनबीर सिंह ने हद से ज़्यादा इसरार किया तो होंठो के पास लाई। ये

जब काश लेने को झुकें, तो कामिनी ने फेंक दी। और उनसे चार आँखें हुईं तो मुँह बनाकर कहा—'यह बुरी चीज है। वह पहली चीज, अच्छी थी ! उन्होंने कहा—वह शरबत है, यह शराब है । वह और यह— और इतने में कामिनी बोली—यह क्या अन्धेर है कि तीन चोर चाँदी का पलंग चुराये लिये जाते हैं।

रनबीर—क्या ? (अचम्भे में आकर) क्या कहा ?

कामिनी—तीन चोर चाँदी का पलंग चुराये लिये जाते हैं।

रनबीर—अब रंग लाई गिलहरी।

कामिनी—तीन चोर। एक नहीं हुए, तीन-तीन !

रनबीर—(हँसकर) ठंडा पानी पियोगी ?

कामिनी—अरे वह तो सब कुछ होगा जी; ये मुए तीन चोर चाँदी के पायों का पलंग चुराये लिये जाते हैं, और कोई मिनकता तक नहीं।

रनबीर—पकड़े जायँगे। और पलंग है किसका ?

कामिनी—या तो सूरजनारायन का है, या शायद चाँदका परशाद का हो।

रनबीर—(बहुत हँसकर) बड़ी दिल्लगी हो रही है। सूरजनारायन का पलंग तीन चोर लिये जाते हैं।

कामिनी—चाँदी के पायों का पलंग।

रनबीर—(एक जाम और लेकर) चाँदी के पायों का पलंग कल हम भी निकलवाएँगे।

कामिनी—बड़ा अन्धेर हो रहा है, और कोतवाली पास।

रनबीर—(मारे हँसी के लोटते हुए)—कोतवाली पास और चोरी हो जावे ! और अन्धेर है।

रनबीर सिंह नें हँसिया को आवाज़ दी। हँसिया आई। कहा—आज जरा बीवी साहब की कैफ़ियत तो देखो ! इतने में कामिनी ने उसको देखकर फिर वही बाँग लगाई—अरे हँसिया, यह आज क्या अन्धेर हो रहा है—कि तीन चोट्टे चाँदी के पायों का पलंग लिये जाते हैं।

हँसिया—क्या ? क्या लिये जाते हैं ?

कामिनी—तीन चोट्टे चाँदी के पायों का पलंग चुराये लिये जाते हैं।

हँसिया—(मुस्कराकर) क्या भंग पी है ?

कामिनी—अरी दीवानी, तीन चोर और एक चाँदी के पायों का पलंग।

रनबीर—(आहिस्ता से)—पूछो किसका पलंग है ?

हँसिया—वह पलंग जो चोर ले गया किसका है ?

कामिनी—मैं तो जानती हूँ, सूरजनारायन का है या चांदका परशाद का।

रनबीर—(आहिस्ता से)—पूछो कहाँ से चोरी गया ?

कामिनी—कहाँ से, कहाँ से लगाया है। कोतवाली से, और कहाँ से !

हँसिया—(हँसकर) —आज कुछ पी है जरूर।

रनबीर—लो हँसिया, तुम भी पियो। (फूल के कटोरे में, ब्रांडी उँडेल कर) लो, पी जाओ; आज की माफ है।

हँसिया—यहाँ यह जान पड़ता है कि जैसे बैकुण्ठ में बैठी हूँ। कैसी महकें चली आती हैं कि वाह! अच्छे-अच्छे राजा-बाबुओं को यह बात नसीब न होगी।

रनबीर—हाँ साहब, तो यह बड़ा अन्धेर हो रहा है। फिर अब इसका इलाज ?

कामिनी—तारों की छाँव-छाँव लिये जाते हैं।

रनबीर—दूर की सूझ रही है आज।

कामिनी—सितारों की छाँव-छाँव!

हँसिया—(हँसती हुई) कभी की आदत नहीं है।

रनबीर—मगर सच कहना, चाँद में और इनकी सूरत में कोई फर्क मालूम होता है? हमको तो नहीं मालूम होता। खुदा जानता है हमसे बढ़के खुश-नसीब कोई नहीं है। दूर-दूर तक ऐसी औरत न होगी। सरापा साँचे का ढला हुआ। कपड़ों से नूर छन-छनके बरसता है। सर से पाँव तक नूरानी, नूर से भरी हुई, नूर ही नूर बरसा रही हो जैसे; सब तन-मन नूर... गर्दन नूर का फ़व्वारा, गला नूर का। तबीअत नूर की पायी है। सच है कि—आप अल्लाह ने बनाई है!

थोड़ी देर में हँसिया उठके चली गई, और मियाँ-बीवी ने आराम किया। ठंडी-ठंडी हवा के झोंके चल रहे थे। चाँदनी निखरी हुई थी।

सुबह को मुँह हाथ धोकर कामिनी बाग़ के सहन में आई। अख़बार पढ़ रही थी। और हँसिया मौलसरी के दरख़्त में झूला झूलती थी, कि रनबीर सिंह घोड़े से उतरे, और वह भी बाग में आये। कामिनी ने मुस्कराकर कहा—हवा खा आये! ये भी मुस्कराये और आके कामिनी के पास बैठे। और एक अख़बार यह भी पढ़ने लगे। पढ़ते-पढ़ते अचानक ही कहा—अरे!—कामिनी चौकन्नी हुई। पूछा—क्या पढ़ा ? ख़ैरियत तो है ? कुछ बोले नहीं, मगर दाँतों के तले उँगली दबाई। और फिर ग़ौर से पढ़कर ज़ोर से बोले—अरे-रे-रे! बड़ा अन्धेर हो गया! अब कामिनी चिल्लाई—ए तो कुछ कहो भी तो भलेमानस, हमारा जी घबराता है! रनबीर सिंह ने फिर ज़ोर से कहा—ऐसा अन्धेर हमने सुना ही नहीं था। अख़बार वाला लिखता है कि सूरजनारायन चाँदका परशाद का चाँदी के पायोंवाला पलंग तीन चोर उठा ले गये! यह कह कर जोर से एक क़हक़हा लगाया। कामिनी अस्ल में समझ गई, मगर हँसी को दबाकर बनावटी लापरवाही से पूछा—किसका पलंग चोरी गया? उन्होंने हँसते हुए कहा—सूरजनारायन चाँदका परशाद का पलंग।

कामिनी—होंगे कोई। मैं तो डर गई कि जाने क्या लिखा है। इतने में हँसिया भी झूले से उतर आई और समझ गई कि कलवाली बात पर बना रहे हैं। खुद भी जाके मुस्कराकर पूछा—कैसा पलँग चोरी गया, सरकार ? उन्होंने बताया—चाँदी के पाये हैं, और सूरजनारायन का पलँग। उसने पूछा—और ले कौन गया, सरकार ? कहा—तीन चोर। एक नहीं, मुए तीन-तीन चोर, यह फ़िकरा कहकर रनबीर सिंह बहुत हँसे, और हँसिया भी खिलखिलाकर हँस पड़ी। कामिनी बोली—मालूम होता है, कोई दिल्लगी की बात है। पलँग कैसा और ये चाँदी के पाये कैसे ? और सूरजनारायन कौन है ? और वो तीन चोर कौन, कुछ याद है ? कल की बात याद होगी !

हँसिया—पहले तो मैं समझी नहीं कि क्या कहते हैं, फिर ताड़ गई।

इतने में धन्नो आ गई, और इन सबने बात टाल दी। मियाँ-बीवी की बात धन्नो के पूछने की नहीं है। रनबीर सिंह भावज से दिल्लगी करने लगे—कि तुमको बड़ा अफसोस है, भाभी कि भाई के बदले हमको क्यों न ब्याह के आयीं ! और मैं सच कहता हूँ कि मुझसे-तुमसे दम-भर न बनती ! वह बोली—कुछ सिड़ी हो गया है लौंडे, अब तू कुछ सुनेगा जोरू के सामने। बंदर-सा मुँह, बिज्जू की-सी आँखें ! इस पर कामिनी भी हँसी, और धन्नो और कामिनी और हँसिया झूला झूलने लगीं। आहिस्ता-आहिस्ता गाने लगीं। जब धन्नो ठकुरानी घर के अन्दर गयीं, तो रनबीर सिंह ने फिर बनाना शुरू किया—अजी बी कामिनी साहब, कहिये वह पलँग क्या हुआ ? (मुस्कराकर) यह तुमको सूझी क्या ? और बड़े इसरार के साथ फ़रमाती थीं कि तीन चोर—एक नहीं मुए तीन-तीन चोर, कोतवाली के पास; और सूरज नारायन चाँदका परशाद कौन ? हँसिया और खुद-बदौलत खूब हँसे। कामिनी ने क़तई इनकार किया—कि, हम जानते ही नहीं, हमने कहा ही नहीं, हमें मालूम ही नहीं। तब रनबीर सिंह ने रात का हाल सब कह सुनाया कि—दस-दस बार तुम यही कहो कि एक नहीं, मुए तीन-तीन चोर ! एक नहीं, मुए तीन-तीन चोर ! हँसिया ने भी इसकी गवाही दी। मगर कामिनी इनकार ही करती गई, कि—मैंने कुछ नहीं कहा।

जब रनबीर सिंह क़समें खाने लगे कि ज़रूर कहा, तो कामिनी ने एक दफ़ा ही पलटके कहा—अच्छा, कहा; खूब किया। और नहीं कहा, तो अब कहते हैं, और सच भी यही है कि तीन चोर चाँदी के पायों का पलँग चुराये लिये जाते हैं। जाइये, अब फिर कहते हैं ! (हँसकर) आप हैं किस फेर में मियाँ साहब ! 'मियाँ साहब' के लफ़्ज पर रनबीर सिंह और हँसिया दोनों को बहुत हँसी आई।

रनबीर—अब तुम बनती हो, झेंप मिटाती हो। अच्छी तरह याद न होगा।

कामिनी—मैं सच कहती हूँ—तीन चोर पलँग लिये जाते थे। चाहे बद लो?

रनबीर—आइये बदते हैं! सौ-सौ रुपये, अच्छा पचास-पचास रुपये।

कामिनी—पचास-पचास रुपये हम नहीं जानते। हम कोई कंगाल नहीं हैं। हम गाँव-गाँव बदते हैं। एक-एक गाँव बदो! मगर बेइमानी की सनद नहीं!

रनबीर—जो कोई झेपता है और झेपके फिर दूसरे को बेवकूफ़ बना के झेप मिटाना चाहता है, उससे हम बहुत नाराज हो जाते हैं। साफ झेपे हुए हैं, मगर बन रहे हैं।

कामिनी—मैं तुमसे सच कहती हूँ, तुम हार जाओगे। अच्छा, तो बदते क्यों नहीं हो?

रनवीर—अच्छा, आओ बदते हैं। योंही सही।

कामिनी—हाथ पर हाथ मारो।

रनबीर—(हाथ पर हाथ मारकर) मैं भर लूँगा, बीवी साहब!

कामिनी—मैं भी भर लूँगी, मियाँ साहब।

हँसिया बहुत हँसी; कहा—ये हार जायँगी। तैश में आकर हाथ मार तो लिया है, मगर हारी धरी हैं—और ये देवेंगी नहीं।

रनबीर—नहीं! क्या दिल्लगी है? मैं जेवर न उतार लूँगा?

कामिनी बोली—और मैं नालिश कर दूंगी।

कामिनी ने हँसिया को भेजकर धन्नो रानी को बुलवाया, और कहा—गवाह रहना। एक शर्त बदी गई है। धन्नो ने पूछा— वह क्या? उसने कहा—पूछो! रनबीर सिंह ने पीने-देने का जिक्र तो नहीं किया मगर और सब बातें कह दीं। धन्नो भी बहुत हँसीं। ये तीन चोर और पलँग कोई पहेली है— या भँग पी है? कामिनी ने कहा—तुम भी बद लो! हमने तो एक गाँव बद लिया है। धन्नो ने फिर चन्द सवाल किये और कहा—हमारी समझ में तो कोई पहेली नहीं। मगर, हाँ गवाही हैं। कामिनी ने कहा—इसका फ़ैसला तुम्हारी राय पर है। अगर तुम न कह दो कि कामिनी कुँवर जीत गई, तो हमारा ज़िम्मा। उसने कहा—अच्छा; यह हमने माना। अब देखें ठाकुर रनबीर सिंह जीतते हैं या कामिनी कुँवर ठकुराइन। अब यह न मालूम हुआ कि गाँव से मतलब क्या है। कितना बड़ा गाँव कैसा गाँव, किस आमदनी का गाँव। रनबीर सिंह ने कहा—चाहे जितना बड़ा हो, मतलब तो जीतने से है। नाम तो होगा कि इतनी बड़ी शर्त ठाकुर बलज़ोर सिंह की लड़की, ठाकुर रनवीर सिंह राना बहादुर, धन्नोरानी ठकुराइन के पति.... वह, तोबा, तोबा! (गालों पर थप्पड़ लगाकर) पति नहीं, देवर; चमड़े की ज़बान थी, फिसल गई। धन्नो ने मुस्कराकर कहा—यह रसाँ-रसाँ थप्पड़ लगाने की सनद नहीं। हमारे हाथ हों और तुम्हारे गाल! रनबीर सिंह बोले—हमारे गाल हों और

तुम्हारे होंठ। उसने मुस्करा कर कहा—मुँह बनवा आओ!' थोड़ी देर फिर धन्नो ठकुराइन ने झूला झूला और चली गई।

कामिनी ने अलहदा जाकर रनबीर सिंह को बुलाया और कहा—देखो, यह बात पढ़े-लिखे आदमी के अक़्ल के ख़िलाफ की। माना कि हिन्दुस्तान की बाज कौमों में बड़ी भावज से इस तरह की दिल्लगी करना जायज है और ख़ाली-ख़ूली हँसी-दिल्लगी में कोई हर्ज भी यों देखने में नहीं मालूम होता; दो घड़ी की दिल्लगी है, मगर गँवारपन ज़रुर है, उजडपना ज़रूर है। चाहे शहर में बराबर रिवाज हो, और है ही, मगर बुरा रिवाज है। बड़ी भावज की इज़्ज़त करनी चाहिये, न यह कि 'हमको चूम लो, हमको लिपट जाओ।' बेहयाई की बात है।'

रनबीर सिंह बीवी की बात ग़ौर से सुनते रहे। जब ये कह चुकीं तो उन्होंने गले लगाके चूम लिया, और कहा—तुमने इस वक़्त लाख रुपये की बात कही। वाक़ई यह भलमनसी के ख़िलाफ़ है। हमारी बड़ी बेवकूफ़ी है। *वजह क्या? वजह यह कि लड़कपन से यही सुनते आये हैं। इसी के आदी हैं,* बस! अब आज से न कहेंगे।

कामिनी ने कहा—हाँ, अक़्ल के तो यही माने हैं। यह कौन दिल्लगी में दिल्लगी है! जिसकी इज़्ज़त करनी चाहिए, उससे कहते हैं, हमको लिपटके प्यार कर। वाह-वा! अपने भाई से यही कहोगे कि ज़रा अपनी जोरू आज भेज देना? नहीं कहोगे, ना? मगर भावज से कहोगे कि—आ दिलजानी, खटोले पर सो रह! इस पर रनबीर सिंह को बड़ी हँसी आई। लोट-लोट गये! पेट में बल पड़-पड़ गये। कहा—सच तो यों है कि यह बड़ी बुरी रस्म है।

ग़रज़ यह कि जब रात आई तो रनबीर सिंह ने कहा—ले अब अपना वादा पूरा कीजिए, और गाँव लाइये! वह बोली—बजा। ग़ाँव लाइये की अच्छी कही। उलटा चोर कोतवाल को डाँटे। अब दो-दो गाँव बद लो!

रनबीर—अब तुमने बेइमानी पर कमर बाँध ली!

कामिनी—(आसमान की तरफ़ इशारा करके) वह, वह सात सितारे हैं! चार पलँग की सूरत, तीन एक के बाद एक। वह तीनों चोर हुए। और पलँग चाँदी के पायों का है या नहीं? सूरजनारायन व चाँदका परशाद आसमान पर हैं या नहीं? अल्ला मियाँ आसमान पर हैं या नहीं—बन्दगी! अब गाँव लाइये!

रनबीर—(शरमाकर) लाहौल विला ..... अरबी में उन्हें 'सब्आ सैयारा' कहते हैं, संस्कृत में सप्तऋषि।

कामिनी—मैंने तो जान-बूझके बार-बार कहना शुरू किया था जिसमें तुमको पूरा-पूरा यक़ीन हो जाय, कि मुझे तेज हो गई। मैंने तो वह सबकी सब

फेंक दी थी। जों-जों मैं कहूँ कि इस अन्धेर को देखो कि तीन चोर एक पलँग को उठाए लिये जाते हैं, उस क़दर तुमको और यक़ीन होता जाय.....ले अब गाँव लाइये—दूसरे दिन धन्नो ठकुराइन और हँसिया ने सुना तो बड़ी दिल्लगी हुई, और रनबीर को वादा पूरा करना पड़ा। गाँव का तो उनको ज़रा भी खयाल न था, क्योंकि घी कहाँ गया? खिचड़ी में। मगर हार जाने का बड़ा अफ़सोस था।

अब सुनिये कि दूसरे दिन एक ऐसी बात हुई जिसका हाल रनबीर सिंह ने बीवी और माँ-बाप किसी पर ज़ाहिर नहीं किया था। सिर्फ़ अपने बड़े भाई को लिखा था। मुद्दत से उनकी तमन्ना थी थी कि फौज में भर्ती हो जायँ। चुनांचे कई बार उन्होंने बीवी से बातों-बातों में ज़िक्र भी किया था। बड़े से बड़े फ़ौजी अफ़सरों से मुलाक़ात थी; और चूँकि जवान-ख़ूबरू था, पूरा डील-डौल, मज़बूत चौड़ा-चकला, हाथ-पाँव ख़ूबसूरत, सुडौल, सिपाहगरी के फनों में बर्क़, शहसवारी में बे मिसाल—बड़ी ज़बरदस्त सिफ़ारिश पहुँचाई गई, और उनके नाम जंगी मोहकमे की तरफ़ से तार आया कि तुम २८ नम्बर रिसाले के रिसालदार मुक़र्रर हुए; एक हफ़्ते के अन्दर हाज़िर हो। उन्होंने खुश-खुश बीवी को भी इत्तला दी। धन्नो ठकुराइन और अपनी माताजी से भी कहा। बाप और भाई को चिट्ठी लिखी और अपने जान-पहचान के दोस्त फ़ौजी अफ़सरों को भी इत्तला दी। इनके यहाँ की औरतें तो इसकी आदी ही थीं, उनके लिये कोई नई बात न थी। मगर कामिनी को यह सुनकर रंज हुआ कि पति से कुछ दिनों के लिये जुदाई होनेवाली है।

——:०:——

सोलहवाँ अध्याय

नौचन्दी जुमेरात

रनबीर सिंह की माँ को ज़रा भी दिल में अफ़सोस न था कि लड़का फ़ौज में भरती होके जाता है, बल्कि बुलाकर नसीहत की, देखो बेटा, तुम्हारे बाप यहाँ इस वक़्त नहीं हैं। वह लड़ाई-भिड़ाई में लड़-भिड़ रहे हैं। मैं औरतज़ात हूँ। मगर तुम्हारी तालीम में लाखों रुपया खर्च किया गया है। छत्री के धर्म का खयाल रखना। इसी से हमारा नाम और आबरू है। इसी से हमारी इज़्ज़त है, और इसी से हमारी रोटियाँ चलती हैं, यह नहीं है तो हम कोई चीज़ नहीं। अगर इसका खयाल न रखा तो दूध न बख्शूंगी। इनके यारो-दोस्तों को इसका

रंज ज़रूर था कि एक दोस्त और रनबीर सिंह का-सा दोस्त सोहबत से जुदा होता है; मगर इस बात की खुशी थी कि रनबीर सिंह ने फ़ौज में ऐसा इज्ज़त का ओहदा पाया, जिसकी इनको मुद्दत से आरज़ू थी। हां, कामिनी को अलबत्ता रंज था कि रनबीर सिंह से जुदाई होती है। गो रनबीर सिंह ने कह दिया था कि मऊ (जहाँ की छावनी में ये तायनात हुए थे) जाते ही बुलवाऊँगा, मगर इस महीना-बीस रोज़ की जुदाई भी इसको शाक़ थी। रात को एकान्त में मियाँ-बीवी में ये बातें हुईं—

रनबीर—जब से यह खबर तुमने सुनी है, तब से जैसे तुम खुश नहीं हो।

कामिनी—मैंने तो उफ़् तक नहीं की।

रनबीर—मगर तुम्हारे रंग-ढंग, बातचीत और चेहरे से साफ़ ज़ाहिर है।

कामिनी—अच्छा यह बताओ कि अपने आदमी की जुदाई किस बीवी को शाक़ न गुज़रेगी?

रनबीर—जुदाई कैसी? मऊ की छावनी क़दम भर पर है। जाके कोई उम्दा कोठी पसन्द करके तुमको बुलवा लूँगा।

कामिनी—अच्छा तो मैं कुछ कहती थोड़ा ही हूँ।

रनबीर—चलो कल तुम्हें नौचन्दी जुमेरात की सैर दिखायें। रुस्तम नगर की चढ़ाई पर एक मकान मोल लिया है, वहाँ से बैठकर सैर देखना। चिकें पड़ी हुई हैं।

कामिनी—जैसा कहो। मगर मेरे सर पर हाथ रक्खो, जल्द बुला लोगे। और जो दो-चार दिन अभी कोठी न मिले?

रनबीर—तुम इस क़दर इसरार क्यों करती हो। मुझे तो खुद ही इसका खयाल है। तुम गो यहाँ कभी कमला कभी राजदुलारी, कभी अपनी किसी बहन, कभी किसी भावज से दिल बहलाओगी, मैं तो वहाँ बिलकुल अजनबी हूँगा। हरदम तुम याद आओगी। तुम्हारे बग़ैर दम भर चैन न आयेगा। अब हमें खुशी-खुशी जाने दो। चलो, कल तुम्हें नौचन्दी दिखला लाएँ। बहन को भी बुलाएँगे। जैनब की माँ को भी ले लेंगे।

रनबीर सिंह दूसरे रोज़ अपनी रवानगी की तैयारी करने लगे, और बीवी के जरा दिल बहलाने के लिये चार बजे गाड़ी पर सवार होकर रुस्तम नगर में लाये। कमला और ज़ैनब की माँ भी थीं। मकान में बिठाकर खुद किसी दोस्त से मिलने गये और कह गये कि अभी आता हूँ। इन लोगों ने जो देखा तो वह भीड़-भड़क्का—कि वाह!

कामिनी—ए, यह तो मेला है।

जैनब—बड़ी भीड़ें होती हैं।

कमला—वह हाथी आता है।

जैनब—अभी हाथी शहर में हैं। इक्का-दुक्का होंगे।

कामिनी—मऊ की छावनी तो दूर नहीं है?

कमला—ए यह क्या बोदी-बुज़दिली औरतों की तरह काँपी जाती हो?

जैनब—अजी हाँ, वो बात ही कौन है।

कामिनी—जब से सुना है, परमेशर जानता है, मेरा जी ठिकाने नहीं।

कमला—दिल को ढारस दो। मर्द सबके बाहर जाते हैं।

अब लोगों की भीड़ और आमद-रफ़्त ज्यादा होने लगी। नौचन्दी जुमेरात की कैफ़ियत अजब लुत्फ़ दे रही थी।

कामिनी—यह कैफियत तो तुमने आज तक देखी ही न थी।

कमला—बड़ी भीड़ रहती है। अब यह हजूम कब तक रहेगा?

जैनब की माँ—बस, कोई बारह बजे, एक बजे तक। (कामिनी से) तुम तो गई हो! जब नन्हीं-सी थीं, कई दफ़ा तुम्हारे नाना तुमको ले गये हैं।

कामिनी—डोली पर डोली और पीनस पर पीनस चली जाती हैं। कितनी *बग्घियाँ-गाड़ियाँ आके गयीं।*

जैनब—इस शहर की रजब की नौचन्दी मुल्कों-मुल्कों मशहूर है।

इतने में रनबीर सिंह का घोड़ा दूर से दिखाई दिया। मुश्की वैलर जवान। काठी और साज नया, और कीमती। उस पर रनबीर सिंह का-सा ख़ुशरू जवान रान-पटरी जमाए सवार।

कमला—लो भैया आये।

जैनब—ये अलबत्ता, रईस मालूम होते हैं। किस शान से बैठे हैं।

कमला—तीनों भाई अच्छे हैं, मगर इनकी बात ही और है।

जैनब—दुश्मनों की आँखों में ख़ाक; और तो नहीं जानती—इत्ते मर्द इधर से गये, एक तो पाता नहीं है। एक लक़ात अभी गये न थे? जी चाहता था, दो धूलें मार के घोड़ा छीन लें, और साईसों में नौकर रख लूँ।

कमला—और बैठा किस तरह था! कमर टेढ़ी, आँखों में दम।

जैनब—भैया जहाँ जाके खड़े हो जायँ, यह मालूम हो, कोई बड़ा सरदार आता है।

ये बातें हो ही रहीं थीं कि रनबीर सिंह खट्-खट् करते हुए कोठे पर आये!

कमला—आये राना रनबीर सिंह बहादुर, आये!

जैनब—अभी तुम्हारी तारीफ़ें हो रही थीं कि इत्ते मर्द उस वक़्त से गुज़र गये कोई तुम्हारी जूती की फटफट को भी नहीं पहुँचता।

रनबीर—हम हैं ही ऐसे। (मुस्करा कर) मगर जैसे हम हैं, वैसी हमने जोरू नहीं पाई।

कामिनी—कहते हुए शर्म नहीं आती?

रनबीर—जबसे हमने शादी की, जैसे चाँद-सूरज को ग्रहन लगता है, वैसे ही हमको ग्रहन लगा। कहाँ यह हमारा सूरज का-सा चेहरा, और कहाँ बीवी साहब!

कामिनी—अपने मुँह मियाँ मिट्ठू न बनो बहुत।

ज़ैनब—यह तो हठधर्मी है, साहब! बीवी तो ऐसी चाँद-सी मिली है जिसका जवाब नहीं। देखने से भूख-प्यास बन्द हो गया। अल्लाह जानता है, चाँद में दाग़ है, इनमें दाग़ नहीं!

कामिनी—बहुत ख़ुशामद न किया करो!

कमला—यह नौचन्दी तो हमने इस धूम की आज ही देखी! हर नौचन्दी को आया करेंगे।

रनबीर—ज़रूर आया करो। सैर की सैर देखो और दिल का दिल बहलाओ।

कमला—नौचन्दे जुमेरात—पीरों की करामात! सुनते थे, मगर आज आँखों से देखी।

रनबीर—गाड़ी पर तुम दोनों बैठ लो। और ज़ैनब की माँ को साथ ले लिया करो। यहाँ आदमी नौकर-चाकर मौजूद ही हैं।

कामिनी—नौचन्दी जुमेरात, सब जुमेरातों की रानी।

रनबीर—यह वही मसल हुई—"अनन्ता ग़ाज़ी!"

ज़ैनब—तुम लोगों में सब बरतों से सहल और मज़ेदार बरत अनन्त चौदस का बरत होता है। नमक के सिवा और जो चाहे वह खाओ और चाहे जितनी बार खाओ! दूध, बालाई, शकर पराठे। एक मौलवी साहब ने भी, जो कभी लाला के यहाँ नौकर थे, बरत रक्खा, कि मज़े से मामा पुल्तियाँ उड़ाएँ, तर माल खाने में आये। एक नमक साल भर में एक दिन न मिला, न सही! बरत रखा, और दिन भर मुँह चलाते रहे। माल मुफ़्त, दिले-बेरहम। फिर मुफ़्त को कौन पूछता है! गरजे कि मौलवी साहब रेशा-खत्मी हो गये—बड़े ख़ुश! यह दिल में जम गया कि हिन्दुओं का हर त्योहार मज़ेदार है। खाने-पीने की बड़ी बहार है। अब रोज़ दुआएँ माँगने लगे कि अल्लाह करे, जल्द हिन्दुओं का कोई त्योहार आये तो मोहन-भोग खाने में आये। उनकी दुआ ख़ुदा ने क़बूल की। और हिन्दुओं का वह त्योहार आया जिसको शिव बरत कहते हैं। मौलवी साहब ने बड़ी ख़ुशी से बरत रक्खा। सात बज गये, आठ बज गये, नौ बज गये, दस बज गये। अब मौलवी साहब की कोई फ़िक्र नहीं लेता। जब इनकी आँतें क़ुलहू अल्लाह पढ़ने लगीं, तो बहुत झल्लाए। शागिर्दों से कहा, भई आज कोई हमारा हाल ही पूछने नहीं आता। न बालाई, न मिठाई, न मेवे। यह माजरा क्या है? शागिर्दों को बड़ी हँसी आई। कहा—मौलवी साहब, आज खाना कहाँ! आज तो बरत है; और बरत भी निर्जल

पूरा। निर्जल के यह मानी कि पानी तक न पियें, खाना तो रहा अलग। खाने का तो आज कोई ज़िक्र ही नहीं है। मौलवी साहब ने सर पीट लिया कि बर्फ़ी, और लड्डू और बालाई और मिसरी-मेवा तो ख़ैर—वह रोज़मर्रा का मामूली खाना! दाल-रोटी भी नदारद है!

कामिनी—हमको सब दिनों से अच्छा इनकी सालगिरह का दिन मालूम होता है। मगर अब नौचंदी जुमेरात को भी हम सालगिरह के बराबर समझेंगे। आज तबीयत बड़ी ख़ुश हुई, जैसे लाखों रुपये मिल गये।

रनबीर—क्या जाने सालगिरह के दिन इतनी ख़ुशी लोग क्यों करते हैं?

कामिनी—और ख़ुशी न करने का क्या सबब?

रनबीर—यह कि ज़िन्दगी का एक बरस और कम हो गया।

कामिनी—वाह यह ख़ुशी सालगिरह के दिन क्या कम होती है कि एक बरस और परमेश्वर ने दिखाया है? तुम जो कहो, हम अब हर नौचन्दी को आएँगे और हर नौचन्दी को हमारी तरफ से त्योहारी खाना हुआ करेगा।

रनबीर—चलो, इससे बढ़कर क्या है। हम बहुत ख़ुश।

कामिनी—ताज्जुब यह है कि तुमने आज तक इसका ज़िक्र भी नहीं किया कि रजब की नौचन्दी क्या चीज है।

रनबीर—लखनऊ की नौचन्दी जुमेरात, खास कर रजब की नौचन्दी दूर-दूर मशहूर है। मगर शहर के बीचोबीच इसका लुत्फ़ है। और यहाँ इन गली-कूचों से तबीअत घबराती है। और इसके साथ एक बात और भी है। बेपर्दगी का भी किस क़दर ख़याल है।

कामिनी—हाँ, यह एक नई बात है। उधर तो इतनी अंग्रेज़ियत कि खाना भी अंग्रेज़ी और पीना भी अंग्रेज़ी और घोड़े की सवारी भी अंग्रेज़ी और शतरंज भी अंग्रेज़ी, चालें और हँसना भी अंग्रेज़ी, और इधर पर्दे का यह ख़याल। इसके क्या मानी; जिसके ऐसे ख़यालात हों, वह पर्दे का इतना ख़याल क्यों रखे!

कमला—मैं भी यही कहती हूँ।

रनबीर—तुम भी यही कहती हो, और यह भी यही कहती है। मगर तुम दोनों इन्साफ़ से कहो कि जब बाग़ हमारे साथ जाती हो तो वहाँ हम पर्दे का कौन-सा ख़याल रखते हैं? जब गाँव में होती हो तो वहां क्या पर्दा होता है? अब रहा शहर, यहाँ यह बात है कि जितने हमारे यार-दोस्त हैं, उन सबके यहाँ पर्दा होता है। हम ख़ामख़ाँ नक्कू क्यों बनें?

कामिनी—(चुहल के साथ) जो किसी की बीवी बदसूरत या काली-कलूटी हो, तो ख़ैर; और जिसकी बीवी चाँद का टुकड़ा हो, वह क्यों शर्माए?

इस फ़िक़रे पर सब हँस दिये; और रनबीर सिंह भी बहुत हँसे। इन दोनों मियाँ बीवियों में यह नोक-झोंक हुआ करती थी।

कामिनी दोहरी-दोहरी चिक़ों में से सैर देख रही थी कि फ़क़ीर यह कहता हुआ निकला कि बाबा जो चुन्नशाह को आज पेट भर पुलाव खिला देगा उसकी मनोकामना पूरी हो जायगी। आज नौचन्दी जुमेरात, पीरों की करामात है। भाई हिन्दू-मुसलमानों! आज सवाब कमाने का दिन! यह नौचन्दी जुमेरात है—"लैल तुतल-क़दर" के बाद सब रातों की सरदार! और बाबा यही दिया-लिया क़ाम भी आता है; यही कुछ रह जाता है।

कामिनी—हमारे शहर के फ़क़ीरों की सदा भी अजब सदा होती है। मनोकामना भी कहते हैं, "लैलतुल-क़दर" भी कहते हैं।

ज़ैनब—और जिसको देखो, वह चुन्नाशाह! यह नाम सबको पसन्द है।

कमला—हाँ यह मेरे दिल की बात कही!

रनबीर सिंह—इसमें कोई शक नहीं कि यहाँ कई चुन्नेशाह हैं?

कामिनी—नौचन्दी जुमेरात को इन फकीरों को भी बहुत कुछ मिल जाता होगा। कहाँ तक लोग न देते होंगे।

जैनब—फूलों के हार गजरे, बद्धी, कंगन, मिठाई, रोटी, कबाब, सारी दुनिया की शै होती है। साकी फकत हुक्के के दम पिलाने में महीना भर का खर्च पैदा कर लेते है। तँबोली, साड़ीवाले, ये-वो, थोड़ी देर अच्छी भीड़ हो जाती है। क्या नौचन्दी जुमेरात का नाम सुना नहीं?

कामिनी—नाम तो सुना मगर इतनी भीड़ और यह धूम-धाम नहीं देखी थी।

कमला—खासा मेला है।

ज़ैनब—यहाँ यह तो है ही।

कामिनी—नौचन्दी जुमेरात और पीरों की करामात।

रात को कोई दस बजे तक यह क़ाफ़ला यहीं रहा। इसके बाद घर गये। चार रोज रनबीर सिंह ने कामिनी को बहुत ढाढ़स दी। माँ के पास घंटा-दो घंटा रोज़ बैठे। दोस्तों और रिश्तेदारों से मिले। फ़ौजी अफसरों से मुलाक़ात की। ज़िले के हाकिमों से मिले। सब सामान लैस किया।

जिस रात तारों की छाँव में रवाना होने को थे उस रात का हाल कोई कामिनी के दिल से पूछे। जैसे कोई ऐसी शै किसी की खो जाती है जिसके बग़ैर वह एक दम चैन में न रह सके। दिल को तसल्ली देती थी, मगर ज़री देर के बाद क़ाबू जाता रहता था। रनबीर सिंह बराबर गौर से देख रहे थे कि कामिनी आज बहुत बेक़रार है। न वह शोखी, न वह प्यार की बातें; वह दिलरुबाई के घातें, न वह चुहल। समझ गये कि खुदा जाने दिल में क्या सोचती है, और इस बेचारी के दिल पर क्या असर है। आखिरकार उनसे न रहा गया और समझाने लगे। कामिनी चुपचाप सुना की, किसी बात का जवाब न दिया। कुछ कहना चाहती थी, मगर दिल इस क़दर उमड़ आया

था कि जबान से कोई लफ़्ज नहीं निकलता था। रनबीर सिंह ज्यादा छेड़ना भी नहीं चाहते थे, कि शायद उसके नाजुक दिल पर कोई बुरा असर पैदा करे और चलते-चलाते दोनों को और भी ज्यादा रंज हो।

जब चार का गजर बजा तो कामिनी, क़रीब था कि रो दे। मगर अपने आप को बहुत ही जब्र किया कि उनके सफ़र के जाने के वक़्त कोई ऐसी कार्रवाई न करनी चाहिए कि उनको और भी ज्यादा क़लक़ हो। जब दरबान ने बाहर से आवाज़ दी—तुलसा बुआ, सरकार से कह दो कि ठाकुर बलभद्र सिंह और तहसीलदार साहब और ठाकुर इन्द्रबिक्रम सिंह आये। गजर बज गया तो कामिनी समझ गई कि—

"जुदाई की घड़ी सर पर खड़ी है!"

अब उसका दिल और भी बेक़ाबू हो गया। अब न बात करने का मौक़ा रहा, न कुछ कहने-सुनने का! क्योंकि अगर रनबीर सिंह का ही मामला होता तो मुमकिन था कि दो-एक रोज न जाने देती। मगर अब तो गुमान-सिंह और बलभद्र सिंह और इन्द्र बिक्रम सिंह दरवाजे पर आ गये। दिल में सोचा कि बलभद्र सिंह और गुमान सिंह ख़ैर आये ही थे, यह भाई को क्या सूझी कि मेरे पति की जुदाई के कारन बने। रनबीर सिंह कामिनी के दिल का हाल समझते थे। अब यह मौक़ा था कि दोनों के दिल भरे हुए आँखे डबडबाई हुईं—मगर दोनों अपने को सँभाले हुए। रनबीर सिंह ने गले लगाकर बोसा लिया, और बहुत ही आहिस्ता से बोसे का जवाब देकर कामिनी ने पत्थर कलेजे पर रखकर "ख़तों को न तरसाना!" कहने को थी मगर सिर्फ "तर—" का लफ़्ज कहने पायी थी, "—साना" मुँह से न निकल सका, और इस क़दर आँसू आँखों में भर आये कि तमाम दुनिया अँधेरी नजर आती थी।

इतने में दरवान ने फिर आवाज़ दी। रनबीर सिंह ने सुनी, मगर कामिनी इस क़दर भावों में डूबी और खोई हुई थी कि अबकी दफ़ा दरबान की आवाज़ न सुन सकी, और रनबीर सिंह रवाना हुए—मगर क़दम उठाना मुहाल था। दो क़दम चले और पीछे फिरके देखा तो कामिनी बुत बनी हुई खड़ी है; मगर आँसू हैं कि उमड़े चले आते हैं, कोई इन्तहा ही नहीं। दिल का अजब हाल था। माँ से मिले। उन्होंने असीस दी। भावज-बहन, सगे-सम्बन्धी सब रोने लगे। उन्होंने कहा—मैं बाहर से अभी आता हूँ। ये बाहर गये, दोस्तों से कहा—अरे यार, अभी एक घंटा है, मैं अभी आया।

अब इधर कामिनी का हाल सुनिये कि हँसिया ने मुँह धुलाया और रूमाल से आँसू पोंछे तो क्या देखती है कि रनबीर सिंह ग़ायब। अरे, क्या चले गये? हाय, इन आँसुओं से परमेशर समझे, मुझे एक दफ़े नजर भर के देखने भी न दिया। लोहे के दीवार बन गये। रनबीर सिंह का दिल भरा हुआ था ही,

और खासकर जब कामिनी की बेबसी देखी थी कि आँसू पोंछ रही है और वह बाढ़ के तरह उमड़े चले आते हैं, और इनको इस क़दर भी वक़्त नहीं कि जाके इस सुन्दरी के आँसू पोंछें। घर में ये कह ही गये थे कि मैं अभी बाहर से आता हूँ। सीधे छत पर गये और कामिनी को अलैहदा ले जाकर कहा—ले ज़रा हँसके मिल तो लो, आज का सफ़र हमको गराँ न गुज़रे! कामिनी को इससे बढ़कर न्यामत और क्या मिल सकती थी। जी खुश हो गया। समझी थी कि जल्दी के सबब से चल दिये और मैं आँसुओं की वजह से आँख भर कर देख न सकी, अब जो अपने प्रान-प्यारे को पाया तो गले से लगाया और कहा, अगर अब रोऊँ तो सज़ा देना—हँसी खुशी जाओ और हमें जल्द बुलाओ।

माँ और भावज और बहन से फिर बिदा होकर और पान खाकर रनबीर सिंह मऊ की छावनी को रवाना हो गये।

—:०:—

सत्रहवाँ अध्याय

रन की ज़मीन

रनबीर सिंह रोज़ एक खत भेजते थे और कभी कभी तार भी आता था। कामिनी भी रोज़ खत लिखती थी। इनकी सास और भावज और कमला सबसे खत-किताबत थी, और अक्सर खतों में उन्होंने लिखा कि कामिनी और कमला को बुलवा लेंगे। दोनों खुश थीं, मगर यह मालूम था कि कोई अच्छी कोठी नहीं मिली है, ढूँढ रहे हैं; मिलते ही बुलवा लेंगे।

एक रोज़ कामिनी खत पढ़ रही थी कि रनबीर सिंह के कई खत आये, जिनमें एक खत कामिनी के नाम भी था। कामिनी ने हमेशा की तरह खुश-खुश खत खोला, जिसमें मुख़्तसर तौर पर लिखा था—

'मेरी प्यारी जानी, आज मैंने चौतरफ़ा कोठी ढूँढी कि कोई दिलकश बँगला या खुशनुमा कोठी किसी उम्दा जगह पर छावनी के पास मिले तो किराये पर लूँ और तुमको फौरन बुलाऊँ, क्योंकि अब देखने को बहुत जी चाहता है। यों तो कई बँगले और कोठियाँ खाली हैं। मगर एक निहायत ही खुशनुमा बँगला दरिया के किनारे ऐसा अच्छा मिला है कि जिसका जवाब नहीं। एक हफ़्ते में खाली हो जायगा। फौरन् तार दूँगा। तुमको खुद आकर ले आऊँगा। दो दिन की छुट्टी ले लूँगा। इसमें शक नहीं कि हमारी तुम्हारी जुदाई बहुत जल्द हुई और यह थोड़े दिन की जुदाई भी खल गई...

कामिनी को गोया करोड़ों रुपये मिल गये। पति से मिलने की बड़ी ख़ुशी हुई। कमला को फ़ौरन् बुलाया और ख़ुशी-ख़ुशी ख़त सुनाया। उसने कहा—मैं भी उनसे पूछके चलूँगी। यक़ीन तो है मान लें। कामिनी को यह जुदाई बड़ी शाक़ गुज़री थी, मगर इस ख़त के आने से गो ज़रा-ज़रा ढारस हुई। कमला से देर तक बातें करती रही। दोनों बेहद ख़ुश थीं।

दूसरे दिन सवेरे एक कौवे ने छत की मुंडेर पर बैठकर काँव-काँव जो शुरू की तो कमला ने कहा—जो आज भाई का ख़त बुलौवे का आए तो दूध-बलाई खिलाऊँ। इत्तफ़ाक़ से उसी वक़्त डाकिया ख़त लाया और महरी ने नीचे जाकर ख़त लिया और कामिनी को दिया। पढ़ा तो यह लिखा था—

'मेरी प्यारी जानी, आज इस ख़त में, जो मैं बड़ी मोहब्बत से तुमको लिख रहा हूँ, एक नई बात यह है कि इसको मैंने भूमिका से शुरू किया है। पति-पत्नी के ख़त में भूमिका की बड़ी ज़रूरत है, और वह भूमिका यह है—कि जो लगाव फूल को ख़ुशबू से, औरत को जोबन से, धनी को दान-पुन्न से, फ़क़ीर को सन्तोष से, गृहस्थ को नेकचलनी से; आँख को नूर से, बादशाह को इन्साफ़ से, वज़ीर को ख़ैरख़्वाही से, शेर को पंजे से, जाम को सरूर से, हसीनों को अपने हुस्न के ग़रूर से, मोती को आब से, बाग़ को गुल से, सुराही को 'क़ुल-क़ुल' से, स्वर्ग को अमृत से, खान को जवाहर से, पेड़ को फल से, दुआ को असर से लगाव है, वही क्षत्री को जंग से है। जो राजपूत लड़ाई से डरे वह शेर है, जिसके पंजा नहीं; सीप है, मगर बिना मोती का; पेड़ है मगर बे फल का — यानी बेकार चीज़ है। जिस आँखों में नूर नहीं, वह आँख क्या, जिस शराब में सरूर नहीं, वह शराब क्या। राजपूत का धर्म यही है कि रन के मैदान में जाय, तलवार के मुँह मरे और ज़िन्दा आये, तो भी नेकनाम हो; मगर दुश्मन को पीठ न दिखाये। ब्रह्मन जल-सूर; छत्री रन-सूर।

'इस सबक़ का मतलब यह है कि आज मेरा कलेजा बाग़-बाग़ है, ऐसी ख़ुशख़बरी सुनने में आई कि ख़त लिख रहा हूँ और मेरी बाँछें खिली जाती हैं। जो बात मैं लड़कपन से चाहता था, वह पूरी हुई। दिल की आरज़ू बर आई। इस वक़्त तबीअत नौजवान माशूक़ों की तरह बल कर रही है।

'लड़कपन से मेरे दिल की तमन्ना थी कि मैं किसी लड़ाई में शरीक होऊँ। क्योंकि, जिस राजपूत के बदन पर गोली का निशान या तलवार का ज़ख़्म न हो वह पूरा-पूरा छत्री नहीं मालूम होता। क्षत्री की बड़ी बड़ाई यह है कि रन-के मैदान में ज़ख़्मी हो। मोर्चे और धावे से जो बेज़ख़्म खाये आये वह क्षत्री नहीं। जितने ज़ख़्म उतने गोया तमग़े मिल गये। यह आरज़ू मुद्दत के बाद पूरी होनेवाली है। और अस्ल क्षत्री की यह भी एक पहचान है कि उसके घर की औरतें उस रोज़ जश्न करें और ख़ुशी मनाएँ, जिस रोज़ घर से मर्द

युद्ध को जाय। अगले वक़्तों में यूनानियों में यह क़ायदा था कि जब स्पार्टा शहर से कोई लड़का फ़ौज में भरती होकर जंग के मैदान में जाता था तो माँ लड़के को विदा करते वक़्त कहती थी—कि यह ढाल जो साथ लिये जाता है, या तू इसके साथ आना या इस पर आना। मतलब यह कि या तो फतेह करके मय ढाल के आना, या तेरी लाश इस ढाल पर लदके आये।

'जो तो स्पार्टा वाले शेर-नर पैदा होते थे। सिक्खों की माँ लड़कों से कह दिया करती थीं कि बेटा मोर्चे से भागके आओगे तो दूध न बख़्शूँगी। बहादुरों की औरतें भी बहादुर होती हैं। बाप-बेटा दोनों धावे में शरीक हैं। लड़के को गोली लगी और गिरा। बाप ने देखा कि जवान बेटा चल बसा, बहू बेवा हो गई; माँ का एक ही लड़का—वह जाता रहा; अब नामलेवा पानी-देवा कोई नहीं है; घर का चिराग़ गुल हो गया। मगर वाहरे बहादुर, उफ़् तक न की, उसी तेवर और ठाठ से लड़ता रहा। जब लड़ाई ख़त्म हुई तो बेटे की बेकफ़न लाश के पास गया, और लाश को जो ख़ून से भरी हुई थी, कलेजे से लगाकर कहा 'बेटा, जिस तरह तुमने सरकार के नमक का हक़ अदा कर दिया और यह नाम किया कि रन में गोली-तलवार खाये पड़े हो, उसी रहत भगवान करे हम भी तलवार के मुँह मरें। तुम्हारे दादा की रूह इस वक़्त खुश है कि पोते ने सिपाहियों की इज्जत रख ली। फ़ौज का करनैल यह देख कर उस बूढ़े जमादार से बहुत ही खुश हुआ और कहा—सच्चे सूरमा ऐसे ही होते हैं!' जिस-जिस ने यह देखा कि बेटे की लाश को कलेजे से लगाकर उसके जियालेपन की तारीफ करता है, उसको रोना आने लगा कि न लाश पर आँसू गिराता है, न रंज करता है। घर भर में एक लड़का और ऐन जवानी में मर गया;—बल्कि और उसके जीवट की तारीफ करता है और दुआ माँगता है कि मैं भी इसी तरह तलवार के मुँह मरूँ। इसके लिये बड़ा दिल, बड़ा जिगर चाहिये।

'आज सुबह जो मैं बिस्तर से उठा तो तबीअत रोज से ज्यादा खुश थी। और अभी यह ख़बर आई कि हमारा रिसाला समुन्दर-पार लड़ाई में शरीक होने को तैयार रहे, जिस वक़्त हुक्म आये, फ़ौरन् रवाना हो जाय। उस वक़्त से यह दुआ माँग रहा हूँ कि हुक्म तो भगवान करे फ़ौरन् आये; मगर इतनी मोहलत मिले कि तुमको देख लूँ। "इतनी फ़ुरसत दे कि हो लें गुल से ुक आज़ाद हम।" अगर तुमको एक नज़र भी देखकर गले लगा लूँ और बोसा लेकर विदा लूँ, तो समझूँ कि करोड़ों मिल गये। और खुश-खुश जाऊँगा; क्योंकि जंग में जाने की जो खुशी है, मेरा दिल जानता है या मैं जानता हूँ। हाँ, उसके साथ ही अगर हिन्दुस्तान से रवाना होने के पहले तुमको नज़र भर के देख लूँ तो समझूँ कि बड़ा खुशनसीब हूँ। फ़ौज के कर्नल से आज सब दर्याफ़्त करके आज

ही रात को या कल सुबह कुल हाल तफ़सील से लिखूँगा और अगर एक दिन की छुट्टी मिली, जिसकी कि उम्मीद नहीं तो रस्सियाँ तोड़ कर पहुँचूँगा।

'इस वक़्त दो क़िस्म के ख़यालात मेरे दिल में आते जाते हैं। एक यह कि मेरा दिल ख़ुशी से भरा हुआ है, कलेजा हाथ भर का हो गया है और उस घड़ी को दिल ख़ुशी से बुला रहा है, जब मैं जहाज़ पर सवार हूँगा और हमारी फ़ौज के लोग बड़ी ख़ुशी से नारे बुलन्द करेंगे। और एक तरफ़ याद आती हो कि तुमको देख लेता। जब से यह ख़बर आई है, यही दो ख़्याल दिल में हैं कि तुम सबको देखूँ—और बस, जंग जंग। गोलों की आवाज़ कान में आये, दुश्मन से मुठभेड़ हो जाय, तो दिल का वलवला निकले। और बस, दूसरा ख़याल वही है, एक दफ़ा तुमको गले से लगाकर चूम लूँ और माँ से रुख़सत हो लूँ; भाई-भावज, बहन, बहनोई, रिश्ते-नाते के अपने प्यारों से मिलूँ और जहाज़ पर सवार होकर यह जा, वह जा।

'तुम इसका ख़याल कुछ न करना। यह तो हमारे-तुम्हारे ख़ान्दान में होती आई है। इसका कौन अन्देशा है। अभी तक तो यह भी नहीं मालूम है कि हमको कहाँ जाना होगा। मगर यह मालूम हो गया है कि समुन्दर-पार जाना होगा। समुन्दर की लड़ाई नहीं है, और न हिन्दुस्तान में जंग होगी, चाहे कहीं हो। जब लड़ने ही को चले, तो जैसे लंका, वैसे काबुल, वैसे हिन्दुस्तान। सब एक-से।

'मैं पूरा-पूरा हाल कल तक लिखूँगा। अभी सिर्फ इतनी ख़बर मालूम हुई है कि किसी जंग पर जाना होगा और वह लड़ाई समुन्दर पार होगी। जिस दम हुक्म आये, फौरन् रवानगी के लिये सब तैयार रहें। हमारी फ़ौज में इसका बड़ा जोश है। अदना से आला तक के दिल में हद से ज्यादा जोश-खरोश है। सब तुले हुए—कि इधर हुक्म पावें, उधर रवाना हों। इस रिसाले की बड़ी तारीफ है। कई लड़ाइयाँ फतह करके आया है। हमारे रिसाले में अक्सर अफ़सर नौजवान हैं और अक्सर ऐसे भी हैं जो कभी जंग में शरीक नहीं हुए हैं। मैं भी इन्हीं नौ-सिखियों में हूँ।

'देखो इस ख़त का जवाब तुम क्या भेजती हो। अपने बाप-दादा भाई और नाना और मेरे ददिहाल और ननिहाल के लोगों ने जो कारवाइयाँ रन के मैदान में की हैं, उनको याद करो। बस, मैंने कल ही एक कोठी किराये पर ली थी और तुमको तार भेजने को था कि चली आओ—कि इधर यह ख़बर आई। माताजी के नाम अलैहदा ख़त भेजा है। कमला को बुलाके समझा देना। तुम्हारी याद, मेरी प्यारी, कभी नहीं भूलती।'

रनबीर सिंह का यह ख़त क्या आया कि गोला आया। कामिनी की रंगत पढ़ते-पढ़ते फ़क़ हो गई; और चेहरे पर बड़ी उदासी छायी। कमला फ़ौरन् समझ गई कि कुछ दाल में काला ज़रूर है। कामिनी ने दो बार ख़त

पढ़ा और पलंगड़ी पर लेटकर तुलसा से पानी माँगा। कामिनी के हाथों के तोते उड़ गये। मगर, चुप साधे रही। जब दो-चार मिनट में दिल को जरा सकून हुआ, तो कहा—लो बहुत फटाका हो गया। सोचे क्या थे, हुआ क्या! कल वह खत आया, जी खुश हो गया। मनौतियाँ कीं कि जल्द आयें और साथ ले जावें। हम-तुम दोनों खुश-खुश रहते थे। आज कुछ और ही गुल खिला। हुक्म आया कि समुन्दर-पार लड़ाई पर जाने को तैयार रहो। कमला और कामिनी दोनों ने एक ठंढी साँस भरी। कई मिनट तक चुप रहीं। इसके बाद कामिनी ने जगह-जगह से खत सुनाया, और कभी कामिनी ने कमला को ढारस दी, कभी कमला ने कामिनी को। कामिनी ने कई बार खत का जवाब लिखना चाहा, मगर सतर दो सतर लिखकर फाड़ डाला। मर्जी के माफ़िक देर तक न लिख सकी। आखिरकार दिल को जरा ढारस देकर मुख्तसर जवाब यों भेजा।—

'मेरे कलेजे से ज्यादा प्यारे जानी,

"शक्ले-उम्मीद तो कब हमको नज़र आती है,
सूरतें-यास भी बन-बन के बिगड़ जाती है!"

'परसों जो तुम्हारा खत आया तो उसने वह काम किया जो साँप काटे हुए के साथ जहरमोहरा करता है। मरते को जिला लिया। आज जो खत आया, उसने वह काम किया जो मृग-तृष्णा रेगिस्तान के प्यासे मुसाफिरों के साथ करती है: कि मारे प्यास के जान होंठों पर आने के बाद एक दफ़ा देखा—वह सामने दरिया लहरें मार रहा है, दौड़े तो जिसको दरिया का पानी समझे थे वह रेगिस्तान नजर आया। कुछ और लिखती मगर दिल इस क़दर उमड़ा आता है कि कुछ लिख नहीं सकती। परमेश्वर वह दिन जल्द दिखाये कि हममें तुममें यकजाई हो।

'तार भेजा करो। तुम्हारी कमला भी कल से आई हैं। कल से इस वक़्त तक खुशियाँ मनाई थीं, आज यह खत आया। खैर, जो परमेश्वर की मर्जी। वह कौन दिन होगा कि जिस तरह तुमने पीठ दिखाई थी, उसी तरह मुँह दिखाओ!

तुम्हारी प्यारी
कामिनी।'

छै रोज के बाद तार आया कि मैं आज जहाज पर सवार होता हूँ। सब खैरियत है। कल और तार भेजूंगा। उनके घर में तो सबको मालूम हो गया था कि रन के मैदान में जाते हैं; अब रवानगी का तार फिर आ गया। दूसरे रोज तार आया कि 'हम पेरम के टापू में दाखिल हुए। यहाँ की क़ौमों के लोगों ने एक बृटिश जहाज पर गोलियाँ चलाई थीं। उन्हीं से जंग है। पूरा-

पूरा हाल फिर लिखूँगा।' इसके बाद एक और तार आया—'तुम्हारे दो तार पहुँचे। खैरियत मालूम होने से तसल्ली हुई। आज दुश्मन से और हमसे जंग हुई। उनके सत्तर जख्मी हुए हमारे बावन। उनके सात मरे, हमारे पाँच। उनकी तादाद ज़्यादा है।' इस तार के आने से ज़रा फ़िक्र पैदा हुई। घर भर को चिन्ता हुई। इन्द्र सिंह बुलवाए गये। कामिनी की सास ने कहा—बेटा, तुम्हारी बहन ने तो क्या जाने क्या पढ़ा, तुम तो पढ़ो! इन्द्र बिक्रम ने पढ़ कर सुनाया और देर तक बातें होती रहीं, और यह खबर दूर-दूर मशहूर हुई। गुमान सिंह और बलभद्र सिंह ने भी सुनी। पहले इन्द्र बिक्रम सिंह के पास गये। सुना था कि बलज़ोर सिंह के मकान पर गये हैं, यहाँ आये। अन्दर से बुलवाया, तार पढ़ा। सबकी ही राय हुई कि मुक़ाबला बेढब है—सत्तर और बावन इधर-उधर के ज़ख्मी और सात और पाँच इधर-उधर के मरे हुओं की तादाद। मालूम होता है, वह भी लड़नेवाले हैं। इन्द्र बिक्रम सिंह ने बहन और उसकी सास और भावज को तसल्ली दी, कि घबराने की कौन बात है, जंग में तो यह हुआ ही करता है। धन्नो ठकुराइन और कमला और रनबीर सिंह की माँ और कई औरतें देर तक यही बातें किया कीं, और खाना खाकर अपनी-अपनी जगह पर सोईं।

सुबह को उठकर इन्द्र बिक्रम सिंह दौड़े आये और कहा—मैंने सपने में देखा कि रनबीर सिंह बड़ी शान से फ़ौजी वर्दी पहने तमग़े लगाये, सरपट घोड़ा दौड़ाए चले जाते हैं। मुझे देखकर घोड़े को रोक लिया। मैंने कहा—अरे यार, ये तमग़े इतनी जल्दी कहाँ से मिल गये! हँसकर कहा—हमने चार लड़ाइयाँ सर कीं, उसके सिले में मिले हैं।

औरतों के दिल में तो झट ऐसी बातें बैठ जाती हैं। सबको यक़ीन आ गया। एक हफ़्ते के बाद तार आया कि—हम खैरियत से हैं। जंग के मैदान में हैं, और दुश्मन भागते जाते हैं। घर में खुशी के शादियाने बजने लगे। इसके बाद फिर तार आया और इन्द्र बिक्रम सिंह के नाम फिर खत आया, बड़ा लम्बा-चौड़ा खत; जिसमें और बहुत-सी बातों के अलावा यह भी लिखा था कि हमसे और एक कप्तान से रोज़ बहस होती है। यह हमारा दिली दोस्त हो गया है। आज की बातचीत हुई, लिखता हूँ। बलभद्र सिंह और अपनी बहन को यह खत दिखा देना।

कप्तान—यूरोपियन के मुक़ाबले में दरअस्ल कोई हक़ीक़त हिन्दुस्तानी की नहीं है।

रनबीर—यह आप क्या कहते हैं, और किस दलील पर?

कप्तान—हमारे गोरों और अपने तिलंगों का मुक़ाबला कीजिए!

रनबीर—जी, तो इस भरोसे भी न रहिएगा। एक तिलंगा दो गोरों को लड़ा दे!

कप्तान—(हँसकर) बजा!

रनबीर—हिन्दी बड़े सूरमा होते हैं। सिखों को देखिये। तमाम दुनिया में किसी क़ौम की फ़ौज से दबके नहीं रहेंगे। गोरखा पल्टन से बेहतर पल्टन हो ही नहीं सकती। हम छत्री लोग तलवार के मुँह मरना ऐसा समझते हैं जैसे मुर्दा जी उठा। हिन्दी ऐसे गये-गुज़रे नहीं हैं कि मुर्दे से बत्तर समझे जायँ। बुन्देलखँडिये क्या किसी क़ौम से कम हैं। बैसवाड़े के ब्रह्मनों का एक दुनिया में नाम है।

कप्तान—हम यह नहीं कहते कि हिन्दी कमज़ोर या बोदे होते हैं। हमारे कहने का मतलब यह है कि वक़्त पर जो फुर्ती हमारा गोरा जंग के मैदान में दिखाएगा वह हिन्दी-सिपाही नहीं दिखा सकता। सिक्खों के हम क़ायल हैं। गोरखा पल्टन बेशक तारीफ़ के क़ाबिल हैं। राजपूतों की बहादुरी तो मसल ही बन गई है। मगर हम, फिर, हम ही हैं।

रनबीर—कल वह बुड्ढा क्या कहता था?

कप्तान—हमने सुना नहीं।

रनबीर—कहता था कि इस टापू को आज तक किसी ने फ़तह नहीं किया। सिर्फ़ एक दफ़ा यह टापू क़ब्ज़े में आया था जो गोरखा और छत्रियों ने फ़तह किया था। इस टापू के बाशिन्दे ग़ुलाम रहने के आदी नहीं थे। पहले-पहल उनको बहुत खला। टोने-टोटके को माननेवाले लोग हैं—छत्रियों और गोरखों को देवता समझने लगे। कहता था कि सात दिन तक लाखों आदमियों ने मुक़ाबला किया; और इधर सिर्फ़ दो जहाज़: एक पर तीन सौ राजपूत, एक पर ढाई सौ गोरखा। मगर ऐसा मुक़ाबला किया कि बैरी के दाँत खट्टे हो गये। टापू के बाशिन्दे जान पर खेल-खेल गये, मगर छत्रियों और गोरखाली पल्टन का लोहा मान-मान गये।

कप्तान—चीनवाला की लड़ाई में अंग्रेज़ों ने क्या किया?

रनबीर—बड़ी बहादुरी की, इसमें कोई शक नहीं।

कप्तान—योरप की कुल फ़ौजें बहादुर हैं।

रनबीर—हमारे देखने में तो मान्टीनीग्रो से बढ़के कोई योरप की क़ौम जरी नहीं है।

कप्तान—जरी तो अफ़ग़ान भी हैं, मगर हूश, उजड्ड। और उनकी हरकतें गोली मारने के क़ाबिल। रूस ने हज़ारहा तुर्की क़ैदी बनाए, मगर सबको छोड़ दिया। उस्मान पाशा ने जो चिट्ठी क़ैदख़ाने से लिखी थी वह पढ़ने के लायक़ है। लिखा था कि घर में मुझे कभी ऐसा आराम नहीं मिला, जैसा इस क़ैदख़ाने में है। और एशियावालों की कारवाई को देखा कि हमारे एक कप्तान को काबुलियों ने क़ैद किया और जब भागने लगे तो उस बेचारे को क़त्ल कर डाला। यह उजडपना और मूज़ीपन है या नहीं।

इसके छै रोज़ बाद खत आया कि 'अब फिर दुश्मन ने पहले से भी ज्यादा मुखालफ़त पर कमर बाँधी है और उनकी तादाद भी ज्यादा होती जाती है। यह खत भी अपनी बहन को जरूर दिखा देना। उनके नाम एक कच्चा चिट्ठा अलग भेजूँगा।' इन्द्र बिक्रम सिंह ने बहन को यह खत भी दे दिया। इसके पढ़ते ही रंग फ़क़ हो गया। रात को नींद न आई।

कामिनी ने लाख-लाख जतन किये कि ज़रा आँख लग जाय, थोड़ी देर नींद आये; मगर पलक तक न झपकी, नींद तो रही अलग। बराबर करवटें बदला की। कभी इस करवट कभी उस करवट सोई। नींद का नाम नहीं। और नींद आये क्योंकर, दिल तो ठिकाने ही नहीं। मोहब्बत बुरी चीज होती है; एक दम चैन नहीं। दिल उमड़ा आता था।

तुलसा बारिन चुपके-चुपके यह हाल देख रही थी। समझ गई कि इस तार और इस खत ने यह गुल खिलाया है। इस बेक़रारी और बेचैनी का यही कारण है। इतने में कामिनी ने जल्द-जल्द करवटें बदलीं और आहिस्ता आहिस्ता कराहने लगी।

तुलसा से अब न रह गया। बचपन से पाला-पोसा था; और उसके माँ-बाप के नमक से घर भर पला था। सारे कुनबे की परवरिश होती थी। माँ की-सी ममता की। यह भी कुलबुला के उठ बैठी। कामिनी समझती थी कि रात ज्यादा भीगी है, पिछला पहर क़रीब है, तुलसा सो गई होगी। मगर उसके उठने-बैठने से दिल को ज़रा ढारस हुई, कि कोई बात करनेवाला तो है।

तुलसा बारन ने समझाया कि बेटा नींद का ध्यान करो। दिल को ढारस दो, सँभालो। दो घूँट पानी पी लो; आँख लग जाय। अब पिछला पहर है, कोयल बारम्बार कूक रही है। कामिनी ने ठंडी साँस भरके कहा—बुआ, कोयल ही के कूकने से तो कलेजे को कोई और भी मसोसे लेता है। रह-रह के हूक उठती है। इसी ने तो और भी बेचैन कर दिया। और नींद ही मुई आ जाती तो यह सारा रोना काहे का था। दिल को बहुतेरा ढारस देती हूँ, मगर जब दिल भी माने।.....और मैंने इसीलिये मिन्नत और चिरौरी कर-कर के कहा था कि मुझे भी साथ लेते चलो। हाय, बुआ, मेरे दिल का हाल मेरा परमेश्वर ही जानता है।....मुझे पूरा-पूरा यकीन है कि अगर वह मेरे दिल के सच्चे हाल से वाक़िफ़ हो जायँ तो सीधे चले आयँ; इस तरह मुझे कभी न तड़पायें।'

तुलसा ने मुँह धुलाया, और आधा गिलास ठंडे पानी का पिलाकर कहा—बेटा, नई-नई बात है। इससे यह सारी बेचैनी है। नहीं तो किसका दूल्हा दिन-रात उम्र-भर पाँव से पाँव बाँधके रहता है। हमारे ही पड़ौस में एक पार्वती रहती है। उसके दो-दो लड़के—दोनों रिसाले में नौकर हैं; एक कम्पू

में है, एक मऊ की छावनी में। बड़ा लड़का तीन बरस के बाद आया, छुट्टी लेके; यहाँ दो महीने रहके चला गया। तुम्हारी नई-नई बात हुई है। इससे तुमको खलता है; और खला ही चाहे। उन दोनों की दुल्हन घर में बैठी हैं। क्या करें बेचारी, सिपाही की जोरुआ, बिछड़े हुए दूल्हा का कब तक दुख करें; इन दोनों को दो-दो बरस, डेढ़-डेढ़ बरस अकेले रहने की आदत पड़ गई है। तुम घबराओ न, बेटा। देखो, तार आया, चिट्ठी भी आई। सब हाल-अहवाल आया करेगा। तुम्हारे फूफा कितने दिन लड़ाई में रहे। काबुल गये और समुन्दर पार गये और कलकत्ते गये, और कहाँ-कहाँ गये, कहाँ-कहाँ रहे। तीस-और छै, बरस पल्टन ही में नौकरी की। किन-किन चढ़ाइयों पर गये, और परमेशर को बचाना था गोलियाँ फूलों की बरखा हो गईं। जब उसकी दया होती है, तो साँप के मुँह में उँगली डालो तो साँप न काटे, और चार दिन के बिछड़ों की कौन बात है। बहुत से गये, बहुत से चले आये। अब उधर ध्यान न करो। सोने का ध्यान करो।

कामिनी ने फिर एक ठंडी साँस भरी, और कहा—तुलसा बुआ, हँसिया से कहो ज़री पानी और पिला दे। तुलसिया की नेवासी हँसिया ने बर्फ का ठंडा-ठंडा पानी पिलाया। कामिनी पलंगड़ी पर लेटी; हँसियाँ ने हौले-हौले चप्पी की। दिल को ज़रा-ज़रा सकून हुआ। आँख लग गई।

जब कामिनी ने इतनी परेशानी और हैरानी के बाद आराम किया तो हँसिया थोड़ी देर के बाद पलँगड़ी से उतरी और हलकी दुलाई ओढ़ा दी, और अपनी नानी से कहा—यह दुल्हन को आज क्या हुआ! सम्बन्धू सब के बाहर जाते हैं। इन्होंने कोई सपना देखा है। ये इत्ती व्याकुल काहे को हैं? बात करते फूट-फूटके रोना आता था। मैं तो डर गई कि दैया राम! यह क्या हो रहा है! लड़ाई पर गये, गये: हज्जारों जाते हैं। और इत्ते कौन ढेर दिन हो गये। ए अभी आज ही तो तार आया और अभी से इस दुखिया की यह गत हो गई।

तुलसा ने कहा—लड़की, जुम्मा-जुम्मा अभी आठ दिन हुए पैदा हुए को, तुम ये बात क्या जानो! दिल का मिल जाना उपद्रव ढाता है। और फिर अभी छै महीने तो नहीं हुए जिस दिन से भँवरी फेरी, उस दिन से अलग नहीं हुए। हंस की-सी जोड़ी, जहाँ ये वहाँ वो। यों तो दुल्हा-दुल्हन को आपस में प्यार होता ही रहता है। इनका-सा प्रेम देखा न सुना। जहाँ एक का पसीना गिरे, वहाँ दूसरा लहू गिराने को तैयार। और पहला-पहला वास्ता; अभी इनको बहुत खलेगा। यों जो कोई कहीं जाय, तो आदमी को बहुत न खले; और यह तो समुन्दर-पार जाना है। सुना, वहाँ घोड़मुँहे आदमी होते हैं। दरिया, समुन्दर, झील के अन्दर रहते हैं। कहीं समुन्दर का ओर न छोर। थाह तो मिलती ही

नहीं। कहीं पहाड़ से अगन-बोट टकराया, तो माझियों ने हुल्लड़ मचाया कि—भैया, कश्ती डूबती है: जिसको जो कुछ दान-पुन करना हो, करो। गंगा मैया रूठी हुई, बड़े क्रोध में हैं। और मुसाफ़िरों ने अठन्नी, चवन्नी, दुअन्नी, पैसा, जिसकी जो समाई हुई, वह उसने समुन्दर में फेंक दिया। जो कोई पापी अगन बोट में हुआ, तो डूब गया; नहीं तो पुन्न आड़े आया; बड़े-बूढ़ों का दिया-लिया काम आया!

हँसिया ने जो ये डरावनी बातें सुनीं, तो बदन के रोंगटे खड़े हो गये, थरथर काँपने लगी। कहा—दैया! घोड़े के मुँह के आदमी! ऐ वो मुए कैसे होते होंगे! मैं देखूँ तो मर ही जाऊँ! नानी, यह तो भैया ने अच्छा न किया। कल की दुल्हन दुखिया को घर में छोड़के समुन्दर के पार चले गये। मैं भी कहूँ, ये इतना काहे को कुढ़ती हैं। यह कहाँ जानती थी कि यह बिजोग है! अब तो लिए, मेरे हाथों के भी तोते उड़ गये। दैया रे दैया! कहाँ सागर, कहाँ बाढ़। कहाँ बारह बरस की दुल्हन दुखिया कुढ़ रही है! बड़े कठिन से नींद आई! जैसे जल को मछली ढूँढती है, वैसे तड़प रही थीं। अब जो तुमने समझाया, तो मेरी समझ में आया। कोई जतन ऐसा हो कि जल्दी लौट आवें।

इतने में कामिनी ने सोते-सोते कहा—भैया, भैया! देखो, देखो, देखो! बस, 'देखो' के लफ़्ज तक निकला था, कि तुलसा ने कहा—ए बेटा, अब सो रहो! कामिनी करवट लेकर फिर सो रही! उसको नींद में बर्राते हुए हँसिया पलँगड़ी पर गई और आहिस्ता-आहिस्ता बदन दबाने लगी। जब कामिनी अच्छी तरह सो गई, तो पलंग से उतरकर हँसिया ने नानी से कहा—दुल्हन कुछ सपना देख रही है। उसने कहा—जाके नीचे से किसी को बुला ले। इस तरह न चिल्लाना, कि ये जाग उठें। आसानी से जगा के बुला ला। हँसिया जाके एक महरी को बुला लाई। तुलसा ने कहा—बहनी, तुम और हँसिया तनिक जागत रहो। जब से वह चिट्ठी-चपाती आई है, दुलहिन बहुत ब्याकुल हैं। नींद नहीं आती थी, तत्तो-थम्बो करके सुलाया, बदन दाबा, पानी बरफ का पिलाया। जब जाके नींद आई। अब भी सपने में बर्रा रही थीं।

हँसिया और महरी जागती रहीं। तुलसा रात भर की जागी थी, सो रही। पौ फटने के वक़्त हंसिया की आँख लग गई। महरी खूँटा बनी हुई बैठी रही। इतने में कामिनी ने करवट बदली, और लेटे ही लेटे अँगड़ाई ली, और कटोरा-सी आँखें खोल दीं नारायन का नाम लेकर उठ बैठी। वैसे ही तुलसा भी कुल-बुलाके उठी और हँसिया को जगाया। मगर अल्हड़ जवानी, बारह-बारह तेरह-तेरह बरस की उम्र, रात की जगी हुई, करवट बदलके सो रही। तुलसा ने फिर जगाया। महरी बोली—सोने दो बहन, रात भर की जागी है; अभी अभी तो आँख लगी है। वह मसल नहीं है—लड़कपन खेल में खोया, जवानी नींद भर सोया, बुढ़ापा देखकर रोया: समझ नादान परदेसी!

कामिनी ने आहिस्ता-आहिस्ता कहना शुरू किया—हे मेरे ठाकुरजी-महराज, मैं तुम्हारे कँवल-रूपी चरनों को, जो फूलों से भी अधिक कोमल हैं, हिरदै में रखती हूँ। तुम्हारा चरन छोड़कर दूसरा कोई ध्यान करने योग्य नहीं है। जो कोई इन चरनों को याद व ध्यान व सुमिरन करता है, वह भागवान होकर किसी देवता, दैत्य, मनुष, पशु-पंछी आदिक किसी को भी नहीं रहता। तुम्हारे चरनों के परताप से मन मेरा क्रोध मोह लोभ में, जो अधर्म की जड़ है, नहीं फँसता। गंगा, जमना, नर्बदा और सुरसुती सब तीरथ तुम्हारे चरनों में हैं। वह चरन तुम्हारा सब दुख अपने भक्तों का दूर कर देता है। जिस समै तुम्हारे चरनों का ध्यान करती हूँ, उस समै मनोरथ मेरे पूरन होकर कोई इच्छा बाकी नहीं रहती। मैं आपको उत्पत्ति व पालन व नाश करनेवाला सब जगत का जानकर दण्डवत करती हूँ।

यह कहकर अपने हाथ देखे और हाथों को चूमकर नाज़ो-अदा के साथ पलँगड़ी से उठी। महरियाँ पीतल के कलसों में कुएँ से पानी भर लाईं। कामिनी ने मुँह हाथ धोकर स्नान किये, और कहती गई : हर गंगे! हर गंगे! भागीरथी पाप काटेगी! गोमती! जो राम राम कहेगा, सदा सुखी रहेगा। नहा-धोकर साफ़-सुथरे कपड़े पहने, चादर ओढ़ी। महरियों ने पूजा का सामान लिया—बेल-पत्र, फूल, चन्दन, अक्षत, रतन-दीप, नबेद, जल। महरियों को लेकर मंदिर गई। महादेव को फल चढ़ाया, टीका लगाया। फूल, अक्षत, बेल-पत्र, दूध, भंग, धतूरा चढ़ाया। आरती की। इतने में मन्दिर में आरती होने लगी, घंटा और शंख बजने लगा। कामिनी ने प्रार्थना की, कि—हे गौरीनाथ, मेरा सुहाग तुम बनाए रखो, सोने का छत्र चढ़ाऊँगी। लड़ाई जीत के अच्छी तरह घर आयें, जिस तरह पीठ दिखाई है, उसी तरह मुँह दिखाएँ। कामिनी ने तीन बार परिक्रमा की, और घर की राह ली।

और ख़ूबसूरत तो थी ही—और कैसी ख़ूबसूरत? लाखों में एक। आँखों में वह मोहिनी, कि जिसने देखा वह आप ही आप कह उठा कि—वाह, क्या नारायन की महिमा है! कैसी-कैसी मिट्टी की मूरतें बनाई हैं। ख़ैर, मन्दिर हो चाहे मस्जिद, भट्टी चाहे जुआर-ख़ाना, चाहे साधु-संत की संगत : अच्छे-बुरे सब कहीं होते हैं। इस मन्दिर में भी एक कमसिन आदमी, जिसका सरनलाल नाम था, एक अपने ही शोहदे को साथ लेकर आया था। कामिनी को जवान और ख़ूबसूरत देखकर पीछे हो लिया; और मौक़ा पाकर आवाज़ कसा : आज यहाँ सन्नाटा था, कोई औरत घूरने को न मिली। मगर अब घूरा-घारी का मौक़ा है। चलो तड़के-तड़के बोहनी हो गई। बूढ़ी महरी तुलसा सुनते ही आग हो गई। कहा—पूत, किसको घूरते हो? मैं दादी के बराबर, यह (हँसिया की तरफ़ दिखाकर) तुम्हारी लड़की, यह (कामिनी की जानिब इशारा करके) तुम्हारी छोटी बहन के बराबर। इनमें किसको घूरता है?

सरनलाल वैसे गुर्गा था, मगर बहुत शर्माया। और जैसा शोहदों का क़ायदा है, झेंप यों मिटाई कि 'अम्बे! अम्बे! अम्बे! जय जगदम्बे! कहता हुआ चला गया; जिसमें लोग समझें कि बड़ा पूजाधारी है: यह न कोई समझे कि शोहदा है, मन्दिर में औरतों को छेड़ता है, उलटे लेने के देने पड़ें; मन्दिर से ज़लील होके निकले जायँ। क्योंकि मन्दिरवाले और मन्दिर के जानेवाले लुच्चापन जायज नहीं रखते, और औरतों को आम तौर से माँ-बहन समझते हैं। और यों तो नेक अन्दर बद। इससे दुनिया ख़ाली नहीं।

कामिनी को इस बदमाश का आवाज कसना बड़ा बुरा मालम हुआ। तुलसा ने कहा—यह मुआ हत्यारा एक न एक दिन निकाला जायगा, दाढ़ीजार!

कामिनी बोली—बुआ, यह ऐसा पापी है कि मन्दिर तक में खोट की बातें नहीं भूलता। क्या जाने इसके कोई माँ-बहन है कि नहीं!

तुलसा ने कहा—दैव जाने! राँड़ का साँड़ बना घूमता है मुआ।

तुलसा और कामिनी दोनों को बुरा मालूम हुआ; मगर हँसिया के दिल में इस नौजवान गोरे चिट्टे लौंडे की एक-एक अदा खुब गई। सोचने लगी कि शक्ल-सूरत अच्छी है, हाथ-पाँव खूबसूरत, नख-सिक से दुरुस्त; क्या बुरा है। क्या प्यार का तीर कलेजे के पार हो गया।

घर में आकर सास को पयलागन की। उसने असीस दी; ठंडी सुहागन रहो, सुखी रहो! सास से जुदा होकर कोठे पर गई और तुलसा से कहा—बुआ, रात हमने सपना देखा कि जैसे एक पट्-पट् मैदान है.... उसके आगे और कुछ कहने को थी कि तुलसा ने कहा—दुलहिन, दिन को सपने का हाल कहने से मुसाफ़िर राह भटक जाते हैं। कामिनी खामोश हो रही।

थोड़ी देर में उसकी ननद, रनबीर सिंह के चचा की लड़की, कमला आई। यह कामिनी की हमजोली थी। आते ही पहले चची से मिली; पूछा—भैया की कोई चिट्ठी आई? सब हाल सुनकर पूछा—छोटी भौजी कहाँ हैं?

धन्नो ने कहा—कोठे पर।

कमला कोठे पर गई। ननद-भावज मिलीं।

कमला—भौजी कुछ उदास-सी दिखती हो। बड़ी दुबली हो गई हो। तुलसा बुआ, क्या अपनी दुल्हन का खाय का नहीं देत हो?

तुलसा—बेटा तुम समझाओ। घुलके काँटा हुइ गयीं। बाहर इधर-उधर सबके मर्द जाते हैं। क्या एक अकेले यही गये?

कमला—भौजी यह कौन बात है? तो छत्री के घर जनम क्यों लिया? सर से खेलो, मुँह से बोलो! छत्री वह जिसकी महतारी पूत से कहे कि—रन में बैरी को पीठ न दिखाना, बाप-दादा का नाम न डुबोना। जो तुम उदास रहोगी, भौजी, तो हम चले जायँगे।

कामिनी—रात सपना देखा कि जैसे रन-भूमि में तुम्हारे भाई सुरंग घोड़े पर सवार—और क्या जानें कै सौ घोड़े उसी रंग के और हैं, और सब पर अफ़-सर और सवार और बहुत से अंग्रेज़ और गोरे; और एक दफ़ा ही बिगुल बजा और गोले चलने लगे—दन्-दन्, दन्-दन्! और क्या देखती हूँ कि एक सवार भाले में एक सर लटकाए हुए घोड़ा दौड़ाता चला आता है। यह कटा हुआ भयानक सर देखकर मैं डर गई, तो उन्होंने अपना घोड़ा आगे बढ़ाकर मुझसे कहा—तुम इस युद्ध में कहाँ पहुँचीं। यहाँ यमदूत की अमलदारी है। फ़रिश्तों के पर जलते हैं। एक नन्हीं-सी सरसों-बराबर गोली जान ले लेती है। तुम परमेश्वर की राह पर मुझे छोड़ दो; और इस गोलों और तोपों की आग से बचो। मैंने तुमको याद किया और जिठानी से कुछ कहा जो अच्छी तरह याद नहीं है कि बस आँख खुल गई और कलेजा बल्लियों उछलने लगा, और सोचा कि इस प्रेम को देखो कि सपने में भी मुझे न भूले। अब मुझे उनका यमदूत कहना याद आता है तो आठ-आठ आँसू रोती हूँ; दिल क़ाबू से बाहर हो जाता है।

कमला—सपने का कौन ठिकाना। कभी कुछ, कभी कुछ। मगर दिल की बड़ी कच्ची हो। तनिक ढारस रखो।

कामिनी—(मुस्करा कर) एक दिन हमारे मुँह से भी 'तनिक' का लफ़्ज़ निकल गया, तो बहुत हँसे। कहा, बाप ने इतना पढ़ाया-लिखाया और गँवारी बोली अभी तक न गई। यह 'तनिक' कहाँ से सीखा। मैना तोते को पढ़ा-पढ़ा के कहाँ तक आदमी बनाओगे।

कमला—मेरी ज़बान भी भैया ने टोक-टोक के दुरुस्त की। इन परजा औरतों से बोलने में फिर ध्यान नहीं रहता।

कामिनी—तुम्हारे आने से ज़री दो घड़ी दिल बहला। अब मैं तीन चार दिन न जाने दूंगी। यहीं रहो; हाँ, रात को जो ननदोई राजा न याद आयें। इसका हमारे पास कोई इलाज नहीं है।

कमला—मैं तो पूछके आई हूँ। सास से पूछ लिया है। तीन-चार दिन छोड़ कहो अठवारे भर रहूँ। बे-पूछे पक्की-पोढ़ी किये थोड़ी आई हूँ। तुम इतना कुढ़ो नहीं। भौजी यह तो होता ही आया है। मर्द लोग बाहर जाते ही आते रहते हैं। लड़ाई पर जाते ही हैं।

कामिनी—जो कल भी खैर सल्ला का खत आ गया, तो अम्मा से पूछके दोपहर को बाग़ में खुशियाँ मनाएँगे।

कमला—वह घंटा बजा। हमारा दिल ही गवाही देता है कि चिट्ठी आएगी। न आये तो जभी कहना। लो वह कौआ बोला। जो चिट्ठी आ जाय कि वह आते हैं, तो सोने से तेरी चोंच मढ़ा दूं, दूध-भात खिलाऊँ-भर भर थारी: उड़ जा; न सता!

इधर ये बातें हो रही थीं कि उधर दोपहर की तोप दगी—धनन्ना। दोनों एकदम से बोल उठीं जय काली की! तुलसा बोली—शगून होता जाता है। घंटा बजा; कागा बोला; तोप चली। कल नौ बजे के इधर ही आते हैं।

कमला—तुम्हारे मुँह में घी-शक्कर, बुआ।

कामिनी—कहीं आयें तो जान में जान आये।

कमला—फिर हँसी-खुशी ज़रूर बाग चलें। वहीं सुन्दर पकवान पके। हँसी-दिल्लगी रहे, शाम को लौट आयें बस।

इतने में मैके से एक ब्राह्मनी आई और उसने पकवान पकाना शुरू किया।

ब्रह्मनी—सब अच्छी तरह हैं। दुलहिन, मुँह उतरा-सा है।

कमला—भैया जो बाहर गये तो खाना-पीना छोड़ दिया।

ब्रह्मनी—वाह, कोउ बाहर जावत नहीं, एक यही गये? परमेशर के बड़े-बड़े हाथ हैं, दुलहिन। हाँ, लड़ाई हो—ऊ मसल नाहीं कहत हैं, कि काउ गोला बाजत है। तौन फुरफुर गोला ही है। और जाय का को नाहीं जावत है। जेंह की जहाँ बदी होय। तुम फिकर न करौ, दुलहिन। सुन्दर भोजन करौ, अनन्द से रहौ। मलका बिक्टोरिया का बड़ा इकबाल है, कोई का बाल न बाँका होई।

कमला—आज चिट्ठी भी आई, तार भी आया, कि खैरियत है।

ब्रह्मनी—चलो बस, छुट्टी भई।

कामिनी—तुलसा बुआ, हँसिया से कहो, देखे, खाने में क्या कसर है। आज बड़ी देर हो गई। रसोइया आया नहीं; न कहला भेजा, कि पक्का कर लेते।

तुलसा—दुलहन हँसिया नहीं है। मौसी के घर आज गई है।

कामिनी—तुम देखो जाके, यह हमसे बेपूछे क्यों चली गई। आने तो दो।

कमला—यह बुरी बात है। पूछके चला जाय। और जो कोई काम उससे होता? यह भी कोई बात है भला?

कामिनी—आने दो, हम समझ लेंगे। यह आज नई बात हुई। कभी बेपूछे नहीं जाती थी। आज कहीं नानी से किसी बात पर लड़के तो नहीं गई।

तुलसा—नहीं।

कमला—नीचे होगी। ज़रा आवाज़ दे ले।

तुलसा—ए महरी, हँसिया नीचे है?

महरी—नाहीं।

कामिनी—देखो, बाग में होगी। जल्द जाओ।

बारन—सरकार, वहाँ भी नहीं है।

कामिनी—तुलसा, क्या तुमसे पूछके गई है?

तुलसा—नहीं। कल से गई है। जानती हूँ, मौसी के घर गई होगी।

कमला—चिट्ठी आ जाय तो जान में जान आए।

कामिनी—आती ही होगी। तुम इस वक़्त अच्छी आ गईं। मैं जो आज मन्दिर गई तो वहाँ एक पापी ने आवाज़ा कसा। ऐसा बुरा मालूम हुआ कि जी चाहे, आँखों को तलवे के तले मल डालूँ। जो कहीं घर के मर्द सुन लें, तो जीता न छोड़ें। मुआ पापी!

कमला—था कौन?

कामिनी—सुनती हूँ, कोई सरन है।

तुलसा—मैंने भी मुँह पकड़के काट ही डाला।

कामिनी—तुलसा ने कहा,—पूत किसको घूरते हो, अम्मा के बराबर को?

कमला—क्या घूरता था?

कामिनी—ए पास आके मुआ कहने लगा: अब इस वक़्त बोहनी हुई। एक सूरत अब कहीं घूरने को मिली। बस चलता तो ज़हर दे देती।

कमला—पापी, कमबख़्त।

कामिनी—ऐसों को ज़रूर सज़ा होनी चाहिए, जिसमें फिर जुर्रत न हो कि किसी की बहू-बेटी पर आवाज़ा कसें। जो कहीं अपने छोटे देवर से कह दूँ तो मार ही डाले। मगर हमारा दिल तो साफ़ है। या हम जानते हैं या परमेशर, औरों से कोई मतलब नहीं। मगर इस मुए पापी को जो कोई पीट दे तो मैं ख़ुश हूँ।

कमला—उस पर परमात्मा की मार न पड़े तो सही।

तुलसा—जाने दो बेटा। जो जैसा करेगा वह वैसा पाएगा।

महरी—यह है कौन दाढ़ीजार?

तुलसा—वह मुआ सरन; उसकी टिकटिकी निकले!

कामिनी—मगर तुलसा बुआ ने ख़ूब कच्चा किया! बस फिर चुपके से भाग ही गया। हँसिया कहती थी कि छिपा हुआ था। मैंने तो देखा भी नहीं कि मुआ कौन था, कौन नहीं। अब नाम सुना है। इससे बदला लेना चाहिए। ऐसे लोगों पर ख़ुदा की मार!

कमला—इसी से तो मर्द लोग हम लोगों को किसी जगह जाने नहीं देते, कि कहीं कोई आवाज़ कसे! वह सब जानते हैं ना।

कामिनी—जो नेक हैं, उनको किसी का डर नहीं है। अगर कोई घूरेगा तो उसकी आँख परमेशर फोड़ेगा। हमारा क्या बिगड़ेगा। और यों जो औरतें बद हैं, उनको चाहे सात पर्दों में भी रखो तो क्या होता है। जिनके यहाँ पर्दे का बड़ा ख़याल है, उनके यहाँ क्या होता है! पर्दा दिल का चाहिए। मगर हाँ, यह भी नहीं कि रात को मन्दिरों में जाय या फिर यह कि डोली बहाने से मँगाई और ख़ाला जान या फूफी-अम्मा का बहाना करके पहुँचीं क्या जाने कहाँ। ज़ैनब की माँ हमसे सब कह चुकी है। नेक अन्दर बद, सब जगह पाओगे।

इतने में इन्द्रविक्रम सिंह बहुत खुश-खुश आये और कहा, 'लो मुबारक ! रनबीर सिंह का मैदाने-जंग से तार आया कि मुझे साहब कमांडर-इन-चीफ़ ने विक्टोरिया क्रास का तमग़ा दिया। अब मेरे नाम के साथ 'वी० सी०' लिखा जायगा। एक लड़ाई में मैंने अपने कर्नल की जान बचाई और दुश्मन को एक ऐसे मोर्चे से हटा दिया, जिससे वह हमारी कुल फ़ौज को पस्पा कर सकते थे। घर भर में खुशी के शादियाने बजने लगे। गजराज सिंह और उनका बड़ा लड़का और इन्द्रबिक्रम सिंह और बलज़ोर सिंह और बलभद्र सिंह और गुमान सिंह और हरनाम सिंह और अर्जुन सिंह ने फ़र्माइश की कि भइ, मिठाई मँगाओ !

बलभद्र सिंह—ज़रूर मँगवाइए।

मान सिंह—हमारे चपरासी को भेजो कि काने की बर्फ़ी और दीना के दही बड़े लाए।

बलभद्र—इनका नाम भी लिख लेना ! बर्फी और दही बड़े का ताल-मेल कितना अच्छा है।

खूँखार सिंह—वाह कैसे छत्री हो, भई ! ज़रा-सी खबर सुनी, चलिए मिठाई की फ़र्माइशें होने लगीं। मिठाई कैसी ?

गुमान सिंह—विक्टोरिया क्रास मिलने की खुशी हुई।

खूँख़ार—कोई खुशी नहीं होती। न खुशी, न रंज होगा। क्या खाजासरा के ही लड़का पैदा हुआ है ? छत्री रनसूर होते ही हैं। कर्नल की जान बचाई तो कौन बड़ा कमाल किया !

गुमान सिंह—(मुस्कराकर) इनमें उजडपन की बू नहीं जाती !

बलभद्र—अजी, तो अब मिठाई मँगवाइए, उम्दा पचमेल। हम सब खाएँगे; बस, एक आपको (खूँख़ार सिंह) न मिले !

गुमान—हाँ, बस मेरे दिल की बात कही।

बलभद्र—इनके नजदीक तो खुशी की बात हुई नहीं। विक्टोरिया क्रास का मिलना न मिलना यकसाँ है। मगर हमारा कलेजा गज़ भर का हो गया।

खूँख़ार—अभी जुम्मा-जुम्मा आठ दिन की पैदाइश, तुम क्या जानो ! रन-भूमि कभी आँखों देखी है ?

गजराज—अरे साहब, तो आप बीच में भाँजी क्यों मारते हैं ? आप न खाइएगा, चलो बस छुट्टी हुई। मालूम है आप बहुत बड़े ठाकुर हैं।

बलभद्र—वाक़ई, रनबीर ने बड़ा नाम किया।

गुमान सिंह—ठाकुर रनबीर सिंह, वी० सी०।

इतने में साहब जज की चिट्ठी बलज़ोर सिंह के नाम आई कि अखबार में अभी-अभी मैंने पढ़ा कि आपके लड़के रनबीर सिंह को विक्टोरिया क्रास का खिताब मिला। मैं आपको मुबारकबाद देता हूँ कि मिस्टर रनबीर सिंह ने ऐसा

नाम, और खान्दान का नाम रोशन किया। गजराज सिंह को मुबारकबाद कह दीजिए।

गुमान—लीजिए, इतना बड़ा जज, वह मुबारकवाद का खत भेजता है और ठाकुर खूँखार सिंह के नजदीक कोई बात ही नहीं।

गुमान सिंह—जी हाँ।

खूँखार—अजी, ये जज क्या जानें! सिविलियन लोगों को जंग से कौन बहस?

गुमान सिंह—अक्ल तो है अच्छे-बुरे के पहचान की!

खूँखार—बनियों की तरह रुपया वसूल किया कीजिए!

गुमान सिंह—हम बनिए हैं, यह कहिए! अजी हम मजिस्ट्रेट हैं, जिस दिन कहो, चालान कर दूँ। सूबेदारी-ऊबेदारी रक्खी रहे। आटे-दाल का भाव मालूम हो जाय!

बलभद्र—मजिस्ट्रेट।

खूँखार—अजी, बनिए हैं।

गुमान सिंह—(हँसकर)—बनिए हैं! भेज दूँ एक मजकूरी, (कानिस्टिबिल) एक अदना-सा मजकूरी? अगर न गिरफ्तार कर लाए तो हमारा जिम्मा।

खूँखार—भुट्टा-सा सर उड़ा दूँ मजकूरी-वजकूरी का!

बलभद्र—क्यों नहीं! छत्री हो; हाथी लटेगा, कहाँ तक लटेगा?

गरज यह कि गजराज सिंह ने पाँच रुपये की मिठाई मँगाई, और अन्दर बाहर यहाँ-वहाँ सबने खाई। इन्द्रविक्रम सिंह ने कामिनी को तार दे दिया, और जज साहब ने जो खत भेजा था, वह भी दिया। कामिनी से ज्यादा खुशी किसको होती! कमला को फौरन बुलाया। जैनब की माँ भी खबर सुनकर दौड़ी आई।

जैनब—बीवियो, मुबारक। शीरीनी खिलवाइए।

कमला—तुमको भी मुबारक!

कामिनी—तुमने कहाँ सुना?

जैनब—पकड़िया टोले मिठाई गई थी। मैके में आपके वहाँ सुना तो मैं दौड़ी आई। शिवरानी बीवी बड़ी खुश हैं।

कमला—खुशी की तो बात ही है।

कामिनी—एक खुशखबरी तो सुनी।

जैनब—खुदा अच्छा ही अच्छा करेगा। यों ही रोज अच्छी अच्छी खबरें आया करेंगी।

कमला—कल जुमेरात है। कल, जैनब की माँ, उम्दा खुशबूदार खुटियाँ बनवाके तुलसा बुआ के हाथ शहीद मर्द के ताक़ पर ले जाना। हमने मन्नत मानी थी।

जैनब—मैं सरे-शाम आ जाऊँगी। हार, फूल गजरे भी मँगवा रखिएगा।

कामिनी—(मुस्कराकर) क्या समझ है! अपनी-अपनी समझ।

कमला—अच्छा, तुम अपनी समझ रहने दो।

कामिनी ने रनबीर सिंह का तार और जज साहब का ख़त कई बार पढ़ा।

ज़ैनब—गोली-गोला, अल्लाह ने चाहा, तो फूलों की बरखा मालूम होने लगे!

कमला—परमेशर करे तुम्हारी दुआ क़बूल हो!

ज़ैनब—खिताब क्या मिला?

कामिनी—विक्टोरिया क्रास।

ज़ैनब—नहीं, हमने तो कुछ और सुना है।

कामिनी—'वी० सी०'। वो इसके यही माने हैं।

ज़ैनब—यह रिसालदारों को मिलता है?

कामिनी—जो कोई हो; जो कोई बहादुरी का काम करे!

कमला—चाहे कोई हो?

कामिनी—कोई हो।

इस खिताब के मिलने से घर-भर क्या, शहर भर में ख़ुशी के शादियाने बजने लगे। क्योंकि रनबीर सिंह ऐसा सजीला जवान था और सबसे झुकके मिलता था और फ़ौजी वर्दी उस पर ऐसी सजती थी कि जो देखता था उसको प्यार करने लगता था।

० ० ० ० ० ० ०

हँसिया इश्क़ के तीर से ऐसी घायल हो गई कि एक दम भी सरनलाल के बग़ैर चैन न आया। मंदिर में जो उससे आँख लड़ी तो तीर कलेजे के पार हो गया। तुलसा, यानी अपनी नानी से पूछा न गुछा। फ़ौरन अपनी गुइयाँ गुलबिया महरी के पास गई, जो उसकी हमजोली और दुख-दर्द की शरीक थी। उसन कहा—आज क्या दुनिया जाती देखी! किधर से सूरज निकला है? यह कहाँ भूल पड़ीं। मैं तो समझती थी कि दुल्हन ने अपने घर डाल लिया। वह बोली—ए बहनी, हमसे उनसे तो अब नहीं बनती। जब तक निबाह सकी, निबाहा; अब नहीं बनती। और नानी इस बुढ़ापे में ऐसी चिड़चिड़ी हो गई है कि उठते जूती, बैठते लात। इस घर से मेरा कलेजा पक गया। अब मैंने एक ठिकाने नौकरी ठहराई है। वह जो सरनलाल हैं, उनकी नौकरी है। टहल तो हमसे होगी नहीं; बर्तन रगड़े न जाएँगे उनके यहाँ। काम बस यह है कि लड़कों को खिलाए और ऊपर का काम करे। तीन रुपया, खाना और कपड़ा।

गुलबिया सरनलाल का नाम सुनकर मुस्कराई। कहा—बहनी! जो सरन के यहाँ दो दिन भी टिक जाओ तो मैं जरीमाना देने को तैयार हूँ। वह बड़ा नटखट लौंडा है। तीन रुपये का महीना और खाना कपड़ा कैसा! तुम्हारी उम्र

की लौंडिया को तो वह चाँदी के गहने से गोंदनी की तरह लाद दे! उसका एतबार न करना। ले-देके अपना मतलब निकालके सब छीन लेता है। और बदनामी बड़ी! तूने उसका नाम लिया और मैं खटक गई। मैं ये पापड़ बेल चुकी हूँ। फुलिया मालन उसकी कुटनी है। उसको भेजके मुझको बुलाया। घर में औरतों में गई, काम करने लगी। मुझसे एक दिन कहा—महरी हमारी कोठरी इस तरह से बनाई है कि बाहर से रास्ता है। मैं क्या जानूँ कि उसके दिल में पाप है। मैं गगरा लेके गई तो—कोठरी निगोड़ी बड़ी लम्बी-सी—चट कहा: महरी बुआ, उधर पर जाके गगरा रखना! 'बुआ' सुनकर मैं चौकन्नी हुई कि मैं छोटी उम्र की औरत, मुझे बुआ क्यों कहा। और जब मैंने देखा कि पीछे-पीछे चला आता है, तो और भी खटकी। अब मैं डरी कि यह मर्द, मैं औरत; अकेली; जनाना मकान; दूर। राम, मेरी लाज रख लेना! जैसे ही गगरा चौकी पर रक्खा, ए बस मेरी बैयाँ पकड़ लीं। मैंने हाथ झटकके कहा—ए वाह, लाला, चलो हटो, बस! लगा चिरौरी करने, हाथ जोड़ने। होते-होते पाँव पर गिर पड़ा। कहने लगा, मेरी क़सम है, इतना दूँगा कि तुमको रखने की जगह न मिलेगी। और यहाँ सिवा हमारे और तुम्हारे और कौन देखता है! मैंने कहा—लाला, ऊपरवाला तो देखता है! ले, बस जाने दो। नहीं घर में औरतें कहेंगी कि क्या करने लगी। और तुमको कमी काहे की है, लाला? घर की क्या बुरी हैं? सैकड़ों से बढ़ी हुई और कितनी विचारी नेक। हम परज लोगों पर क्यों रीझते हो? न शकल, न सूरत; न लत्ता-कपड़ा गत का। इतने में किसी ने पुकारा तो जल्दी से बाहर चला गया। और मैं भी भागी। जान छोड़के भाग आई। जो मर्द आया था उसने सरन लाला को और मुझको आगे-पीछे निकलते देखा तो मुस्कराया। मैं तो कट गई, कि वह क्या जाने क्या समझा होगा। अब घर में जो घुसी तो सरन की औरत बड़ी तेज़ हुई। गरम होके कहा—क्यों री, अभी तक वहाँ क्या कर रही थी? लाला के पाँव दबाती थी कि चप्पी करती थी? मैं और भी मर गई, कि कर तो डर, न कर तो राम के कोप से डर। चार आने पैसे मुझे दिये कि जाके सेर भर मटर की फलियाँ ले आ। उन दिनों में नई-नई चली थीं। मेरे आँसू भर आये। मैंने कहा—बहू, मैं नौकरी न करूँगी। लाला की नीयत अच्छी नहीं है। मैं बदनामी नहीं चाहती। मुझे वहाँ घेर लिया था। राम ने मेरी लाज रक्खी। लाला की भावज भी सुनती थीं, वह मुस्कराईं। कहा, इसको क्या हो गया है? बारह बरस की जोरू, नुकीली सुन्दर घर में है; और यह इधर-उधर बारिनों नाउनों कहारिनों को ढूंढ़ता फिरता है! लाला को बुलाके भावज ने बहुत डाँटा, कि तेरा-सा शोहदा हमारे कुनबे में और कोई नहीं है। अरे, तुझे ज़रा लाज नहीं, बेग़ैरत! यह कल की आई हुई महरी, आज नौकरी छोड़े देती है। दस घर में जाके क्या रुसवा

करेगी ! तेरी बारह बरस की परी बनी हुई जोरू—और तू अहरी-महरी को पकड़ते फिरता है ! शरम निगोड़ी भून खाई ! गिरहस्तों के ये काम नहीं हैं, ज़रा-ज़रा-सी बहुएँ, जवान बेटियाँ, इनमें तू हुड़दंगा करता है ! घर बदनाम हो जाएगा, तो कोई लड़का-लड़की न ब्याहने जायगा। चुपचाप सुनता रहा। सुनके कहा, भौजी यह झूठ बोलती है। यह तो आप मुझसे चिरौरी करती थी। जब मैंने न माना तो यह आग आके लगाई। बस इतना सुनना था कि बहनी ! देह जर उठी; और मेरे मुँह से बेसमझे बूझे निकल गया—दाढ़ीजार, बस ! यह सुनकर उसकी भावज ने उसकी तरफ देखकर कहा—थू है ! चुल्लू भर पानी में डूब मरने की बात है। यह टके की महरी दाढ़ीजार बनाए और हम सुनें ! और सुनें न तो क्या करें ! जो तू ऐसा न होता तो इसकी मजाल थी कि यह कहती। मुँह न इसका झुलस देते ! मैं चुप, सुनती गई। मगर फिर उस दिन से उनके घर न गई, कि कौन अपनी आबरू खो आए !

हँसिया ने जो यह बातें सुनी, तो दिल में और खुश हुई और सोचा कि गुलबिया तो सिड़न है। ऐसा मौक़ा हाथ से दिया। ये मौक़े घड़ी-घड़ी थोड़ा ही हाथ लगते हैं। ठान ली कि फुलिया मालन से मिलके मतलब निकाले। गुलबिया से कहा—बहनी, लौंडा तो नटखट है; यह तो मालूम हुआ। मगर अपना दिल साफ़ हो तो कोई क्या कर सकता है। क्या उसके पास कोई तोप लगी है ? हाँ, मन्तर-जन्तर से हमारा दिल फेरके मतलब निकाले तो और बात है।

गुलबिया ने कहा—तेरे पास कहाँ से सँदेसा आया ? अरी दिवानी, वहाँ ढोल के अन्दर पोल है। न देगा, न दिलाएगा। खाली-खूली ठायँ-ठायँ है। पछताएगी। हँसिया, याद रख मेरा कहना। तेरी नीयत डाँवाडोल मालूम होती है। यह बता कि तूने उसको देखा है कि नहीं ?

उसने कुल क़िस्सा कह सुनाया और कहा, कि—चाहे कोई मुझे डिबिया में बन्द करे, चाहे सात पर्दों में रखे। मैं उससे ज़रूर मिलूँगी। मेरी उस पर जान जाती है। मैंने मर्दों में ऐसा नहीं देखा। चाँद में मैल, उसमें मैल नहीं। मुझे किसी तरकीब से उस तक पहुँचा दो, मैं तेरी। लौंडी हो जाऊँ बहनी, मुझे वह बाजरे की रोटी एक वक़्त खाने को दे, मैं उसकी लौंडी बनके रहूँगी; और कहीं का मोहनभोग नहीं अच्छा। उसके यहाँ का सूखा कौर सोने का कौर मालूम होगा। मैं तो देखते ही अपने आपे से जाती रही। जी चाहता था, वहीं लिपट जाऊँ। तू बड़ी बदनसीब है कि भरी थाली को धक्का दिया, आई हुई लछमी को लौटा दिया।

गुलबिया ने कहा—जो इतना रीझी है तो आज ही सही। वह तो दिन-रात इस फिक्र में रहता है। और तेरी-सी लौंडिया को तो छूटते ही कलेजे से लगा ले। अब तुझको रोकना मुश्किल है। पछताएगी। देख लेना, रोते न बनेगी।

हँसिया बोली—रोती कोई और होंगी। मैं राज करूँगी। उसका-सा है कहाँ। मेरी तो जान उस पर जाती है। बहनी, कोई उपाय ऐसा करो कि काम बन जाय। गुलबिया ने कहा, यह तो कोई ऐसी मुश्किल बात नहीं है। सीधी फुलिया के पास चली जा।

थोड़ी देर के बाद हँसिया अपनी गुइयाँ से रुखसत हुई और सीधी मालन के घर पहुँची। मालन तो इस फेर में रहती ही थी। नन्द-भावज, सास, लड़की, दामाद सब उसके इस कुटनापे की हरकतों के नाराज थे। इस बारह बरसवाली छोकरी को अपने यहाँ देखा तो बड़ी खुश हुई। बड़े आव-भाव से बिठाया। कहा, बेटा आज कहाँ भूल पड़ीं! तुलसा अम्मा कैसी हैं? उसने कहा—चची, कुछ न पूछ। नानी को तो बुढ़भस लगा है! अभी ससुरे से गौना आया ही नहीं, और कहती है—तू चली जा। मालिन ने ताज्जुब में आकर कहा—ऐसी भारू पड़ गई लड़की को! निकाले देती है! ऐसा भी कहीं होता है।

हँसिया बोली—हमको चची कहीं नौकर रखा देतीं, हम ऐसी नानी की सूरत न देखते। आध सेर आटे से लगा दो। मालन की बाछें खिल गईं। दिल में बड़ी खुश हुई कि मार लिया है; चलके डाली लगाऊँगी। हँसिया की तसल्ली की, कि घबराने की कोई बात नहीं: मैं अभी-अभी नौकर रखा दूँगी। जैसी उसकी लड़की, वैसी मेरी।

यह कहकर चादर ओढ़ी और फूलों और हारों की टोकरी लेकर चली। पाँव की उँगलियों के बिछवे और अनवट की आवाज आती थी। राह में कहा—सरन लाल के घर में नौकरी है। चलके अपना पक्का-पोढ़ा कर ले। बड़े देनेवाले हैं। ऐसी नौकरी न मिलेगी।

सरन लाल के तो नाम पर यह उधार खाये हुए थी। जैसे कारूँ का खजाना मिल गया। मालन को बहुत दुआएँ दीं, और कहा—जो नौकर हो गई तो उमर भर जस मानूँगी। बस, चलते ही रखा दो। जो उनका जी चाहे वह दें। मालन ने पूछा—तेरे दूल्हा कहाँ हैं? वह बोली—कौन जाने कहाँ है: जाने जीता है कि सरगै गया; और होय भी तो क्या! ब्याह पर मैं दस बरस की थी। वह सतवें में था, अब मैं तेरहवीं में हूँ। वह दस बरस का है। "सैयाँ हमारे झुलवा झुलत हैं, हम ही झुलावन हारी!" मेरे किस काम का!

छोट बलम, बड़ नार रसिक, रसीली मद-भरी
कोसत गोद पसार सास ससुर पत मारी!

इतने में जैनब की माँ दोनों को मिली। अरी बिटिया, तुम यहाँ आते वक्त फुलिया के साथ कहाँ जाती हो! कहीं इसके फेर में न पड़ना। इसके काटे का मन्तर नहीं है, और तुम्हारे सिन की छोकरी तो उसके बड़े ढब की है। अल्लाह तुमको बचाए। यह तुम किसके फंदे में फँसी हो। मैं तो देखो, पीठ पीछे नहीं

कहती। उनके मुँह दर मुँह कहती हूँ। तुम्हारी नानी कहाँ है? चलो, दुलहिन के पास हमारे साथ।

फुलिया ने ताने के अन्दाज़ से हँसकर कहा—तुम हमारे फंदे से बची रहना। ऐसा न हो कि तुमको भी फाँस लूँ। उसने कहा—हमको तुम बिचारी क्या खाके फाँसोगी! हाँ, इस लौंडिया को खूब ढब पे ले आई हो। इसका खुदा ही मालिक है। अब इसका बचना मुश्किल। अरी दिवानी हुई है! चल!

हँसिया ने तुनुककर कहा—ए हटो भी, वाह! डगर बजार में अलई का पलुआ बक्कत हो! ज़ैनब की माँ ने समझा-समझू के अपनी राह ली। इतने में रास्ते में गुलबिया मिली। ज़ैनब की माँ ने कहा—ऐ गुलबिया, तुम्हारी गुइयाँ तो गई-गुज़रीं। दीन की रही न दुनिया की। अभी-अभी मैंने फुलिया मालन के साथ देखा। धीमे-धीमे कुछ गाती जाती थी। मैंने डाँटा, बल्कि फुलिया को बुरा मालूम हुआ। मालूम हुआ तो होवे। हँसिया उसके पट्टों में कहाँ से आई? न तो दुल्हन के मैके में हमने उसको कभी देखा, न सुसराल में। बुरी फँसी। तुम भी समझाना।

गुलबिया ने यह तो साफ़-साफ़ नहीं कहा कि यह सारे काँटे मेरे ही बोए हैं। फुलिया का मैंने ही नाम बताया। बल्कि ज़ाहिर में अफसोस किया और कहा—अब फुलिया कोई कुटनी तो है ही नहीं कि उससे डर हो। और यों जिसका पाप, उसका पाप। जो जैसा करेगा, वैसा पाएगा। ज़ैनब की माँ रसूखियत जताने के लिए कामिनी की सुसराल गई। कामिनी की ज़रा आँख लग गई थी। एक बारिन बैठी पाँव दबा रही थी।

कमला एक पलंग पर चूड़ीवाली से चूड़ी पहन रही थी। जब चूड़ियाँ पहन के चूड़ीवाली को सलाम किया तो ज़ैनब की माँ ने कहा—बेटा, खैरसल्ला? बहुत दिनों बाद देखा। अच्छी तो रहीं? और सब खैरियत। क्या दुल्हन आराम में हैं?

कमला ने कहा—हाँ, ज़रा अभी आँख लग गई है। तुमने ज़ैनब की माँ, हमारे यहाँ आना ही छोड़ दिया। उसने कहा—अब किसी दिन आऊँगी।

कमला ने पान दिया। इतने में कामिनी ने करवट लेके कहा—क्या ज़ैनब की माँ है? सलाम बुआ। उसने कहा—जीती रहो! दूधों नहाओ, पूतों फलों। अल्लाह सुख देना नसीब करे। राज करो। यहाँ वहाँ दोनों जगह खुश रहो। दिन को तो दुल्हन सोती न थीं!

कामिनी पलंग से उठ बैठी और रात के जागने का हाल बयान किया।

तुलसा सामने आई तो उसने पूछा—कहाँ से आती हो? ज़ैनब की माँ ने कहा—घर ही से आती हूँ। आज हँसिया नहीं दिखाई दी? क्या कहीं गई है? ससुरे तो नहीं गई। तुलसा बोली—बड़ी देर से देखा नहीं। क्या जाने कहाँ गई?

कामिनी ने कहा—हमको तो उसकी तरफ़ से फ़िक्र हो गई। वह तो सिवाय अपनी माँ या किसी और औरत के कभी बाज़ार भी अकेली नहीं जाती थी। आज क्या जाने क्या हुआ। और कोई लड़ाई झगड़े की बात भी नहीं हुई। गई तो कहाँ गई। ज़ैनब की माँ ने कहा—तुमने भी नौजवान लड़की ज़रा से बच्चे के हवाले कर दी। मैंने यही सुना कि मियाँ बालक है। तुलसा झल्लाकर बोली—कुछ सिड़न हो गई हो? बाईस-तेईस बरस का मर्द है; क्या दूध पीता बच्चा है? रंगून देस गया था, अब चिट्ठी आई है। आता होगा। ज़ैनब की माँ ने कहा—भई, हमसे तो बेकहे नहीं रहा जाता। हम अभी बड़े हुज़ूर की ड्योढ़ी से घर जाते थे। ए रास्ते में क्या देखती हूँ कि हँसिया चली आती है, और पीछे-पीछे फुलिया माल़न। उससे शिकायत करती आती थी कि नानी ने नौ बरस के लड़के से हमारी भँवरी फिरवा दी; और वह हँसिया को कहीं लिये जाती थी। मेरे पाँव-तले से मिट्टी निकल गई कि ओह! यह क्या हो रहा है। अरे, मैंने कहा, बेटा कहाँ इत्ते वक्त? कहीं इस फुलिया के चक्कर में न आ जाना। ए वह और मालन दोनों ने मिलके उलटी-पलटी सुनाना शुरू कीं। जो मैं ज़री ठहरी रहूँ, तो टेटुआ ही ले ले। यह अच्छी बात नहीं है। वह मुई बड़ी कुटनी है। वह जो हिन्दू लौंडा नया बिगड़ा है, सरनलाल, उसी के यहाँ लेके जाती है। हँसिया को दबाओ!

कामिनी—यह गुल खिला! वह तो आज सवेरे हमको मिला था। यह हँसिया को क्या हो गया! यह तो ऐसी थी नहीं। और यह फुलिया कौन है? क्या मालिन है? पहले हमारे यहाँ आती जाती थी। अब जब से मेरे देवर ने ललकारा कि ख़बरदार यहाँ आई, दहलीज़ के अन्दर क़दम रक्खा, तो टाँगें काट डालूँगा, तब से नहीं आई। वह मशहूर कुटनी है।

ज़ैनब की माँ—हाँ, मेरा तो जाना है, और वह निगोड़ा सरन दिन-रात इसी फ़िक्र में रहता है। बारह बरस की जवान ख़ूबसूरत जोरू को छोड़के चमारियों को ढूंढता फिरता है। मुआ राँड़ का साँड़। मुझसे भी एक दिन कहा था कि ज़ैनब को बहुत दिन से नहीं देखा। हमने कहा—जवान लड़की हम बूढ़ी, औरतों की तरह से मारी-मारी नहीं फिरती हैं। बदज़ात आदमी, कहने लगा—बहुत दिनों से नहीं देखा। अपने दिल में कहा—तेरे पास क्या आग लगाने आती।

तुलसा—दैया, क्या सुन रही हूँ। हँसिया वहाँ पहुँची!

कामिनी—रंजीत को किसी बहाने भेजो कि चुपके से खबर लाये कि हँसिया कहाँ है।

ज़ैनब की माँ और वारिन ने बूढ़े सिपाही रंजीत को समझा-बुझाकर रवाना किया और इधर आपस में यों बातें होने लगीं—

कामिनी—जैसे अब तक यक़ीन नहीं आता। यह हँसिया को क्या हो गया।

तुलसा—(जैनब की माँ से) तुम अपनी आँखन देखो रहे ?

जैनब—ए लो और सुनो! ए हमसे बातें ही जो हुईं।

कमला—और दिन-दोपहरे—यह क्या हुआ? बस वह फुलिया फाँस ले गई।

कामिनी—यह फुलिया कौन है ?

तुलसा—देबिया माली की औरत। वह अधेड़-सी मालन जो ताल पर मिली थी।

कामिनी—अरे वह देवी माली की जोरू! वह कुटनी है। दूर कर कम्बख्तन को मुँह से तो नहीं मालूम होती है। सच कहते हैं—आदमी के अन्दर क्या है, कौन जान सकता है।

कमला—यह हँसिया को कहाँ मिल गई। और यह उस इत्ती-सी लौंडिया ने क्योंकर आसमान में थिगली लगाई; न ऐसी बदकार औरतों का साथ, न संग। समझ में नहीं आता।

बारिन—औरत को बिगड़ते देर नहीं और सुधरते देर नहीं।

तुलसा फूट-फूटके रोने लगी। कामिनी और कमला और जैनब की माँ ने समझाया। बारन ने मुँह धुलाया। इस बुढ़ौती बक्त उसने वह बात सुनी कि मर जाने के बराबर है।

कामिनी ने समझाया कि अभी आने तो दो। देखो तो कहती क्या है। अब तो यह चाहिए कि किसी तरह बिलकुल हाथ से न जाती रहे। ऐसा न हो कि उम्र भर के लिए बेबस हो जायँ। बहुत डाँटना नहीं। एक बात का खयाल रहे कि यह अब इस तौर पर चुपके से बाहर न निकल सके, और हमारी बुढ़िया को न मालूम हो। बड़ी शर्म की बात है। वह अपने दिल में सोचेंगी कि वाह अच्छा संग-साथ है। पहरेवालों से कह देंगे कि जब ये बाहर जाने लगें, फौरन् रोक दें। कमला और बारन की भी यही राय हुई। मगर जैनब की माँ और तुलसा की सलाह यह थी कि उसको उसकी सुसराल भेज दें, जिसमें उसकी रोक-टोक भी रहे और वहाँ सरन लाला और फुलिया मालन न होगी और अपने मर्द के पास रहेगी। और हम भी न इस तरह से जलेंगे। जिसका माल है उसके पास रहे।

कामिनी ने कहा—हम सोचते थे कि दूल्हा को भी यहाँ बुला लेंगे। बाग़ का काम उसके सपुर्द कर देंगे। मज़े से दोनों मियाँ-बीवी यहाँ रहा करेंगे। मगर इसने तो वह गुल खिलाया कि अब उसके रखने की जुरंत नहीं हो सकती। वह तो जैसी है, खैर, मगर इसमें अपनी ही बदनामी है।

कमला ने कहा—खाली-खूली बदनामी ही नहीं। इस तरह की औरतें तो कलंक का टीका लगाती हैं। जहाँ जायगी वहाँ कहेगी कि बीवी को भी ठीक कर दूँगी, दुल्हन से भी तुम्हारी तारीफ़ करूँगी। यह-वह, इसी तरह की अंट-की संट उड़ाकर सारे शहर में बदनाम कर देती हैं।

अब सुनिये कि जो सिपाही हँसिया की तलाश में भेजा गया था वह वापस आया। कहा, हँसिया अपनी गुइयाँ गुलबिया के घर से कहीं गई है।

जनव की माँ ने कहा—मालूम होता है गुलबिया हरामजादी को भी इस भेद की खबर है। देखो, बातों-बातों में टटोलेंगे, कि यह हो क्या रहा है। यह एकाएकी हँसिया की कायापलट क्या हो गई, मैं जहानियाँ-जहान गश्त लगाती हूँ। उड़ती चिड़िया के पर गिन लूँ। है इस मुर्दार गुलबिया का फेर ज़रूर। मैंने जो कहा कि हँसिया को आज फुलिया कुटनी के साथ देखा तो गुलबिया बड़ी तीखी होके कहने लगी—कुटनी वह कहाँ से हो गई; किसका कुटनापा किया? मैंने कहा—वह कुटनी! उस मुई का कुटनापा मैं तो मुँह दर मुँह उससे कह चुकी हूँ; तू काहे को तीखी होती है? अब सुना कि पहले गुलबिया के पास हो आई थी। ज़रूर से! मगर एक बात है—जिसका नाम है वह बद नहीं। देखो, उसका पीठ-पीछा है।

कामिनी—सिपाही से पूछ, तुझसे किसने कहा कि गुलबिया के यहाँ गई थी?

बारिन—उससे गुलबिया ने आप कहा कि आई हती, मुला चली गई।

कमला—यह नहीं बताया कि कहाँ गई, किसके साथ गई, क्या कहके गई?

बारिन—सिपाही कहता है—यह कुछ नहीं बताया; और चली गई।

कमला—कहो फिर जाए दरियाफ़्त करे और गुलबिया को अपने साथ ले आये।

बारिन—दुलहिन, सिपाही रोटी खात है। खाय ले तो जाय।

जैनब की माँ—बस कोई तरकीब से उसके ससुरे को भेज दो! वहाँ कोई ऐसा-वैसा काम करेगी तो मारी जायगी।

कामिनी—उसके मर्द को बुलावा लेंगे, और उसके सपुर्द कर देंगे कि तू जान, तेरा काम जाने; जवान को यों छोड़ना अच्छा नहीं।

जैनब—ए बीबी, अभी कौन-सी ऐसी जवान हो गई। कहाँ की जवानी ऐसी फट पड़ी। बारह बरस की उम्र, निगोड़ी कौन जवानी की उम्र है। खत-रियों-कायथों में अभी बारह बरस की कुँआरी बैठी हैं। क्या मजाल कि जरा राह से बेराह हों। आँखों में हया-शरम। औरतों तक से अच्छी तरह बात नहीं करतीं। हमने चौदह-चौदह पन्द्रह-पन्द्रह बरस की लड़कियाँ देखी हैं, जो मर्द की सूरत से वाक़िफ़ नहीं; मगर साथ आबरू के रहती हैं। जरा-सी लौंडिया और दीदे की इस क़दर सफ़ाई। कलयुग इसी का नाम है।

इधर तो यह हँडिया पक रही थी, अब उधर का हाल सुनिये कि सरन-लाला ने बाग में एक मुख़्तसर दालान कोठी बनवाई थी जिसमें अपने यारों-दोस्तों को लेकर बैठते थे। इस बाग़ का एक बड़ा फाटक बाजार की तरफ़ था, और दो दरवाज़े थे। एक दरवाज़े पर दरजिनें बैठकर सिलाई का काम करती थीं, और दूसरा दरवाज़ा जो उधर गली के अन्दर था—उसका नाम

चोर दरवाजा–उस तरफ से सरन लाला के दिल-बहलाव का सामान हाजिर होता था; यानी बदकार और बदचलन औरतें इसी तरफ़ से आती थीं और किसी को कानोंकान खबर नहीं होती थी। गली का रास्ता। वहाँ रास्ता भी बहुत नहीं चलता था। इसी चोर दरवाज़े से फुलिया मालिन हंसिया को लेकर बाग़ में दाख़िल हुईं और आते ही दरवाज़े में कुंडी लगा दी। सरनलाल बाग़ की सैर कर रहे थे। एक बहुत बारीक कलकत्तेवाली क़ीमती धोती, कोई पन्द्रह रुपये जोड़ी की सफ़ेद बगले के पर की-सी, काली किनारी, और मलमल का हलका रँगा हुआ कुर्ता दो रुपये सिलाई का बखिया किया हुआ। बाल भँवरा-से काले–उनमें हिना का तेल, छोटे गंधी की दूकान का, सोलह रुपये सेरवाला, पड़ा हुआ; दाहने हाथ की छँगुलिया में हीरे की अँगूठी, पाँव में पाँच रुपयेवाला बूट, कान में नागेसर के इत्र की फुरेरी; मुँह में खुशबूदार पान; हाथ में मेंहदी लगी हुई। इस शान से यह रँगीला जवान अपने बाग़ में टहल रहा था—फुलिया को देख कर खुश हुआ। पूछा—'क्या डाली-वाली भी लाई हो कि खाली-खूली सूरत दिखाने आई हो?

फुलिया बोली—कहीं हम मालिनें खाली हाथ भी आती हैं। और फिर ऐसी सरकार में वह डाली लाई हूँ कि भूख-प्यास बन्द हो जाय; नागपुर के संगतरे, और सिलहट के गोले भूल जाओ।

सरन—उतरे हुए तो नहीं हैं?

फुलिया—ए अभी अच्छी तरह गदराए भी नहीं हैं।

सरन—अच्छा फिर डाली कहाँ है?

फुलिया—कहीं अलग बैठो, यहाँ ठीक नहीं है।

सरन—अभी बन्दोबस्त किये देता हूँ। सिपाही तुम फाटक बन्द कर दो। सिर्फ़ खिड़की खुली रहे; और दरज़िनों की तरफ़ का दरवाजा भी बन्द हो जाय। जो कोई आये उसको टाल दो। या हमें खबर हो जाय।

सिपाही ने हुक्म की तामील की, और फुलिया ने हँसिया को बुलाया। हँसिया, शर्माती-लजाती मौलसरी के दरख़्त से जिसके दिये के नीचे वह खड़ी थी आई।

सरन लाला ने जो उसकी उठती जवानी और प्यारी-प्यारी सूरत और गोरे-गोरे गाल और नमकीनी और सीने के थोड़े-थोड़े उभार को देखा तो बाछें खिल गईं। कोठी के अन्दर मसहरी पर जाके बैठा और वहीं इन दोनों को बुलाया। हँसिया दरी के फर्श पर बैठ गई। सरन ने हाथ पकड़कर मसहरी पर अपने पास बिठा लिया। फुलिया फर्श पर बैठ गई। सरन ने हँसिया का हाथ पकड़ लिया।

सरन—यह तो बड़ी शर्मीली है।

फुलिया—यह बातें क्या जानें। अभी बच्चा है।

सरन—क्या बात ही नहीं करना जानतीं? जबान है या नहीं?

फुलिया—बोलो बेटा। लाला से खुलके बातें करो। अब नहीं, थोड़ी देर में बोलेगी और पड़-पड़ बोलेगी। हमारे सामने बोलो तो हमारा कलेजा हाथ भर का हो जाय, कि हमारे बच्चे ने हमारे सामने बातचीत की।

सरन—अच्छा जबान ही दिखा दो।

फुलिया—दिखा दे, बेटी। दिखा दो, पूत।

हँसिया—कौआ ले!

सरन और फुलिया दोनों हँस पड़े।

सरन—छोकरी शोख़ मालूम होती है।

फुलिया—पहला-पहल वास्ता है, शर्माती है। कभी मर्द की सूरत तो देखी नहीं, डरती है। रहने-सहने से शर्म दूर हो जायगी।

सरन—इत्र मलोगी?

फुलिया—ए है, इत्र पर तो जान देती है, दिन-रात इत्र, फूलों के हार, गजरे,—कंगन, फूल-फुलेल!

अपने नौकर महीनलाल को सरन लाला ने बुलाया। यह भी कम-उम्र और नमकीन था।

हँसिया को लाला की बग़ल में देखकर मुस्कराया। लाला ने कहा—इत्र की जो संदूक़ची बाहर है, वह ले आओ। वह ले आया।

फुलिया ने कहा—इतने बड़े लोमड़ हुए, आदमी न बने। मुसलमान सच कहते हैं कि नाऊ और खिदमतगार मुसलमान होना चाहिए। हिन्दू पोंगा। सुन्दर दरी बिछी है—उस पर नंगे पैर आया—सब सत्यानास।

सरन लाला भी खफा हुए। बड़ा बदतमीज़ है। तू रोज़-ब-रोज़ गधा होता जाता है। दरी को साफ कर!'

महीनलाल ने झाड़ू से पावों के निशान मिटा दिये और पानदान से पहले हँसिया फिर लाला फिर फुलिया को गिलौरियाँ दीं। बसा हुआ कत्था, बसा हुआ चूना, इलायची, पान सफेद उम्दा दिसावरी, करारे, जायकेदार। इसके बाद सरन ने सन्दूकची खोलकर रूहे-ख़स का इत्र, दस रुपये तोलेवाला, हँसिया के कपड़ों में मला और धीरे-धीरे कुर्ती के अन्दर हाथ डालकर इत्र मलना शुरू किया। हँसिया जरा सिकुड़ने लगी, तो फुलिया ने डाँट बताई। ए इत्र लगाने दे, छोकरी! मोहल्ला भर महक गया! बस रियासत के यही माने हैं कि खाय और खिलाय। अच्छा पहने, अच्छा खाय। चैन करे! और जो रखके मर गये, टुइयाँ-सी जान निकल गई, तो रुपया और ईंटे सब एक हैं।

सरन ने कहा—हँसिया, अगर हमारी होकर रहो, तो इसी बाग में मकान बनवा दूँ। दो चारपाइयाँ, एक मसहरी, पाँच-छै मोंढ़े, दो कुर्सियाँ ले दूँ। एक

बैठने को कमरा सजा दूँ; टाट, दरी, कालीनें, तस्वीरें। एक सोने का कमरा। खाना पकाने के लिए औरत रख दूँ। एक बारन टहल को हो; दिन-रात रहे। सबेरे दाल-रोटी सालन, तरकारी खाओ; शाम को पूरी-कचौरी, भजिया, दूध-दही, शकर, चीनी, अचार, मिठाई खाओ; दारू पियो। शराब चाहे दिन-रात पिया करो, कुछ पर्वा नहीं। इसके सिवा गहना बनवा दूँ—चाँदी के छल्ले करनफूल, बाली, चम्पाकली, चूड़ियाँ, कटक की चाँदी के कड़े सब बनवा दूँगा। और अगर भलमंसी से रहो तो गाँव-गिराँव तुम्हारे नाम हो जायँ। पहनने को जो चीजें पसन्द हों, पहनो—साड़ी, बनारस का माल, कामदानी के दोपट्टे, ढाका की मलमल। किसी चीज को तरसोगी नहीं। चैन करोगी।

इतने में घड़घड़ाती हुई गाड़ी की आवाज आई और यह मालूम हुआ कि कि जैसे गाड़ी बाग के अन्दर आ गई। फुलिया ने भागने की कोशिश की। हँसिया ने भी मसहरी से नीचे कदम रक्खा। मगर सरन ने इन दोनों को रोका। कहा—बैठो। यहाँ परिन्दा पर नहीं मार सकता।—वैसे ही महीनलाल दौड़ता हुआ आया।

सरन—क्यों, क्यों, खैरियत तो है। क्या हुआ? कौन है?

महीन—सरकार, बड़े लाला आ गये। फाटक की खिड़की के अन्दर आके पूछ रहे हैं कि कहाँ हैं?

सरन—लाहौल बिला—यह बुड्ढा कहाँ से आ गया!

महीन—क्या कहें हम लोग। यह कोठी तो सब बन्द है।

सरन—ऐन करियाल में गल्ला लगाया। कह दो कसरत कर रहे हैं। फुलिया, तुम और हँसिया जरा इस कमरे के पर्दे की तरफ खड़ी हो जाओ। महीनलाल दरवाजा खोल दो; और लाला से कहो, चलिये बुलाते हैं।

बड़े लाला उधर से, सरनलाला इधर से। उन्होंने कहा—सरन भैया, मुनीम से दस हजार रुपये लेके, दो सिपाही साथ लेओ, और इसी गाड़ी पर स्टेशन चले जाओ। रेल के जाने को अभी घंटा भर है। कानपुर का टिकट लेओ। वहाँ परमेशरीदास हींगामल की दूकान पर जाके दस हजार का जो असबाब हमने लिख दिया ले लो। नेपाल के राना आते हैं; शादी है। उनको दो तरह के थान हजारों के चाहिये ब्याह के लिये। बीस हजार तक के मिलें तो ले लो। दूने हो जायँगे। यह कपड़ा बँगलौर बम्बई कानपुर किसी मंडी तक में नहीं है, हम टोह लगा चुके हैं। कम्पू में बस परमेशरीदास हींगामल की दूकान पर है। कल ही लदाय लाओ।

सरनलाला और ही फ़िक्र में थे। उनको हँसिया की चाह थी। टालने को कह दिया कि लाला, अब कल पर रखो। इस वक्त कब कपड़े पहनूँगा, कब जाऊँगा!

बड़े लाला बोले—देर न करना। नाहीं कैस चालीस हज़ार पर पानी फिर जायगा। एक जोड़ा कपड़ा ले लो। लिहाफ़-दुशाला रख लो। धोती का जोड़ा रख लो। मजे से गंगाजी नहाओ, माल लो, चले आओ। सरन ने फिर टाला—हमारी तबीअत अच्छी नहीं है। बाप ने कहा—ड्योढ़े दर्जे का टिकट ले लो। सरन मजबूर हुए। आन के महीनलाल से कहा—ड्योढ़े दर्जे में कानपूर जाने का हुक्म है। एक जोड़ा रख लो।

हँसिया को दो रुपया और फुलिया को एक देकर रवाना किया। कहा—हँसिया, हमको भूलना नहीं। हम कल ही आ जायँगे। क्या करें, इस वक्त बूढ़े को दौलत बढ़ाने की पड़ी है। लालच!

हँसिया और फुलिया ने बिदा ली तो जाते वक्त हँसिया ने कहा—यह जो सामने तालाब है; उसकी दो-चार लाल-लाल मछलियाँ पकड़ दो।

सरन ने दूसरे आदमी को हुक्म दिया कि लाल-लाल मछलियाँ तालाब से निकालने में देर होगी इसलिए वह अचारी, जिसमें लाल और अबलक मछलियाँ है, इनको दे दो।

हँसियाँ खुशी-खुशी मछलियों की अचारी लेके चली। फुलिया मालिन अपनी नयी चेली हँसिया को बाग़ के इसी चोर दरवाजे से बाहर ले गई। रास्ते में दोनों खुश कि अच्छा कम्पा मारा। हँसिया ने दो रुपये नक़द पाये और एक रुपये की अचारी मिली, और आठ-आठ आनेवाली दस मछलियाँ—आठ रुपये ये हुए; और इत्र और ख़ातिरदारी अलग। छोटी ज़ात की औरत, ऐसे अमीर की सोहबत में जो इस क़दर ख़ातिर हुई तो दिमाग़ आसमान पर पहुँच गया।

फुलिया—सच कहना, कैसा अच्छा सुभाव और क्या मिज़ाज है!

हँसिया—बड़ा देनेवाला है। उससे बहुत मिलेगा।

फुलिया—यह डाढ़ीजार बुढ़वा न जाने कहाँ से आयगो। सरन लाला को भी रंज हुआ। करते क्या, जाना पड़ा।

हँसिया—भला आ जायँगे कल तक, कि दो चार दिन बाद!

फुलिया—बेटा, बीच-खेत आयें। दिल की लगी बुरी होती है।

हँसिया—तो मकान बना देंगे, कि झूठ-मूठ!

फुलिया—कुछ सिड़न है? अरे एक मकान क्या, दस बन जायँ, कोठियाँ बनवा दें; कमी क्या है?

हँसिया—हाँ, बड़ा देने वाला मालूम होता है।

फुलिया—हमें न भूल जाना। एहसान मानना।

हँसिया—देख लेना, दीदी। चाँदी की दीवारें उठवा दूं, घर तुम्हारा भर दूं, तो सही।

ये मज़े-मज़े की बातें करती हुई हँसिया फुलिया के साथ उसी के कमरे

तक आईं। वहाँ एक औरत बरोठे में बैठी थी। उसने कहा, मालिन, हम तो देर से आसरा लगाये बैठी हैं। बीवी ने बुलाया है। बच्चे को बुखार आया, इस पर हकीम ने दस्तों की दवा दी। अब जो देखा तो चेचकें निकली हैं।

हँसिया—क्या मुसलमानों के घर भी जाती हो?

औरत—काहे? काव मुसलमान की जान ही नाहीं होत है?

हँसिया—नहीं, मैंने इससे पूछा कि मुसलमान तो मानते नहीं।

मालिन—अब सब मानते हैं। हमारी जजमानी कई बरस से मुसलमानों के यहाँ है। अब कल तो नहीं, परसों मुझसे मिलना। और हाँ, किसी को छाँह भी न देना।

हँसिया विदा लेकर अपने सरकार गई। कामिनी और कमला और तुलसा और बारिन और जैनब की माँ ने ग़ौर करके देखा।

जैनब की माँ—जैसे कोई कोई पड़ोस में इत्र लगाता है।

बारिन—(मुस्कराकर) भल महकत है।

कमला—हँसिया, लाल-लाल मछलियाँ कहाँ से लाईं?

हँसिया—बिकाऊ हैं बीवी। दो रुपये को सब देता है।

जैनब की माँ—इनको क्या करोगी, बेटा?

बारिन—(मुस्कराकर) भूँज के खैहैं।

हँसिया—(शर्माकर) पालूँगी।

कमला—दाम दे दिये?

हँसिया—दिखाने लाई हूँ।

कामिनी—कौन बेचता है?

हँसिया—मेरी एक गोइयाँ।

कामिनी—क्या नाम है?

हँसिया—रमिया।

कामिनी—कौन लोग हैं?

हँसिया—काछन है।

कमला—क्या लाल मछलियाँ उसके खेत में पैदा होती हैं?

हँसिया—नहीं बीवी, कहीं से पाय गई?

कामिनी—रमिया तो यहाँ कोई आती नहीं।

हँसिया—यही माली के पास आई थी।

कामिनी—बारिन, जाके माली से पूछ तो रमिया कोई है?

हँसिया—कहो तो मछलियाँ फेर दूँ।

कामिनी—मैं कौन कहनेवाली?

जैनब—रमिया कौन है यह?

कामिनी—अरे वह रहती कहाँ है?

हँसिया—अब क्या जानूँ बीबी।

कामिनी—गोइयाँ जो है तेरी।

इतने में कमला ने पूछा—तुलसा बुआ कहाँ चली गईं? कामिनी ने जो अब तक खामोश बैठी थी, कहा—काम को गई है; आती होगी ज़रा देर में। बारिन ने नीचे से आके कहा—बहुरिया, माली कहत है, मैं नाहीं जानत हौं—रमिया को आय। ज़ैनब की माँ ने कहा—बटिया पड़ गई! अरे, तू कहाँ गई थी हँसिया?

कामिनी ने हँसिया को अलग कोने में बुलाया और क़समें दे-देके पूछने लगी। पहले तो उस छोकरी ने हाल छिपाया। आयँ-बायँ-शायँ बकने लगी। रफ़्ता-रफ़्ता इतना क़बूला कि फुलिया के घर गई थी, वहीं से यह अचारी लाई है; और इत्र भी उसी ने मला था। यह टोह पाकर कामिनी ने भर्रे देने शुरू किये। अरी सिड़न, मुझसे न छिपा। साफ़-साफ़ कह दे; मैं बात बना लूँगी। नहीं तो तेरी नानी हड्डियाँ-पसलियाँ तोड़के धर देगी। मगर सच-सच कह दे तो मैं बचा लूँ।

हँसिया—फुलिया ने चलती बिरिया पानी के धोके पिला दी थी।

कामिनी—यह गुल खिला। अच्छे; फिर पीके कहाँ गई? और इत्र कहाँ मला?

हँसिया—सरन लाला के पास। वहाँ पुड़िया देने गई थी; मैं भी योंही चली गई।

कामिनी—अच्छा, तो इसमें ऐब कौन-सा है? वहाँ उसने इत्र मला होगा।

हँसिया—हाँ, बस! और कोई बात भी हमसे नहीं की। फुलिया ने ये मछलियाँ लाके हमको दीं; हमने ले लीं।

कामिनी—कुछ उसने तुझसे हँसी-दिल्लगी की?

हँसिया—यह कहा, कि तुम हमारे घर में नौकरी कर लो। मैंने कहा—साहब, म अपनी सरकार को छोड़के कहीं क्यों कर जा सकती हूँ।

इतने में तुलसा आई। कहा—दुलहिन, इस मुए सरन लाला का बाप न आय जाय, तो यह छोकरी हाथ से गई थी। और वह फुलिया तो इसी में अपनी जजमानी खो बैठी। वही इसको भी ले गई थी। सरन लाला का बाप आ गया; उसने सरन को कम्पू भेज दिया। तब बला टली। नहीं यह तो बाप दादे के नाम पर पानी फेर चुकी थी। अब तुम जानो, तुम्हारा काम जाने। इससे हाथ धोया—इसके मर्द को आदमी भेजे देती हूँ—वह चाहे निकाल दे, चाहे ले जाय। मैं अब इसकी सूरत न देखूँगी। मरे हुए और जीते, सबका इसने नाम बद किया।

जैनब ने तुलसा को समझाया कि अब इसकी रोक-थाम करो। लड़की है,

कमसिन, नादान है, फुलिया के साथ चली गई। चलो, अब जाने दो। अब जो हँसिया, तुम ऐसी बुरी सोहबत में जाओगी, तो तुम जानोगी, बस! इत्ता याद रखो!

रात को कामिनी से हँसिया ने कहा—दुलहिन, वह तो घर बना देने को कहता है, गहना बनाये देता है, गाँव-गिराँव मेरे नाम लिखे देता है। मुझे दो रुपये दिये, इत्र मला, मछलियाँ दीं; और बड़े लाला जो न आते तो हमको काहे को जाने देता! यह बात मुझे अपने आदमी से कहाँ मिलेगी! वहाँ चक्की पीसना, मोटा खाना, मजूरी करना और चना-वना छटकना है। यह इत्र वहाँ कहाँ, और लाल-लाल मछलियाँ कहाँ, और यह सुख कहाँ?

कामिनी ने कहा—यह सब दो दिन की बातें हैं। इतने में जैनब की माँ जो कमला के बाल गूँथ रही थी, आई और इसके बाद कमला भी आई। कामिनी ने इन दोनों से कहा कि उसने तो इस पर जादू कर दिया। यह तो कहती है, कि वह मकान बनवा देगा, और गहने से लाद देगा, और इलाक़ा इसके नाम लिख देगा, और यह भी रानी बनकर सुख करेगी। अपने मर्द के पास क्या करूँगी जाके; वहाँ नाज कूटने-फटकने के सिवा और क्या है! और खाने को जवा और मटर; और यहाँ पर सुख होगा, गाँव मिलेगा। जैनब की माँ ने कहा—घर की पिड़की बासी साग।

कमला बोली—चार जूतियाँ वहाँ मिलेंगी, कुतिया।

कामिनी ने कहा—हँसिया इस भरम में अपने को न रख! ऐसे मर्द भला किसके हुए हैं; जिसने अपनी ब्याहता जोरू का ख़्याल न रखा, वह किसका ख़याल रखेगा? जिसने ब्याहता जोरू की मौजूदगी में इधर-उधर की बाज़ारी औरतों से दिल लगाया, उसका एतबार क्या? वह ब्याहता बीवी जो उम्र भर जीते जी जुदा नहीं हो सकती, जो मर्द का आधा अंग है, जिसका पचासों-सैकड़ों मर्द-औरत के सामने हाथ पकड़ा और देवी-देवता को बीच देकर कहा—यह हमारी और हम उसके—जब तक इसकी हमारी ज़िन्दगी है, किसी औरत को बद निगाह से न देखूँगा। जब उसी का न हुआ, तो तुम्हारा क्या होगा। तुम्हारी ऐसी क्या जाने कितनी आयीं और चली गयीं। दो दिन तुमको भी दस-पाँच रुपये दे देगा। बस, निकाल बाहर करेगा। यह तो रोज़ का काम इसका है। तुझको खूबसूरत और नमकीन देखा और अभी नई जवानी तेरी है। यह चार दिन की चाँदनी है। फिर वही उजाला पाख। दस पन्द्रह रुपया मिले या दो चार लाल मछलियाँ देके फुसला दिया तो क्या। उम्र भर को गई गुज़री। कोई टके को न पूछेगा। फिर पछताए भी न बनेगी। सब में थू-थू होगी। ऐसे मर्द भला किसी के होते हैं। और जो तू यह समझे हुए है कि मकान बना देगा और गहना बना देगा और उम्र भर की रोटियाँ देगा यह अल्ला-अल्ला खैर-सल्ला हैं। सब सुना हुआ है। हाय, तुझे क्या हो गया। तेरी समझ

ही में नहीं आता गई गुज़री। सच कहती हूँ। सारी आबरू ख़ाक में मिल जायगी, और उम्र भर ऐसी मुसीबत में रहेगी, कि सारी उम्र रोया करेगी। रोते न बनेगी। यह बता, तुझमें कौन बात है कि उसकी ब्याहता बीवी में नहीं है। कैसी गोरी-चिट्टी, ख़ूबसूरत कमसिन। सौ दो सौ में एक। जब उसका होके न रहा तो टके की औरत तुझको क्या समझेगा? चार दिन में इस तरह निकाल देगा, जैसे दूध में से मक्खी को निकाल देते हैं। बस ठोकरें खाया करना। फुलिया ने तुझको तबाह कर दिया।

ज़ैनब की माँ ने भी वहुत समझाया कि अरी, देख किस मोहब्बत से तुझको समझा रही हैं—जैसे कोई बहन को समझाती हैं। ये पढ़ी-लिखी रानियाँ हैं, हम नीच कौम मूरख जाहिल हैं। जो ऊँच-नीच ये समझें बूझेंगी, हम नहीं जान सकते। हम अंधे लोग हैं, ये किताबें पढ़ती हैं। और जो तेरे मक़सूमों में यही बदी हो, कि गली-गली ठोकरें खाये, तो कोई क्या कर सकता है। तू जाने, तेरा काम जाने।

कामिनी—बहू-बेटियाँ निकल जाती हैं तो कोई क्या कर लेता है। आप बदनाम होती फिरती हैं; किसी का क्या जाता है।

ज़ैनब—जी हाँ, यह तो महरी की लड़की, कहारी है।

कामिनी—हमने ऐसे बद काम में किसी को पनपते न देखा। सब का अंजाम तबाह ही देखने में आया।

ज़ैनब—भीख माँगते देखा। भीख भी नहीं मिलती।

कामिनी—भीख भी नहीं मिलती। और जब तक अपनी चारदारी में साथ इज़्ज़त आबरू रहे, तब तक सबकी नज़रों में नेक समझी जाती है। मोटा-झोटा खाय और चैन से रहे।

ज़ैनब—अब हँसिया, उसके पास न जाना। अब तक जो बदनामी हुई सो हुई अब भी इज़्ज़त-आबरू नहीं गई है।

हँसिया तुनुकके दूसरे कोठे पर मछलियाँ लेके चली गई।

ज़ैनब की माँ ने कामिनी से चुपके से कहा—दुलहिन, अब यह रोके से नहीं रुक सकेगी। अंग्रेज़ी अमलदारी है, पाँवों में बेड़ी डाल नहीं सकते। क़ैद कर नहीं सकते। यह बिलकुल उसके बस में हो गई। तेवर तो इसके देखो ज़रा।

कामिनी ने कहा—जैसा करेगी, वैसा पायेगी। मगर कितनी जल्द बदल गई। सरन ने जादू ही कर दिया। रोएगी।

कमला ने कहा—थोड़े ही दिन में भीख माँगने लगेगी।

ज़ैनब—ए आख़िर हम भी तो किसी ज़माने में बारह तेरह बरस की थीं। मर्द की सूरत देखकर दम निकलता था।

कमला—ऐसी तो यह भी नहीं। क्या चटपट काया पलट हुई। ऐसी छोकरी का कोई एतबार नहीं। यह तो बहू-बेटियों को बदनाम कर दे!

कामिनी—जैनब की माँ, तुमको देखकर झिझकी या नहीं।

ज़ैनब—ज़रा नहीं। यह मालूम होता था कि फुलिया मालिन से लाखों बरस की मुलाक़ात है।

कामिनी ने कहा—और कैसी तुनुकके चल दी, कि जैसे हमारी बराबर वाली है। शराब पी और लाल मछलियाँ लाई और कैसी खुश-खुश इठलाती हुई आई कि गोया जग जीतके आई थी। यह लौंडिया हाथ से गई।

थोड़ी देर में कामिनी ने एक महरी को हुक्म दिया कि जाके हँसिया को बुला तो ला। उसने आके कहा—सरकार, चौतरफ़ा ढूँढ आई, कहीं पता ही नहीं चलता। और बाहर सब कहीं ढूँढा; पता ही नहीं चलता। जाने कहाँ चली गई।

कमला ने कहा—अच्छा, फिर तलाश कर। बाहर जाके पूछ। मालियों से दरयाफ़्त कर। किसी न किसी से पता लग जायगा। वह फिर गई, और वापिस आकर कहा—सरकार, कुओं में बाँस डाल दिये, मगर कहीं पता ही नहीं। जाने धरती खाय गई, आसमान खाय गया!

अब सबको फिक्र हुई। फिर ढुँढ़वाया, मगर कुछ पता नहीं। फुलिया मालिन के घर एक आदमी को भेजा कि बहाने से जाके फूल और पुड़िया माँग लाए। वह वहाँ से बैरंग वापिस आया। कहा, फुलिया घर में नहीं है। किसी-किसी को यक़ीन हो गया कि फुलिया के साथ फिर सरन के पास चली गई होगी। मगर थोड़े ही अर्से में नीचे से एक महरी ने आके कहा—हँसिया निगोड़ी अंगूर की टट्टी के नीचे सो रही है। दो-चार औरतें जाके जगा लाईं। मालूम हुआ नशा तेज़ हो गया है। मछलियाँ बाहर के तालाब में फेंक दीं। सलाह इस वक्त यही हुई कि सर पर पानी डाला जाय। इसके बाद बर्फ का पानी ज़रा पिलाया और सुलाया।

तीसरे दिन हँसिया का फिर पता न था। गो सबने मिलकर उसकी ले-दे की और बहुत कुछ समझाया-बुझाया, मगर उसका दिल ऐसा बेक़ाबू हो गया था कि न रहा गया। सोचा, कि आज तीसरा दिन है, लाला आ गए होंगे। इस तरह गई, जैसे तीर कमान से, या गोला तोप से। दिन से फुलिया मालिन के घर पहुँची। फुलिया देखते ही फड़क गई, गले से लगा लिया। कहा—तुझको ढूँढती थी! एक खुशखबरी सुनाऊँ। वह आ गये। वह आदमी भेज चुके हैं कि उस परी को लेकर आओ जो मछलियाँ ले गई और मुच्छियाँ दे गई थी। फिर आदमी दौड़ा आया। अभी-अभी दौड़ा आया था, कि कहा है, कि जल्दी लेकर आ, लाला बेचैन हैं।

हँसिया—दिल को दिल से राह है भी।

फुलिया—अब तो बड़ी-बड़ी मसलें याद करती है। वाह री, हँसिया।

हँसिया—ऐसा न हो, हवा खाने चले गये हों।

फुलिया—ए नहीं, रास्ता देख रहा होगा।

ख़ैर, जैसे-तैसे ये दोनों पहुँची। सरन लाल के यहाँ एक औरत सावन का गीत गा रही थी। इस औरत का नाम गोरा था।

हँसिया—(झिझककर)—कोई औरत बैठी है।

फुलिया—बैठी रहने दे हमारा क्या करेगी।

हँसिया—शायद लिहाज करते हों!

फुलिया—कौन, सरन? वह अपने बाप का लिहाज़ करनेवाला नहीं।

हँसिया—हमको शरम आती है।

फुलिया—वाह, नाचने चलीं, घूँघट काढ़के। अरे, यह भी कोई ऐसी ही होगी। यह किसी पर बन्द नहीं है।

हँसिया—यह हमसे जलेगी।

फुलिया—जला करे!

इतने में सरन लाला फुलिया मालन के पास आये, देखा तो हँसिया भी मौजूद है। दिल खुश हो गया। हँसिया को लिपटाकर पूछा—सच कहना, है चूज़ा कि नहीं? गोरा ने कहा—क्या कहना है! अरे तू भी कन्हैया बना हुआ है। अच्छा हम सब अब कल आयेंगे। बस, जाने दो। जब फुलिया ने इसरार किया कि—बैठो, चली जाना; वह ताड़ गई कि अब ज़्यादा बैठूँगी तो वह सरन के खिलाफ होगा। कहा—एक काम है, फिर मिलूँगी। एक जाम और पीकर रवाना हो गई।

बारह बजे हँसिया ने विदा ली। फुलिया उसको साथ लेकर ड्योढ़ी पर पहुँचा आई। यहाँ कुओं में बाँस डाले गये; मगर हँसिया कहाँ। एक बजे के क़रीब ये पहुँची। सब जागते थे। ऊपर गई तो तुलसा जल मरी। कामिनी का चेहरा सुर्ख़ हो गया। कमला ग़ौर से देखने लगी—अख़्ख़ाह! यह लिबास, यह इत्र की बू-बास!

हँसिया नशे में थी ही, कामिनी ने जो दम दिया तो कबूल दिया कि सरन के यहाँ गई थी। इस वक्त तो उनमें से कोई न बोली। मगर सवेरे कामिनी ने आड़े हाथों लिया। बहुत ही ख़फ़ा हुईं, और लानत-मलामत की।

और बहुत ले-देकर के कामिनी ने हँसिया को घर से निकाल दिया।

तुलसिया हँसिया की जानी दुश्मन और ख़ून की प्यासी हो गई थी; ख़ुद चाहती थी कि हँसिया को निकाल बाहर करे। एकदम उसके घर में रहने की रवादार न थी।

कमला और घर की सब महरियाँ और बारिनें और औरतें उसके दम भर रहने के भी ख़िलाफ़ थीं।

हँसिया बहुत रोई। कहा, मुझ पर किसी ने जादू कर दिया। मुझे मालूम नहीं था कि मैं जाती हूँ, और वहाँ कौन था, क्या हुआ और मैं क्योंकर और किसके साथ आई और शराब पी या नहीं पी; मैं बिलकुल बेबस थी, मुझे माफ़ कीजिए।

इस तरह पर वह मक्कारा रोई-गिड़गिड़ाई कि सबको पूरा-पूरा यक़ीन हो गया, कि जादू किया गया। मगर कामिनी जादू-टोने को नहीं मानती थी। समझी कि शराब पिलाकर किसी ने एक चुल्लू में उल्लू बनाया। सबकी सलाह से यह राय पक्की हुई कि एक कोठरी में यह रहे और साबित करे कि उसके मिज़ाज में बदी नहीं है। तब तो उसका क़ुसूर माफ़ किया जायगा, वर्ना घर में आने न पाएगी।

——:०:——

अट्ठारहवाँ अध्याय

बाग़ में आदमी न आदमज़ादः सरन औ' कामिनी-ए-हूरनज़ाद

एक रोज़ कामिनी नहा-धोकर पूजा करके, सफ़ेद बगुले के पर से कपड़े पहने—मलमल की किनारी, जिस पर कटाव का हलका काम किया हुआ था; आबे-रवाँ की चोली; शरबती की सफ़ेद कुर्ती, आस्तीनों पर महीन कटाव की बेल बनी हुई है; चन्दन के खड़ाऊँ पहन—छत पर बैठी 'मस्नवी' पढ़ रही थी। बदली के सबब से सूरज की किरनें छिपी हुई थीं। इतने में एक गाड़ी घड़घड़ाती हुई आई और दरवाज़े पर ठहरी। कामिनी ने कहा—तुलसिया, देखो तो कौन आया है। इधर पर्दा कराया गया, और एक अधेड़ औरत, कोई चालीस बरस के सिन की, उतरी। महरी के साथ-साथ सीधी छत पर आइ।

कामिनी ने कहा—यह क्या जाती दुनिया देखी! आज किधर से सूरज निकला! कहाँ भूल पड़ीं? कमला को पुकारा और कहा, ज़रा यहाँ आओ, देखो तो कौन आया है।

कमला इठलाती कमरे के बाहर आई, तो मुस्कराके कहा—अल्लाह, गोरा बहन आई हैं। आज क्या जाती हुई दुनिया देखी!

कामिनी ने कहा—भई हमने भी कहा था।

गोरा कुछ ऐसे भड़कीले कपड़े पहने हुए आई थी, जिनमें ज़रा-ज़रा गँवारपन की भी बू आती थी, और जैसे कि इस ख़ान्दान की औरतों में अर्से से कोई नहीं पहनता था।

अब कामिनी की सुसराल और मैके दोनों में सादे पहनावे का ज़्यादातर

रिवाज और चर्चा था, और इनके मर्दों को जो अंग्रेज़ी पढ़े-लिखे थे, सादगी ही ज़्यादा पसन्द थी। बिनत और गोखरू और करन और चम्पा और लचका और पट्ठा—इनका कम रिवाज था।

गोरा ने पूछा—कामिनी क्या तुम रोज़ बिला नाग़ा पूजा करती हो और नहाती हो? हमसे तो आज इस सर्दी में कभी न नहाया जाय! और पूजा भी सर्दी के सबब से नहीं निभती। और इससे फ़ायदा ही क्या? मुसलमान औरतें कहती हैं—मन में फ़रीद, बग़ल में ईंटें! यह सच है—मन चंगा तो कठौती में में गंगा!

माला लक्कड़, ठाकुर पत्थर, सब तीरथ हैं पानी
कहत कबीर सुनो भई सन्तो, चार दिन बेद कहानी।

दिल की सफ़ाई चाहिए।

कामिनी ने यह सब सुनकर यों जवाब दिया—दिल की सफ़ाई तो सबसे पहले चाहिए ही। इससे कौन इन्कार कर सकता है। मगर जिस्म की सफ़ाई के लिए नहाने-धोने, पूजा करने की भी ज़रूरत होती है, और जिस्म की सफ़ाई को भी मदद मिलती है। इसमें कौन बुराई है—कि तड़के-तड़के सोके उठे, सुबह की हवा खाई और सबेरे-सबेरे नहाए। गर्मियों में तड़के का नहाना अक्सीर है। अगर सर्दी में रोज़ न नहाए तो दूसरे दिन तो ज़रूर ही नहाए। अब पूजा का हाल सुनो। नहा-धोके एक पाक-साफ़ सुथरी जगह पर बैठे। वहाँ पर फूल बहुत से रक्खे हुए हैं। खुशबू ही खुशबू आती है और देखने में भी भले मालूम होते हैं। तरह-तरह की खुशबू और तरह-तरह के रंग। आँखों को भी लुत्फ़ आता है और सूँघने से दिमाग़ को तरावट मिलती है। अब चन्दन रगड़ा गया। उसकी खुशबू और भी ले उड़ी, जैसे सोने पर सुहागा। इसके बाद गूगल की खुशबू से मकान भर महक गया। वबा दूर हो गई। अब घी काफूर की बत्ती जलाई। इसकी खुशबू आई। अब सुनो कि बाज़ आदमी दिन चढ़े, सोके उठते हैं और जब उठते हैं तो तबीअत परेशान होती है। गर्मी के दिन हैं, धूप बिस्तर पर आ गई, और वह धूप ही में पड़े हैं। उट्ठे तो धूप देखकर साये में जाके पड़ गये। महीना-महीना भर नहाते नहीं। बदन पर मैल, तबीअत भारी, सर बोझल। महीनों बदन खली-बेसन से मला नहीं गया। खुशबू बरसों से नाक तक नहीं पहुँची। अब बताओ कितना फ़र्क़ हो गया। ज़मीन आस्मान का फ़र्क़ है या नहीं। हम तो अगर एक दिन भी न नहाएँ और फूलों और गूगल और इत्र की खुशबू न हो तो तबीअत परीशान हो जाय—दम चैन न आए।

गोरा ने इतनी बातें सुनकर उनकी बड़ी तारीफ़ की कि कामिनी तुम तो इस क़ाबिल कि कहीं रानी-महारानी हो जाओ; कई मुल्कों और बड़े से बड़े राज का बन्दोबस्त कर लो, कई आदमियों ने हमसे कहा, कि इस शहर में दो जने

इस क़ाबिल हैं कि बादशाह-वज़ीर कर दिये जायँ। औरतों में कामिनी और मर्दों में सरन लाला।

सरन लाला का नाम सुनकर कामिनी के कान खड़े हुए, और जो बात कह रही थी और जो तबीअत के ख़यालात थे, और तरफ़ बदल गये। गोरा ने जो इसके चहरे की रंगत बदली पाई तो और भी छेड़ा। कहने लगी—अभी कल ही की बात है, कि एक औरत ने मुझसे कहा कि बहन जो कामिनी और सरन का जोड़ होता तो ओ हो हो, क्या अच्छी बात होती! बस चाँद-सूरज की जोड़ी बन जाती।

अब तो कामिनी से न रहा गया। बोली—बहन, तुमको ऐसी बात न करना चाहिए। जिसकी शादी हो गई हो, उसको यह कहना कि फ़लाने के साथ जोड़ा लगाया जाता, ढिमके के साथ लगाया जाता—यह कौन बात है भला?

गोरा ने कहा—अरी दीवानी, तूने सरन को देखा ही नहीं है। जभी बढ़-बढ़के बातें बनाती है। जो कहीं एक दफ़ा देख ले और फिर प्यार न करने लगे, तो झुकके सलाम करूँ। अच्छा यह बताओ, कि मुझे तुम कैसा समझती हो? कभी कोई बात मेरे ख़िलाफ सुनी? कोई बदी की बात? कोई बुरी राह चलते देखा? किसी से मेरी किसी तरह की शिकायत सुनी? कभी हमारे आदमी ने डाँटा, दबाया, कि तू ग़ैर मर्द से क्यों हँसती-बोलती थी?—इसका जवाब दो।

कामिनी ने कहा—हमने तुम्हारी कोई बदचलनी नहीं सुनी, कभी कोई बात तुम्हारे ख़िलाफ सुनने में नहीं आई। मुझे झूठ बोलने से क्या ग़रज़! इसके बाद कमला से पूछा कि अब बताओ, तुमने मुझे कुराह चलते तो नहीं देखा?

उसने मुस्कराकर कहा—हमने उड़ती से ख़बर पाई थी कि गोरा किसी जाट के साथ निकल गई। इस चालीस-बयालीस के सिन में यह मुँह काला किया। बूढ़े मुँह मुँहासे लोग देखें तमाशे। इस पर सबने ज़ोर से क़हक़हा लगाया। और गोरा ने मुस्कराकर कहा—दिल्लगी न करो, जो पूछें वह बताओ।

कमला बोली—यह वाहियात बात पूछना ही बेहूदगी है। घर-गिरिस्तों से यह सवाल ही करना फ़ज़ूल है। अपना क्या बुरा है जिसके साथ उम्र भर काटनी है। और यों तो 'नेक-अन्दर बद' और 'बद-अन्दर नेक' सब जातियों में हैं।

गोरा ने कहा—अच्छा, अब तो तुम दोनो जानती हो कि मैंने इतनी उम्र में कभी कोई बात ऐसी नहीं की जिससे आबरू में बट्टा लगता। फिर क्या सबब है कि मैं सरन लाला की इतनी तारीफ़ करती हूँ; और मैं साफ़-साफ़ कहती हूँ कि मैं उस पर रीझी हुई हूँ। मैंने अपने मर्द तक से कह दिया, और मैं सच कहती हूँ कि मेरी तो उस पर जान जाती है। . . . बस, बदी के पास मैं नहीं फटकती; हाँ, खाली-खूली प्यार करने को तो ज़रूर जी चाहता है।

यह कहकर गोरा ने दो-एक बार सिसकियाँ भरीं, और कामिनी ने यह बात कही कि, हम भी देखते!

देखिये, यह वही कामिनी है जिसको सरनलाला के नाम से नफ़रत थी, जो सरन को हमेशा कोसा करती थी और जब सरनलाला का नाम आता था तो बुराई के लफ़्ज जबान पर लाती थी; यह वही कामिनी है जो उस दिन से सरन की दुश्मन हो गई थी जिस दिन से उसने मन्दिर में उस पर आवाजा कसा था और घूरा था; यह वही कामिनी है जो तुलसा की छोकरी हँसिया को समझाती थी कि उसके भर्रे में न आना। और अब वही कामिनी फ़र्माती है कि—हम भी देखते! इस शौक़ को तो मुलाहज़ा फ़र्माइए कि—हम भी देखते!

यह सब गोरा की जादू भरी बातों का असर है कि कामिनी तक की ज़बान से कहलवा लिया—हम भी देखते! गोरा की बाछें खिल गई।—यह क्यों—इसका सबब आगे खुद ही मालूम हो जायगा।

गोरा—क्या तुमने सरू लाल को कभी नहीं देखा?

कामिनी—देखा तो है मगर दूर से। अच्छी तरह नहीं देखा; है गोरा... 'गोरा-चिट्टा' कहने को थीं, मगर 'गोरा' तक कहके चुप हो गईं।

गोरा—तुमने हमारे प्यारे माशूक़ को देखा है, कमला?

कमला—हाँ, देखा है। इससे तो कोई इन्कार ही नहीं कर सकता, कि हज़ार दो हज़ार में एक है। ऐसी सूरत पाई है, कि वाह! मगर हमको-तुमको क्या!

कामिनी—हमको तुमको की बात नहीं; बात यह है कि इन्होंने तो उसको आसमान पर चढ़ा दिया है।

गोरा—(सिसकियाँ भरके!) अपनी आँखों की क़सम खाके कहती हूँ कि जो इस दम देख पाऊँ तो झप् से कूद के लिपट जाऊँ। परमेशर ने उसे अपने हाथ से बनाया है!

कामिनी—मोहिनी इसी का नाम है। जब ही हँसिया रीझी हुई है।

गोरा—हँसिया निगोड़ी काहे में है! वह कौन है जिसको यह तमन्ना नहीं कि दो गाल उससे हँस बोल न ले; और मुझ-ऐसी को तो वह ख़याल में भी नहीं लाता। वह तुम-ऐसी ढूँढ़ता है। और वह क्या ढूँढ़ता है, औरतें खुद उसको ढूँढ़ती हैं। लाँबा क़द! सर बड़ा सरदार का। अभी यहाँ खड़ा हो जाय, बाज़ार भर में सबसे दो मुट्ठी ऊँचा।

कामिनी—उस दिन मन्दिर में देखा था; मगर वही, कनखियों से। और मुझे उसका घूरना उस वक़्त जैसे तीर-सा लगता है।

गोरा—कहती हूँ, ना, कि मैंने आज तक ऐसी सूरत ही नहीं देखी, और तुम्हारा तो नाम लिया, और ठंडी साँसें भरने लगा। कहता है—चाहे मेरा

लाख रुपया ख़र्च हो जाय, मगर एक दफ़ा कामिनी को गले से लगा लूँ और हाथ जोड़के बस इतना कहने पाऊँ कि—प्यारी, हमारी जवानी और जान की क्यों दुश्मन हुई हो! हमने कोई क़सूर नहीं किया! बस, इतने गुनहगार ज़रूर हैं कि तुमपर मरते हैं। अगर मरनेवाले का जिलाना गुनाह न हो, तो जिला लो; वर्ना एक दफ़ा ही मार डालो। यह तो वह ख़ूब जानता है कि तुम उसके हत्थे न चढ़ोगी : अच्छा, तो फिर दूर ही से जरा मुखड़ा दिखा दो! इसमें न कोई हर्ज है, न बदी। मुफ़्त का एहसान; और मैं लड़के की क़सम खाके कहती हूँ कि जहाँ तुम्हारा ज़िक्र हुआ, और बस, ठंडी साँसें भरने लगा। एक दिन तो रोने लगा...

कामिनी—(हँसकर) ए हटो भी, हममें ऐसी कौन-सी बात है! जब वह लाखों ख़र्च कर सकता है तो हमसे कहीं अच्छी उसके ग़ुलामों को मिल सकती हैं।

गोरा—यह हम न मानेंगे। तुममें वह बात है कि लाखों में नहीं, करोड़ों ख़र्च करने से भी नसीब न हो। अच्छा अगर वह एक दिन आँख भरके दूर से तुम्हें देख ले, तो क्या हर्ज है? हमें उस पर बड़ा तरस आता है। बस, तुम्हारा नाम सुनते ही उसके दिल पर अजब तरह का असर होता है। और जो कहीं अँधेरे-उजाले उसको मिल जाओ, तो, जानती हूँ, अपनी जान दे दे; गले से लिपटे, तो शायद दो दिन तक न छोड़े।

कामिनी—ए है, दो दिन तक! मैं तो मर ही जाऊँ! ए हाँ, दो दिन तक जब मर्द गले.....

कामिनी ने यह बात आधी ही कही कि चुप हो रही। गोरा ने जो देखा कि अब यह इस क़दर बढ़ने लगी, और खुली-खुली बातें करने लगीं, तो समझ गई, तबीअत बदली। पहले तो चुप हो रही, और दिल में बहुत बुरा माना। इसके बाद बिगड़ी। अब सुनते-सुनते यहाँ तक नौबत पहुँची, कि हँस-हँसके और चबा-चबाके बातें करने लगी।

गोरा ने कहा—कामिनी, मैं जानती हूँ कि जो मोहब्बत इसको तुमसे है, उसका दसवाँ हिस्सा भी मजनूँ को लैला की न थी; नल को दमयन्ती का यह दिली प्यार न था, जो उसको तुम्हारा है। वह कहता है, मुझे सच्चा प्यार है, जैसा भाई को बहन का होता है: बस, अब चाहे मार डालो, चाहे जिला लो!

कामिनी ने कहा—गोरा बहन, वह कुछ सिड़ी हो गया ह, पागल हो गया है। ख़ुद गोरा चिट्टा ख़ूबसूरत; जोरू परी, परिस्तान की परी, मैंने देखी है। फिर वह मुझ पर क्यों इतना रीझा हुआ है?

उसने जवाब दिया—कामिनी, हमने माना, कि उसकी औरत देखने-सुनने में बहुत अच्छी है, और सचमुच की परी ही है। मगर सच कहती हूँ, कि उसकी सूरत तुम्हारे तलवों को भी नहीं पहुँचती है। कहाँ तुम, कहाँ वह। ज़मीन आसमान का फ़र्क़ है। इसको भी जाने दो। दिल का आना और मौत का

आना एक है। परमेशर न करे कि किसी का दिल किसी पर आये। हमारे पड़ोस में एक डोमिनी रहती है। बहुत जवान है, और बड़ी नमकीन और ख़ूबसूरत, और बड़ी चुलबुली। पड़ौस के एक लौंडे की उस पर जान जाती थी; एक तहसीलदार का लड़का। उसने बरस भर तक कोशिश की। कुछ मतलब न निकला। डोमिनी की छोकरी रोज़ उसके इश्क़ का चर्चा सुना करती थी, कि जान देता है—रातों को रोया करता है, दिन-रात बेचैन रहता है, खाना-पीना हराम हो गया है। होते-होते एक दिन इसको तरस आया, और कहा—बुला भी लो! बरसों से जान देता है; अब मुझे उस पर रहम आ गया; बुला भी लो! लोगों ने जाके उसको ख़ुशख़बरी दी, और कहा: चलो, तुम्हारी क़िस्मत बुलन्द हो गई! सुनते ही मारे ख़ुशी के जामे में फूले न समाया। पहले तो यक़ीन न आया; कहा—यारो, फ़क़ीरों से दिल्लगी अच्छी नहीं होती; हम ज़िन्दगी से बेज़ार हैं। और तुम लोगों को छेड़-छाड़ की सूझती है। क़स्में खायीं कि वह बुला रही है। मगर यह तो मजनूँ हो रहा था; यक़ीन न आया। लोगों ने जाके उससे कहा कि—उसको हमारे कहने का यक़ीन नहीं आता। कहा, अच्छा मैं ख़ुद चलती हूँ। यह कहकर, ख़ूब बनी-ठनी और निखरी। पाज़ेब को छमछमाती और अकड़ती-इठलाती चली, और कहा : हम अपने दीवाने को आप चलके ख़ुश कर देंगे। 'छम-छम' की आवाज़ से समझा कि दिल्लगीबाज़ों ने किसी बाज़ारी औरत को दिल्लगी देखने को भेजा है। मगर जैसे ही इस शोख़-शंग औरत ने मकान के अन्दर क़दम रक्खा और दोनों की चार आँखें हुईं, तो फौरन लिपट गया; और ज़ोर से चीख़ मारकर दम निकल गया!

कामिनी—अरे! है-है! मुफ़्त में बेचारे की जान गई। लेना एक न देना दो।

गोरा—ए तो सरन का हाल भी यही होना है। वह बचेगा नहीं।

कामिनी—तो हमको तो अब डर मालूम होता है। जो मैं मिली और उनके दुश्मनों का दम निकल गया, तो इस बेचारे की जान गई और हमारी बदनामी हुई।

गोरा इतनी बात से ताड़ गई कि मतलब हासिल हो जायगा। मार लिया है। धीरे-धीरे हमारे ढर्रे पर आती जाती है। मालूम होता है कि यह इस बात पर राज़ी थी कि सरन से मिले, मगर डर यह है कि ऐसा न हो कि कहीं उसकी जान जाय और मैं बदनाम हूँ। जो यह डर निकाल दिया जाय तो राह पर आना आसान बात है। कहा—तहसीलदार के लड़के की तरह ऐसा जनून नहीं हो गया है कि जान दे डाले। हाँ, जो देर होगी, तो यह भी सिड़ी हो जायगा। हमारी सलाह यह है कि तुम मिल लो और उसकी जवानी पर तरस खाओ। और उसकी जवान औरत की जान बचाओ! नहीं तो दो जानें जायँगी। और तुम्हारा कोई फ़ायदा न होगा। और कोई ऐसी बात नहीं। ज़रा सूरत दिखा दो। बदनसीब का अगर ऐसा ही दिल उमड़ आया, तो बहुत करेगा, चूम लेगा।

फिर उससे क्या होता है। एक-दो दफ़ा तुम चूम लेना; दो-चार दफ़ा वह चूम लेगा; चलो छुट्टी हुई। कोई कानों-कान सुनेगा भी नहीं। और मैं मरी तो नहीं। जो कोई नेकी-बदी हुई, तो मैं तो मौजूद हूँगी। । पहले तो यह होगा नहीं, और जो उसका जी ललचाया तो मैं डाँट दूँगी—कि सरन, खबरदार, यह क्या बात है। चूमा-चाटी तक रहो। बस, क्या मजाल, कि ज़रा आगे बढ़ सके। मैं तुम्हारी दुश्मन तो हूँ नहीं। चाहती फ़क़त इतना हूँ कि उसकी जान बचे और उसकी जोरू बिचारी रँडापा न भुगते। इस लफ़्ज़ का सुनना था, कि कामिनी ने एक ठंडी साँस भरी, और कहा कि, गौरा बहन, तुमने तो आज ही मार डाला। मैं सोचती हूँ कि जब उसकी यह कैफ़ियत है, तो हमसे बढ़के पत्थर का दिल किसी का नहीं, जो हम उसको अपनी सूरत देखने को तरसाएँ। मगर ऐसा न हो, कि हाथ पकड़ते ही पहुँचा पकड़े । यह रँडापे का लफ़्ज़ जो तुमने इस बेचारे की बीवी के लिये कहा, उससे एक तीर-सा कलेजे पर लगा। परमेशर तुम्हारे सरनलाला को हज़ार बरस की उम्र दे और उसकी जोरू सदा सुहागन रहे!

गौरा ने हँसकर कहा—'तुम्हारे सरन' की अच्छा कही! तुम्हारा सरन लाला है कि हमारा। तुम्हारा नाम सुनकर सिसकियाँ भरता है, या मेरा नाम सुनकर। मुझ बुढ़िया को लेकर क्या करेगा। बीस-बाईस-चौबीस बरस से ज़्यादा उम्र की औरत से बात ही नहीं करता, वह तो पटाखा ढूँढ़ता रहता है। तुम ऐसी को।

इस पर कामिनी और कमला दोनों मुस्कराईं। कामिनी ने कहा—गो उम्र में ज़रा योंही-सी बड़ी हो, मगर नमकीनी अभी नहीं गई है। अदा वही है, बाँकपन वही है।

गौरा बोली—एक दिन, कोई दो बरस हुए, मेरे गालों पर हाथ फेरा था। बड़ा चंचल है।

कामिनी ने कहा—अब खुलती चलीं गौरा बीवी!

गौरा—हमारे दिल में बदी नहीं है। दिल की सफ़ाई से कह दिया।

कामिनी—हाँ, हाँ, मैं क्या जानती नहीं हूँ।

गौरा—जिस दिन तुमसे दो-दो बातें होंगी, उसका कलेजा हाथ भर का हो जायगा। यह समझ लो कि जान में जान आ जायगी। जैसे सूखे खेत पर दौंगरा बरस गया।

कामिनी—तुमसे उससे कब की मुलाक़ात है?

गौरा—जब से मैंने उसको देखा है, तबसे हज़ार जान से आशिक़ हूँ। बेदेखे ज़रा चैन नहीं आता। जो चार दिन न देखूँ, तो बेताब हो जाती हूँ।

कामिनी—यह मोहिनी आँखों में है। क्योंकर देखें।

गौरा—मैं क्या मर गई हूँ। मैं तो दिखा दूँगी।

कामिनी—मेरी अच्छी गौरा बहन, दिखा दो!

गौरा—ए मेरा ज़िम्मा है! ए लो अच्छी आईं। यह तो उस पर एहसान है!

कामिनी—मगर इस ख़ूबसूरती से मुलाक़ात हो कि कोई कानों कान न सुने। चुपचुपाते। और एक बात और याद रहे। चूमने-चाटने की सनद नहीं है। बस, दूर-दूर, अलग-अलग।

गौरा—अरे वह दिन तो आने दो: जो अपने आप न लिपट जाओ तो कहना, गौरा झूठी निकली। एक दफ़ा देख तो लो, सच-झूठ का हाल मालम हो जायगा। मैं तो कहती हूँ, कोई औरत ऐसी नहीं जो उसकी सूरत देखके रीझ न जाय। कलकत्ते की महीन धोती, बड़ी क़ीमती, शरबती का बारीक कुर्ता, सोने के बटन लगे हुए; क़ीमती सफेद टोपी दोपलड़ी। इत्र में डूबी हुई। हाथों में मेंहदी अक्सर लगाता है। और बड़ी ख़ातिर का आदमी है। बाप किसी बात को टोकता नहीं। माँ की आँखों का तारा, घर भर का प्यारा।

कामिनी—ऐसे को तो कलेजे से लगा ले—और वह एक मुच्छी ले तो हम दो लें। कब देखेंगे!—अब तो शौक़ बढ़ता जाता है!

गौरा—अच्छा तुम ही कोई दिन मुक़र्रर कर दो!

कामिनी—मैं यह सोचती हूँ कि जो शख़्स अपने ऊपर जान दे और नाम सुनते ही परेशान हो जाय और दुआएँ माँगे कि कहीं जल्द मुलाक़ात हो, उसको तरसाना किस मजहब में जायज़ है। हाँ, बदी की बात का दिल में ध्यान न लाए। परमेशर के सामने भी नेक और आदमियों के सामने भी। हम उससे अच्छी तरह मिलेंगे।—बातें करूँगी, अपने हाथ से पान लगा के दूँगी, ख़ुशबूदार पान, छोटी इलायची पड़ी हुई। बसा हुआ कत्था। चलते वक्त अगर चूमा-चाटी भी हो तो ख़ैर, मगर भलमन्सी के साथ।

गौरा—बस, बस। यही तो हम भी चाहते हैं। इसका जी भी खुश हो जाय और तुमको कोई बुरा भी न कह सके और दो की जानें भी बच जायँ।

कामिनी—देखें, कैसा है? तुमने तो बड़ी तारीफ की है। जी चाहता है इसी वक्त देखती; पर लगा के देख आती; शौक बढ़ता जाता है।

गौरा—तुम्हारी सास कर डर है; नहीं, इस वक्त भी देख सकती हो!

कामिनी—अब कल रात पर रखो; जिसमें कोई फजीता न हो।

गौरा—तुम चलोगी कि हम उसको औरत बनाके ले आयँ।

कामिनी—मैं खुद चलूँगी। सौ बहाने हैं। तुम कल सबेरे आओ तो मैं तुमको जगह दिखा दूँ। एक बाग है। बस वहीं तुम रात को उसको ले आना। और चली जाना। तुम्हारे सामने बातचीत करते हुए मैं झेपूँगी। वहाँ दो औरतें नौकर होंगी; और वह और मैं।

गौरा—(बहुत खुश होकर) बस, बन गई बात। चलो बस।

कामिनी—है न सलाह की बात? चुपचुपाते कार्रवाई हो जायगी। और जो वह ऐसा न निकला, जैसा तुमने कहा था, तो उम्र भर सूरत न देखूँगी। देख,हमें बदनाम न करना।

गौरा—मुझे कुछ तुमसे दुश्मनी है, वाह। मगर, हाँ, हर चीज देखने के काबिल है।

कामिनी—देखा चाहिये, लाँबा कद है कि नहीं। मुझे ठिंगना आदमी पसन्द नहीं है।

गौरा—ठिंगना नहीं है। मैं कहती हूँ, पचास-साठ आदमी खड़े हो जायँ, सबसे ऊँचा हो। और फूल-सा सुर्ख-सफेद। लाल आगरा-से होंठ; जैसे बीरबहूटी।

कामिनी—और मेरे ऊपर इतना रीझा हुआ! क्या जाने तुम क्या कहती हो। क्या उसको और नहीं मिल सकती हैं?

गौरा—मिल तो सकती हैं हजार। मगर तुम्हारी-सी कहाँ मिले? और इतना दिल भी तो किसी पर नहीं आया है। अगर तुमको हजारवाँ हिस्सा भी उसकी मोहब्बत का, जो तुमसे है, मालूम हो जाय, तो कभी न छोड़े! सब कल ही मालूम हो जायगा। कल कुछ दूर थोड़ा ही है। अच्छा तो मैं कल रोटी-वोटी खाके आ जाऊँगी।

गौरा इन सब से बिदा होकर डोली पर सवार हुई, और सीधी सरन लाल की बगिया गई; और चोर दरवाजे की राह से दाखिल हुई। चोर दरवाजा उस दरवाजे का नाम था जहाँ से इस बदमाश के पास कुटनियाँ, बदकार औरतें, बदचलन लोग और इसी क़िस्म के आदमी जाया करते थे।

गौरा ने उसके आदमी से पूछा—कहो, लाला कहाँ हैं?

उसने मुस्कराकर कहा—एक चिड़िया आई है, अभी भड़कती है। लासा-कम्पा लगाके फाँसा चाहते हैं।

गौरा ने कहा—अरे, उसको दिन-रात सिवा औरतों के बुलाने के और भी कोई काम है?

उसने कहा—उनके काम ये-ये हैं: एक औरतों को मिलाना; दूसरे शराब पीना; तीसरे दुआ माँगना कि बड़े लाला, उनके बाप, मर जायँ।

गौरा ने कहा—वह कब मरनेवाला है! वह मर जाते तो हम सब चैन ही न करें! बुड्ढा अमृत पीकर आया है। इतने में सरन ने जो गौरा की आवाज सुनी, तो पुकारा—यहाँ आओ, यहाँ आओ! कहो, क्या खबर लाईं? बेटा कि बेटी! गौरा बोली—वह कन्या रासी कोई और होते होंगे! लो मुबारक, कामिनी रानी कल तुम्हारी बगल में होंगी।... यह खुशखबरी सुनकर, सरन लाल उछल पड़े। कहा—झूठी हो! हमा` खुश करने को कहती हो। देखो, निरास न करना!

गौरा—तुम तो सिड़ी हो! अरे कल बगल में बैठी होगी! न बैठी

हो, तो नाक–कान बदले हैं! सरन ने उसका बहुत शुक्रिया अदा किया; और गौरा ने कहा—ले, इसी बात पर आनके लिपट तो जा! सरन ने पाँव से इशारा किया। गौरा ने इधर-उधर देखा तो सरन की आराम-चौकी के पास एक जवान औरत सिकुड़ी-सुकड़ाई बैठी पाई। धक से रह गई! काटो तो लहू नहीं बदन में! कमरे के सब दरवाज़े बन्द थे। अँधेरे में कुछ दिखाई न दिया, और यह रोशनी में से आती भी थी। सरन ने जो गौरा की परेशानी देखी, तो समझ गया कि इस औरत को देखकर घबराई है। दूसरे कमरे में उसे ले गया और कहा—तुम घबराओ नहीं: मैं उससे कह दूँगा कि यह दिल्ली की औरत है। और इसको यहाँ छोड़कर उससे जाकर कहा—यह औरत दिल्ली से आई है। तुम नाहक़ उससे डरती हो। वह तुनुककर बोली—ए दूर हो! झूठे, ज़माने भर के लपाड़िये! हमसे उड़ता है! यह वह हिन्दुनी है, गौरा जिसका नाम है। कढ़ी हुई धोतियाँ, सारियाँ, कुर्तियाँ बेचती है। हम उसकी क़ब्र तक से वाक़िफ़ हैं। जभी तो मैंने दुलाई से मुँह लपेट लिया! गौरा यह सब सुन रही थी। सरनलाल को यह नहीं मालूम था कि गौरा सुन रही है। उससे जाके कहा—लो मैं कह आया कि यह दिल्ली की रहनेवाली है। वह तुमको क्या जाने भला! गौरा जली-भुनी तो बैठी ही हुई थी। और भी आग भभूका हो गई! कहा—मुझे दीवानी न बना! मैं सब सुन रही थी। उस मुर्दार ने मेरा नाम तक बता दिया; और तू आन के चकमें देता है। माना कि मैं रुपयेवाली नहीं हूँ, किसी बड़े घर की नहीं हूँ, काढ़ने का पेशा करती हूँ; मगर घर-गिरिस्थों में तो जाती हूँ। कोई बुआ कहती है, कोई अम्मा कहती है; कोई बहन, कोई भाभी। जो यह बात खुल जाय, तो मैं कहीं मुँह दिखाने के क़ाबिल न रहूँ।

सरन ने तसल्ली दी कि हम उसको समझा देंगे; मगर अब तुम सचमुच बता दो कि क्या बातचीत हुई।

गौरा—बातचीत यह हुई कि तुम सोलहो आने के मालिक हो। पाँचों घी में। जान-जोखम थी। मैं डरती काँपती थी कि देखिये क्या होता है। बहुत सँभलके और समझ-बूझ के मैंने छेड़ा—कि इस नहाने-धोने और पूजा-पाठ से क्या होता है; दिल साफ़ होना चाहिए। वह बोली, हाँ, यह तो ठीक है मगर रोज़ के नहाने से आदमी तन्दुरस्त रहता है। बीमारियाँ पास फटकने नहीं पातीं; पूजा में फूलों और गूगल और काफ़ूर की ख़ुशबू से आदमी चाक़ रहता है। चन्दन कितनी अच्छी चीज़ है। मैंने कहा—तुम कहीं की बादशाह होतीं तो ख़ूब होता। सब यही कहते हैं कि बादशाह वज़ीर के क़ाबिल दो आदमी हैं—औरतों में कामिनी और मर्दों में सरन लाला।

सरन—(गौरा को ज़ोर से लिपटाकर) क्या सूझ-बूझ है, प्यारी! बस, तुम पर से वार जाय; क्या अच्छी सूझी है: ठहरो, मैं इस औरत को बिदा कर

दूँ तो फिर निडर होकर बातें करें। सरन लाला ने चुपके से अपने आदमी को कहा कि इस औरत को दो रुपये देकर विदा करो; कहो, कि लाला की तबीअत अच्छी नहीं है, कल बातचीत होगी। उसने दो रुपये देकर बिदा किया। अब गौरा ने बेतकल्लुफ़ी से कहना शुरू किया:

गौरा—जैसे ही तुम्हारा नाम सुना, चेहरे की रंगत बदल गई। न बोली, न चाली। फिर मैंने कहा—वह तो इस क़ाबिल है कि तुम्हारा-उसका जोड़ा होता, मगर न हुआ। इस पर बहुत बिगड़ी, बुरा-भला कहा और अपनी सास से. . . .

सरन—(माथा ठोककर) अरे, कह दिया !

गौरा—कहने जाती थी। मैं पाँवों पर गिर पड़ी, चिरौरी की। किसी तरह नहीं मानती थी; तो मैंने एक औरत से, जो उसकी नौकर है, कहा कि समझाओ। उससे दो अशरफियाँ ठहरीं। उसने अलग ले जाके समझाया, जब जाके जान बची। होते-होते मैंने फिर टटोला। मगर वही भड़क थी। फिर मैंने बातों-वातों में तुम्हारी तारीफ करनी शुरू की; कि ऐसा है और वैसा है, और मैंने कहा, कि खाली उसका ज़िक्र करने में कौन-सा हर्ज है। नाम लेने से तो धँस नहीं पड़ेगा। दुनिया की बातों में से एक बात यह भी है। जब मैंने कहना शुरू किया कि उसकी जान जाती है, उस की जवानी पर रहम करो; वह जान तुम्हारे फिराक़ में दे देगा और उसकी जवान जोरू अभी बच्चा है, वह राँड़ हो जायगी और दो ख़ून तुम पर होंगे तो कहा—फिर बताओ, मैं क्या करूँ। मैंने कहा—बस, दूर से जरा झलकी दिखा दो, वह आँख भर के तुमको देख ले। उस पर बड़ी ख़राबी के बाद राज़ी हो गई।

सरन मारे ख़ुशी के उछल पड़ा। सच कहो ? ओ हो हो हो ! (और भी ख़ुश होकर) लखोखा रुपये हमें मिल गये ! तुम सलामत रहो ! जान डाल दी !

गौरा—जब मैंने तुम्हारी बहुत तारीफ़ की तो कहाँ तो नाम सुनने से रंग बदल जाता था, कहाँ एक दफ़ा हीं सिसकी भर के कहा हम भी देखते !

सरन (बहुत ही उछलके)—अरे, यह मैं ख्वाब देखता हूँ या सचमुच है ! अगर मैं भलेमानस का हूँ तो तुम्हारा उम्र भर ग़ुलाम रहूँगा।

गौरा—कल मैं सबेरे जाऊँगी और सब पक्की-पोढ़ी करके आऊँगी। जगह देख आऊँगी और तुमको ले चलूँगी।

सरन—तुम्हारे मुँह में घी-शक्कर !

गौरा—अभी इतनी भड़क बाक़ी है कि पहले कहने लगी कि बस, दूर-दूर से बातें करूँगी। फिर कहा, अच्छा, एक दफे चूम भी ले तो कोई हर्ज नहीं है। जब वह हम पर जान ही देता है तो मैं इतना पत्थर का दिल क्यों करूँ ?

सरन—(हद से ज्यादा ख़ुश होकर) सच कहो ! मार लिया है। कहीं कल की शाम जल्द आए ! रात काटे न कटेगी।

गौरा—ले ज़रा-सी पिलवाओ तो!

सरन—अभी लो। कोई है? उस कमरे में गिलास और बोतल और सब सामान रक्खो। अगर रात भर जीते रहे और ख़ुशी के मारे जान न निकल गई तो कल रात को कामिनी के साथ ढाल रहे होंगे। जान तक निकालके क़दमों पर रख दूँगा। और यह तो मुझको पूरा-पूरा यक़ीन है कि इधर मुझे देखा और उधर रीझ गई।

गौरा—मैं तो यह कह आई। कहने लगी, उसकी जोरू तो खुद लाख-दो-लाख में एक है। तो वह क्यों मुझ पर इतना रीझा हुआ है?

सरन—फिर तुमने क्या जवाव दिया?

गौरा—मैंने कहा, यह सच है। उसकी जोरू लाख-दो-लाख में एक जरूर है। मगर जो बात तुममें है, वह उसमें कहाँ। ज़मीन-आसमान का फ़र्क़ है। और तुम पर उसका दिल आया हुआ है। जान देता है, रोता है। और अगर तुम उसको न मिलीं तो इसमें शक ही नहीं कि उसकी जान जाएगी।

सरन—तुमने वह काम किया जो किसी से भी न होता। बेदाम का ग़ुलाम कर लिया। कल की शाम होगी भी, या होवे ही गी नहीं? जान निकालके कदमों पर न रख दूँ तो जभी कहना।

सरन लाला और गौरा विलायती शराब पी रहे थे, गजक खा रहे थे; और दोनों बहुत ही खुश थे। सरन तो इस सबब से कि सोने की चिड़िया हाथ आएगी, और गौरा की ख़ुशी का सबब यह था कि ऐसी कारगुज़ारी की कि कामिनी-सी पारसा को जिसके क़दम धो-धो के पीने की अच्छे-अच्छे शहजादे तमन्ना रखते थे, ढर्रे पर ले आई। और यह कुछ कम ख़ुशी की बात न थी कि सरन उसकी इस कारगुज़ारी से ख़ुश था। हज़ारों की दे निकलेगा। ये दोनों खा-पी ही रहे थे कि मिर्ज़ा साहब और समर आये।

समर—अख़्खाह, बी गौरा साहब बैठी हैं। कहिये, क्या नक्शे हैं? आज तो वल्लाह का जोबन है। और सरन लाला की तो धूम है। काले सर की एक न छोड़ी!

मिर्ज़ा—कन्हैया हैं अपने वक़्त के। वाह रे सरन लाला। वल्लाह, तेरी भी धूम है! जब देखो नई!

जनें-नौ कुन, ए दोस्त, दर हर बहार
कि तकवीमे-पारीना नायद बकार!

गौरा—अब फ़ारसी मत बोलो!

मिर्ज़ा—क़सम खुदा की, तुम पर अब तक वह जोबन है कि सत्रह अट्ठारह बरस की मालूम होती हो। क्या काठी है।

गौरा—हाँ, और तुम ऐसे चार पैदा हो चुके।

इस फ़िक़रे पर बड़ा क़हक़हा पड़ा। सब लोट-लोट गये!

मिर्ज़ा ने कहा—ले, भई सरन लाल अब इनको सँभालो; अब हम भी फ़बतियाँ कहने लगेंगे। तुम्हारी ये माशूक़ हैं; इससे हमने समझा दिया। हम भी कहेंगे!

अब सरन ने कहा—कहीं इस भरोसे भी न रहिएगा। आप एक कहेंगे तो ये सौ कहेंगी।

गौरा बोली—हज़ार में। हम बन्द होनेवालों में नहीं हैं।

समर ने कहा—अजी तुम्हारे दुश्मन बन्द हों—तुम हज़ारों को बन्द कर दो। तुम्हारे सामने कोई जबान खोल सकता है, भला; क्या मजाल। ये क्या शय हैं और मैं क्या चीज़ हूँ, और सरन किस खेत की मूली हैं। तुम हाज़िर जवाब लोग हो, साहब।

गौरा ने कहा—आज बरसों के बाद यह एक क़द्रदान मिले। ए तुम सलामत रहो हमारे क़द्रकरने वाले। मगर यह चुपचाप बैठना क्या मानी! जाम चले।

सरन ने इन दोनों को भी जाम दिये। अब जाम पर जाम चलने लगा। आखिरकार वह दोनों पी-पिलाकर रुख़सत हुए। और सुबह को गौरा मुँह-हाथ धोके, किराये की गाड़ी पर सवार होकर कोई दस बजे के क़रीब कामिनी के पास आई।

कामिनी ने कहा—मुझे रात को नींद नहीं आई, और सपने में देखा कि सरन लाला सामने खड़ा हाथ जोड़के कह रहा है कि अगर मार डालना है तो वैसा कह दो; और अगर यह मंजूर है कि मैं कुछ दिन जिन्दा रहूँ तो ज़रा गले से लगा लो। बस, उसने गले से लिपटाया ही था कि चौकीदार कम्बख़्त ने शोर मचाया: जागते खँखारते रहो! जो मेरा बस चलता तो खड़े-खड़े चुनवा देती, मगर बेबस थी। बड़ा रंज हुआ, कि हाय, दो घड़ी और क्यों न लिपटा रहा, सुपना ही सही।

गौरा बोली—क्यों घबराती हो। अब थोड़ी देर और है। ग्यारह बजा ही चाहते हैं। आधा दिन और है। फिर तो तुम और सरन एक जगह होवें होंगे। वह भी रात भर तड़पता रहा। घड़ी-घड़ी चौकीदार से पूछे, क्या बजा होगा? रात आँखों में कटी। कभी इधर करवट बदली, कभी उधर। मेरी नींद भी हराम कर दी। मैं दिलासा देती जाती थी कि घबराओ नहीं। इतनी भी बेचैनी नहीं चाहिए। ज़रा सो रहो। मगर वहाँ नींद कहाँ? ज्यों-ज्यों रात भीगती थी शौक़ बढ़ता जाता था। सबेरे गजरदम तड़के ज़री मेरी आँख लगी थी कि मुझे जगाया। आँख जो खुलती है तो देखती हूँ कि पाँयती बैठा हुआ पाँव दबा रहा है। मैंने कहा—क्यों काँटों में घसीटता है! हाथ जोड़े

कि अब जल्दी जाओ। मैंने सोचा कि जिसके हाँ जाऊँगी वह क्या कहेगा! एक तुमने न कुछ कहा, मगर और सब घर में क्या कहते कि अभी कल हो गई है, तड़का नहीं होने पाया कि आज फिर मौजूद हुई। मैंने टाल दिया, अच्छा किया।

कामिनी हँसी और अपनी खुशी ज़ाहिर की कि वादे की सच्ची निकलीं; बल्कि अगर और सवेरे आई होतीं तो और तसल्ली होती। हमने जो वादा किया है वह पूरा उतरेगा। उसमें फ़र्क़ न पड़ेगा। देखें तो, है कैसा।

उसके बाद कामिनी ने तुलसा और ज़ैनब की माँ को बुलाया और गौरा को उनके साथ किया और कहा उन दोनों को जगह मालूम है, जिस तरह ये कहें उस तरह तुम सरन लाला को शाम को लाना। चिराग़ जले के बाद। मगर उस बाग़ के हाते में जरा हौले-हौले बोलना। यह बताओ कि पीके सरन लाला बहक तो नहीं जाते कि ग़ुल-ग़पाड़ा मचे और मुफ़्त का फ़ज़ीता बैठे-बिठाए हो। हमारी और उनकी दोनों की आबरू जाय!

गौरा ने समझाया कि—हमारा ज़िम्मा है, अगर वह चूँ भी करे तो जो चोर की सज़ा वह हमारी सज़ा। ख़ातिर जमा रखो! जितना कहेंगे उतना ही होगा। बाल भर फ़र्क़ न पड़ेगा: हाय, देख ही लोगी।

यह कहकर गौरा चली और ज़ैनब की माँ और तुलसा उसके साथ हुईं।

यह वही कामिनी है जो अपने पति की जुदाई के सदमों से रातों को चौंक-चौंक पड़ती थी। यह वही कामिनी है जिसने मन्दिर में तुलसा से कहा था बुआ, यह ऐसा पापी है कि मन्दिर तक में खोट की बात नहीं भूलता। जरा ही सी देर में—

किधर की तबीअत किधर हो गई!

अब सुनिए कि शाम को ज़ैनब की माँ और तुलसा किराये की गाड़ी पर सरन लाला और गौरा को बिठाकर एक बाग़ में ले गईं। पक्की सड़क से उतरकर ये चारों अँधेरे में बाग़ की तरफ़ चले। चलते-चलते सरन ने कहा—भई, वल्लाह, अच्छी जगह तजवीज़ी! बिलकुल बीहड़। यहाँ तो कोई किसी को मार भी डाले तो कानो-कान ख़बर न हो। ऐसी बातों के लिये यही जगह मुनासिब है। अब यहाँ चाहे नाचो, चाहे गाओ बजाओ; जो चाहे सो करो।

अब बाग़ की एक गिरी हुए दीवार की राह से खाई फाँदके दाख़िल हुए तो सन्नाटा पड़ा हुआ। और अन्दर आये। जैसे-तैसे बाग़ की छोटी-सी कोठी में पहुँचे। वहाँ भी अँधेरा पड़ा हुआ। इस औरत ने चुपके से तुलसा से कहा कि चलो, बुलाती हैं।

ज़ैनब और तुलसा दोनों सरन और गौरा को छोड़कर कामिनी के पास गईं। तुलसा ने आनकर कहा—चलो, उस कमरे में बुलाती हैं।

इतना सुनना था कि सरन का गज़ भर का कलेजा हो गया। मारे ख़ुशी के आँसू डबडबा आए। उसने दो दफ़ा, उम्र भर में, कामिनी को देखा था, और दोनों दफ़ा इश्क़ का तीर कलेजे के पार हो गया था।

तुलसा ने कामिनी के पास से आके सरन के सामने गौरा से कहा—कि उन्होंने ज़ैनब की माँ को मारे लिहाज़ के लौटा दिया और उससे कहा, कि यह मर्द झाड़ा फूँक करने आया है और कुछ पूजा भी करेगा, तुम दूसरे मज़हब की हो, ज़री दूसरे कमरे में चली जाओ। उसको यों टाला। मुझसे कुछ पर्दा नहीं है। तुम्हारे सामने खुलेंगी नहीं। जो तुम ज़रा देर को बाग़ में टहलो, तो वह शर्म खोलके मिलें।

सरन ने फ़ौरन कहा—गौरा, चली जाओ। वह बोली—मैं ख़ुद जाती हूँ। तुमको नई दुल्हन मुबारक। चैन करो। हमको न भूलना।

यह कह कर गौरा बाहर चली गई और मारे ख़ुशी के फूली न समाई। सरन को साथ लेकर तुलसा ने एक मोमबत्ती जलाई, और इतनी देर में यह पहला ही मर्तबा था कि उस बाग़ और कोठी में रोशनी हुई।

तुलसा उसको एक और कमरे में जहाँ घटाटोप अँधेरा छाया हुआ था और जो इस रोशनी के सबब से कम हो गया था, ले गई। पहली बात जो रोशनी में लाला सरन ने देखी यह थी कि एक कुरसी पर दीवार की तरफ मुँह किये कामिनी सैकड़ों नाज़-अन्दाज़ के साथ बैठी है। शरबती की गुलाबी तगी हुई चादर, जिस पर कामदानी का भारी काम किया हुआ था, सर से पाँव तक ओढ़े; इत्र से डूबी हुई, चौथी की दुल्हन बनी हुई बैठी थी। जैसे ही सरन ने अन्दर क़दम रखा उसने चादर से और भी अपने चेहरे को छिपा लिया। और इस छिपाने और हाथ के उठाने में जो चूड़ियों की आवाज़ आई तो उस आवाज़ ने सरन के कलेजे पर तीर का काम किया और दिल हाथ से जाता रहा, और बेक़रारी बढ़ गई। मगर तुलसा ने इशारा किया और उसने भी सोचा कि माशूक़ों को ज़्यादा छेड़ना ठीक नहीं। तुलसा के साथ-साथ एक और कमरे में गया। वहाँ भी अँधेरा छाया हुआ। उस बत्ती की रोशनी से मालूम हुआ कि एक पलंग बिछा हुआ है। बोतलें चुनी हुईं, गजक का सामान भी है; पानी की सुराहियाँ भी रखी हैं। शराब और पानी पीने के गिलास भी हैं। एक दफ़ा उसने सोचा कि हे भगवान यह सपना है, या सचमुच कामिनी की सेज बिछी हुई है। तुलसा ने उसको पलंग पर बिठाकर कहा—सरकार बैठें, मैं जाके उनके छड़े उतरवा डालूँ। क्योंकि अभी-अभी चूड़ियाँ बोली थीं; जो छड़े भी बोलेंगे तो बड़ा फ़जीता होगा। वह भी अभी आती हैं। और मैं जाके रोशनी लिए आती हूँ। तुलसा के जाने के आध घड़ी के बाद सरन लाला को बग्घी के घड़घड़ाने की आवाज़ आई। चौकन्ना हुए कि यह क्या आफ़त आई ! कामिनी ने तो इतना

इन्तजाम किया कि शहर से दूर आयीं, गाड़ी सड़क पर ठहरी। यहाँ परिन्दा पर नहीं मार सकता। जैनब की माँ और गौरा तक से पर्दा किया। कहीं ऐसा न हो कि यह सब मेहनत बेकार जाय, और गैर आदमी आनके मजा किरकिरा कर दे। खैर से गाड़ी रुक गई और दो ही तीन मिनट में घड़घड़ाती हुई चली और जब इतनी दूर निकल गई कि घड़घड़ाहट की आवाज़ कान तक न पहुँची तब उनकी जान में जान आई। चलो, बड़ी बला से छुटकारा मिला। फिर एक दफ़ा सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि कामिनी चली गई हो। हाय, अगर ऐसा हुआ तो इसी बाग़ में मर जाऊँगा। यहीं दम निकलेगा। माशूक़ तो है ही। शायद दिल में आ गई हो कि यह बुरा काम है। दिल पर आ गई, सवार हो गई हो।

इतने में आवाज़ आई चोर! चोर! और कई आदमी दौड़ पड़े, और सरन लाला काँप उठे कि ग़ज़ब हो गया। ए, चोर कम्बख़्त कहाँ से मरा-पिटा आ गया! सोचा, कि ऐसा न हो कोई इस कोठरी को खोले और हम धर लिये जायँ। इश्क़ और कामिनी दोनों को भूल गये और काँपने लगे। किसी ने आनके दरवाज़े पर एक दो थप्पड़ मारा। बस अब तो उनकी जान ही पर बन गई। आधा लहू सूख गया कि अब धर लिये गये। आख़िरकार मालूम हुआ कि कोई अफ़ीमी ऊँघ गया था, किसी माली ने उससे दिल्लगी की, वह चौंक उठा और चोर! चोर! करके दौड़ा, और माली भी उसे बनाने के लिए पीछे दौड़े। अब फिर जान में जान आई। तरह-तरह के खयालात उसके दिल में उठ रहे थे, कि अचानक तभी एक क़िस्म की आवाज़ ने उसको फिर जिन्दा कर दिया। वह आवाज क्या थी, वह छड़ों की थी।

सरन ताड़ गये कि तुलसा ने अब कामिनी रानी के छड़े पावँ से निकाले। अब हमारा माशूक़ नाज से आता होगा, अजब अन्दाज़ से आता होगा। गो अंधेरा घटाटोप छाया हुआ था, मगर ये आँखें जमा-जमा के देखते थे। ज़रा दूर की भी आवाज़ धमाके की आई और उनके कान खड़े हुए और शौक़ की आग भड़की। एक-एक मिनट एक बरस के बराबर मालूम होता था। इतने में दरवाज़े के खुलने की आहिस्ता से आवाज आई और सरन लाला का कलेजा बल्लियों उछलने लगा।

कामिनी आन कर पलँग पर बैठी।

इधर कामिनी ने पलँग पर क़दम रखा, उधर इत्र की खुशबू से सरन लाला का दिमाग़ अत्तार का तबेला बन गया। और जोश की आग भड़की, और उन्होंने आव देखा न ताव, ऐन मस्ती में—और वह मस्ती जो इन्सान को अन्धा कर देती है—हाथ बढ़ाया। अँधेरे के सबब से हाथ पलँग की पट्टी पर पड़ा। सँभल कर ये आगे बढ़े, और चाहा कि कामिनी को अपने क़रीब घसीटें। कामिनी

जो सुकड़ी-सुकड़ाई, गर्दन झुकाए, बड़ी शर्म और हया के साथ—जिसमें बनावट ज़्यादा असलियत कम थी—बैठी थी, अब और भी सिकुड़ गई। उन्होंने बाज़ू पकड़कर यों कहना शुरू किया :

प्यारी कामिनी, मेरे जैसे हज़ारों हज़ार, बल्कि मुझसे कहीं बेहतर, तुम पर बल्कि तुम्हारी एड़ी-चोटी पर सदक़े। मुद्दत से तुम्हारी मोहब्बत के जाल में गिरफ़्तार हूँ, तुम पर मरता हूँ। आज ज़रा जान में जान आई। गो इस वक़्त यहाँ इस क़दर अँधेरा था कि हाथ नहीं सूझता था, मगर जबसे तुमने इस कमरे को रौनक बख्शी, कोठी भर रौशन हो गई। मालूम होता है कि कोहेनूर हीरा किसी ने यहाँ लाके रख दिया, या चाँद का टुकड़ा इस कमरे में आ गया। जान तक हाज़िर है। अगर बस चलता तो कलेजा काटकर तुमको कलेजे में धर लेता। जब इतनी मेहरबानी मेरे हाल पर की है तो एक ज़री-सी इनायत करो। मुझ अपने गुलाम को अपना मुखड़ा चूमने दो। बस उसके बाद अगर और कोई फरमाइश करूँ तो अब्रू के इशारे से कत्ल कर डालो। इस वक्त मेरे दिल का अजब हाल है। एक तो तुम्हें इश्क़ की मस्ती, दूसरे यह मस्ती कि तुम-सी उठती जवान परी बग़ल में है। हम और तुम जब एक पलँग पर रान भिड़ाए बैठे हों तो दिल क्योंकर क़ाबू में रहे। तीसरे तुम्हारी यह चोटी, यह काली नागन, यह दिल डसनेवाली साँपन। इसके इत्र की खुशबू और भी मस्त किये देती है, मारे डालती है। यह कहकर सरन लाला ने बहुत ही मस्त होकर गले लगा ही लिया।

क्या अंधेर हो रहा है। रनबीर सिंह रन के मैदान में हैं और वहाँ हर दम अपनी चाहती बीवी को दिल से याद किया करते हैं, और यहाँ उनकी इज़्जत आबरू का शीशा चकनाचूर हो रहा है। भगवान जाने बात क्या है, मगर बात बेढब हो रही थी। शहर से कोसों दूर; अपना न यगाना।

सरन, एक बेगाना मर्द; तुलसा भी पास नहीं; गौरा और जैनब पहले ही अलग कर दी गईं। कमरे में एक जवान मर्द और एक जवान औरत दोनों एक पलँग पर। सितम का सामना है। खैर, पहले तो सरन लाला ज़रा झिझके, फिर हाथ बढ़ाया। मगर आग और फूस का साथ क्या! जब रहा न गया तो गले लगा ही लिया।

कामिनी जो अब तक दुबकी बैठी हुई थी, अब उससे भी न रहा गया और अपने आप सरन के गले में हाथ डाल दिया। अंधा क्या माँगे, दो आँखें। इस चौथी की दुल्हन का खुद मस्त होकर उसके गले से लिपट जाना, बस, ग़ज़ब ही तो हो गया। ज्यों-ज्यों सरन लाला मस्त हो-होके लिपटाते थे, कामिनी और ज़्यादा ज़ोर करती थी; यहाँ तक कि कामिनी का ज़ोर सवाया हो उठा; और फिर एक दफ़ा ही कामिनी ने जो छाती से छाती भिड़ाके अब ज़ोर किया

तो सरन पलंग पर चित गिरे ! वैसे ही कामिनी ने फिर सरन को उठाया और इस जोर से दबाया कि सरन की ज़बान से हाय मरा ! निकल गया। और कामिनी ने उनको चित से पट करके हफ़्ते गाँठ लिये और दो घस्से ऐसे दिये कि सरन ने अबकी जोर से शोर मचाया। अरी गौरा, दौड़, मैं मरता हूँ, गौरा दौड़ ! मगर कोई जवाब ही नहीं देता।

सरन ने फिर शोर मचाया, मगर बेकार। अब कामिनी ने पंजाबी सवारी भी गाँठ दी। और सरन ने कहा—अब जान गई। और कामिनी ने डंडे लगाने शुरू किये। एक-एक डंडे पर सरन कहता था—हाय ! अरे, किस बला में फँसा ! गौरा ! अरे गौरा ! अरे, यह कहाँ फँसा दिया !

किसकी गौरा और कहाँ की गौरा, कोई हो तो बोले ! इतने में कामिनी ने अब इनको लपोटे लगाने शुरू किये। और मारे थप्पड़ों के मुँह लाल कर दिया। और फिर डंडों पर डंडे लगाए। इतने में एक आदमी ने दरवाज़ा खोल कर रोशनी दिखाई। और सरन लाला कफ़न फाड़के बोले—गौरा !

यह कहकर उस शख़्स पर जो नज़र डाली, जिसको यह कामिनी समझे हुए थे, तो देखते हैं कि एक लड़निया सैयदी पहलवान तगड़ा जवान ऊपर चढ़ा हुआ है । दम तो योंही फ़ना हो गया था, अब रहा-सहा और भी फ़ना हो गया। रोशनी तो गुल हो गई और सरन लाला को खटपट खड़बड़ की आवाज़ आने लगी। उन्होंने जी कड़ा करके कहा, भई तुम कौन लोग हो और हमारी जान के क्यों दुश्मन हुए हो ? इस पर उस सैयदी ने और दबाया, और खड़बड़ कम हो गया। इसके बाद सैयदी पलँग से उतर गया।

किसी ने पलँग को जोर से पटक दिया, तो सरन लाला गिरे और पलँग को कोई बाहर ले गया। अब उन्होंने बहुत शोर-गुल मचाना शुरू किया; और उनको यह भी मालूम हुआ कि कुल कोठी बन्द कर दी गई। यह अमीर आदमी, पोतड़ों के रईस, मकान, कोठी, बाग, इमलाक, जागीर, गाँव, परामेसरी नोट, लखूखा नक़द, जवाहरात, ज़ेवर, आदमी, नौकर-चाकर, मर्द-औरत, घोड़े, टट्टू, बग्घियाँ, फ़र्श-फ़रोश, सारा अमीराना ठाठ मौजूद; हर वक़्त दो-चार मुसाहिब पास। एकाएक ऐसी मुसीबत में पड़ गये कि आदमी न आदमज़ाद, नौकर न चाकर; एक कोठरी में पड़े हुए, चौतरफ़ा से बन्द। सन्नाटा; उल्लू भी नहीं बोलते। पुकारते हैं तो कोई जवाब देनेवाला भी नहीं। कहीं से आवाज़ भी नहीं आती। न पलँग, न कुरसी, न बिछौना। सूझता ही नहीं कि कहाँ हैं, कहाँ नहीं हैं। टटोल-टटोलके इधर-उधर जाने लगे। बहुत ही बेक़रार; तबीअत हद से ज्यादा परेशान। मौत का सामना। बहुत ही शोर-गुल मचाया। आखिरकार अपनी मुसीबत पर उसको रोना आने लगा। हे भगवान, मैं कहाँ हूँ और किस जुर्म में इस सजा को पहुँचा ! हाय !

इस परेशानी में कभी बैठ जाता था, कभी इधर-उधर टटोलके रास्ता ढूंढ़ता था। अँधेरे में रास्ता कहाँ। इधर टक्कर खाई, उधर टक्कर खाई। यह गिरा, वह गिरा। कभी सर में चोट लगी, कभी पाँव में। अब इस क़दर आजिज़ हो गया कि ज़ार-ज़ार रोने लगा। इतने में एक बजा; और उसने एक दरवाज़ा पाया और जान पर खेलकर उसको खूब ज़ोर से धमधमाया। इस आवाज़ को सुनकर एक आदमी ने शोर मचाया: अरे, कौन है? दरवाज़ा तोड़े डारत है! इनकी जान में जान आई कि परमात्मा का शुक्र है, इन्सान की आवाज़ तो सुनाई दी। कहा—भाई, हम एक मुसीबत के मारे हैं। हम पर रहम करो और दरवाज़ा खोल दो!

इतना सुनना था कि उसने और भी शोर मचाया—खान साहब! खान साहब! अरे देबी भाई हो! इन्होंने आवाज़ सुनी। उसके जवाब में किसी ने कुछ कहा, जो इनकी समझ में अच्छी तरह न आया। मगर मुर्दे से ज़िन्दा हो गये—कि कहीं दरवाज़े तो खुलें। बला से, चोर ही बनाए जायँ, मगर इस काल-कोठरी से कहीं नजात मिले। अब उन्होंने दो आदमियों को बातें करते सुना। एक ने कहा: इस कोठी में कोई भूत है! दूसरा बोला, कोई भूत नहीं, तुम्हारा सर है! इस पर ये बोल उठे—भाई हमको बचा लो! तब तो दूसरा बोला—अरे यार, सच कहते हो! अब तू कौन है? जवाब दिया—भाई, मैं मुसीबत का मारा हूँ। पूछा—बोलता कहाँ से है?

सरन ने मारे घबराहट के कहा—मुँह से। वह बोला—मुँह से नहीं तो और कहाँ से बोलेगा! तू है किस जगह? कहा—कोठी में बन्द हूँ।

इन दोनों की राय हुई कि कोई आसेब जिन है। ख़ान साहब को, जो कोठी के दारोग़ा थे, बुलवाया। वह परेशान होकर आये और जब 'आसेब' का नाम सुना, तो बहुत झल्लाए कि हम मीठी नींद सो रहे थे ख़ामख़ा दो बजे जगा दिया! आसेब की ऐसी-तैसी! क़समें खाकर कहा, अच्छी तरह आसेब की आवाज़ आती है। ओ बे आसेब, बोल!

सरन ने कहा—जनाब ख़ाँ साहब, मैं आसेब नहीं हूँ। आदमी हूँ! अब तो ख़ाँ साहब भी चौकन्ना हुए। ऐं-ए! मैं तो तुम लोगों को झूठा समझता था। मगर यह तो ठीक निकला। फिर अब दरवाज़ा खोलो, ना।

एक ने कहा—सरकार, न खोलो। तड़का होने दो। दूसरे ने कहा—साहब मालियों को बुलवा लो।

माली और कुल बाग़वाले बुलवा लिए गये। और चिराग आया, और मशाल जलाई गई और दरवाज़े खोले गये। खोलते-खोलते जब उनके कमरे का दरवाज़ा पास आया तो किसी ने ईंट हाथ में ली। किसी ने चैला, किसी ने लठ ताना। एक माली ने मेंहदी काटने की क़ैंची ले ली; और कहा—लोहे से

भूत भागता है! अब डरते-डरते सरन लाला, बल्कि यों कहो सरन का भूत खोला गया। रोशनी तेज़ थी। देखा तो एक नौजवान, ख़ूबसूरत आदमी; उम्दा लिबास पहने हुए, इत्र में डूबा हुआ। आप कौन ? कहा, हज़ूर, मैं क्या अर्ज़ करूँ कि कौन हूँ। मुसीबत का मारा हूँ। आप लोगों ने मेरी जान बचाई; वर्ना मैं तो इस क़ैदख़ाने में मर गया होता।

ख़ाँ साहब ने कहा—अगर आप इन्सान के जिस्म में किसी मुर्दे की रूह हैं तो इसमें शक नहीं कि कोई पाक रूह हैं, ख़बीस रूह नहीं हैं। उसने कहा, जनाब ख़ाँ साहब, ख़ुदा गवाह है। मुझे आपने ज़िन्दा कर लिया। इतने में एक माली ने उनको देखकर कहा—क्या सरन लाला हैं? अरे लाला, तुम कहाँ?

सरन—कौन, पूरन माली? ख़ैर, कोई पहचाननेवाला तो है।

पूरन—अरे हज़ूर, हम तो बाप-दादा के नमक खाए हुए हैं।

ख़ान—पूरन, तुम पहचानते हो इनको?

पूरन—हज़ूर, बीस बरस तक नौकरी की है।

ख़ान—आप इस ख़ाली कोठी में आये कहाँ से? और क्यों आये? और बन्द क्योंकर हो गये? यह माजरा क्या है? हमारी समझ में कुछ नहीं आता। दो बजे रात को आप इस कोठी में कहाँ से बन्द हो गये?

सरनलाला ने ख़ान साहब को अलैहदा ले जाकर कुछ-कुछ हाल बयान किया और कहा, मेरे साथ दग़ा की गई। अब आप मेहरबानी करके एक आदमी मेरे साथ कीजिए। मैं इन सब के लिये सौ रुपये इनाम दूँगा।

ख़ान साहब आदमी भलेमानस थे। कहा, आप रईस के लड़के होकर अपनी इज़्ज़त इस तरह खोते हैं। क़सम ख़ुदा की, मैं अगर इस वक़्त चाहूँ तो खड़े-खड़े आपको ज़लील करडालूँ। सारी इज़्ज़त ख़ाक में मिल जाय। आप पराये मकानों में आके बदफ़ेलियाँ करते हैं। फिर आप चाहे हज़ारों ख़र्च कीजिए, क्या होता है। ले, ख़बरदार जो अब कभी ऐसा बेहूदा काम किया! और वह सैयदी कौन है! यह सब है क्या मामला। आपकी गर्दन सूजी हुई है।

सरन ने कहा—शर्म आती है कहते हुए। वह पहलवान, मैं पचैती क्या जानूँ। उसने डंडे लगाने शुरू किये।

तीन बजे के वक़्त सरन लाला ख़ान साहब के टट्टू पर सवार होकर चले। और पूरन माली उनके साथ हुआ। रास्ते में पूरन ने उनसे कहा—लाला, आज हज़ूर यहाँ कहाँ! हम पंच समझे कि भूत है। जान निकल गई। देखते हैं तो सरन लाला! अरे, लाला यहाँ कहाँ! धक् से रह गये कि हज़ूर यहाँ कहाँ आये!

सरन लाला पूरन के मिलने से ख़ुश हुए, कि पूरन ने ख़ान साहब और कुल मालियों से कह दिया कि यह कौन शख़्स है, किस लखपती का लड़का है और इसकी क्या इज़्ज़त है। वर्ना ख़ान साहब उनको बेज़लील हुए भला कब जाने

देते। उनको यह भी अफ़सोस था कि पूरन माली ने हमको इस हालत में देखा। रास्ते में अपने ऊपर अफ़सोस करते जाते थे कि यह क्या हरकत हमसे हुई। बुरे काम का बुरा नतीजा है। दिल ही दिल में क़स्में खाते जाते थे कि अब कभी ऐसे काम के पास न फटकेंगे। अब से आये, घर से आये। पूरन माली हर कदम पर नसीहत करता जाता था, और उसकी नसीहत उनको तीर की तरह लगती थी। मगर ज्यों-त्यों करके पाँच बजे के पहले सरन लाला मकान पर पहुँचे। फाटक खुला और आदमी, नौकर-चाकर सब दौड़ पड़े।

चौकीदार ने कहा---सरकार, बड़ी ढुँढास पड़ी। बड़े लाला ने खाना नहीं खाया। आदमी दौड़ाए गये। हुज़ूर कहीं न मिले। एक और आदमी ने कहा---सरकार, ऐसा न किया कीजिए।

ये सीधे कोठी में आये। मिर्ज़ा और गौरा और लाला गोपीचन्द बैठे हैं। वहाँ देखा लैम्प रोशन हैं।

मिर्ज़ा साहब---अरे, यार, कन्हैया हो, वल्लाह!

सरन---(ख़िदमतगार से) एक सौ रुपया पूरन माली को दो। एक सिपाही को साथ कर दो कि जहाँ यह जाय, यह रुपया ले जाय। फ़ौरन इस हुक्म की तामील करो। और बोतल लाओ। हम मुर्दादिल हैं। इस वक़्त ख़िदमतगार तो हुक्म की तामील के लिए गया। और इधर मिर्ज़ा साहब ने बोतल उठाकर एक गिलास में ख़ूब उँडेली, और कहा---सरन, बस एक साँस में पी जाओ!

सरन तो वाक़ई मुर्दा से थे, फ़ौरन पी गये, और पीकर कहा---भई, जान में जान आई। परमात्मा ने जान बचाई। किस मरदूद को यक़ीन था कि सबेरा होगा।

मिर्ज़ा ने कहा---अब मैं जूते से ख़बर लेता हूँ।

सरन---दुबले मारें शाह मदार। भाई, ख़ुदा हर भलेमानस को इस मुसीबत से बचाए।

मिर्ज़ा---मुसीबत! हमने तो गौरा की ज़बानी एक ख़ुशख़बरी सुनी थी, और तुम्हारी क़िस्मत पर रश्क़ कर रहे थे।

सरन लाला ने एक गिलास और चढ़ाई और सारी आप बीती कह सुनाई। कामिनी का नाम नहीं लिया; न गौरा ने कामिनी का ज़िक्र किया था। दोनों ने यही कहा कि एक ऐसी औरत है जिससे बढ़कर हसीन दूसरी इस शहर में नहीं पैदा हुई।

सरन की दास्तान सुनकर सब को रंज हुआ। और सरन ने आँखों में आँसू लाकर गर्दन दिखाई, जो डंडों के सबब से सूज गई थी। और जब उसने रोते हुए कहा कि मेरा सारा बदन दर्द कर रहा है और गालों पर ज़ोर-ज़ोर से लप्पड़ और थप्पड़ लगाए गये, तो सबको बहुत ही अफ़सोस हुआ।

गोपी---भई, खोलके बताओ तो इसका बन्दोबस्त किया जाय। यह तो ख़राब बात हुई।

मिर्ज़ा—आख़िर साथ कौन ले गया था, इसका पता लगाइए।

समर—अब पता-वता रहने दीजिए और फ़ज़ीता होगा। साथ तो गौरा ले गई थी, और यह कोई दुश्मन नहीं, मैं जानता हूँ। इनके साथ ख़ुद दग़ा की गई, और गौरा को कानों-कान ख़बर नहीं।

सरन—कोठी चौतरफ़ा से बन्द, बाग़ सुनसान। एकदम सन्नाटा। आदमी का नाम नहीं, अपना न बेगाना। जिस काल-कोठरी में हम थे, वहाँ अँधेरा घुप पड़ा हुआ था। जी घबरा जाता था। कुत्ते तक की आवाज़ नहीं सुनी। दो दफ़ा रोया। गौरा को बड़ी हसरत से पुकारा मगर जवाब नदारद।

गोपी—तुमको पहले ही रवाना कर दिया था, गौरा बीवी।

गौरा—मुझसे पहले तो कहा कि कमरे के अन्दर न जाओ; हमारी बीवी तुम्हारे सामने उनसे बातें करने में शर्माएँगी। मैं कोठी के बाहर ही के कमरे में रही। थोड़ी देर के बाद मुझसे किसी औरत ने आके कहा कि—यह हुक्म है कि तुम गौरा और फलानी-ढमकी को लेकर जाओ। मैंने कहा, मैं ज़रा मिल तो लूँ। कहा, कुछ सिड़न हुई हो? वहाँ परिन्दा तो पर मार नहीं सकता; तुम्हारी हमारी कौन कहे। मैं समझी, मतलब हासिल हो गया। खुश होकर गाड़ी पर सवार हुई। सोचती जाती थी कि सरन लाला से आज इनाम लूँगी। अब यह क्या मालूम था कि उनके दुश्मन इस तबाही में पड़ेंगे। जो मैं जानती तो मर जाती, वहाँ से न टलती। वहाँ इस बिचारे का क्या हाल हुआ होगा।

सरन—गौरा के सर की क़सम, यह किस मरदूद को उम्मीद थी कि तड़का होगा। पहले तो लोग मुझे भूत समझे। मैंने कहा था ना, अभी, जब दरवाज़ा खुला और मैंने अपनी बीती बयान की तो दारोग़ा ने आदमियों और मालियों को बहुत डाँटा। इतनी बड़ी बात हो गई और तुमको ज़रा ख़बर नहीं। अगर कोई किसी को क़त्ल करके डाल दे, तो भी तुमको ख़बर न हो; और हम और मालिक तो धरे जायँ।

मिर्ज़ा—आख़िर कुछ तो हाल मालूम होना चाहिए। यह औरतों का काम नहीं है। मगर इतने में दरबान ने कहा—सरकार कोई आया है और सरकार को बुलाता है। पूछा—कौन है, भई? जाकर देखा तो हँसिया। देखते ही गले से लगाया और वह भी लिपट गई।

गौरा—कौन है? कोई नई कली तो नहीं है? मैं सामना न करूँगी।

मिर्ज़ा—अरे भई कौन साहब हैं?

सरन—साहब नहीं मुसम्मात हैं।

मिर्ज़ा—कौन मुसम्मात?

हँसिया—तुम्हारी छोटी बहन।

मिर्ज़ा—कौन है भई।

हँसिया---(सरन के कान में चुपके से) मैं तो दिन ही को भागने को थी मगर न आ सकी। ऐसा ही बिजोग पड़ गया। मैं तो रस्सियाँ तुड़ाके आती, जो अपने बस की बात होती। मैं भला वहाँ कब ठहरनेवाली थी। सबके सब हमारे दुश्मन हो गये है। एड़ी से चोटी तक होने दो। हमको तो तुमसे काम है।

सरन---अच्छा अब कचहरी बरख़्वास्त।

मिर्ज़ा---अरे, हँसिया आई होगी। अब मेरा यार किसकी सुनता है भला? अच्छा भई, रुख़सत!

उन्नीसवाँ अध्याय

क्षत्रीपन की रग नें जोश किया

कामिनी आज कुछ उदास-सी मालूम होती है। कोई बीमारी ईश्वर की दया से किसी क़िस्म की नहीं है। बात भी ऐसी नहीं हुई कि दिल बेक़ाबू हो जाता या परेशानी का कोई खास सबब होता। क्या बात थी कि ठंडी-ठंडी साँसें भरने लगी। थोड़ी देर सास के पास बैठी; वहाँ से कोठे पर आई और यहाँ कमला और जैनब की माँ से दिल का हाल कहने लगी। इन्हीं दो-चार से साफ़-साफ़ दर्द-दुख का हाल कहती थी।

कमला---क्यों उदास क्यों हो?

कामिनी---हमें खाना-पीना, पहनना-ओढ़ना, हँसना-बोलना कुछ अच्छा नहीं मालूम होता। यों तो जो खाती थी वह खा सकती हूँ और खाती ही हूँ। जो पहनती थी वह पहन सकती हूँ। कोई रोकनेवाला नहीं, मगर मैं सोचती हूँ कि अगर मैंने सोलह सिंगार किये भी तो क्या, किसको दिखाऊँगी। जब वह, जिस पर मेरी जिन्दगी का दारमदार है, मुझसे मंज़िलों दूर है, कहाँ मैं, कहाँ वह। तो मैं किसके लिए सिंगार करूँ। मैं अपने दिल को हर तरह ढारस देती हूँ, समझाती हूँ, बहलाती हूँ, कि यह कोई नई बात नहीं है। मगर दिल नहीं मानता।

कमला---दिल को न समझाओगी तो क्या करोगी। जहाँ तक हो सके दिल को क़ाबू में रखो। नहीं तो और भी ज्यादा परेशानी होगी।

कामिनी---मैं अपने दिल का हाल किससे कहूँ। लाख-लाख समझाती हूँ मगर दिल क़ाबू में नहीं आता।

इतने में जैनब की माँ आई। कामिनी ने थोड़ी देर दिल बहलाने के लिए जैनब की माँ से इधर-उधर की बातें की।

जैनब की माँ इधर-उधर की ख़बर कहो। उसने कहा—ताजा ख़बर तो मैंने नहीं सुनी। आज ससुर बलभद्र सिंह के घर गई थी। वहाँ उनका लड़का जो रिसाले में नौकर है, दो बरस के बाद घर आया। ख़ुशी के शादियाने बज रहे हैं। रतजगा कल हुआ था। घर भर में छोटे-बड़े सब ख़ुश हैं। यह किसी लड़ाई पर गया था; कहीं काबुल की तरफ़, या ख़ुदा जाने कहाँ लड़ाई थी। वहाँ से अब आया। माँ-बाप जोरू, भाई, बेटे, बहनों ने घर भरे और आँखें बिछा दीं। अब माँ-बाप सब मिलके ख़ुशामद कर रहे हैं कि बेटा तुम हमारे इकलौते बेटे हो; हमारी ज़िन्दगी के दारमदार तुम्हीं हो। इस बुढ़ापे में अब हमको छोड़के कहाँ जाओगे। तुम्हारे पास गाँव-गिरावँ, देहात-बाग़ मकान, नक़द रुपया सब कुछ है। हमारे पास रहो। अब हम लोग कुछ दिन के मेहमान हैं। तुम्हारे सामने मरें तो उससे बढ़के न्यामत हमारे वास्ते और क्या है। मुझे उन दोनों बुढ़िया-बूढ़ों का हाल देखकर तरस आया। और एक तरह देखो तो वह क्या झूठ कहते हैं। बूढ़े आदमी, और बहुत ही बूढ़े। मगर ये लड़के आजकल के किसकी मानते हैं। उसको अब तक कच्चे घड़े की चढ़ी है। वह कहता है कि मैं तो ज़रूर छुट्टी ख़त्म होने पर फिर फौज में जाके भरती हूँगा। और भरती क्या मानी, कुछ नाम तो उसका कट नहीं गया है। छुट्टी लेके आया है। जब छुट्टी ख़त्म हो जायगी तो दो-चार दिन पहले अपने काम पर चला जायगा।

कामिनी—है है, कितना बेदर्द लड़का है। माँ-बाप का इकलौता लड़का और लड़ाई-भिड़ाई का इतना शौक़ कि चाहे बीवी कुढ़कर के मरे चाहे बाप मरे वह अपनी ही-सी करेगा।

जैनब—अब मैं क्या कहूँ। मुझसे उन दोनों का रोना-धोना, तड़पना देखा नहीं जाता। एक कुहराम घर में मचा हुआ है।

कामिनी—इन लोगों की अक़्ल पर क्या पत्थर पड़ जाते हैं?

जैनब—अब मैं क्या कहूँ। कुछ कहते-सुनते बन नहीं पड़ती।

कामिनी—मैं बेसुने ही रो रही हूँ। और मैं क्या रो रही हूँ, मेरा दिल रो रहा है।

जैनब—ए लो, और सुनो। कहाँ की बात आप कहाँ ले गईं। यह मेरा मतलब न था। मैंने क्या कहा, तुम क्या समझीं। अच्छा, ख़ैर, उन बातों ही को जाने दो। कहाँ की बात कहाँ ले जाती हो।

कामिनी—जैनब की माँ, हमारा दिल उस वक़्त भर आया।

जैनब—मैं सदक़े जाऊँ, यह बताओ, कि जिसके घर का ज़िक्र मैंने किया वहाँ घी के चिराग़ जल रहे हैं या नहीं।

कामिनी—यह सब सच, मगर दिल ही तो है।

जैनब—तो ढारस भी कोई चीज़ है।

कामिनी—जब दिल भी माने।

ज़ैनब—तो ख़ुदा न ख़ास्ता, आपके दुश्मनों पर क्या मुसीबत पड़ी।

ठाकुर रनबीर सिंह हर रोज़ एक खत भेजते थे और जिस दिन इत्तफ़ाक़ से ख़त नहीं भेज सकते थे, उस दिन तार रवाना करते थे। उससे उनकी माँ और सब रिश्तेदारों को बड़ी तसल्ली होती थी। मगर अबकी दफ़ा कुछ ऐसा इत्तफ़ाक़ हुआ कि न ख़त आया न तार। इससे सबको किसी क़दर फ़िक्र थी, कि इसका क्या सबब है। रोज़ बिला नाग़ा दो वक़्त बड़े डाक-घर आदमी जाता था। मगर बैरंग वापिस आता था। आज जो आदमी ने आके खत दिया, तो उसकी जान में जान आ गई, और ख़ुशी के शादियाने बजने लगे। और कामिनी ने उसी दिन खत लिखा और रजिस्टरी करके भेजा और कमला को बुलवाकर ख़ुश-ख़बरी सुनाई।

कामिनी उस रोज़ बहुत ख़ुश थी कि तीन दिन के बाद पति का खत आया और मालूम हुआ कि ख़ैरियत से हैं। दिल को बड़ी तसकीन हुई। और बहुत ख़ुश थी, क्योंकि तीन दिन तक खत के न आने से उसको एक तरह की फ़िक्र-सी हो गई थी। खत का जवाब रजिस्ट्री करके रवाना किया। उस रोज़ कोठे पर जाके धूप में सर धोकर बाल सुखा रही है और इठलाती हुई छतों पर जा रही थी। जब बाल सूख गये तो नाइन ने हिना का सोलह रुपये सेर वाला तेल डाला और चोटी सँवारी और हलकी सन्दली रंग की महीन शरबती की सारी और आस्तीनोंदार फँसी हुई कुरती, गुलनार रँगी हुई, पहनी, और मोतिया का इत्र मलकर फूलों के गहने पहनके छत पर टहलने लगी, उस वक़्त अजब आलम था। क़ुदरती मस्ताना चाल। न पिये और झूमती जाय! चुलबुलाहट। एक अजब शान से, नाज़ के साथ चहलक़दमी कर रही थी। और सामने एक कोठे की रावटी पर एक गबरू जवान, कोई बीस बरस का सिन, टिकटिकी बाँधे जोबन के मज़े दूर ही दूर से लूट रहा था। उसकी भी उठती जवानी—बस, जी चाहता था कि जान पर खेल जाय, कोठे से उड़कर पहुँचे। जब कामिनी से चार आँखें होने को होतीं तो छिप जाता, कोने में हो जाता, कि उसकी नज़र न पड़े, और उसको यह न मालूम हो कि कोई ग़ैर मर्द देख रहा है।

नाइन ने कामिनी से रनबीर सिंह का हाल पूछा, कि अब कब से खत नहीं आया। उसने कहा, ख़त अभी कल भी आया। हमने जबाब भी उसी दम लिखके भेज दिया। अभी कोई ठीक-ठीक हाल नहीं मालूम हुआ। अब दिल को ढारस देना मुश्किल है। मगर क्या करूँ। कोई इलाज ही नहीं। छत्री की ज़िन्दगी बड़ी कठिन से कटती है। हर घड़ी तलवार की धार पर, मगर कुछ डर की बात नहीं। परमेशर मालिक है। कभी-कभी बहुत तड़पती हूँ। जैसे बच्चा बिन दूध

के हुड़कता है। ख़त और तार के आने से जान में जान आ जाती है। जैसे खेत पर मूसलाधार दोंगड़ा बरस गया।

नाइन ने कहा—बहू इधर-उधर की बातों से दिल बहलाओ, जरा मन में धीरज रखो। देखो तो कैसा नाम करके आते हैं, कि इस शहर के किसी राजपूत ने न किया हो। उँगलियाँ उठने लगें कि वह आये। कामिनी बोली—उम्मीद तो यही है। अब कुछ और बातें करो! हमारा दिल इस वक्त भर आया। (ठंडी साँस भरकर) क्या जाने इस वक्त कहाँ हों, लड़ाई में हों, रन में हों, धूप खाते हुए, गोलियों में दुश्मन उनके हों।

ये बातें हो ही रही थीं कि उस गबरू से न रहा गया, और शामत जो आई तो कोठे पर से इश्क़िया शेर गाने लगा।

कामिनी ने जो फिरके देखा तो बीस बरस का एक लौंडा, ऐनक लगाए सामने खड़ा घूर रहा है और शेर पढ़ रहा है। आग-भभूका हो गई और नाउन से कहा—हमारे देवर को बुला तो। उसने जो सुना कि कोई मर्द बे 'पर्दा' पुकारे कोठे पर आ गया, तो इस तरह कोठे पर आया जैसे तीर कमान से छूटता है या गोला तोप से निकलता है। कोठे पर आया तो अपने पड़ौसी को देखा कि सामने खड़ा शेर पढ़ रहा है। बस आँखों में ख़ून उतर आया, और पुकारकर कहा—अगर अपने बाप का है तो ठहर जा! मैं आता हूँ, अभी जान लूँगा! यह कहकर नीचे उतर आया, और बाप की तलवार कमरे से लेकर, म्यान फेंककर नंगी तलवार लिये दौड़ पड़ा और उसके घर में घुस गया। औरतें काँप उठीं। और उस लड़के की माँ, जिसको यह चची कहता था, उसको लिपट गई।

चची—ए पूत, यह तलवार किस पर चलाओगे? चची के पूत पर?

देवर—अच्छा आप ही बताइये कि भलेमानस की औरतें जो अपने छत पर नहाती हों, उनको जाके झाँकना मूड़ काट लेने का काम है कि नहीं? हम तो बाप का सिर काट लें।

एक औरत ने पर्दे में से कहा—अच्छा तो तलवार हमको दो। हम औरत-बाँदी रख दे तलवार। कल का लौंडा, और हम औरतों को धमकाता है। उसने कहा—नहीं भाभी, तुमको धमकाएँ यह हमारा धर्म नहीं है। हमारा धर्म यह है कि जो तुम्हारी तरफ़ आँख उठाके देखे उसकी आँखें तलवों के तले मल डालें!

वह बोली—तो अच्छा, तलवार हमको लाके दे दे।

उसने तलवार कोठरी के पास रख दी। उसके बाद चची ने उस लड़के को कोठे पर से बुलवाया और कहा: यह तेरे बड़े भाई हैं। इनके हाथ जोड़!

वह लड़का अभी तीखा और नौजवान था, हाथ तो नहीं जोड़े; मगर नीची

निगाह करके झेंपा हुआ खड़ा हो गया। कामिनी के देवर की आँखें कबूतर के ख़ून की-सी लहू की बोटियाँ।

चची ने कहा—बेटा, अब जाने दो। माफ़ करो। भूल-चूक हो ही जाती है। भाई है तुम्हारा। अब हम उस रावटी ही को खुदवाए डालते हैं। न बखेड़ा रहे, न टंटा।

पर्दे में से जो औरत बातें करती थी, वह उसकी बड़ी भावज थी। मगर कामिनी के देवर से पर्दा करती थी और यह उसका लिहाज़ करता था। उसने कोठरी में से कहा—जो खुद इसी की दुल्हन होती तो दो-चार का ख़ून अब तक कर चुका होता। ऐसा ख़ून सर पर चढ़ जाता है!—कान पकड़ अपने!

कामिनी के देवर ने मुस्कराते हुए अपने कान पकड़े। इतने में कामिनी की सास और दो महरियाँ दौड़ी आईं। दरवाज़े से दरवाज़ा मिला हुआ था। और आनके कामिनी की सास ने लड़के को बहुत डाँटा। तू पागल सिड़ी सौदाई हो गया है? इस अँग्रेज़ी में भी नवाबी की बू नहीं गई? कल को मेरे ऊपर तलवार लेके दौड़ना! चल, जा; घर में जाके बैठ। और पड़ोसी लड़के की तरफ मुड़के कहा—बेटा, तुम भावजों से इस तरह बर्ताव करते हो! एक औरत नहा रही है। तुम्हें चाहिए था, हट जाते। न कि और डट गये। अपने घर में जिस तरह चाहता है आदमी बैठता है।

उसकी माँ ने भी लड़के को डाँटा, और कामिनी के देवर ने तलवार की कासी घर से मँगवाई, और तलवार लेकर शर्माता हुआ चला। पड़ोसिन ने कामिनी की सास से कहा—अब हम रावटी ही को खुदवाए डालते हैं। उसने कहा—तुम्हारा बेटा जिए। इस झगड़े को दूर कर दो। कामिनी की सास इधर-उधर की बातें करके घर गई, और वहाँ जाके लड़के को बुलवाया। सुना, तलवार रखके बाहर गया है।

कामिनी—मैंने भी बुलाया, मगर न रुके; भाग गये।

सास—कैसी वाहियात बात की थी। कोई ऐसा करता है?

कामिनी—जैसे दुश्मनों को कोई सौदा हो जाता है। है-है, नंगी तलवार लेके दौड़ा गया। उफ़ ग़ज़ब ही हो गया था।

बारिन—और उसको तो कहो। उसने क्या कम लुच्चापन किया था?

कामिनी—उसका भी लुच्चापन हुआ।

सास—बड़ा लुच्चापन किया। मगर उसको इतनी जुर्रत न करनी चाहिए थी।

कामिनी—यह तो बिलकुल सौदाई ही हो गया। और जो कहीं रास्ते में मिल जाता तो ख़ून-ख़च्चर हो जाता। उफ, क्या सूझी।

सास—नहीं, रोज-बरोज उजड्ड होता जाता है। जब उसकी भावज ने डाँटा और दावे से डाँटा कि उसके सामने लंगा खेला करता था तो भीगी बिल्ली की तरह तलवार रख दी और चुप हो रहा।

कामिनी—चलो, बड़ी खैर हुई। परमेशर ने बहुत बचाया।

बारिन—पास-पड़ौस कहीं ऐसा हो सकता है कि छत पर से घूरो और ताक-झाँक करो! वाह, बहू-बेटियों में कहीं ऐसा होता है! हम तो सर काट लें! वाह, कहीं ऐसा होता है; कहीं ऐसा हुआ है! कभी ऐसा कहीं हुआ है? दोनों जहान में नहीं हुआ है। नहीं, नहीं जो हुआ है तो बताओ। वाह हुआ है, हुआ है, हुआ है कहीं—हुआ नहीं, हो चुका!

कामिनी—(मुस्कराकर) बारिन बस चुप रहो।

सास—इसको क्या हुआ? क्या है?

जैनब—(हँसती हुई) अरे बारिन सिड़न हो गई हो?

बारन—नहीं। तुम कहती हो ना, कि ऐसा होता है। हम कहते हैं कि नहीं होता। कभी नहीं होता। भई, जो कभी भी होता हो, छत पर से घूरो किसी बहू-बेटी को। बड़े घूरनेवाले। लाओ तो तलवार। लाओ तो मेरा खाँड़ा। घूरते हैं; बड़े घूरनेवाले!

जैनब—(बहुत हँसकर) अरे पगली, तुझे यह हो क्या गया है।

बारिन—और तुम बड़ी वह बनके आई हो! कि बहू-बेटियों को घूरो। छत पर से घूरा। लाना मेरी तलवार! ले, घूरो तो! आओ!

घर भर का मारे हँसी के बुरा हाल था। और बारिन सिवाय इसके और कहती ही न थी—कि बड़े घूरनेवाले। बहू-बेटियों को घूरने चले! लाना मेरी तलवार! ला तो तलवार!

असलियत इसकी यह थी कि बारिन से कामिनी ने वादा किया था कि जिस दिन खत आयेगा तुझको शराब मँगाके पिला दूँगी।

बारिन ने जो चुस्की पर चुस्की लगाई तो बहुत तेज़ हो गई।

बीसवाँ अध्याय

सोग

सुबह का वक़्त; कामिनी और स्मृता नहा-धोकर, पूजा करके बातें कर रही थीं कि डाकिये ने कई ख़त भेजे। एक खत रनबीर सिंह का था:

"मेरे कलेजे से ज्यादा प्यारी, कमन, ईश्वर जानता है कि

तरस रहीं हैं ये आँखें, मुहाल है दीदार!

अब दिन-रात तुम्हारी याद रहती है। और यह तो ख़ूब अच्छी तरह मालूम हो गया है कि हमारा दिल इस क़िस्म का नहीं कि तुम्हारे बग़ैर इतने दिन अकेले रह

सकें। कमन, ईश्वर जानता हूँ कि अगर जगत-हँसाई का खौफ न होता तो मैं चला आता। मगर डरता हूँ कि लोग यही कहेंगे कि अच्छे क्षत्री, अच्छे रनसूर हो। बाप-दादा का नाम खूब रोशन किया। चार ही दिन में नोकदम पाली-बाहर। ग़रज़ कि गज़-भरी हँसिया है: न उगलते, न निगलते बने ।

"सात दिन से मेंह लगातार बरस रहा है। झड़ी लगी हुई है। इसलिये लड़ाई आजकल रुकी हुई है। और ऐसे में तुम और भी ज़्यादा याद आती हो। रन में सिवाय मार-धाड़ के और कुछ नहीं याद; और जिस वक़्त गोलों और गोलियों की बारिश में घोड़ा कड़कड़ाते जाता हूँ, मालूम होता है, फूलों की बरसा हो रही है। जी चाहता है हरदम नंगी तलवारों ही के साये में रहूँ। लेकिन, बस, यह बेकारी कमबख़्त मारे डालती है। और ज़ाहिर है कि इस परदेस में तुम सब के सिवा और कौन याद आयेगा। तुम्हारा ख़त सौ-सौ दफ़ा पढ़ता हूँ, और सौ ही सौ बार चूमता हूँ। स्मृता बहन रोज याद आती है। उनको यह ख़त पढ़के सुना देना। और कहना—लिखता है कि मेरी प्यारी कम्मन की तसल्ली करती रहो और वह तुम्हारी तसल्ली करे। भला नौचन्दी जुमेरात का तमाशा देखने जाती हो? आते के साथ ही पहले नौचन्दी जुमेरात तुमको दिखाऊँगा। परमात्मा वह दिन जल्द दिखाए। तुलसा बुआ और जैनब की मा से ख़ैरियत कह देना।

रनबीर।"

कामिनी ने स्मृता को ख़त पढ़कर सुनाया। दोनों ख़ुश हुईं। तुलसा ने सैकड़ों दुआएँ दीं। जैनब की मां भी थोड़ी देर में आई। उसने कहा—अल्लाह लाखों बरस की उम्र दे! इस यादआवरी को देखिए कि समुन्दर-पार बैठे हुए हैं और तुलसा, जैनब की माँ—हम परजों—को याद करते हैं। रियासत के यह मानी हैं। नहीं, इत्ते बड़े अमीर-कबीर, इतने बड़े आदमी, अल्लाह इससे और मरतबे बढ़ाए!

दूसरे रोज़ सुबह को जब इन दोनों ननद भावजों ने पूजा-पाठ से छुट्टी पाई तो महताबी पर कौआ ज़ोर-ज़ोर से बोलने लगा।

कामिनी—अच्छी खबर ला तो दूध-बताशा खिलाऊँ।

स्मृता—हम सोने से चोंच मढ़ दें।

जैनब—भई अच्छी ख़बर न आई हो तो अपने दो नामों में से एक नाम बदल डालूँ।

कामिनी—ए, मैं हँसती थी। कौवे और तोता-मैना की बोली से क्या होता है।

तुलसा—कागा, सोने से मढ़ा दूँ तोरी चोंच।

स्मृता—कल से मेरी बायीं आँख फड़क रही है।

कामिनी—फड़कत है मोरी बायीं अँखिया; आज सैयाँ नहीं मोरे अँगना! फरकत है...

स्मृता—नौचन्दी-जुमेरात वहाँ भी न भूले। अब तो कोई आठ दिन होंगे, नौचन्दी को। बड़ा लुत्फ़ आता है।

कामिनी—नौचन्दी देखने जाती हो—यह सवाल हमसे हुआ है। पूछो, नौचन्दी तुम्हारे बग़ैर किसको पसन्द आयेगी! तुम्हारे दम से सब है।

इतने में धन्नो ठकुराइन ख़ूब बनी ठनी हुई छत पर आयीं। ख़त का मुख़्तसर-सा उनको सुनाया गया। उन्होंने कहा, हमारे नाम भी ख़त आया है। लिखा है, भाभी तुम्हारा जोबन यहाँ भी याद आता है! कामिनी मुस्कराकर बोली—यह बात हमारी समझ में नहीं आती कि या तो इतनी अंग्रेज़ियत मिजाज में है कि हँसना-बोलना, उठना-बैठना सब अंग्रेजी में; और उसके साथ यह वाहियात हँसी भावज से कैसी। धन्नो ने कहा—बस, बस मेरे दिल की बात कही! कहाँ तो इत्ता अंग्रेज़पना और कहाँ यह हँसी दिल्लगी! ज़ैनब की मां ने कहा—ए बीबी, बड़ी भावज से हँसी-दिल्लगी सभी कहीं होती है।

धन्नो—आज यह कौआ बहुत काँव-काँव कर रहा है। अरे कोई अच्छी-सी ख़बर ला, तो दूध-बतासा खा! इतने में घड़ियाली ने घंटा बजाया। और ज़ैनब की माँ ने कहा—फ़तेह है। स्मृता ख़ुश होकर बोली—भई, आज सब अच्छी ही अच्छी बातें होती जाती हैं। इतने में कुबड़िन डाली लाई। केले के हरे-हरे पत्ते, उस पर हरे-हरे बूट; चकोतरे, लाल-लाल नारंगियाँ, कच्चे केले; हरे-हरे अमरूद। धन्नो ने कहा—अहा हा हा! लो, हरी-भरी डाली भी आई। और तुर्रा यह कि कुबड़न भी सर से पावँ तक हरे कपड़े पहने हुए।

ऐन उस वक़्त जब कामिनी और स्मृता और धन्नो बीबी और ज़ैनब की माँ और तुलसा और कुबड़ी हद से ज्यादा ख़ुश थीं, कोई कौए को दूध बालाई बतासा खिलाता था, किसी की बायीं आँख फड़कती थी, कोई घंटे की आवाज़ सुनकर नेक फ़ाल बताता था, कोई कुबड़न के हरी-भरी डाली लाने को अच्छा शकुन समझता था ऐन इस ख़ुशी के वक़्त रोने की आवाज आई। धन्नो ने कहा—कोई रो रहा है।

तुलसा—अरे रोय देव। उधर ध्यान न करो।

ज़ैनब—बीबी यह तो दुनिया-जहान है। कोई रोता है, कोई गाता है, कोई नाचता है, कोई बजाता है। कोई जीता है, कोई मरता है।

स्मृता—दूर के रोने की आवाज आती है।

कामिनी—क्या जाने किस बेचारे पर गोला पड़ा।

स्मृता—ए तो कहाँ से मालूम हुआ कि कोई मर ही गया है। और जो कोई यों रोता हो—कोई और सबब हो?

धन्नो—नहीं। है तो मातम ही की आवाज़।

ज़ैनब—कोई ज़रूर मरा है और कोई बड़ा सख़्त मातम कर रहा है।

कामिनी—मर्द के रोने की-सी आवाज़ है। और फूट-फूटके रो रहा है। ढारे मार-मारके। तुलसा बुआ, जाके देखो तो, यह रोना कहाँ हो रहा है।

तुलसा जाने ही को थी कि एक आवाज़ नीचे से आई—अरी बहन, बिजली गिर पड़ी। हाय, आसमान फट पड़ा। इसके बाद ज़ोर से रोया और उसके साथ ही साथ नीचे जो औरतें थीं, धन्नो और कामिनी की सास, और दूसरे सगे-सम्बन्धी, नौकर-चाकर सब मातम करने लगे। पिट्टस पड़ गई। कुहराम मचा हुआ। एक औरत की आवाज़ आई—और आखिर मालूम तो हो कि क्या बिजली गिरी! दूसरे ने कहा—अरे बताओ भाई, क्या हुआ! सबने यही सवाल किये—मगर मातम करते हुए। और जिस मर्द ने आकर कहा था, वह यह कहकर और एक दफ़ा ज़ोर से चीखकर ज़मीन पर बैठ गया—माथे को दाहने हाथ से सहारा देकर; आँसू जारी। उधर नीचे तो सब औरतें सीना कूट रही थीं, उधर ऊपर अलग सीना कूटा जा रहा था। पहले तो सबने छत के नीचे देखा। देखा, तो इन्द्र बिक्रम सिंह। बस, छातियाँ कूटने लगीं। मौत की डरावनी सूरत साफ नज़र आने लगी। मौत हर दर और दीवार से अपना भयनक चेहरा दिखाने लगी। मालूम होता था कि हर झरोखे से कालदेव झाँक रहा है। सब के चेहरे पर मुर्दनी छाई हुई। कामिनी एकदम सकते में। बिलकुल जैसे तसवीर की मूरत। अंग-अंग जैसे बुत; इंद्रियाँ सुन्न। उनमें से कोई अपना काम नहीं करता था। अगर कोई ज़हर खिलाता तो इसे पता न होता, और अगर कोई अमृत देता, तो पता न होता। तमाम दुनिया उसकी आँखों में अँधेरी थी। बल्कि यों कहना चाहिए कि रोशनी और अँधेरा दोनों से कोई मतलब न था। अगर कोई एक सौ एक बत्ती का झाड़ रौशन करके सामने लाता तो न सूझता, और अगर अँधेरी कोठरी के बन्द तहखाने में होती तो अँधेरा भी महसूस न होता। मातम और कुहराम की आवाज़ की उसके कानों तक भनक ही नहीं पहुँचती थी। अगर कोई अंगारा हाथ पर रखता तो उसको ज़रा खबर न होती। अस्सी रुपये तोलावाला इत्र भी सुँघाया जाता तो नाक को पता न चलता। इन्होंने न सीना कूटा, न बैन किया। रोना-धोना कुछ नहीं बस, एक बुत-सी हो गई। जो जहाँ था वहीं कलेजा पकड़ के रह गया। और वहीं मातम करने लगा। छत की औरतें छत पर रहीं, और नीचे की नीचे। आधे घंटे तक यह कैफ़ियत रही कि कोई सर टकराती थी, कोई दीवार पर हाथ दे मारती थी, कोई दोहत्थड़ पीटती थी; कोई खाली रोती थी। मगर सिर्फ़ एक कामिनी सकते के आलम में थी। न बेहोशी, न ग़शी।

आध घंटे के बाद रनबीर सिंह की माँ ने आँसू पोंछकर कहा—अरे, उन दोनों को तो ऊपर से बुलाओ। स्मृता को बुलाओ। स्मृता रोती हुई उठी। धन्नो सर पीटती हुई चली। कामिनी को उठाया; साथ ले गई। नीचे

दालान में, कामिनी एक कोने में बैठी। सर झुकाए हुए। इतने में बहुत-सी औरतें सब रोती, बैन करती। बाहर भी भीड़ की भीड़; मर्द, औरत। सबको बेहद रंज। कामिनी की सास ने इन्द्र बिक्रम से पूछा—अरे बेटा, यह क्या बिजली गिरी। उसने जब्त करके कहा—तार आया अरजन्ट, पल्टन के मेजर का; कि रनबीर सिंह..... यह कहकर ज़ोर से रोया; फिर ज़ब्त करके कहा—रनबीर सिंह लड़ाई में मार डाले गये। बस इतना कहना था कि माँ ने इस ज़ोर से सर और छाती पीटी कि औरतों को शक की जगह यक़ीन हो गया कि अभी-अभी मर जायगी। हाय मेरा शेर बबर! हाय मेरे सूरमा बेटे! हाय मेरे बहादुर लड़के। अरे बेटा, मुझे इस बुढ़ौती वक़्त अन्धा कर गया। अरे, तू तो मेरे लिये सुरमे बनवाता था कि अम्मा की आँखों में नूर रहे। अरे अब दुश्मन बनके अन्धा कर गया! (सर टकराकर)—हाय! अरे मुझे छोड़ दो! मेरे हाथ न पकड़ो! अरे मेरा शेर कहाँ गया। है, है, बच्चा किस रन की भूमि में पड़ा होगा। पास की औरतों ने सर पकड़ा। हाथ पकड़े और यों कहने लगीं:

'गलता भी तो गलते-गलते दो चार बरस चाहिये थे।'

'अब तुम इस बिचारी की तरफ़ देखो। तुम्हीं अपना यह हाल करोगी, तो इसका क्या हाल होगा, जिसको उम्र भर रोना है।'

'अब तक जैसे यक़ीन नहीं आता। शेर का शेर।'

'अब इनको चाहिए कि कलेजे पर पत्थर रक्खें, और इस बेचारी दुखिया को कलेजे से लगाएँ।'

'अरे, जी, रोना तो उम्र भर का है। साल-दो-साल का रोना थोड़ा ही है। हाय कौन लड़की और क्या हो गई।'

धन्नो ने एक दफ़ा सर पीटकर कहा, हाय, जब रोने की आवाज़ सुनी तो कामिनी ही ने कहा, कि क्या जाने किस पर गोला पड़ा। इस पर सब औरतें बेतहाशे रो दीं। फिर धन्नो ने दोहत्थड़ पीटकर कहा—हाय यह मालूम ही न था कि यह गोला मेरे ही ऊपर पड़ा है। यह बम का गोला फटके इसी मकान पर गिरा। हाय, कहने लगी—मालूम होता है, कोई जवान मरा है। (इस पर फिर बड़ी पिट्टस हुई।) कल ख़त आये। जान में जान आई। आज गोला आया। बंटाधार कर दिया। इतने में ड्योढ़ी से बहुत-सी औरतों के रोने-पीटने, छाती कूटने की आवाज़ आई। मालूम हुआ कि कामिनी के मैके की औरतें आई हैं। अब इधर-उधर से वह पिट्टस हुई कि बयान से बाहर है। कामिनी की सूरत अगर कोई इस वक़्त देखता तो ज़रूर कहता कि अरे, यह मुर्दा कहाँ से आ गया! पूरी-पूरी मुर्दनी छाई हुई। और दिल की यह क़ैफ़ियत कि इस तरह डूबा जाता था, जैसे किसी आदमी के बदन से सेरों ख़ून निकल जाय। कामिनी

को पूरा यक़ीन हो गया कि बचूँगी नहीं। आँखों के आँसू पूरे तीन घंटे बराबर लगातार जारी रहे। न आँसू पोंछे, न आँखे खोलीं। आँखें बहुत ही कड़वी हो गईं। कभी उम्र भर इसका सवाँ हिस्सा भी कड़वी नहीं हुई थीं। तीन घंटे के बाद शिवरानी और स्मृता ने ज़बरदस्ती आँखें धोईं। मुँह धोया, ज़बरदस्ती पानी पिलाया। यों तो कामिनी पर दुख का पहाड़ टूट ही पड़ा था, रंज का आसमान एकदम से फट पड़ा। सुहागन से राँड़ हो गई। सुहाग से सोग, सुख से दुख। मगर कमज़ोरी एकाएक इतनी ज़्यादा हो गई थी कि जैसे जान निकल गई हो। और दिल गवाही देता था कि रनबीर सिंह के साथ मेरी भी जान जायगी। इससे बड़ी तसल्ली हुई थी, कि ख़ैर बेवा तो हुई मगर तमाम उम्र का रोना नहीं है। आज ही कल में हमारा भी फ़ैसला हुआ चाहता है। हाय, काश, मैं कमबख़्त मर ही गई होती! आज लोग कह रहे होते कि कैसे अच्छे भाग थे! उस बेचारे पर जो बिजली गिरी, वह मुझी पर गिरी होती। दिल कमज़ोर होकर बैठा चला जा रहा था। एक दफ़ा ही ग़श आया और गिर पड़ी। लाख-लाख जतन लोगों ने किये: जितनी औरतें बैठी थीं, सबने बारी-बारी कोशिश की। केवड़ा, लखलखा, गुलाब, इत्र सुँघाया, मुँह पर छींटे दिये; खीरा काट के सुँघाया; छुई मिट्टी पर पानी डालके सुँघाया। मगर ग़श दूर न हुआ। पूरे दस मिनट तक ग़श रहा। अब सबका ध्यान उधर हुआ। ग्यारहवें मिनट में ज़रा होश आया। जिस-जिसने उसको देखा, उसको यक़ीन हो गया कि मर जायगी। अगर उसके दिल को यह तसल्ली न होती मैं भी आज या कल मर जाऊँगी,—तो बेशक मर ही गई होती। अब जो ग़शी दूर हुई तो दिल में दर्द की चमक ज़्यादा बढ़ गई। दिल के बैठे जाने ने और भी तरक़्क़ी की। आँखों ने और ज़्यादा सताया। आँसू कहीं ज़्यादा उमँड़-उमँड़ के आने लगे, और जी बहुत ज़्यादा घबराने लगा। उलझन ने दिल पर पूरा अमल-दख़ल कर लिया। रनबीर सिंह की बातें और ख़तों के मज़मून याद करके दिल ही दिल में रोती थी। नौचन्दी जुमेरात जब याद आई तो दिल से एक दफ़ा ऐसी हूक उठी कि औरतें डर गई कि ऐसा न हो कि इसी के साथ दम निकल जाय। रनबीर सिंह को याद करके दिल ही दिल में कहा, अरे मेरे शेर, तेरी प्यारी कम्मन तुझे याद कर रही है। या उसके पास आ, या उसको अपने पास बुला। कहाँ इतना प्यार था, कहाँ अब यह पहाड़ तोड़ा। हाय, किसी कोने से तो सूरत दिखा दे! हाय, लिखा था कि स्मृता बहन से कहना कि मेरी प्यारी कम्मन को तसल्ली दें। या तो औरों से सिफ़ारिश करते थे कि कम्मन को तसल्ली दो या अब यह तोताचश्मी कि ख़ुद ख़ुदाई भर के ग़म का पहाड़ मेरे दिल पर गिराया।

इसके बाद फिर दिल से एक दफ़ा हूक उठी। और अक्सर औरतें दिल में

दुआ माँगने लगीं, कि परमेशर इसकी जान बचा। जब कामिनी की बहन पद्मिनी ने यह हाल देखा, तो बहन का सर अपनी गोद पर रखकर समझाने लगी। कामिनी से अब बिलकुल न रहा गया। ज़ोर-ज़ोर से रोकर कहने लगी—अरी बहन, क्या समझाती हो, समझाने की बात हो तो समझाओ। मैं समझ जाऊँ। अरे, मुझे क्या समझाती हो! हाय, मुझे खूब दिल खोलके रो लेने दो। (बहुत ज़ार ज़ार रोकर) अब मुझे कम्मन कौन कहेगा! अब मैं किसकी होके रहूँगी?

कामिनी अब आज़ादी के साथ बैन करने लगी, और पुरानी बातें याद करके दुहराने और मातम करने लगी, तो सुननेवालियों का दिल और भी भर आया। एक औरत ने कहा—शायद झूठ हो, किसी दुश्मन ने तार भेजा हो। इस बात से ज़रा कामिनी और उसकी सास और पद्मिनी और धन्नो और शिवरानी को ढारस हुई। मगर वैसे ही इन्द्र बिक्रम सिंह ने कहा, अजी, सरकारी तौर पर भी तार आया है, और मेरे नाम भी आया। फिर सब को पहले जैसी मायूसी हो गई। और वही हालत, वही मातम, वही बैन।

पूरे चार रोज़ तक कामिनी की यह कैफ़ियत रही कि जैसे शरीर से प्रान निकल गया हो। बुत जैसे।

पाँचवें दिन यह कैफ़ियत ज़रा-ज़रा कम हुई; तो स्मृता ने घंटों समझाया। अब तो दिल को बग़ैर ढारस दिये कुछ नहीं हो सकता। और तुम तो पढ़ीलिखी हो! रात भीगी है और तुम चार दिन की जागी हो।

कामिनी—नींद ही आती तो फिर क्या था।

तुलसा—अब तुम भी सो रहो, बेटा।

कामिनी—हाय, मैं तो बहुतेरा चाहती हूँ कि सो रहूँ। मगर जब नींद भी आये।

स्मृता—नींद ही आती तो यह रोना काहे का था।

कामिनी—दिल को लाख-लाख समझाती हूँ कि जो होना था वह तो अब हो गया, अब ढारस रख। मगर दिल नहीं मानता।

दिल में एक दर्द उठा, आँखों में आँसू भर आये!
बैठे-बैठे हमें क्या जानिये क्या याद आया!

स्मृता—(ठंडी साँस भरकर) अरी बहन।

कामिनी—अब सिवाय रोने-पीटने के और क्या है।

स्मृता—हम लोगों के गुनाह भुगते कौन!

कामिनी—हम भुगतें और भुगतते ही हैं।

स्मृता—अरी बहन अब तो जो होना था, वह हुआ। अब तो कलेजे पर सिल रखनी चाहिए। हाय मेरी प्यारी बहन। अरे, भाई, अब तो कुछ भी नहीं हो सकता।

कामिनी—अच्छा रो तो सकते हैं। फिर मुझे रोने ही दो। मुझे रोने से क्यों रोकती हो?

'क्यों' कहके कुछ कहने को थी, मगर आँसुओं ने गला रूँध लिया।

स्मृता—(रोती हुई) अरी बहन, हम पर तो बिजली गिरी ही है, और सच यह है कि बिजली तो हम सब पर गिरी; मगर जो बिजली तुम पर गिरी वह किसी पर नहीं गिरी। हाय, वह किसी पर नहीं गिरी। वह तो एक अचरज हो गया।

कामिनी—(ठंडी साँस भरकर) तुम मुझे समझाती क्या हो?

तुलसा—बेटा, रोना तो उम्र भर का है।

कामिनी—बुआ, मैं तो रोती भी नहीं हूँ। मुझे तो रोना भी नहीं आता।

स्मृता—अरी बहन, रोना तो उम्र भर का है; जैसा तुलसा बुआ ने कहा।

कामिनी—(ठंडी साँस भरकर) अरे मैं तो उफ़ तक नहीं करती।

तुलसा—(बहुत रोकर) बीवी, सरकार अब तो.....

'अब तो' के बाद कुछ कहने ही को थी कि जैसे किसी ने गला रोक लिया।

कामिनी—अरी बहन, मुझे लोग कहते थे कि सदा सुहागिन रहेगी! हाय, मुझे यह क्या मालूम था कि मैं सुहागिन न रहूँगी। अरे, मैं तो जानती ही न थी कि हाय, राँड कौन होती है। 'राँड़' का लफ़्ज सुनना था कि जितनी औरतें थीं सब की सब रो दीं। और इस तरह पर नहीं रोईं कि जिसको मामूली रोना कहते हैं, वह इस तरह रोईं कि हिचकियाँ लग गईं। आँसू का तार जो बँधा तो खत्म ही नहीं हुआ।

कामिनी—(रो-रोकर) हाय, अरे मुझे यह क्या मालूम था।

स्मृता—किसी को भी मालूम होता है?

ज़ैनब—बीवी, यह तो वह चीज है कि कोई जानता ही नहीं। कौन जानता है? कोई नहीं, अरे कोई नहीं।

कामिनी—ज़ैनब की माँ.....इतना कहकर रोने लगी।

ज़ैनब—सरकार, सब्र कीजिए।

स्मृता—(कामिनी को समझाकर) जो होना था, वह तो हो गया!

कामिनी—(बहुत रोकर) तुम मुझे समझाती क्या हो!

स्मृता—मैं समझाती नहीं हूँ!

कामिनी—(स्मृता को लिपटाकर) अरे, भई! (ठंडी साँस भरकर) अरे भई।

स्मृता—(कान लगाकर) तुम क्या कहती हो?

कामिनी—मैं तो कुछ भी नहीं कहती हूँ। अरे मैं क्या कहती हूँ!

स्मृता—देखो, मैं फिर कहूँगी, जो मैं हजार दफे कह चुकी हूँ। हाय, हाय।

जैनब—अरे बेटा, सरकार, यह सब बातें जाने दो।

कामिनी—(ठंडी साँस भरकर) अरे भई, मैं तो रोती नहीं, तुम क्यों रोती हो!

स्मृता—अरी बहन, यही तो बात है।

तुलसा—कुछ कहने की बात नहीं है।

स्मृता—तुलसा बुआ, मैं यह कहती हूँ (रोकर) मैं कहती हूँ कि...

तुलसा—बीवी, तुम तो खुद रो रही हो, समझाओगी किसको। मुझको, (बार-बार इशारा कामिनी की तरफ़ करके) इनको?

कामिनी—तुलसा बुआ, मैंने क्या गुनाह किये थे?

तुलसा—बेटा, पुरबले जनम का किसी को भी हाल मालूम है!

स्मृता—कोई नहीं जानता। पुरबले जनम का हाल तो कोई भी नहीं जानता!

कामिनी—यह न कहो। मैं जानती हूँ, और खूब जानती हूँ। और क्या जानती हूँ—यह जानती हूँ कि पुरबले जनम में जो कुछ किया हो, मगर इस जनम में तो लुट गई। हाय, यह क्या मालूम था कि मेरी क़िस्मत में यह बदा है। दिल डूबा जाता है।

तुलसा ने हसरत से देखके एक ठंडी साँस भरी।

कामिनी—समझ में नहीं आता कि क्या करूँ। दिल एक-एक सेकेन्ड में डूबा जाता है। बिलकुल बेक़ाबू हो गया है।

तुलसा ने फिर हसरत की नजर डाली और फिर ठंडी साँस भरकर खामोश हो रही।

कामिनी—बचूँगी तो मैं हूँ नहीं। मगर रंज यह है कि तबाही के साथ मौत आयेगी। दिल बैठा जाता है।

तुलसा ने आँसू ज़ब्त करके फिर एक ठंडी साँस भरी।

कामिनी—हाय, कितनी बदनसीब औरत मैं निकली, (ठंडी साँस भरकर) यह मुझे क्या हो गया।

अब तुलसा से ज़ब्त न किया गया और आँसू निकल पड़े।

कामिनी—मेरे तो आँसू भी जल गये।

बेहोशी की-सी हालत हो गई और सो रही। जैनब की माँ ने सर गोद में रख लिया। गिरने ही को थी कि जैनब की माँ ने सहारा दिया और लिटाकर कामिनी का सर अपनी गोद में रख लिया।

जैनब की माँ—तुलसा बुआ यह क्या ग़ज़ब हुआ।

तुलसा—क्या, बैठे-बिठाए यह क्या हो गया।

जैनब—यह कहाँ से गोला....फट पड़ा। इस मौत निगोड़ी को नहीं मौत आई!

तुलसा—क्या था क्या हो गया।

जैनब—शहर भर रोता है। जिसने देखा था वह भी, और जिसने नहीं देखा था वह भी। ऐसा खूबसूरत जवान तो हमने दूर-दूर नहीं देखा। हजारों लाखों मे एक। हाय बच्चा, तुमको किसकी नजर खा गई। हाय, यह क्या हो गया। वह फूल से रुख़सारे; वह शंजरफ़ी बदन मिट्टी के सपुर्द हो गया (रो-रोकर) जरा तो आकर देखो कि जो तुम्हारी प्यारी बीवी तुमको देखके जीती थी, वह अब किस हाल में पड़ी है।

तुलसा—क्या जाने मूरछा आ गया, क्या जाने सो रही हैं।

जैनब—हाय भैया, तुमने यह कैसे दग़ा दी। इस बिचारी दुखिया को कुछ तो तसल्ली दे गये होते; कुछ तो कह गये होते।

जैनब के माँ ज़ार-जार रोने लगी और आँसू टप्-टप् कामिनी पर गिरने लगे। तुलसा ने एक कपड़ा तर करके आँसू पोंछे, और इशारे से कहा—यह क्या कर रही हो!

जैनब—उफ़! हाय यह क्या हुआ!

तुलसा—(सर्द आह, भरकर) जीते जी मर मिटी।

जैनब—हाय, बूढ़ी माँ का हाल तो कोई देखे। मैं एक घंटा भर नीचे बैठी, न वहाँ बैठने को जी चाहता है न यहाँ बैठने को। कलेजा कटता है कि अरे यह ग़ज़ब हो गया।

तुलसा—कलेजा कटने की तो बात ही है।

जैनब—हमें वह दिन याद आता है जब यह पैदा हुए थे। कैसी ख़ुशियाँ मनाई गई थीं। रंडी गा रही थी—"जान आलम के नैना नुकीले" हाय, वह घड़ी अब जो याद आती है, तो फूट-फूट रोना आता है। अरे! यह क्या से क्या हो गया।

इतने में बदली घिर आयी, और ठंडी-ठंडी हवाएँ चलने लगीं; और यकायक बादल इस जोर से गरजा कि कामिनी चौंक पड़ी, और इधर-उधर अचम्भे से इस तरह देखने लगी कि मालूम होता था कि कोई बग़ल में बैठा था, और अभी-अभी उठके चला गया। उसी को ढूँढ़ती है। इधर-उधर कुछ देखकर आँसू उसकी आँखों में इस क़दर उमड़ आये कि कोई चीज नजर नहीं आती थी, सारी दुनिया अँधेरी थी। तुलसा ने आँखों पर छींटे दिये, रूमाल से मुँह और आँखों को पोंछा, और कहा, जरा-सा ठंडा पानी पी ले। पानी पीकर कामिनी वहाँ से उठ खड़ी हुई और दीवानी की तरह कभी इधर जाती थी कभी उधर। यह मालूम होता था कि कोई चीज़ उसको बहुत ही प्यारी थी। अभी-अभी उसके पास थी और अभी-अभी खो गई; उसी को ढूँढ़ती फिरती है; और बड़ी ही हसरत के साथ ढूँढ़ती है। अगर किसी को इसका हाल न मालूम होता, और वह कामिनी को इस हाल में देखता तो ज़रूर पूरा-पूरा यक़ीन हो जाता

कि यह कोई सिड़न है। तिनके चुनते-चुनते अब किसी फ़र्ज़ी खोई हुई चीज़ को गर्दन झुकाके ढूंढ़ रही है। मगर ज़ाहिर है कि कामिनी जिस चीज़ को ढूंढ़ती थी वह अस्ल में खोई हुई थी, फ़र्ज़ी न थी। यों तो कोई शख़्स पूरे यक़ीन के साथ नहीं कह सकता कि कामिनी वाक़ई कोई चीज इस वक्त ढूंढ़ रही थी या सिड़न हो गई थी। या एक साइत का जनून हो गया था। अगर क़रीना यही कहता है कि कामिनी ने सपनें में उसको देखा। बादल की गरज से चौंक उठते ही फिर जैसे चौंक पड़ी। पहले तो नींद से चौंकी। अब हैरत से चौंकी—जो अभी-अभी बग़ल में था क्या हो गया। जब कभी इन्सान सपना देखते-देखते चौंक पड़ता है, तो कुछ सेकेन्ड तक इसका इमर ज़रूर बाक़ी रहता है। मगर उस सपने और इन सपनों में ज़मीन आसमान का फ़र्क़ है। किसी जगह पर कामिनी को चैन नहीं आता था। किसी से बोलती थी न चालती थी, कभी इस कमरे में गई और खड़ी होके वापिस आई कभी उस कमरे में जाके मूँढ़े पर बैठी, कुछ सोचने लगी, कभी बाहर आई। कभी फिर तुलसा और ज़ैनब की माँ के पास जा बैठी।

एक बात और लिखने के क़ाबिल है। वह यह कि उस दिन से अर्से तक कामिनी को बादल के गरजने से बहुत ही नफ़रत थी। दिल ही दिल में सोचती थी कि हाय अगर यह कमबख़्त बादल न गरजता और मैं क़यामत तक यही सपना देखा करती तो कैसी नसीबवाली होती।

मगर दुख पहुँचे हुए दिल को तसकीन ही ग़नीमत है, कि सपने में तो देखा। सपने में ही बातें हुईं। यह तो ज़ाहिर है कि वह सपने में बातें हुईं तो क्या, मगर न देखने से तो अच्छा है। जो अपना प्यारा मर गया हो उसके देखने की अब क्या उम्मीद हो सकती है। लेकिन अगर रोज़ उसको सपने में देखें तो दिल को योंही-सी तसकीन थोड़ी देर के लिये ज़रूर हो जाय।

तुलसा—हाँ, यह तो हई है।

ज़ैनब—जैसे ही बादल ज़ोर से गरजा, वैसे ही यह चौंक पड़ी और यह मालूम हुआ कि जैसे कोई चीज खो गई थी, उसको ढूंढ़ रही है।

तुलसा—उम्र भर का डंड सहना है।

ज़ैनब—जैसे ही वह बादल ज़ोर से गरजा, वैसे ही ये चौंक पड़ी, और खराबी यह है कि कोई पूछ नहीं सकता कि क्या सपना देखा।

तुलसा—(दाँतों तले उँगली दबाकर) अरे कोई पूछ भी नहीं सकता।

ज़ैनब—यही तो मैं भी कहती हूँ। बस, गो-म-गो का मामला है। न समझाते बनती है न कुछ कहते बनती है, न करते-धरते बनती है। सिवा चुपके और रोने के बस, हाय।

इतने में आवाज़ आई। बुआ, ज़रा पानी पिलो दो। कामिनी बरामदे पर खड़ी बाग़ की तरफ देख रही है। ठंढी-ठंडी हवा के झोंकों और सब्ज़े के लह-

लहाने और बहार का नजारा करने से ज़रा दिल को योंही-सी तसकीन हुई, तो पानी माँगा। ज़ैनब की माँ ने कहा—दौड़ो। दौड़ो!

तुलसा फ़ौरन एक चाँदी की कटोरी में फ़िल्टर का पानी ले गई और उसमें थोड़ा-सा केवड़ा मिलाया और बहुत-सी बर्फ़ डाली, और जल्दी से ले गई। ठंडा-ठंडा पानी पिया। और भी तबीयत ज़रा-ज़रा बहाल हुई।

—:०:—

इक्कीसवाँ अध्याय

सातवें दिन की ज़रूरी रस्में जब पूरी हो गईं और बाहर की औरतें एक-एक करके चली गईं, तो कामिनी को कोठे पर ले गये। विलायती अनार का रस, बर्फ़ और केवड़ा मिलाकर एक बहुत बड़ा गिलास भरकर कामिनी को पिलाया गया। इससे बड़ी तसल्ली हुई। और पंखे के नीचे आराम किया, तो आँख लग गई। कोई एक घंटे के बाद आँख खुली। इस अर्से में मर्दों और औरतों ने खाने-पीने से छुट्टी पाई। कामिनी ने क़स्में खायीं कि खाने से और तबीअत बिगड़ जाती है। सिर्फ़ अनार का रस पिया।

खाने-पीने से छुट्टी पाकर कमला और स्मृता कामिनी के कमरे में कोठे पर आयीं। और दो ही मिनट में कामिनी की आँख खुल गई, तो दोनों को क़रीब बुलाकर कहा—

सपने में उन्हें देखा (आँखों में आँसू लाकर)—क्या देखती हूँ कि—

'कि' का लफ़्ज़ कहकर कुछ और कहने को थी कि कमला ने कहा—बस, अब अपने आपको हलकान न करो। नहीं तो तुमसे भी हम लोग हाथ धोएँगे। हमें अब उनकी निशानी तुम्हीं हो!

कामिनी ने ठंडी साँस भरकर कहा—'मुझे तो अब रोना भी नहीं आता। आँसू भी सूख गये। सपने में देखने से रंज तो ज़रूर होता है कि हाय, अब सभी कुछ सपना हो गया। मगर ज़रा देर तसल्ली भी होती है कि काश सपने ही में रोज देख लिया करूँ। दिल को यह तसल्ली होगी कि जो कुछ परमेश्वर को करना था वह तो हुआ अब मेरे साथ इतनी ही मोहब्बत निभा दें, कि अपनी सूरत एक दफ़ा रोज दिखाएँ, इतना ही सही। सपने में देखा कि मैं और वह एक कोच पर बैठे हैं, और मैं एक लड़की को पढ़ा रही हूँ और एक लड़की को सीना सिखा रही हूँ और एक लड़की को जुर्राब बुनना सिखा रही

हूँ। हँसकर मुझसे कहा—मालूम होता है, तुम उस जनम की उस्तानीजी हो! मैंने कहा—फ़क़ीरों से अच्छी नहीं दिल्लगी!

इतना मेरा कहना था कि बस लड़कियों को वहाँ से हटाकर मुझे प्यार किया। और कहा कि यह 'मिसरा' अब कभी हमारे सामने न पढ़ना। फ़क़ीर तुम्हारे दुश्मन। हमारी बीवी और फ़क़ीर! हाँ, हम मर जायँ तो चाहे तुम फ़क़ीर हो जाओ, चाहे जोगिन। बस इतने में मेरी आँख खुल गई। हाय, मैं कहीं की न रही। दीन-दुनिया दोनों से गई गुज़री। इधर की रही, न उधर की रही। क्या से क्या हो गया। मैं तो सपने को मानती ही नहीं। मगर इस सपने ने मेरे दिल पर बड़ा असर किया। मैं सोचती हूँ कि लड़कियों को पढ़ाना शुरू करूँ। ज़रा देर दिल भी बहलेगा, और शग़ल का शग़ल है और पुन्न का पुन्न। और लड़कियों को पढ़ाने में कोई ऐब भी नहीं। कोई हरफ़ भी नहीं रख सकता। मैं इस सपने को पूरा-पूरा सच कर दिखाना चाहती हूँ।

कमला ने समझाया कि देखो सपने में भी उनको तुम्हारा लड़कियों का पढ़ाना अच्छा नहीं लगा। दूसरी बात यह है कि इस सपने को पूरा करने के माने यह हैं कि तुम्हारे बैरी-दुश्मन जोगन हो जायँ। इसका तो तुम कभी खयाल न करना। यह तो तुमने इसीलिये पढ़ा-लिखा था कि ऐसी बातों का खयाल करो। परमेशर की किरपा से देवर-देवरानी जिठानी सास-सुसरा माँ-बाप भाई भावज गाँव-गिराँव नौकर-चाकर सवारी-शिकारी सब कुछ है। चारदीवारी में बैठो, पूजा-पाठ करो। लड़कियों को पढ़ाओ-लिखाओ, मगर अपने घर में, अपनी चारदीवारी के अन्दर। स्मृता ने भी इस बात की ताईद की, और बहुत समझाया कि अपने दिल को रोको और क़ाबू में रखो। तुम्हारे माँ-बाप सास-ससुर पर यह मुसीबत क्या कम पड़ी है कि उन पर एक और दूसरी मुसीबत पड़े और वह बेचारे कहीं के न रहें।

कामिनी यह सब सुनके खामोश हो रही, और बात टाल दी। और दिल ही दिल में सोचने लगी कि सपना तो अच्छा देखा। दिन-रात बेकार बैठे रहने के सिवाय इसके कि रंज को तरक्की हो और क्या फायदा हो सकता है। अगर मदरसा कायम हो जाय पुन्न इसी का नाम भी है और औरतों में तालीम भी होने लगे। और लड़कियाँ मुफ्त में पढ़ना लिखना सीख जायँगी। ठान ली, कि जहाँ तक हो सकेगा जान लड़ा दूँगी और सुसरे की बड़ी खुशामद करूँगी कि मुझे मेहरबानी करके इजाजत दीजिए कि मैं लड़कियों का मदरसा कायम करके भले-मानसों की लड़कियों को पढ़ाऊँ। अगर मंजूर कर लिया तो खैर वर्ना मजबूरी है। दुख में भी एक और दुख बढ़ेगा। और स्मृता की राय तो मालूम हो ही गई थी, कि वह इन खयालात के खिलाफ हैं। दोनों से मशविरा करना

फ़जूल समझा। धन्नो ठकुराइत और शिवरानी, उम्र और दर्जे दोनों में उससे बड़ी थीं। बड़ी बहन पद्मिनी बहुत अच्छे खयालात की औरत नहीं—पुराना फ़ैशन ज्यादा।

:o: :o: :o: :o:

एक रोज़ जसोदा इनसे मिलने आयीं। दोनों एक उम्र की और हमजोली और क़रीब-क़रीब एक ही ख़याल की थीं। इनसे उसने यों बातचीत की—

कामिनी—बहन, एक बात कहूँ, जो किसी से कहो नहीं। बहुत छिपी हुई बात है। किसी से कहने की नहीं है।

जसोदा—हम जरूर कह देंगे। इधर तुमने बात कही उधर हमने ढिंढोरा पिटवा दिया।

कामिनी—हम तो अपने दिल से बात कहते हैं और तुम हँसी में टालती हो, वाह!

जसोदा—कैसी बच्चों की-सी बातें करती हो। अरे बहन, तुम्हारी बात और हम किसी से कहें? ज़बान काट लो, मुझे रंज हुआ कि तुमने यह कहा क्यों?

कामिनी—क्या जाने तुम्हारी क्या राय हो; मगर हमने ठान ली है कि यही होगा। चाहे जो हो, तुमसे सलाह लिये बगैर न करूँगी।

जसोदा—दो बातें हम न होने देंगे। तुम पढ़ी लिखी औरत हो, इससे कहने को जी चाहता है। कामिनी, किसी और से न कहती; डर मालूम होता कि शायद ख़फ़ा हो जाय। सुनो, बहन, बात तो यह है कि दूसरी शादी गो शास्तर के रू से जायज़ है, मगर रिवाज के रू से नाजायज़ है। मैं खुद जानती हूँ कि इसमें कोई ऐब नहीं। लेकिन माँ-बाप सास-ससुर को ज़हर खा लेना पड़ेगा। और इसका तो मुझको डर नहीं। क्योंकि मुझे मालूम है कि तुम ऐसा अपने आप न करोगी। मगर हमें डर यह है कि कहीं और गुल न खिलाओ, जिससे हमें रंज उठाना पड़े।

कामिनी—वह कौन बात है। क्या जाने क्या समझी हो! उलटी-पलटी समझी होगी कुछ। अच्छा अब कह डालो। सुनूँ तो क्या कहती हो।

जसोदा—कहीं तुम फ़क़ीर न हो जाओ। सिड़न तो हो ही गई हो।

कामिनी—पहली बात वह कही, दूसरी बात यह कही। दोनों बातें ऊल-जलूल। अरी बहन दूसरी शादी के तो कोई मानी ही नहीं हैं। इसका तो जिक्र ही न करो।

जसोदा—यह सब मिलके तुम्हें ज़हर दे देंगी।

कामिनी—यह मैं नहीं मानती! अंग्रेज़ी अमलदारी है, दिल्लगी नहीं है। मगर मेरा दिल कब गवारा करता है। कोई और कहता तो मुँह नोच लेने को जी चाहता।

जसोदा—बस अब मैं खुश हो गई।

कामिनी—रही दूसरी बात। इसको मैं वेवक़ूफ़ी समझती हूँ।

जसोदा—बस चलो अब छुट्टी हुई।

कामिनी—और यों तो एक हिन्दू बेवा एक फ़क़ीरनी से भी बदतर होती है। न अच्छे कपड़े पहन सके, न खाना अच्छा खा सके, न किसी रस्म-रीत में शरीक होने के क़ाबिल। किसी मसरफ की नहीं। ज़िन्दगी तलख़।

जसोदा—बहन, फिर जिस गुनहगार पर जो पड़ती है वह भुगतना ही पड़ता है।

कामिनी—खाली-खूली भुगतने से क्या होता है? खाली-खूली रँडापा भुगतने से क्या होता है? कोई बात ऐसी करे जिससे दुनिया में फ़ायदा हो और परलोक भी सुधरे।

जसोदा—अच्छी बात तो है, मगर मालूम नहीं कि वह कौन-सी बात है।

कामिनी—वह बात यह है कि मैं भलेमानुसों की लड़कियों को पढ़ना-लिखना, सीना-परोना, जुर्राब बुनना, हिसाब-किताब, कुछ इतिहास, थोड़ा-सा जुग़राफ़िया, यह सब बातें सिखाऊँ।

जसोदा—रोकता कौन है। इसको कौन मना करता है; सुसरालवालों से पूछ लो, बस, फिर जो चाहे सो करो।

कामिनी—एक स्कूल लड़कियों की तालीम के लिए क़ायम हो तो कैसा।

जसोदा—यह वाहियात बात है। बस, हो इतना ही सकता है, कि मेरे घर की या मसलन स्मृता हैं, या तुम्हारी बड़ी बहन है, या मैके की लड़कियाँ हैं—वह आएँ और दो चार घंटे पढ़के चली जायँ। यह नहीं कि मदरसा हो और वहाँ फ़ीस ली जाय, और अंग्रेज़ मास्टर आके इम्तहान लें। मैं तो अपने पड़ोस में देखा करती हूँ, न। मेमें आती हैं, साहब लोग आते हैं, हिन्दुस्तानी मास्टर जाते हैं।

कामिनी—यह ग़लत है। मर्द वहाँ नहीं जा सकता, और औरतों के जाने में कोई हर्ज नहीं। और फ़ीस मैं लूँगी नहीं। पढ़ाने के अलवा और अच्छी-अच्छी बातें सिखाऊँगी। मैं कुल हाल पूरा-पूरा लिखके तुमको सुनाऊँगी कि यह होगा। मर्द का तो नाम ही न लो। मर्द वहाँ जा ही नहीं सकता। बस, यही खयाल तुमको है, न? यह तुम कहो नहीं। मैं कोई सिड़न हूँ? भला मुझे अपनी बदनामी का खौफ नहीं है? तुम बड़ी वह बनके सिखानेवाली आई हो, सिड़न कहीं की। मेरी मन्शा बस यह है कि मैंने जो थोड़ा-बहुत पढ़ा-लिखा है वह बिलकुल अकारथ न जाय। अगर उम्र भर रंडापे और मातम और रोने धोने में बिताऊँ तो क्या, कुछ भी नहीं। जी यह चाहता है कि दुनिया और परलोक दोनों का फ़ायदा हो, और इस तरह से कार्रवाई हो कि कोई नाम न रखे।

इस बातचीत के पन्द्रह-बीस दिन के बाद कामिनी ने अपने ससुर से अपना

खयाल ज़ाहिर किया। पहले दबे दाँतों सिर्फ़ इतना कहा कि मैं चाहती हूँ रिश्ते नाते की लड़कियों को पढ़ाऊँ, और सीना-परोना सिखाऊँ; और इसके अलावा और उम्दा-उम्दा नेक आदतों की तालीम दूँ। इसमें मेरा दिल भी बहलेगा, और बेकार भी न रहूँगी और ग़म भी ग़लत रहेगा और घर की लड़कियाँ पढ़-लिख भी जाएँगी। और सीधे ढर्रे पर भी आ जायँगी; और मुझे दुनिया और परलोक में, दोनों में, सुख मिलेगा। यह बात लाखों रुपये खर्च करके भी नहीं हासिल हो सकती है, और किसी का कोई नुक़्सान या हर्ज नहीं है।

उसके ससुर ने कहा—बेटा, हम ग़ौर करके जवाब देंगे। हम चाहते हैं कि जो कुछ हम पर बिजली गिरनी थी वह तो गिरी। अब जहाँ तक हो सके तुमको ज़रा भी तकलीफ़ न हो, और जिस बात में तुम्हारी खुशी हो, वह सर-आँखों से बजा लाऊँ; कि उस गये हुए की निशानी हो। मैं तुम्हारी सास और देवर से दरियाफ़्त करके तुमको खबर करूँगा। वैसे हमारे देखने में तो कोई हर्ज नहीं मालूम होता। इसी वास्ते मैंने पेंशन ले ली कि लड़के-बालों में आराम से रहूँ। मगर ईश्वर को मन्जूर न था। मुझे बुढ़ापे में यही देखना बदा था। दो तीन दिन के बाद बीवी और लड़के से सलाह लेकर कामिनी से कहा— बेटा, कुनबे की लड़कियों को पढ़ाने में कोई ऐब नहीं है। हमने सब दरियाफ़्त कर लिया है। पढ़ना, लिखना, सीना-परोना सिखाओ; छोटी-छोटी लड़कियाँ आया करेंगी।

कामिनी—मेरा जी दुनिया से हट गया है। मैं चाहती हूँ कि किसी जंगल बियाबान वीराने में जाके रहूँ, जहाँ न कोई मुझको देखे, न मैं किसी को देख सकूँ। बहुत जी घबराता है। उलझन-सी होती है। मैं कुछ अर्ज़ नहीं कर सकती। (रोकर) दिल किसी तरह नहीं बहलता, बल्लियों उछलता है।

ससुर (रोकर)—बेटी यह तो जब तक हमारी तुम्हारी ज़िन्दगी है, तब तक का रोना है। हाय, क्या शेर था। इस शहर के क्या मानी—दूर-दूर तक ऐसा न था। बड़ा भागवान मैं अपने आपको समझता था कि ऐसा होनहार लड़का पाया। अब मुझसे बढ़के कोई बदनसीब नहीं।

सास—(कामिनी की तरफ इशारा करके) इससे बढ़के खुशनसीब कौन बीवी थी? हमारी क़ौम में तो कोई न थी। अब इससे ज़्यादा कौन दुखी है! मुझसे बढ़के अच्छे भागोंवाली कौन थी। अब मुझसे बढ़के दुखिया कोई नहीं है। अब रोते-रोते आँसू भी जल गये।

कामिनी—अगर मेरे लिये बाग़ बना दिया जाय, तो ज़रा दिल को ढारस हो। मुझे तनहाई अब बहुत पसन्द है। आयन्दा जैसी मर्ज़ी हो। बिला मर्ज़ी में कोई काम न करूँगी।

सास—तुम अभी लड़की हो, अकेली क्योंकर रहोगी?

कामिनी—इसका तो खयाल ही न करो। मैं सौ बरस की बूढ़ियों से भी ज़्यादा बूढ़ी हूँ। मेरे चाल-चलन से घर भर वाक़िफ़ है।

मानसिंह बुलाए गये। उनसे सब हाल कहा गया। मानसिंह ने कहा, हम ग़ौर करके इसका जवाब परसों देंगे। और उसी रोज़ जाके बलभद्रसिंह तहसील-दार और इन्द्र बिक्रमसिंह से मशविरा किया और सलाह यह तय पाई कि इन्द्रबिक्रम सिंह अपनी बहन से उसके जी का हाल मालूम करें। यह सबको पूरा-पूरा यक़ीन था कि मानसिंह के बाप उनका कहना मान लेंगे। इन्द्र बिक्रम ने बहन से पूछा। और तीन घंटे की बहस के बाद दूसरे रोज़ फिर दोस्तों से मशविरा हुआ। मगर अभी कोई राय क़ायम नहीं हुई।

* * * *

एक दिन दो-एक हमजोलियों ने जाके आहिस्ता से पूछा—बहन, क्यों तबी-अत कैसी है?

उसने कहा—बहन इस वक़्त बिलकुल अकेला रहने को जी चाहता है।

दो घंटे के बाद धन्नो उस कमरे में गईं। सिरहाने जाके बैठीं, माथे पर हाथ रखा। मगर जो बात पूछी, उसके जवाब में यही सुना कि सुलोचना मरी, और मैं ज़िन्दा हूँ। अगर मेरी ज़िन्दगी चाहते हों तो मुझे अपने इलाक़े में कोई जगह दो। नहीं, मैं अपनी जान दे दूँगी। एक हफ़्ते तक, बस, यही कहा की। जब सब बाहर गये तो सलाह हुई, हम क्यों इसकी जान लें, जो कहती है, वह मंज़ूर कर लो। वर्ना अगर कहीं यह पागलपन बढ़ा और इसने ज़हर खा लिया या कूएँ में गिर पड़ी तो बड़ी रुसवाई और बदनामी होगी; और इस रंज में और रंज पैदा हो जायगा। बड़ी रद्दो-बदल के बाद कामिनी के बाप को राज़ी किया और अपने गाँव के एक टीले पर जो दूर तक चला गया था और पहले किसी ज़माने में क़िला था, खपरैल का एक छोटा-सा मकान बनवा दिया। और कहा—अभी तो इसमें रहो। बहुत जल्द इलाक़े के किसी उम्दा मुक़ाम पर कोई जगह तुम्हारा देवर तुमको दिखाएगा। वहाँ उम्दा से उम्दा बाग़ और मकान बनवाओ, और राम का नाम भजो। हम लोग अक्सर क्या यानी रोज़ आया करेंगे। तुम्हारी बहनें, देवरानी, जिठानी, भाई, देवर, सभी कुटुम्बवाले आयेंगे। चाहे लड़कियों का स्कूल खोलो, फ़ीस तो किसी से लेनी नहीं है। इसमें कोई बदनामी नहीं है।

——:o:——

बाईसवाँ अध्याय

जोगिन

जोगिन के गेरुए कपड़े पहनकर कामिनी उस ज़मीन को देखने आई, जो उसके देवर ने उसके लिये तजवीज़ी थी। दरिया यहाँ से आध मील था। कामिनी ने एक बाग़ बनवाया। फूलों के चमन, फूलों की क्यारियाँ। चार चार कोनों पर मनोकामिनी के दरख़्त। चारदीवारी पक्की खिंचवाई। और इर्द-गिर्द चौतरफ़ा आम के झाड़—सफ़ेदा और बम्बई, और बनारस का लँगड़ा। मौलसरी के दरख़्त पहले ही से मौजूद थे। और बाग़ के बाहर दूर तक एक क़तार नीम के दरख़्तों की थी। जब नीम फूलती थी तो अजब तरह की ख़ुशबू आती थी, और उसकी छाया तन्दुरुस्ती के लिये बहुत ही अच्छी थी। बाग़ के बीचोबीच में एक पक्का चबूतरा था—इर्दगिर्द फूले हुए गमले, और दरख़्तों पर तरह-तरह की बेलें; और कुछ अंग्रेज़ी क्रीपर दरख़्तों और दीवारों और बाँस के दरवाज़ों पर भी थीं और उनके रंग-बिरंगे फूल बड़ी बहार देते थे। चबूतरे के सामने एक पक्का हौज़ छलक रहा था। चार मालिनें और दो गोंईं बैल और एक चौकीदार और उसकी औरत बाग़ का स्टाफ़ था; और एक औरत और एक लड़की कामिनी की सेवा में थीं। बाग़ से थोड़ी दूर के फ़ासले पर पक्की सरकारी सड़क थी। वहाँ कामिनी ने, ऐन-चौराहे पर, जहाँ से चार रास्ते जाते थे, एक पक्का इँदारा बनवाया, और उसी से लगा हुआ भैंसों, घोड़ों, टट्टुओं, बकरियों के लिये एक पियाऊ बनवा दिया। इँदारे और पियाऊ पर एक ख़ुश-नुमा खपरैल की छवाई कर दी। और उसी के पास अपने इलाक़े के एक बनिये को बसा दिया, और एक छप्पर बनवा दिया, और इसी छप्पर के पास एक छत पटवा दी—जिसके नीचे एक तरफ एक ब्राह्मण, चार रुपया माहवारी का नौकर, पानी पिलाता; और दूसरी तरफ़ एक भंगवाला बिठा दिया था। कामिनी ने एक धर्मशाला भी यहीं बनवा दिया, जिसमें दस मुसाफ़िर रोज़ टिक सकते थे। और पाँच फ़क़ीरों साधुओं सन्तों ब्राह्मणों को, फ़ी कस तीन पाव आटा, आध पाव दाल, लकड़ी, नमक, आलू, ये चीज़ें दो दिन तक मिल सकती थीं। इसके अलावा कामिनी ने दो संस्कृत स्कालरशिप भी रनबीर सिंह के नाम से मुक़र्रर कीं; एक दस रुपये माहवारी की, दूसरी पंद्रह की। मतलब यह कि जो-जो फ़रमाइश की वह उसके ससुर ने बड़ी ख़ुशी के साथ मंज़ूर कर ली और फ़ौरन रुपया दिया, ताकि उसकी कोई इच्छा बाक़ी न रह जाय, और किसी

बात का अरमान दिल में न रहे। एक मकान कुटी के नमूने का भी बनवा लिया था। उसमें खुद रहा करती थी।

एक रोज़ सोचा कि यहाँ दिन-रात पड़ा रहना और क़ीमती समय बेकार गँवाना कौन अक़्लमन्दी है—कोई ऐसा काम करना चाहिए जिससे दोनों लोक सुधरें। सोचते सोचते यह बात ध्यान में आई कि अमरीकन मिशन की लेडियों से मिले और उनके साथ गाँवों और क़स्बों में जाकर पर्दा करनेवाली औरतों से मिले-जुले और उनको अच्छी-अच्छी सीख दे और पढ़ना-लिखना सिखाए। मिशन की लेडियों से कामिनी ने लिखा-पढ़ी की। वह तो हिन्दुस्तानी औरतों पर एहसान करने और उनको सीधे ढर्रे पर लाने के लिए तुली रहती हैं। फ़ौरन अमरीकन मिशन की दो मिसें पता पूछती हुई पहुँचीं, और बाग़ के बाहर गाड़ी रोककर कार्ड भेजे। कामिनी ने फ़ौरन बुलवा लिया, और हाथ मिलाकर एक कुरसी पर खुद बैठी और उनको भी कुर्सियों पर बिठाया।

एक मिस ने जिसकी उम्र कोई चौबीस बरस की थी, कहा—बी कामिनी आप ही हैं?

कामिनी ने कहा—जी हाँ और कार्ड उठाकर पूछा, मिस एमर्सन किसका नाम है और मिस नोवा कौन हैं?

चौबीस बरसवाली ने कहा—मिस नोवा मैं हूँ और मिस एमर्सन ये हैं।

कामिनी—आपकी मैं मशकूर हुई कि मेरी एक चिट्ठी पर आप यहाँ चली आईं।

नोवा—यह तो हमारा काम है।

एमर्सन—बल्कि हमको अलबत्ता आपका शुक्रिया अदा करना चाहिए कि आपने हमको याद किया। अगर आप हमारे साथ काम कीजिए तो बड़ा फायदा आपके मुल्क की बहनों को हो और खुदा आपको इसका अच्छा फल दे।

कामिनी—अब आप यह बताइए कि आज आप यहीं रहेंगी या चली जायँगी।

एमर्सन—(घड़ी देखकर) नौ बजे हैं। हम पाँच बजे शाम तक ठहर सकते हैं।

कामिनी—बस, तो सब काम पूरा हो जायगा।

नोवा—आप कौन हैं और रँगे हुए कपड़े क्यों पहने हैं, और यहाँ इस तरह रहने का क्या सबब है?

कामिनी—मैं एक ज़मींदार क्षत्री की लड़की हूँ, और एक बहुत बड़े रईस इलाक़ेदार के यहाँ मेरा ब्याह हुआ था। मुझे मेरे बाप-माँ और भाई ने, जो पढ़े-लिखे लोग हैं, बड़ी अच्छी तालीम दी। मेरा पति मुझ पर जान से आशिक़ था, और मैं उस पर। पढ़ा-लिखा, बहुत खूबसूरत; बड़ा जियाला, सिपाही। वह बेचारा लड़ाई में मारा गया; मैं बेवा हो गई।

एमर्सन—अफ़सोस! क्या नाम था?

कामिनी—रनबीर सिंह!

नोवा—तो आप वह छत्री लेडी हैं जिन्होंने इस मुल्क में सबसे पहले अँग्रेजी में मिडिल का इम्तहान दिया?

कामिनी—जी हाँ।

एमर्सन—हमने आपके पति की बहादुरी की बड़ी तारीफ़ अख़बार में पढ़ी थी। आप दुखी हो गई हैं।

कामिनी—ईश्वर की मर्ज़ी। इसमें किसी का क्या चारा है।

एमर्सन—बेशक। और आपके यहाँ दूसरी शादी नहीं हो सकती?

कामिनी—नहीं। मैं तो इसके ख़िलाफ नहीं हूँ। मगर मेरा दिल नहीं चाहता। मैं मर जाऊँगी मगर दूसरे की सेज पर क़दम न रखूँगी। मुझे दिली मोहब्बत थी। वह क्या मर गये कि मेरी हरी-भरी ज़िन्दगी भी साथ ले गये। यह जो आपने कहा, इसका तो खयाल ही नहीं है।

नोवा—औरत अगर अपने दिल को क़ाबू में कर ले तो कोई मुश्किल बात नहीं है। अब यह बताइये कि आप यहाँ क्या करती हैं।

कामिनी—जब से बेवा हुई यहीं रहती हूँ। यह बाग़ बनवा लिया, यह कुटी बनवाई है। और सामने सड़क पर एक पक्का इँदारा और पियाऊ बनवा दिया है, और एक बनिया और उसकी बीवी अपनी गाँव की रिआया में से बसा दिये हैं, और एक भंगवाला। अब मेरी ख़्वाहिश यह है कि आस-पास के गाँव में जाके औरतों को अच्छी-अच्छी बातें सिखाऊँ, पढ़ाऊ, लिखाऊँ, सीना-परोना सिखाऊँ; और जो अन्ध-विश्वास उनकी घुट्टी में पड़ा है, उसको धीरे-धीरे दूर करूँ, और आपसे मदद लूँ। मैं इस सेवा के काम में कुछ थोड़ा बहुत ख़र्च भी कर सकती हूँ। घर की एक पालकी गाड़ी मैंने मँगवाई है। उसी पर सवार होकर हम लोग जाया करेंगे।

एमर्सन—बहुत अच्छी बात है: आपके साथ होने से इतना होगा कि हिन्दोस्तानी शरीफ़ज़ादियाँ जो हमसे ईसाई और मिस होने के सबब से ज़रा भड़कती हैं उनकी भड़क कम हो जायगी।

नोवा—(मुस्कराकर) पहले तो आपको भी वह हिन्दू ईसाई समझेंगी। मगर यह उन पर ज़ाहिर कर दिया जायगा कि ये हिन्दू हैं; छत्री जोगिन।

एमर्सन—पहले तो यह देखिये कि यहाँ से कौन गाँव पास है, और आबादी क्या है और कौन बसते हैं।

कामिनी—यह आप डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के ज़रिये से दरियाफ़्त कर सकती हैं।

नोवा—जी नहीं। इन सिविलियनों में कम ऐसे हैं जिनको हिन्दुस्तान की भलाई का दिल से खयाल हो। ये सिर्फ तन्ख़ाह, तरक़्क़ी और पेंशन के दोस्त हैं।

कामिनी—अच्छा मैं अपने देवर को बुलाकर तहसीलदार के ज़रिये दरियाफ़्त कराऊँगी।

नोवा—अगर आबादी अच्छी हो और लड़कियाँ आ सकें तो हम लोग ख़रचने को भी मौजूद हैं, बशर्ते कि आप दो-तीन घंटे पढ़ाने की तकलीफ बर्दाश्त कर।

कामिनी—मैं तो दिल से चाहती हूँ। इसीलिए आपको तकलीफ दी है।

नोवा—फ़िलहाल इसकी बड़ी जरूरत है कि बच्चों को टीका लगाने के जो लोग इतने ख़िलाफ़ हैं उनको सीधे ढर्रे पर लायें।

कामिनी—ज़रा मुश्किल है। शहर के पढ़े-लिखे लोगों में भी अक्सर ऐसे हैं जो इसके ख़िलाफ़ हैं और गाँवों में तो लोग फ़ौजदारी करने पर तुल जाते हैं। और औरतें तो औरतें, मर्द तक अक़्ल से काम नहीं लेते। अच्छा तो चलिए, पहली मर्तबा इसी का दौरा हो।

नोवा—बातों-बातों में टीका लगाने की तारीफ़ करें।

एमर्सन—इनके कहने का बड़ा असर होगा।

कामिनी—हाँ, आप लोगों को तो वह समझेंगी, कि धर्म लेने आई हैं, और बहुत दिनों तक यक़ीन न आएगा कि मैं हिन्दू हूँ। समझेंगी कि हिन्दू बनके छल करके, धर्म लेने आई हैं। मेरा भी कहना पहले न मानेंगी।

नोवा—आपने कभी ईसाई मजहब की कोई किताब पढ़ी है; इंजील वग़ैरह?

कामिनी—जी नहीं। न पढ़ी है, न शौक़ है। मैं तो दुनिया की बातों को ही थोड़ा-बहुत समझती हूँ, बस! और मेरा धर्म यह है कि आदमी हर धर्म में और हर घड़ी नेक कामों का ख़याल रखे।

नोवा—आप बुरा न मानिएगा, हमारा धर्म यह है कि जिस आदमी को देखें उसको यह हिदायत करें कि ईसाई धर्म अपनावें; क्योंकि हम इस धर्म को बहुत अच्छा समझते हैं, और इसी को सिर्फ़ वह धर्म समझते हैं, जिससे इन्सान नजात और अनन्त जीवन पा सकता है; और सबको हम गुमराह समझते हैं। हिन्दू, मुसलमान, बौध, पारसी, यहूदी, ब्राह्मो, आर्यसमाजी सब गुमराह हैं। अगर सीधे ढर्रे पर हैं तो ईसाई। इसलिये हम जो किसी को समझाएँ कि इस धर्म को अपनाओ तो इससे यह जाहिर होता है कि हमको दुनिया के कुल इन्सानों से हमदर्दी है।

कामिनी—इसमें कोई शक नहीं। मगर याद रखिये कि हर शख़्स अपने धर्म को सबसे अच्छा समझता है, और उसी में मगन है। बस बात सारी यह है और कुछ नहीं। और जो लोग किसी भी मज़हब के माननेवाले नहीं वह ईसाई मज़हब को भी वैसा ही समझते हैं जैसा और मज़हबों को। जो अगलों ने कहा, वह पत्थर की लकीर, इस बात से ईसाई धर्म भी ख़ाली नहीं; और यही बड़ी ख़राबी और धर्मों में है।

एमर्सन—तो इससे यह तो मालूम होता है कि आप किसी धर्म की क़ायल नहीं।

कामिनी—मेरे लफ़्ज़ों को आप भूल गईं। मैंने कहा था, कि जो लोग किसी धर्म को नहीं मानते हैं, वह ऐसा कहते हैं। अपनी खास राय तो मैंने दी ही नहीं।

नोवा—अच्छा, हम आपको किताबें दें, तो आप पढ़ियेगा या नहीं?

कामिनी—बड़े शौक़ से पढ़ूँ। न पढ़ना क्या मानी?

नोवा—ज़रूर पढ़िये। और बहस कीजिये।

कामिनी—बहस इसमें फ़ज़ूल है। जब से दुनिया पैदा हुई है, जब से धर्मों में फ़र्क़ हुआ तब से बहस हो रही है, और अभी तक वही झगड़ा क़ायम है। न हिन्दू-मुसलमानों का झगड़ा तय होगा, न हिन्दू ईसाइयों का, और न मुसलमान और यहूदियों का, न सुन्नी-शीयों का।

नोवा—अच्छा हम कल चार किताबें भेजेंगे।

कामिनी—बर्फ़ का पानी या लेमोनेड पीजिएगा?

एमर्सन—गर्मी के दिन तो हैं ही। मगर आप पिलाइएगा काहे में?

कामिनी—(मुस्कराकर) इतना खब्त हमें नहीं है। (शीशे के टम्बलर में लेमोनेड और बर्फ़ देकर) पीजिए!

नोवा—(पीकर) शुक्रिया। उम्दा लेमोनेड है।

एमरसन—(दूसरे गिलास से पीकर) इस वक़्त इसकी बड़ी ज़रूरत थी।

कामिनी—आजकल गर्मियों में बर्फ़ और पंखा जान है।

नोवा—आप हमारे साथ खाना खा सकती हैं?

कामिनी—जी नहीं।

नोवा—अगर हमारे साथ खाना खाइये तो धर्म जाता रहे?

कामिनी—जी नहीं।

एमर्सन—फिर आपको क्या उजर है?

कामिनी—मुझे खुद तो कोई उजर नहीं है। मगर कई सबब ऐसे हैं कि मुझे ज़रूर परहेज़ करना चाहिए। एक तो यह है कि अगर मैं आपके साथ खाऊँ तो ये जो औरतें सेवा के लिये लगी हुई हैं, ये मेरे बर्तन तक न छुएँ; दूसरे यह कि जितने हिन्दू हैं सब मेरे दुश्मन हो जायँ। तीसरे मेरे मैके और सुसराल के सब मुझे किरस्टान समझने लगें। और जो मुझे मिलता है, वह बन्द हो जाय, रहने को मकान न हो; खाने को न जुड़े। यह आराम न मिले। भूख-प्यास की तकलीफ़ के सबब से हरि का नाम न ले सकूँ। और जो कुछ अपनी बहनों, हिन्दू औरतों, बेवाओं, लड़कियों को फायदा पहुँचा सकती हूँ, वह न कर सकूँ; और फिर कोई हिन्दू हिन्दुस्तान के इस हिस्से में अपनी लड़की को इस डर से अंग्रेज़ी तालीम न दे कि ऐसा न हो, यह भी कामिनी की तरह बेधर्म हो जाय। अब आप ही ग़ौर कीजिए कि कितना बड़ा नुक़सान हो। और फ़ायदा क्या, कुछ भी नहीं?

मिस नोवा और मिस एमर्सन दोनों क़ायल हो गईं, और बात को टाल दिया।

मिस नोवा ने पूछा—अब परसों सूरज-ग्रहन है। आप भी गंगा नहाने जाइएगा, कुछ दान-पुन्न कीजिएगा ?

कामिनी ने जवाब दिया—दान-पुन्न के लिये समझदार आदमी किसी खास वक़्त का पाबन्द नहीं रहता। और न मैं सूरज-गहन और चाँद-गहन को वह समझती हूँ जो ये मूरख लोग राहु और केतु और क्या जाने क्या ऊल-जलूल बताते हैं।

नोवा—आप बेशक खूब पढ़ी-लिखी हैं।

एमर्सन—आप ऐसी को हमारे मिशन में आना चाहिए।

नोवा—हम गिरजा में रोज़ दुआ माँगेंगे।

कामिनी—मेहरबानी आप लोगों की। इसमें कोई शक नहीं है कि मिशन की लेडियों ने हमारे मुल्क को बड़ा फ़ायदा पहुँचाया और पहुँचाती हैं, और हमारे मुल्क को आप का बड़ा शुक्रगुज़ार होना चाहिए।

नोवा—देखिये, कहाँ अमरीका और कहाँ अवध के क़स्बे—सफ़ीपूर, काकोरी। खीरी के जंगल के ज़रा-ज़रा से गाँव, बहराइच की तराई के गाँव—और मिशन का रूपया।

कामिनी—इस हमदर्दी की तारीफ ही नहीं हो सकती। इस पर भी अगर इस मुल्क के लोग क़द्रदानी न करें तो अफ़सोस की बात है या नहीं।

साढ़े चार बजे के क़रीब इन दोनों ने इजाज़त माँगी कि अब हमको रुख़सत कीजिए। कामिनी ने फ़ालसे का उम्दा शरबत बनवाया और बर्फ़ और केवड़ा डालकर दोनों मेहमानों को पिलाया। दोनों ने तारीफ की, और कामिनी बाग़ के दरवाज़े तक गई और हाथ मिलाकर दोनों को बिदा किया। और वह वादा कर गईं कि एक हफ़्ते के अन्दर ही अन्दर आएँगे।

तेईसवां अध्याय

दूसरी शादी पर इसरार और उधर से क़तई इन्कार

सुबह को कामिनी सोकर उठी तो एक ब्राह्मणी, जो खास इसी काम के लिये मुक़र्रर थी, पाँयती बैठी भैरवी की धुन में कौमुदी पढ़ रही थी। आँखें मलती हुई उठीं तो इस औरत से कहा—या तो मोढ़े कुरसी पर बैठा करो या तख़्त बिछवा लो, पाँयती न बैठो। तुम ब्राह्मन हो, हम छत्री। कौमुदी सुनकर बाग़ में थोड़ी देर टहली, और रविशों को देखा। मालियों से बातें कर रही थी, कि उसकी छोकरी ने एक कार्ड लाकर दिया—ठाकुर शमशेर जंगसिंह।'

कामिनी ने कहला भेजा कि कहो—मैं मर्दों से नहीं मिलती; मजबूर हूँ। उसने वहाँ से कहला भेजा कि बड़ा जरूरी काम है। भलेमानुस हूँ। ठाकुर हूँ। जमींदार का लड़का हूँ। न चोर हूँ न कोई उचक्का हूँ । और दूर से आया हूँ। कामिनी ने फिर जवाब दिया कि अगर बड़ा जरूरी काम है तो कल आइये, मैं अपने देवर या भाई को बुला लूंगी। उसने मालिनों को बुलाया और उनको समझाया कि अपनी बीबी से कह दो कि मैं बड़ी दूर से आया हूँ, कोई खटिया, मूँढ़ा, मचिया भेज दीजिए। ज़रा देर टिकने भर का सहारा तो हो जाय। कामिनी ने फ़ौरन कुरसी भेजी और ताजे फालसे का शरबत और केवड़ा और वर्फ़। उसने बड़ी दुआएँ दी, और फिर मिलने की ख्वाहिश जाहिर की। कामिनी ने थोड़ी देर ग़ौर करके इजाज़त दी, कि अच्छा आने दो।

मालिन—चलिये, सरकार ने याद किया है।

जवाब—ए मैं तेरी ज़बान के क़ुरबान।

मालिन—इनाम का काम किया है, सरकार।

जवाब—लो (दो रुपये देकर) अभी और देंगे।

मालिन—आप देनेवाले सलामत रहें।

जवाब—जब हम जाने लगें तो वाहर हमसे मिलना।

मालिन—अच्छा सरकार।

जोगिन ने दूर से देखा तो पुलिस का अफसर। वही वर्दी, वही पगड़ी, वही किर्च, वही तलवार। कम उम्र आदमी। कोई तेइस-चौवीस बरस का सिन। गेहुँआ रंग। छोटी खुशनुमा दाढ़ी, स्याह घनी। खुलता हुआ रंग। तनता हुआ, इत्र में डूबा हुआ, आके मूँढ़े पर बैठा।

कामिनी—मैं किसी मर्द से नहीं मिलती, सिवाय अपने देवर या भाई के।

मर्द—मुझे भी अपने देवर या भाई की ही तरह समझो।

कामिनी—आप किस जरूरत से आये हैं, वह फ़रमाइए। मैं तो सिर्फ एकान्त का जीवन ही अपने लिये पसन्द करती हूँ।

मर्द—सिर्फ़ दर्शनों को आया हूँ।

कामिनी—दर्शन मेरे कैसे। मैं कोई पहुँची हुई नहीं, कोई फ़क़ीर नहीं, कोई महन्त नहीं, कोई पुजारी नहीं। एक बेवा बेकस औरत हूँ।

मर्द—जो मुझे सबसे ज़्यादा प्यारा है उसी की क़सम खाके कहता हूँ कि जो तेज तुम पर है वह किसी मर्द औरत पर मैंने आज तक नहीं देखा।

औरत—हाँ, है तो ऐसा ही।

मालिन—सरकार जहाँ सोती हैं, मालूम होता है जैसे बेला खिला है।

औरत—फुलवारी दिन रात हँसती हुई दिखाई देती है।

मालिन—पानी कुएँ का इनके आने से और भी मीठा हो गया।

मर्द—वाह! वाह रे तेज!

मालिन—इसी में बिचारी रात दिन रहा करती हैं।

औरत—राज है; गाँव हैं। घोड़े, हाथी, रथ, बहल, नौकर-चाकर, बग्घी, मकान, कोठी, बँगले—दुनिया भर का आराम है। और सबको त्याग कर बिचारी इस जंगल में पड़ी रहती हैं; जहाँ आदमी न आदमी का पता। हम पंच टहल को हैं, बस।

मर्द—अरे, ये जहाँ चाहे बैठ जायँ, इनके लिये जंगल में मंगल है। अब देखो, यह जंगल ही है, या कुछ? और फिर यहाँ मंगल है या नहीं? और यहीं पर क्या जहाँ ये बैठ जायँगी वहाँ मंगल हो जायगा। अच्छा अब तुम लोग अपना-अपना काम करो; हमारे सबब से किसी काम में हर्ज न होने पाये।

मालिन इशारा समझ गई और दो रुपये भी पा चुकी थी। फ़ौरन चली गई। औरत को भी उसने किसी बहाने से टाल दिया। कामिनी कुछ बेवक़ूफ़ तो थी नहीं, ताड़ गई, और दिल में ठान लिया कि अब इस पापी को न आने दूंगी। इतने में इन साहब की ज़बान खुल चली। फ़रमाया: जोगिन जी, हम पुलिस के सब-इन्स्पेक्टर हैं, और यह बाग़ और वह सड़क सब हमारे ही थाने में है। मैं सवा सौ रुपये माहवारी पाता हूँ और छत्री हूँ। तुम्हारा ज़िक्र हमने चौकीदारों से सुना, कि एक जोगिन ने बाग़ बनवाया है, और यहाँ आके टिकी हैं। हमने कहा चलके देखें। तुम्हारी हालत पर हमें अफ़सोस आता है कि ऐसी अच्छी हैसियत और दौलत होते-साथी तुम बेमर्द के अकेली पड़ी रहती हो। यह तुमने ख़ूब किया कि मैके और सुसराल से अलग होके रहीं। मगर जो मर्द नहीं तो क्या। और इसका सामान हम आसानी से कर सकते हैं। मैं पुलिस का सब-इन्स्पेक्टर हूँ और यहाँ का बादशाह। मेरे होते-साथी कोई तुम्हारा बाल बीका नहीं कर सकता, कोई बद निगाह से देखे, तो आँखें तलवों के तले मल डालूँ। मगर बात सिर्फ़ इतनी है कि तुम हमारी ही होके रहो। फिर खुदाई भर तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई कारंवाई नहीं कर सकती। जिसको इशारा कर दूँ, तुम्हारे दुश्मन को मार डाले। अगर मन्ज़ूर हो तो रोज़ दोपहर को या शाम को आऊँ। अपना-तुम्हारा दिल बहलाऊँ—कि बेवा हो।

कामिनी ने यह सब सुनकर, बात को टालकर पूछा—तुम्हारी बीबी है? उसने क़तई इनकार किया। पूछा—माँ ज़िन्दा हैं? कहा—नहीं। पूछा—बाप? कहा—दस बरस हुए, मर गये। पूछा कोई औरत है? कहा—हाँ, एक बहन है, बेवा बिचारी। कामिनी ने कहा—मुझ बेवा को तो माफ़ करो। तुम अपनी बेवा बहन का दिल बहलाओ। इन्स्पेक्टर समझ गया, ख़ामोश हो रहा। कामिनी ने नौकरानी को बुलाया, और कहा—नहाने का सामान लैस करो। बहुत अच्छा' कहकर वह चली गई।

इन्स्पेक्टर—जोगिन, ज़रा तुम्हारे बाग़ की सैर करना चाहता हूँ।

जोगिन—जाइए। वह बाग़ ही कौन बड़ा है।

इन्स्पेक्टर—आप साथ चलिए। हाथ में हाथ देकर टहलें।

जोगिन—मैं किसी मर्द के साथ टहलना नहीं चाहती।

इन्स्पेक्टर—क्यों अपनी जवानी की दुश्मन हुई हो। कहा मानो, हमारी हो जाओ।

जोगिन—मैं दुखिया औरत हूँ और इस तरह की बातचीत की आदी नहीं। अब तुम यहाँ से चले जाओ। भला इसी में है।

इन्स्पेक्टर—अरी औरत, हम वह हैं जिनके आने को अच्छे-अच्छे अपना फ़ख्र समझते हैं। और तुमको इतनी चिढ़ हो गई है! अब भी हम समझाए देते हैं। वर्ना बहुत पछताओगी, और रोते न बनेगी, इतना याद रखना। हम अभी चिरौरी और मिन्नत करते हैं; अगर इस पर भी न माना तो देख ही लोगी—वह बोदी मार दी हो, कि तमाम उम्र रोया करो। और मेरा बाल तक बीका न हो। मैं यहाँ का बादशाह हूँ। बादशाहों से कहीं जोगिनें मुक़ाबला कर सकती हैं?

जोगिन—अब तुम यहाँ से चले जाओ। अगर मेरे मैके और सुसराल के मर्द सुन लेंगे तो भुट्टा-सा सर उड़ा देंगे। तू समझता क्या है, चल दूर हो यहाँ से।

इन्स्पेक्टर (हैरत से)—अल्लाह! यह ग़ुस्सा! हो राजपूत की लड़की जरूर! अच्छा, गुस्सा न करो, मैं जाता हूँ। कल फिर दरशनों को आऊँगा। और डंडौत करूँगा। अब न बिगड़ो, मैं तुम्हारे ही भले के लिये कहता था कि यह जवानी और यह हुस्न, और यों ग़ारत हो जाय। और मेरा वह रौब यहाँ है—और दूर-दूर है कि कोई मेरे खिलाफ चूँ नहीं कर सकता। कोई कानों-कान तो सुनेगा नहीं। अच्छा, तुम आज दिन भर, रात भर, फिर ग़ौर कर लो। कल मैं मिज़ाजपुरसी को आऊँगा।

जोगिन—नहीं। अब आप तकलीफ़ न कीजिएगा।

इन्स्पेक्टर—जानी! खुश कर दूँगा।

'जानी' का लफ़्ज सुनकर कामिनी आग-भभूका हो गई, और वहाँ से उठके चल दी। इन्स्पेक्टर ने यह शेर पढ़ा—

ग़रूरे-हुस्न इजाज़त मगर न दाद, ए गुल,
कि पुरसिशे बकुनी अन्दलीबे-शैदा रा!

कामिनी को और ग़ुस्सा मालूम हुआ कि मेरे उठ आने पर भी आवाज़ें-तवाज़ें कसता है। इतने में इन्पेक्टर ने कहा—

एक बोसा हमने माँगा राहे-मौला, वाहजी,
फूटे मुँह से यह न निकला, लेते जाओ शाहजी!

'अब हम जाते हैं।' यह कहा ही था कि चौकीदार ने सलाम किया और कहा—सूबेदार साहब, रात को पहरे का कोई चौकीदार नहीं मिलता। इनको मौक़ा मिल गया कि जरा और बैठ जायँ। मोंढे पर टिक गये और चौकीदार को हुक्म दिया कि जाके हमारे चौकीदार को बुलाओ।

वह उधर गया, इधर इन्होंने मालिन से कहा कि जोगिन से संदेसा दो कि हम प्यासे बहुत हैं। अगर ज़रा-सा पानी पिला दो तो एहसान होगा। कामिनी को तरस आया। बर्फ का ठंडा पानी बनाकर खुद ले गई और कहा—पानी है। इन्स्पेक्टर ने उठकर बड़े अदब के साथ पानी लिया। आबखोरे को चूमा, आँखों से लगाया और पानी पी कर कहा—कलेजे में जैसे ठंडक पड़ गई, आँखें खुल गईं, अच्छा, अब जरा बैठ जाओ!

कामिनी—यह मेरे नहाने का वक़्त है।

इन्स्पेक्टर—मैंने जो कहा माफ़ करना। मेरा मतलब फ़क़त यह है कि अगर तुम्हारी मर्ज़ी हो तो हमारे साथ भँवरी फिरवा लो!

कामिनी—नहीं, मेरी मर्ज़ी नहीं है। मैं इसके बिलकुल खिलाफ़ हूँ। अब इसका ज़िक्र भी न करना। मेरे मैके और सुसरालवाले दोनों मिलके मेरी गर्दन उड़ा दें। और वह न भी उड़ाएँ तो हमसे कब मुमकिन है? मैं तो बस अब मरते दम तक इसी हालत में रहूँगी। इस बात को अब कभी न दोहराना। और आज से आप यहाँ आने की तकलीफ़ भी न कीजिए।

इन्स्पेक्टर—अगर शादी नहीं ही करनी थी तो जोगिन बनके क्यों हम लोगों को तरसाती हो? इतनी कमसिन होके क्यों अकेली रहती हो? फ़क़ीरी अख़्तियार की, तो क्यों बर्फ़ का पानी पीती हो? कुरसियाँ, मेज, मसहरी, यह सब क्यों है? मिट्टी पर क्यों नहीं सोतीं। यह रूप क्यों साधा है?

कामिनी—मैं तो पहले ही कह चुकी हूँ कि मैं न जोगिन हूँ, न साधू न सन्त। रंज और दुख के मारे इस एकान्त में आके बैठी हूँ। मुझे कोई यहाँ दिक़ क्यों करे। और यह जो रिश्ते की बात आपने छेड़ी, इससे मुझे माफ़ रखिये।

इन्स्पेक्टर—मेरी तो जान जाती है, और तुम माफ़ी माँगती हो।

जोगिन—मैं फिर कहती हूँ कि मुझे माफ़ करो। तुम इस तरह की बातें करते हो और मेरे दिल पर इसका असर पड़ता है। मुझे जैसे तीर-सा लगता है जो कलेजे के पार हो जाता है। मैंने बड़ी गलती की जो तुमको आने दिया।

इन्स्पेक्टर—यह न कहो। मैं फाटक तोड़के तहक़ीकात करने आ सकता हूँ। पुलिस इन्स्पेक्टर बड़ी चीज़ है। मगर अभी तक मैं चिरौरी ही करता हूँ। अब भी कहना मानो और मेरी ही होकर रहो। वर्ना खैरियत नहीं। दिल में ग़ौर कर लो। सोच लो, समझ लो, आगा-पीछा समझो, भलमंसी से काम लो।

कामिनी—तुम क्यों मुझ दुखिया के पीछे पड़े हो? मुझे न सताओ। नहीं इसका खमियाजा उठाओगे।

सब इन्स्पेक्टर मारे गुस्से के यहाँ से चला गया।

चौबीसवाँ अध्याय

गुलबिया का पाजीपन

रात को कामिनी ने करीमन को मिट्टी के कोरे बरतनों में खाना खिलाया और बाग़ के चबूतरे पर कुरसियों पर बैठकर दुनियाँ की बातें करती थीं—कि मालिन ने आके कहा—बीवी, एक औरत किसी ठकुराइन के घर से आई है, बुलाती है। कामिनी को हैरत हुई कि इस वक़्त रात को औरत क्या करने आई। पूछा—कौन ठकुराइन? और औरत क्या कहती है! वह बोली—ए वो क्या खड़ी है। मिल लीजे, ना!

जोगिन मिलने गई तो देखा—अंगूर की रविश में एक औरत सफ़ेद कपड़े पहने खड़ी है। करीब जाकर कहा—कौन है? उसने पास आकर कहा—ठकुराइन चन्द्र कुँअर ने भेजा है और कुछ कहा है, इधर आके सुन लीजिए। कामिनी कोने में चली गई और इस औरत ने उस बेचारी को गले लगाके चूम लिया और उसने चीख़ मारके कहा—चौकीदार दौड़ो! जब तक लोग दौड़ें और औरतें पहुँचें और चौकीदार आये तब तक उसने फिर गले लगाना चाहा। और कामिनी ने ज़ोर से चीख़ मारी; और चौकीदार और करीमन और ब्राह्मणी, जो खाना पकाती थी, और बारिन यह सब पहुँच गईं; और वह औरत भागी। चौकीदार पीछे दौड़ा मगर न पा सका।

करीमन—यह क्या भेद था? औरत तो न थी।

कामिनी—औरत नहीं जी; ख़ासा भला-चंगा मर्द था।

करीमन—(दाँतों तले उँगली दबाकर) अरे! तोबा, तोबा। मैं समझी कोई भूत-परेत था।

मालिन नं० १—यह आया किधर से? कपड़े मर्दों के पहने था कि औरतों के?

कामिनी—औरतों के। मैंने पहचान लिया। परसों इसका ख़मियाज़ा उठायेगा। अगर सूरत न बदल जाय तो हमारा ज़िम्मा। मेरा कुछ नहीं गया। लेकिन मैं छत्री की लड़की नहीं जो पूरा बदला न लूँ, आज से और सौ बरस तक।

मालिन नं० २—आज यह नई बात हुई। मेरा तो कलेजा दहल गया।

कामिनी—इसकी पूरी-पूरी तहक़ीक़ात होगी। तुम देखती जाओ।

करीमन—और आदमी भले चंगे हैं। मगर इत्तफ़ाक़ की बात।

कामिनी—जैसे ही मैं पास गई और पूछा, कहाँ से आई हो, कौन हो; ए बस, आग लगे इसकी जान को—लिपट गया, और पाँव पर टोपी रखके कुछ कहने को था कि मैंने शोर मचाया। बस वही हरकत। मैंने पहचान लिया।

इतने में बूढ़ा भंगवाला आया। उसने सब हाल बताया कि मैं दुकान बढ़ा रहा था। इँदारे के पास एक मर्द से गुलबिया मालिन बात कर रही थी। इस मर्द ने कपड़े उतारे और गुलबिया के साथ-साथ इस तरफ़ चला। रास्ते में मैंने देखा कि उसके कपड़े गुलबिया लिये खड़ी है और वह पकरिया के दरख़्त के पास खड़ा पहन रहा है। मैं जानता हूँ कि वह औरतों के कपड़े पहन रहा था। गुलबिया को निकाल देना चाहिए। इस क़ाबिल नहीं है कि बहू बेटियों में रहे।

यह सुनते ही सब औरतें आग हो गईं और गुलबिया को कोसने और बुरा-भला कहने लगीं। चौकीदार ने गुलबिया को पुकारा तो दूर से उसकी आवाज़ आई—आती हूँ! सबको यक़ीन हो गया कि गुलबिया की कारस्तानी है। जब गुलबिया आई तो उससे पूछा—तू कहाँ गई थी। आयँ-बायँ-शायँ बताने लगी। सब ने ले-दे की और खूब आड़े हाथों लिया।

'ऐसी बात भलेमानसों की औरतों में न करनी चाहिए।'

'कुटनापा कहीं और करो। यहाँ खोपड़ी गंजी हो जायेगी।'

'इसको डूब मरना चाहिए। मालिन है या किसी बेसवा की नायका?'

'इसको घर से निकाल दो, मुई मालजादी कुटनी, अपने भतार को लेके आई थी!'

'अरी यह औरत कौन थी जिसको तू लाई थी? औरतें तेरे देस में ऐसी ही होती हैं?'

गुलबिया मालिन ने तुनुककर इन सब बातों का जवाब यों दिया। अरे मैं भला क्या जानूँ, उसके दिल में पाप है। सीधी औरत, किसी के दिल का हाल क्या जानूँ? जो जानती कि मर्द है तो दाढ़ी पकड़ के नोच लेती!

देर तक यही बहस रही। सुबह को कामिनी ने घरबार ब्राह्मणी और मालिनों और चौकीदार के सपुर्द किया और दुर्गा की गाड़ी पर सवार होकर बारिन और करीमन को साथ लेकर गाँव चली। रात को भंगवाले से कुछ कह आई थी, जिसका हाल आगे चलकर मालूम होगा।

जब गाँव में गाड़ी दाख़िल हुई तो करीमन इत्तला करने के लिये अन्दर गई, और वहाँ जाके रात का सब हाल कहा, कि गुलबिया मालिन ने जोगिन बिचारी की आबरू लेने की फ़िक्र की थी। दुर्गा और धन्नो को बड़ा बुरा मालूम हुआ। और दुर्गा के पति लाला शादीलाल को भी बड़ा गुस्सा आया। जब कामिनी और बारिन अन्दर आयीं तो दुर्गा और धन्नो खुश-खुश मिलीं। शादी-लाल ने भी झुककर प्रनाम किया। जब बैठ चुकीं तो रात के वाक़ए का ज़िक्र छिड़ा।

दुर्गा—बीबी हमारा बस चले तो इस बात की कोशिश करें कि इस मालिन मुई की लाश फड़कती नज़र आये।

जोगिन—ए बुआ, इतने दिन तक हमारी संगत में रहकर इतना क्रोध! हमारी यह राय है कि जो अपने से बदी करे उससे नेकी करे।

लाला—जोगिन साहब, तुम फ़रिश्ता क्यों न हुईं। दूसरी औरत होती तो उसका अपना लहू-पसीना एक करती। दाँतों से बोटियाँ नोचती। और तुम हो कि उफ़ नहीं करतीं।

दुर्गा—(लाला की बीबी) बुरा काम किया इस हरामज़ादी ने। मुँह पकड़ के झुलस दे ऐसी बद औरत का। ख़ास पूरे मर्द को औरत के भेस में जवान औरत से मिलवा दिया। लूका लगा दे ऐसी को।

जोगिन—मालूम होता है परमेशर मेरा इम्तहान ले रहे हैं। मगर अब तक तो मैं पूरी उतरी। आगे का हाल किसी को क्या मालूम है। किसी ने सच कहा है "का जानों मोरी का गत होय!" सिवाय परमेशर के और कोई नहीं जानता। हमने पढ़ा और सुना है कि जिन औरतों की नेकी की लोग क़सम खाते थे और दुआएँ माँगते थे कि या ख़ुदा, ए परमेशर, ए देवी देवताओं, ए पीर पयम्बर, जैसी नेक बीवी, जैसी पतिव्रता फलानी औरत है, वैसी हमारी औलाद, हमारी बहू-बेटियाँ हों; और वही औरतें बिगड़ गईं। ऐसी कायापलट हुई कि कुछ से कुछ हो गया। इसमें कोई ग़रूर की नहीं ले सकती। बड़े बोल का सर नीचा।

बारिन—अच्छा उसकी बदनीयती थी कि नहीं?

जोगिन—मैं जब तक उसकी नीयत से अच्छी तह वाक़िफ़ न हूँ, तब तक उसको बदनीयत नहीं कह सकती।

लाला—यह तो जोगिन साहब आपका बिलकुल ही सीधापन है।

जोगिन—जी नहीं, सीधापन नहीं है। मैं सच कहती हूँ। यह आपको क्योंकर मालूम हुआ कि उसकी नीयत ख़राब थी? शायद वह इसी में मेरी भलाई समझती थी। शायद उसकी दिल से यह राय हो कि मैं नाहक़ अपनी जवानी को जंगल मैदान बयाबान में तबाह कर रही हूँ; मेरे लिए वह यही बेहतर समझती हो कि मैं किसी की होके रहूँ—अपनी ज़िन्दगी तलख़ न होने दूँ। अगर यह उसने किसी लालच से नहीं किया तो हम उसको बदनीयत नहीं कह सकते।

दुर्गा—भला एक राँड बेवा जवान औरत को एक मर्द से जो ख़ुद जवान है इस तरह मिलाना कौन-सी नेक-नीयती है?

जोगिन—शायद उसका मतलब यह हो कि मेरी और उसकी शादी हो जाय।

दुर्गा—ए यह तुम क्या कहती हो, जोगिन। हिन्दू की बेवा की शादी कैसी!

जोगिन—होती है। और होती थीं, और शास्त्र के रू से जायज़ है।

दुर्गा—हम न मानेंगे। सितम हो जाय।

जोगिन—मैं किताबों से और बड़े-बड़े पंडितों के कथन से साबित कर दूँ!

लाला—हम मानते हैं कि जोगिन साहब की बात सही है। अब रस्म नहीं है, यह हमने माना। मगर हिन्दुओं में बेवा की शादी नाजायज़ है।

जोगिन—अब भी बराबर होती है। पूना और नासिक और काशी के बाज़-बाज़ पंडितों ने खुले बन्दों और कइयों ने छिपे तौर पर राय दी है कि बेवा की शादी शास्त्र के रू से मना नहीं है। मगर इसका रिवाज ऐसा उठ गया है कि अब ऐब समझा जाता है।

दुर्गा—एक बात पूछूँ, जो बुरा न मानो।

जोगिन—पूछिये। मैं समझ गई।

दुर्गा—अच्छा, फिर, समझ गईं तो बताओ। जो बुरा ही नहीं समझतीं तो तुमने यह जोग क्यों साधा, और अकेली क्यों हो? बुरा मानने की बात नहीं है।

जोगिन—बुरा मानने की कौन बात है। बुरा तो मानती ही नहीं। देखिये बात यह है कि मैं हिन्दू बेवा की शादी को बुरा नहीं समझती, मगर मैंने दूसरी शादी इस सबब से नहीं की कि मुझसे दूसरे मर्द को अपना दूल्हा न बनाया जाता। वैसा मुझे इस संसार में अब मिल नहीं सकता। मुझे जो मोहब्बत उसकी थी उसका हाल मैं जानती हूँ और परमेश्वर। हाय, मैं उनके बाद दूसरे मर्द को मुँह दिखाऊँ! उसकी सेज पर बीबी बनके सोऊँ! ज़हर खा लूँ मगर यह न करूँ। मैं उसको (हंस की मादा को दिखाकर) देखकर सोचती हूँ कि इन जानवरों को इतनी मोहब्बत अपने जोड़े से होती है और हम इन्सान होकर ऐसी बेहयाई पट्टी आँखों पर रख लें कि प्रेमी पति के बाद दूसरे मर्द के साथ जायँ। हम अगर कभी ऐसा सोचें तो हमारी औक़ात पर लानत!

दुर्गा—बस, ऐसा ही सबको समझना चाहिए।

जोगिन—पाँचो उँगलियाँ बराबर नहीं होती हैं। बाज़ी औरतें ऐसी होती हैं कि वह मनाती रहती हैं कि पति मर जायँ तो गुलछर्रे उड़ायँ; पति से जिनका दिल नहीं मिलता, और रुपया खाने को, घर में बहुत होता है और दिल की भी बद होती हैं, वह ज़रूर चाहती हैं कि पति न रहे तो खूब हो; मज़े से खुल खेलें: एक पति नहीं, बीस हो जायँगे। बाज ऐसी होती हैं कि उनके पढ़े-लिखे बाप भाई उनकी दूसरी शादी करने के खिलाफ नहीं होते, और वह अपनी भलाई इसी में समझती हैं।

दुर्गा—बुरी बात है कि नहीं?

जोगिन—अगर औरत नेकी के साथ रह सके तो कोई ज़रूरत नहीं है, और अगर न रह सके तो बदचलन हो जाने से यही अच्छा है कि दूसरी शादी कर ले।

लाला—इस बात को हम मानते हैं।

जोगिन—कितनी बड़ी जुल्म की बात है कि सात सात बरस की बच्चा, और दूल्हा मर गया; और वह तबाह हो गई। अगर करोड़पति है, तो उसको

दुनिया का कौन आराम है, और अगर गोंदनी की तरह जेवर से लदी है, तो उसको क्या सुख है। सोने का कौर भी कोई खिलाये तो क्या। हाय, पति पति ही है, नहीं तो जिन्दगी तलख़ है, जीना बेकार। हाँ, अगर दुनिया को कोई फ़ायदा पहुँचाए तो अलबत्ता अच्छा है; बेवा की जिन्दगी इससे बेहतर और किस काम में आ सकती है।

लाला—हमने जब अख़बारों में रनबीर सिंह की ख़बर सुनी तो रोना आ गया। बड़ा गम किया था। और सच यों है कि बड़ा ही जीवट का आदमी था। सूरमा जिसे कहते हैं। तुमने बेशक सच कहा है कि ऐसे शौहर के बाद दूसरे मर्द को मुँह दिखाना गुनाह है।

जोगिन—(आँखों में आँसू भर कर) क्या जानिये क्या याद आता है! जब सोचती हूँ, तो पहरों दिल क़ाबू में नहीं रहता, उमँड़ आता है। मैंने सोचा कि मुझे क्या करना चाहिए। सोचते-सोचते सब की इजाजत से यह काम शुरु किया, कि ईसाई औरतों के साथ घर-गिरहस्तों की बहू-बेटियों में जाऊँ, उनको पढ़ाऊँ-लिखाऊँ, सीना-परोना सिखाऊँ, काढ़ना बताऊँ, मोजे-जुर्राब बनाना सिखाऊँ। रात को कुटी में आके पड़के सो रहूँ। उसका नाम लूँ। मोटा-झोटा खाना खाऊँ। दो घड़ी जोड़े के इस फटियल से दिल बहलाऊँ कि जो मुझ पर पड़ी है, वह इस बिचारी पर पड़ी है।

लाला—यह तो बहुत ही अच्छा आपने इरादा किया। जब तो भलेमानस लोग अपनी बहू-बेटियों को बेतकल्लुफ़ आपके यहाँ भेज देंगे। लड़कियों के मदरसे अवध में हर जिले में हैं। मगर ऊँचे घरानों की लड़कियाँ नहीं जातीं। ऐब समझती हैं। डोलियाँ भी बहुत भेजी जाती हैं, पढ़ाई भी मुफ़्त होती है, किताबें भी मुफ़्त दी जाती हैं। मगर ग़रीबों और नीच क़ौमों की लड़कियों के सिवा और कोई नहीं जाती। बँगालियों और पारसियों की लड़कियाँ ईसाइयों की लड़कियों के मदरसे में जाती हैं। मगर इन दोनों क़ौमों ने हम लोगों से सुघड़पने और तालीम में कहीं ज्यादा तरक़्क़ी की है। हम लोग अभी उनका मुक़ाबला नहीं कर सकते। हमारे मुल्क में तो अभी तक अक्सर मर्द ऐसे पाओगे, जो यों तो बड़े शरीफ़ज़ादे और रईस हैं मगर जाहिल हैं और अक्सर मर्द ऐसे पाओगे जो औरतों की तालीम के दुश्मन हैं। भला ऐसे मर्दों से कब उम्मीद हो सकती है, कि अपनी लड़कियों को तालीम देंगे। अक्सर मर्द भी ऐसे बाक़ी हैं जो धर्म के विचार से लड़कों तक को अंग्रेजी की तालीम से दूर रखते हैं, लड़कियों की कौन कहे?

दुर्गा—क्या बंगालयों में बेवाओं की शादी जायज है?

जोगिन—नहीं। अच्छे-अच्छे पढ़े-लिखे बंगालियों तक में भी इसकी रस्म नहीं है। हाँ, ब्राह्मो जो उनके हाँ एक धार्मिक गिरोह है, वह लोग शादी-ब्याह को जायज रखते हैं। मिस्टर मलाबारी नाम के एक पारसी विद्वान हैं। बम्बई के इस

बहुत बड़े आदमी ने अपना जीवन बेवाओं की भलाई में लगा दिया है। इसको बुरा मालूम होता है कि हज़ार बेवाओं में एक भी इस सबब से आवारा हो जाय कि वह बेवा हो गई है।

दुर्गा—यह तो हठधर्मी की बात है। जिनके पति कल्ले पर मौजूद हैं, क्या वह नेक ही रहती हैं। अगर ब्याही हुई औरतें सब नेकी का जामा पहने रहतीं तो मैं ज़रूर कहती कि बेवाओं की भी शादी होनी चाहिए। लेकिन हमको इस बात का दावा है कि हिन्दू की बेवा के पावँ धो-धोके पिये ! और यों 'नेक-अन्दर बद और बद-अन्दर नेक' तो सब कहीं होती हैं।

जोगिन—यह सच है। हिन्दुओं की बेवाओं बिचारियों पर जो सख्तियाँ होती हैं उनको वही झेल सकती हैं, दूसरी नहीं झेल सकतीं। मगर इन सख्तियों से उन पर ख़ामख़ा ज़ुल्म होता है या नहीं; उनका दिल कुढ़ता होगा या नहीं; मर जाने को इस ज़िन्दगी से अच्छा समझती होंगी या नहीं: ज़रूर समझती होंगी। क्या परमेशर ने इनको नहीं बनाया है? क्या उनके जान नहीं है, हाय ! उन पर यह क्या कम मुसीबत है कि राँड-बेवा हो गईं? उनको ढारस और सहारा देना चाहिए; न यह, कि हर क़दम पर और हर बात में हम उन पर साबित करें कि वह बेवा हैं। हाय, यह क्या बेरहमी है! यह लहू कैसे सफ़ेद हो गये हैं। यह चंगेज़ ख़ाँ हलाकू की आदतें हमने क्यों सीख ली हैं? इन बेगुनाहों की जान के हम क्यों दुश्मन हुए हैं। उन्होंने क्या क़सूर किया है?• और सबको जाने दो। जिन बेचारी मासूम लड़कियों ने दूल्हा का मुँह भी नहीं देखा—हाय, जानती भी नहीं कि दूल्हा किसको कहते हैं, सास क्या चीज है, सुसरा कैसा होता है; जो सिर्फ इतनी गुनहगार हैं कि उनके अनजाने में, हमारी और तुम्हारी बेवक़ूफ़ी से, भँवरी फेरी गईं उन ज़रा-ज़रा से बच्चों का बेवा हो जाना सितम ही तो है।

दुर्गा—हाँ, यह तो सच कहती हो। उन नन्हीं-नन्हीं मासूमों की तो फिर भँवरी न फेरनी चाहिए। किसी के सामने कहूँ तो ताने दे कि वाह, अच्छी बातें सीखी हैं!

लाला—हम तो विधवा विवाह के खिलाफ़ नहीं हैं।

जोगिन—कोई पढ़ा-लिखा इसके ख़िलाफ न होगा।

दुर्गा—सख्ती तो बेचारियों पर बड़ी होती है। एक तुम अपने ही को देखो, राज करती थीं और अब किस हाल में हो।

जोगिन—हम पर पड़ी है ऐसी तो हम क्या करें।

लाला—मुसीबत जो आप पर पड़ी वह तो ज़ाहिर है मगर आपने इस हाल में सेवा का धर्म भी ख़ूब निभाया है।

जोगिन—अपने दो घड़ी दिल बहलाने के लिये किया, किसी पर कोई एहसान नहीं।

लाला—इसका पुन्न तो मरनेवाले की आत्मा को पहुँचेगा।

जोगिन—(आँखों में आँसू भरकर) तुम्हारी कामना परमेश्वर सच्ची करे।

लाला—जो तुमने सीखा था, उससे ऐसा फ़ायदा पहुँचा रही हो कि पंच-कोसी आदमी तुम्हारा जस गाते हैं।

जोगिन—हमारे सबब से जो किसी का फ़ायदा हो तो उससे ज्यादा खुशी हमारी और क्या हो सकती है!

दुर्गा—फ़ायदा तो तुमसे ऐसा है कि हमारा ही दिल जानता है।

चार बजे तक ज्ञान और सीख की बातें होती रहीं। चार बजे कामिनी ने इन सब के साथ खाना खाया और बिदा ली। लाला शादीलाल ने अपना एक सिपाही साथ कर दिया और उसको हुक्म दिया कि जब तक हम न बुलाएँ या यह बिदा न दें, तब तक रात-दिन वहीं रहना और जो हुक्म दें वह बजा लाना। कामिनी से चलते वक़्त धन्नो ने बहुत ज़िद की कि यहीं रह जाओ। शायद वह फिर किसी बहाने से आये और गुलबिया को तुमने निकाल बाहर भी नहीं किया है। शादीलाल और दुर्गा और करीमन ने भी कई बार कहा तो कामिनी ने कहा—साफ़-साफ़ यह है कि मैंने अपने भाई और देवर को बुलवाया है। जब वह आएँगे, तो इस मालिन को पूरी सज़ा दी जायगी और जो बद आदमी औरत बनकर आया था, उसको भी मैंने पहचान लिया है। मेरा भाई और देवर उसके गलफड़े चीरके धर देंगे। आप देखती ही जाइए।

बिदा लेकर जोगिन बाग में आयीं। रात भर सिपाही और गाड़ीवान और चौकीदार और दोनों मालिनों और बारिन और ब्राह्मनी और भंगवाले ने खूब चौकसी की। सुबह को कामिनी का देवर मानसिंह और भाई इन्द्रबिक्रम सिंह और पद्मिनी, बड़ी बहन शिवरानी और कमला—यह क़ाफ़िला आया। दोपहर तक कुल हाल इन सब ने मालिनों और चौकीदारों और भंगवाले और बारिन और ब्राह्मणी से सुना, और उस कुटनी मालिन गुलबिया के भी बयान क़लम-बन्द कर लिये। और इन्द्रबिक्रम सिंह को बाग़ में छोड़कर मानसिंह घोड़े पर सवार हुआ, और यह जा वह जा।

पच्चीसवाँ अध्याय

उमिर रही थोड़ी, भज मन राम!

रनबीर सिंह के दोस्त ठाकुर रुस्तम सिंह और उनके चचा ठाकुर युद्धबीर सिंह, सी० आई० ई० तीन महीने तक समुन्दर में जहाज़ पर हवा खाने गये

थे। डाक्टरों ने सलाह दी थी कि युद्धवीर सिंह की तन्दुरुस्ती के लिये ज़रूरत है कि दो तीन महीने तक समुन्दर ही में रहें। रुस्तम सिंह उनके भतीजे भी साथ गये थे। तीन महीने के बाद वापिस आये तो बलभद्र सिंह के यहाँ एक दिन रुस्तम सिंह मेहमान हुए। आते ही कहा—भई, रनबीर और गुमान सिंह और इन्द्रबिक्रम सिंह को बुलवाओ।

इतना सुनना था कि बलभद्र सिंह की आँखों में आँसू आ गये। मेहमान का असबाब उतरवाया, और कहा—दस बज गये हैं। ग़ुसलखाने जाके नहाइए, खाना खाइये। सब दोस्तों को बुलवा लूँगा। आप खाने-वाने से तो फ़राग़त हूजिए। उन्होंने कहा—भई घबराहट क्या है, अभी तो दस ही बजे हैं। चाय और रोटी और मक्खन स्टेशन से उड़ाके आये हैं। चचा को गाँव पर भेजा, हमने हाज़िरी खाई और यहाँ आये। मैं तो तार ज़रूर भेज देता, मगर पहले यहाँ उतरने का इरादा न था।

बलभद्र सिंह चाहते थे कि रुस्तम सिंह पहले खाना खा लें, फिर और बातें हों। मगर उन्होंने एक न मानी। कहा—हम क़सम खाके आये हैं, कि आज रनबीर सिंह ही के साथ खाना खाएँगे। ज़रूर बुलाओ और जल्द बुलवाओ। बलभद्र सिंह ने फिर इसरार किया कि तुम तो पागल हो, कहना नहीं मानते। अरे, भाई खाना खा लो, फिर चलके हम तुम तहसीलदार को भी पकड़ लाएँगे और इन्द्र विक्रम सिंह को भी।

उनके दोस्त ने बिगड़कर पूछा—और रनबीर सिंह को?

उन्होंने कहा—रनबीर सिंह तो लड़ाई पर गये हैं। रिसालदार हो गये हैं न। कहने को तो बलभद्र सिंह ने इतनी बात कह दी। क़रीब था कि फूट-फूट के रोने लगें; मगर ज़ब्त किया, कि ये अभी सफ़र से चले आये हैं; यह गोला लगेगा तो ग़ज़ब ही हो जायगा। खाना-दाना खा लें तो इन्द्रबिक्रम सिंह या गुमान सिंह से कहें कि भई अब इनसे न छिपाओ। रुस्तम सिंह को क्या मालूम था कि जिस दोस्त के बारे में बातें कर रहे हैं उसके मरने का तार मुद्दत हुई आ चुका। बलभद्र सिंह का ज़ख़्म उस वक्त हरा हो गया। कहना चाहते थे कि—अरे यार किसको पूछते हो! अब उसका ठिकाना कहाँ! मगर बस इसी ख़याल से ख़ामोश हो रहते थे, कि खाना खा लेने दो—वह दो घड़ी पहले सुना, तो क्या, और दो घड़ी बाद सुना तो क्या। कोई ख़ुशख़बरी तो है नहीं कि दोस्त के आते ही उससे कहा जाय।

रुस्तम—बीवी रनबीर सिंह की इतनी प्यारी है कि हम समझते थे यह कभी रिसाले में जाने का नाम भी न लेगा: आज बिलोचिस्तान भेज दिये गये, कल माल्टा में तायनात किये गये।

बलभद्र सिंह रो देने को थे कि यह क्या कह रहा है। रनबीर सिंह कहाँ बेचारा।

रुस्तम—हमने कामिनी की तस्वीर भी नहीं देखी। कई बार रनवीर से कहा, और वह दिखाने को भी था, मगर इत्तफ़ाक़!... हमारी भावज कहती हैं कि ऐसी हसीन औरत देखी ही नहीं!

बलभद्र सिंह बात को टालते थे।

रुस्तम—मैं सोचके आया था कि रनबीर से कहेंगे कि कामिनी का झमकड़ा हमें दिखा दो! कोई औलाद हुई?

बलभद्र—नहीं, कोई नहीं।

रुस्तम—उम्मीद है?

बलभद्र—भगवान जाने!

रुस्तम—रनबीर के लड़का हो तो हम उसको और अपने लड़के को साथ ही साथ लन्दन रवाना करें।

बलभद्र सिंह ने फिर रोना ज़ब्त किया। दिल में सोचने लगा, कि हाय रुस्तम सिंह किस ख़याल में हैं। रनबीर सिंह बेचारे के यहाँ, अब लड़का होना कैसा!

रुस्तम—भला कामिनी उनके लड़ाई पर जाने से ख़ुश है या नाराज़?

बलभद्र—मालूम नहीं।

रुस्तम—हमसे कुछ फरमाइशें की थीं कि ये-ये चीज़ें लेते आना, वह हम नहीं लाये। हमसे बहुत बिगड़ेगा। ख़त-वत आता है? पता क्या है?

बलभद्र सिंह जल्दी से एक और कमरे में चले गये और वहाँ जाके बहुत रोए। नौकर देख रहा था, वह समझ गया कि रुस्तम सिंह जब से बाहर से आये हैं उनको अभी रनबीर सिंह के मरने का हाल नहीं मालूम, खोद-खोदके पूछ रहे हैं। और ये बिचारे टाल रहे थे। अब रोना आ ही गया। ख़ैर आँसू पोंछकर और मुँह धोकर रुस्तम सिंह के पास गये, और कहा—यार हम कल से भूखे हैं। चलो खाना खा लो। पहले तो रुस्तम सिंह ने बुरा भला कहा कि बड़े मरभुखे मालूम होते हो। उस वक़्त से सौ ही दफ़े कह चुके। ऐसी भी क्या भूख! चलिये, साहब, चलिए। हम कहते थे कि गुमान सिंह और इन्द्र बिक्रम सिंह भी आ जाते तो सब साथ ही चलते।

बलभद्र ने कहा—जी हाँ, वह लोग आपके लिये अब तक बैठे होंगे।

ग़रज़ कि इस रद्दो-बदल के बाद खाना खाने बैठे। अंडे और कबाब और चुपड़ी हुई रोटियाँ और आलू का सालन और उरद की दाल और मुर्ग़ का क़ोरमा और चटनी खाने के साथ। बलभद्र सिंह ने पिल्स्नर की बीअर पी और रुस्तम ने ब्राण्डी।

बलभद्र सिंह ने गुमान सिंह और इन्द्रबिक्रम सिंह को लिख भेजा कि रुस्तम सिंह आये हैं। अभी मैंने उनसे रनबीर सिंह मरहूम के बारे में कोई ज़िक्र नहीं किया है। तुम लोग भी आओ।' 'मरहूम' का लफ़्ज़ लिखते हुए बलभद्र सिंह की

आँखों में आँसू डबडबा आये और और दोनों दोस्त भी मरहूम का लफ़्ज पढ़ कर आँखों में आँसू भर लाये—आज रनबीर सिंह को हम 'मरहूम' कहते हैं।

ये दोनों खाना खाते ही थे कि वह दोनों (गुमान सिंह और इन्द्रबिक्रम सिंह) आ गये।

रुस्तम—(बड़े तपाक के साथ) बचा बिरादर: आओ रे भाई! (इन्द्र-बिक्रम सिंह को आहस्ता से लप्पड़ लगाकर) इन गालों को ये हाथ ढूँढ़ते थे। गुमान सिंह की टोपी सर से फेंककर) हमारे सामने टोपी उतारकर आया कर, और जूता उतारके। यू काला सूअर!

इन्द्र—कहिए कब आये?

रुस्तम—जब आपकी हमशीरा ने बुलवाया, तब आये।

गुमान—अब ठाकुर युद्धबीर सिंह की तबीअत का क्या हाल है?

रुस्तम—(गुमान सिंह को जाम देकर) लीजिए, ब्राण्डी तो पीजिए।

गुमान—(जाम लेकर) हमें पसन्द नहीं। (पीकर) व्हिस्की अच्छी होती है।

रुस्तम—(दूसरा जाम इन्द्रबिक्रम सिंह की तरफ बढ़ाकर) लीजिए।

इन्द्र—शौक़ कीजिए। मैंने तो छोड़ दी। मुझसे इसरार न कीजिए।

रुस्तम—आपकी ऐसी-तैसी।

बलभद्र—भई इनसे इसरार न करो। इन्होंने वाक़ई कोई तीन महीने से नहीं पी। इनको माफ़ कीजिए। हम और गुमान तो साथ दे रहे हैं।

खाना खाने के बाद सब कमरे में जाके बैठे और पंखा होने लगा।

रुस्तम—(इन्द्रबिक्रम से) रनबीर सिंह का ख़त कब से नहीं आया?

इन्द्र ने आँखों में आँसू लाकर एक ठंडी साँस भरी।

गुमान सिंह—किसको पूछते हो? रनबीर सिंह बेचारा।

इतना कहना था कि गुमान सिंह की आँखों में आँसू आ गये।

इन्द्र—(रोकर) रनबीर सिंह दग़ा दे गये।

रुस्तम—(ज़ोर से) अरे!!

अचानक ही जो इतने पुराने दोस्त, बल्कि लँगोटिये यार कहिये, उसके मरने की ख़बर सुनी तो बेहद ताज्जुब हुआ। बस, 'अरे!' का लफ़्ज तो मुँह से निकला; बहुत ज़ोर से 'अरे!' कहकर एक हैरानी-सी में डूब गया। उसके बाद दिल पर रंज का ऐसा असर हुआ कि ज़ोर से एक चीख़ मारी और रोना शुरू किया तो जब्त करना मुश्किल था। रोते-रोते हिचकियाँ बँध गईं। आँसू देर तक नहीं थमे। चारों रोते थे। कोई किसी से बात नहीं करता था। नौकर ने जब यह कैफ़ियत देखी, तो पानी लाया और सब का मुँह धुलाया और तौलिया दिया। मुँह धो और आँसू पोंछकर रुस्तम सिंह ने एक ठंडी साँस भरी और कहा—हाय रनबीर, अरे यह क्या हो गया!

रुस्तम—(बलभद्र से) यह क्या हो गया, भाई!

बलभद्र—(आँखों में आँसू भरकर) बिजली गिरी!

रुस्तम—हाय मैं कहता था कि रनबीर सिंह के साथ खाना खाएँगे। (रोकर) हाय अफ़सोस। अरे यार रनबीर सिंह (खड़े होकर) किसी कोने से आ जा! (बहुत रोकर) यह कैसा गोला लगा।

बलभद्र—हम लोगों के नसीब।

गुमान सिंह—(आँसू बहाते हुए) इन्द्रबिक्रम सिंह ने उस दिन से शराब पीना और गोश्त खाना छोड़ दिया। घुलके काँटा हो गये हैं। बलज़ोर सिंह की बीवी रोते-रोते अन्धी हो गईं। यानी वाक़ई अन्धी ही हो गई; एक आँख से बिलकुल नहीं सूझता। दूसरी आँख से कुछ योंही-सा दिखाई देता है।

रुस्तम—(आँसू पोंछकर) क्या दोस्त आदमी था! यह क्या हुआ।

इन्द्र—बड़ा क़िस्सा है। जंग में क्या पूछते हो, क्या हुआ!

रुस्तम—मैंने आते ही पहले उसी को दरियाफ़्त किया, कि रनबीर को बुलाओ (ठंडी आह खींचकर) बलभद्र सिंह ने पहले तो कुछ कहा नहीं। बाद में कहा कि जंग पर हैं, वह रिसाले में नौकर हो गये। जो बात मैं पूछता था उससे ये बचते थे, और बार-बार टाल देते थे; और बड़ा इसरार करते थे कि खाना जल्दी खा लो। हाय हाय! बड़ा अंधेर हो गया!

इन्द्र—बड़ी नोक का ठाकुर था।

गुमान—छत्रियों की नाक।

रुस्तम—ऐसा कोई पैदा नहीं हुआ था। (इन्द्र बिक्रम से) हाय, मुझे और यों तो रोना आता ही है, दुश्मन तक रोते होंगे। मगर मुझे तुम्हारी बहन बिचारी की हालत पर बड़ा ही रोना आता है।

इन्द्रबिक्रम सिंह की आँखों से आँसू की धार बह चली।

बलभद्र—अरे मियाँ किसको रोते हो! और हम भी रोते हैं तो बेवक़ूफ़ हैं। वह हमारा दोस्त ही न था। दोस्त होता तो इतनी जल्द दग़ा दे जाता? कभी न देता। मगर वह तो पक्का दुश्मन था। और सब से ज़्यादा दुश्मन इनकी बहन बिचारी का था।

गुमान—वह कहीं की न रही।

रुस्तम—दोनों जहान से गई-गुज़री।

रुस्तम—आजकल तुम्हारे यहाँ है कि सुसराल में?

इन्द्र—(रोते हुए) न हमारे यहाँ हैं न सुसराल में।

रुस्तम—(ताज्जुब में आकर) क्या?

* * * * * * *

दूसरे रोज इन्द्रबिक्रम सिंह के मामू के लड़के के साथ रुस्तम सिंह और

बलभद्र सिंह और गुमान सिंह बाग़ गये। कामिनी किसी मर्द को बाग़ में नहीं आने देती थी। मगर जो कोई उनके भाई या देवर के साथ जाता था उसको नहीं रोकती थी। जिस वक़्त ये लोग बाग़ के अन्दर गये, तो अजब हालत देखी। एक हंस की मादा चुग रही है, और बाग़ भर में सन्नाटा पड़ा हुआ है। मालिनें दूर अपने काम में लगी हुई हैं। और एक कमसिन नाज़ुक-बदन औरत गेरुए कपड़े पहने हुए, हाथ में छोटी-सी सितारी लिये आहिस्ता-आहिस्ता बजाती है, और बड़ी हसरत के साथ झूमती हुई गाती है—

भज मन राम उमिर रही थोड़ी। भज मन राम।
चार जने मिल लेने को आये, ले काठ की री घोड़ी।
जोड़ लकड़िया उन फूंक दीना, जैसे बिंदराबन की री छोरी।
भज मन राम उमिर रही थोड़ी। भज मन राम।
शीश महल के दस दरवज्जे; आन काल ने घेरी
आगर तोड़ी नागर तोड़ी, तोड़ खोपड़िया निकस गयो प्रान।
भज मन राम, उमिर रही थोड़ी, भज मन राम।
पाय पकड़ के तिरिया रोए, बिछुड़त है मोरी हँसा की जोरी
भज मन राम उमिर रही थोड़ी, भज मन राम।
कहत कबीर सुनो भई साधो जिन जोड़ी उन तोड़ी।
भज मन राम उमिर रही थोड़ी, भज मन राम!

छोटी-सी सितारी बजाती और यह भजन गाती थी:

उमिर रही थोड़ी; भज मन राम
पाय पकड़ वाके माता रोवे, बहियाँ पकड़ सग भाई
लट छिटकाय वाकी तिरिया रोवे, बिछुरत है मोरी हंसा की जोरी
भज मन राम उमिर रही थोड़ी। भज मन राम।

जितने गये थे, सब की यह कैफ़ियत थी, कि रूमाल हाथ में और आँसू पोंछते जाते थे। यह आवाज़ कलेजे पर तीर का काम करती थी। 'बिछुरत है मोरी हँसा की जोरी—भज मन राम।' रुस्तम सिंह के दिल पर इस आवाज़ और इस अन्दाज़ ने तीर ही का काम किया। आँसुओं के तार ऐसे बँधे थे कि कुछ नहीं सूझता था।

इत्तफ़ाक़ से एक बूढ़ा ताल्लुक़दार हाथी पर सवार उधर से निकला; घंटा ठनाठन बजाता हुआ। जब पास आया तो एक औरत, और कमसिन औरत के गाने की आवाज़ सुनी। नौजवान की आवाज़ छिपी नहीं रहती। बाग़ की दीवारें छोटी-छोटी थीं। हाथी रोकके देखने लगा। साफ़ देखा कि एक जवान औरत गेरुए कपड़े पहने, फ़क़ीराना लिबास, जोगिन के भेस में है (हाथ में सितारी बहुत ही छोटी-सी है। इसको छेड़ती जाती है और गाती जाती है—)

उमिर रही थोड़ी, भज मन राम।
पाटी पकड़ वाके माता रोवे, बहियाँ पकड़ सग भाई
भज मन राम, उमिर रही थोड़ी, भज मन राम।

यह भजन जिसके एक-एक लफ्ज़ से बैराग बरसता था सुनकर ताल्लुकेदार को रोना आ गया। फ़ीलवान से कहा—यह कोई बड़ी दुखी मालूम होती है।

फ़ीलवान—सरकार, कोई बहुत बड़ा दुख इस पर पड़ा है।

ताल्लुक़दार—मालूम होता है, इसका आदमी जाता रहा है; उसके दुख में जोगिन हो गई।

फ़ीलवान—और कोई अमीर मालूम होती है।

ताल्लुक़दार—हाँ, किसी बड़े आदमी की बहू-बेटी है। हाय, दुख भी क्या बुरी चीज़ है।

फ़ीलवान—और अभी उमर भी कम है, हज़ूर।

ताल्लुक़दार—बच्चा है, बिलकुल। अभी उम्र क्या है।

इतने में फिर आवाज़ आई—

चार जना मिल लेने को आए, काठ की री घोड़ी
जोड़ लकड़िया उन फूँक दीना, जैसे बिन्दराबन की री छोरी
भज मन राम, उमिर रही थोड़ी। भज मन राम।

बूढ़े ताल्लुक़दार तो सुनते ही बस रो दिये।

दो आदमी पैदल जा रहे थे और उनके घोड़े पीछे-पीछे थे। एक दफ़ा ही आवाज़ आई—

शीश महल के दस दरवज्जे, आन काल ने घेरी
आगर तोड़ी, नागर तोड़ी तोड़ खोपड़िया निकस गयो प्रान
भज मन राम, उमिर रही थोड़ी, भज मन राम।

दोनों सुनते ही लोट हो गये। इन दोनों आदमियों ने चाहा कि बाग़ के अन्दर जायँ और देखें कि यह क्या भेद है। मगर दरबान ने रोका। गुमान सिंह ने जो पीछे फिरके देखा तो दो सफ़ेदपोश। इतने में उनके कान में आवाज़ आई कि तहसीलदार साहब मालूम होते हैं। आँख उठाकर जो देखते हैं तो रौनक़नगर के बूढ़े ताल्लुक़दार हाथी पर सवार। चार आँखें होते ही ताल्लुक़दार ने बंदगी की और हुक्म दिया कि हाथी को बिठा दो। गुमान सिंह बाग़ के बाहर गये। इन दो सफ़ेदपोशों में एक उनकी तहसील का सियाहानवीस था जो अब बदल दिया गया, और दूसरा रेवेन्यू-एजेन्ट। दोनों ने झुकके सलाम किया। और इधर ताल्लुक़दार साहब बढ़े।

ताल्लुक़दार—मुझे क्या मालूम था कि आप यहीं हैं। वह तो फ़ीलवान ने कहा।

गुमान—मेरे कान में आवाज़ आई; जब तो मैंने देखा।

ताल्लुक़दार—यह क्या माजरा है? यह कौन दुखी औरत है?

गुमान—इसको न पूछिये। इस वक्त कलेजा कटा जाता है।

ताल्लुक़दार—मेरी ख़ुद यही कैफ़ियत है। जब से सुना और देखा, दिल रो रहा है।

रेवेन्यू-एजेन्ट—हज़ूर, यह है कौन बिचारी?

सियाहानवीस—कोई बड़ा सदमा पहुँचा है।

गुमान—बस, ऐसा सदमा पहुँचा है कि राज छोड़ दिया।

सियाहा—अफ़सोस। और हज़ूर आवाज़ से पाया जाता है कि अभी उम्र भी कुछ ऐसी नहीं है।

गुमान—यह बेचारी मुसीबत की मारी हमारी ही ज़ात की है और ठाकुर बलज़ोर सिंह की बहू।

रेवेन्यू-एजेन्ट—अरे! रनबीर सिंह के बाप बलज़ोर सिंह!

गुमान—रनबीर सिंह की बीवी हैं।

ताल्लुक़ेदार—हाय, ग़ज़ब! हाय, हाय, किस घर की बेटी और किस घर की बहू और इस हालत में। इस वक़्त दिल का बहुत बुरा हाल है; गजराज सिंह मेरा यार है।

रेवेन्यू-एजेन्ट—यह भी बहुत बड़ा दुख है। मगर हमने यह नहीं सुना था कि (दबे दाँतों) जोगिन.....

'जोगिन' का लफ़्ज़ दबे दाँतों कहा तो गुमान सिंह बोले—यह आपने डरते-डरते क्यों कहा? जोगिन हो ही गई हैं! यह तो खुली हुई बात है।

ताल्लुक़दार और वह दोनों आँखों में आँसू ले आये।

जोगिन का भजन सुनकर सब का कलेजा फटता था। ख़ास तौर से बूढ़े ताल्लुक़दार का, कि जिस पर बीत चुकी थी। जोगिन की हर तान पर उसकी आँखों से पट-पट आँसू गिरने लगे और दुनिया का नक़्शा आँखों के सामने खिच गया।

छब्बीसवाँ अध्यया

कम्मन

नौचन्दी जुमेरात, और अँधेरी रात; बादल की फ़ौज, काली पल्टन; दल-बादल परे जमाए हुए। मालूम होता था कि बिन्ध्याचल परबत से भी कहीं ज्यादा ऊँचे पहाड़ से वह गिराब चलेगा कि जमीन का झूलना डाँवाडोल हो जायगा। इस काली पल्टन के कड़कैत का नाम जनरल बज्जर था; जिसके

कड़के के मुक़ाबिल में अच्छे-अच्छे कड़कैतों का कड़का पानी भरता। यह पल्टन थी या काली कलकत्ते वाली का क़हर का नमूना। दर-दीवार, दरख्त, पत्ते, जड़, आदमी, आसमान-ज़मीन, तमाम दुनिया—सियाह। एक अँधेरा है कि छाया हुआ है। इस क़दर अँधेरा कि जिधर नजर जाती थी काली जी की मूरत अपनी सूरत दिखाती थी।

इस रात को इस प्रिया जोगिन का दिल और रातों से कहीं ज्यादा बेचैन और बेक़रार था। पलंग पर से चौंक-चौंक पड़ती थी, उठ-उठ बैठती थी। किसी पहलू से चैन नहीं आता था। एक दफ़ा तो बिलकुल पागल-सी होकर ज़ोर से चीख़ी—हाय, यह क्या हो गया। आधी रात तक सोया की; उसके बाद आँखें खुल गईं और दिल में एक हूक-सी उठी।

जब मालिका का दिल दुख में हो, तो लौंडियों, बाँदियों, नौकरों-चाकरों का दिल भला क्योंकर ख़ुश हो सकता है। मालिनें, महरियाँ, ब्राह्मणी, बारिन सब परेशान। बाग़ गो हरा-भरा, फला-फूला हुआ था, मगर उदास।

कामिनी दीवानियों की तरह से सिर धुनती थी। दो बजे के वक्त पलंग पर से उठी। एक औरत साथ हुई, दो मालिनें साथ हुईं। बाग़ की रविशों में टहलने लगी और कूकने लगी—

भज मन राम।

बिछुड़त है मोरी हंसा की जोड़ी—भज मन राम।

कोई चार बजे के वक्त बाग की दीवार के पास से आवाज़ आई:

नाहीं बिछुड़ी तोरी हंसा की जोड़ी—भज मन राम!

पहले एक मालिन ने सुना; चौकन्नी हुई। कामिनी ने यह आवाज नहीं सुनी; और बदस्तूर कूकने लगी—

बिछुड़त है मोरी हंसा की जोड़ी—भज मन राम।

उधर से फिर आवाज़ आई—

नाहीं बिछुड़ी तोरी हंसा की जोड़ी—भज मन राम।

मालिन से अब न रहा गया। कहा—यह कौन है, जी? दूसरी मालिन और औरत ने पूछा—कौन?

जोगिन ने कुछ ध्यान न दिया और फिर कोयल की तरह कूकी—

बिछुड़त है मोरी हंसा की जोड़ी, भज मन राम।

इस आवाज़ के खत्म होने ही वह आवाज़ फिर आई, और अबकी पास से सुनाई दी:

नाहीं बिछुड़ी तोरी हंसा की जोड़ी—भज मन राम।

अब तो कामिनी ने भी सुना और कान खड़े हुए।

जोगिन—यह कौन है?

औरत—कहता है: नाहीं बिछुड़ी तोरी हंसा की जोड़ी—भज मन राम!

मालिन १—मैंने पहले ही सुना था बिछुड़ी नाहीं तोरी हंसा की जोड़ी, भज मन राम! सगुन तो कुछ अच्छा-सा मालूम होता है।

जोगिन—ऊँह! होगा कोई। चिढ़ाने दो। (ज़ोर से) बिछुड़ गई तोरी हंसा की जोड़ी भज मन राम!'

उधर से भी आवाज आई:

मिल गई तोरी बिछुड़ी जोड़ी, भज मन राम!

मालिन २—यह क्या कहता है?

औरत—यह है कौन?

मालिन १—सगुन तो अच्छा है।

जोगिन—चिढ़ाता है। चिढ़ाने दो। जोर से बिहाग की धुन में—

फ़क़ीरों से अच्छी नहीं दिल्लगी

उधर से आवाज़ आई—

हैं जोगी भी करते कहीं दिल्लगी!

अब जोगिन और चौकन्ना हुई। उसी बिहाग की धुन में जवाब।

मालिनों ने कहा—बीवी कुछ इसमें फेर है। अब जबाब न देना। ऐसी अकासबानी सुनके चुप रहते हैं।

जोगिन—(ऊँची आवाज़ से)

सदा क्या य आती है आकाश से?

(ज़रा आहिस्ता से) सदा—क्या—आती है आ—काश से?

उसने उधर से यों जवाब दिया—

नहीं आती आवाज़ आकाश से: सदा आती है यह मेरी लाश से।

मालिन १—अब न बोलो बीबी। मैं तो डर गई।

मालिन २—मुझे भी डर लगता है।

औरत—अब अन्दर चलिए। क्या जाने कौन हो कौन न हो।

जोगिन—(बहुत ही अचम्भे में आकर) यह क्या भेद है?—तू इन्सान है, या कोई जिन है, या कि साया है! या कि मुझे छेड़ने आया है!

उधर से आवाज़ आई—

न जिन हूँ, न साया हूँ, ना हूँ परी।
मैं इन्सान हूँ, क़ौम का छत्री
चली आ—देख, पीरों की करामात:
मेरी प्यारी है नौचन्दी जुमेरात!

जोगिन ने कहा—अरे! पहले तो समझी कि रनबीर सिंह की रूह है। कुछ डरी; लाश का लफ़्ज तो सुन ही चुकी थी; और फिर छत्री का लफ़्ज

भी सुना। और उन सब पर तुर्रा यह हुआ कि 'नौचन्दी जुमेरात' की याद दिलाई; और महीने की पहली जुमेरात नौचन्दी जुमेरात तो थी ही। दिल पर अजब तरह का असर हुआ। मगर सोचा कि मरने के बाद आवाज़ का आना अन्ध-विश्वास के कारन भी हो सकता है। एक दफ़ा सोचा, कि चलो आवाज़ की तरफ! कहा, लालटैन रोशन करो! औरतों ने मना किया, कि सरकार, बहुत बुरा करती हैं। हमारी सलाह नहीं है। यह आकासबानी अच्छी नहीं है। मगर जोगिन अच्छी नहीं है, और फाटक खुलवाया, और इन तीनों औरतों को साथ लेकर चली। दो मालिनों के हाथ में खुरपी, —कि अगर भूत-प्रेत हो तो नुक़सान न पहुँचा सके। बाहर निकलीं तो देखा कि बाग़ के पास मशाल जल रही है और एक फिनस रखी हुई है और एक नौजवान खूबरू जोगी खड़ा हुआ है। पीत पीताम्बर और केसर का रँगा हुआ चाँदनी का कुरता; सोने के बटन। नंगे सर, बीच की माँग निकली हुई, बालों में ब्रुश किया हुआ; बहुत ही खूबसूरत। जवान जोगिन उसके पास जाकर खड़ी हुई और कहा—

महाराज आप कौन हैं?

जोगी ने कहा—कम्मन!

कम्मन का लफ़्ज सुनना था कि जोगिन ने आव देखा न ताव, झपटके लिपट गई, और गश आ गया। जोगी ने सँभाला, और फ़िनस में मालिनों की मदद से लिटाया। फ़िनस बाग़ की तरफ चली। जोगी फ़िनस का पाया पकड़े हुए, साथ मालिनें और साथ की औरतें, अचम्भे में डूबीं। उनमें चुपके-चुपके यों बातें होने लगीं—

१—दीदी यह अचरज देखा!

२—यह जोगी कौन है? लड़का सुन्दर है और रुपयेवाला अमीर।

३—यह तो मर्द के नाम से काँपती थीं। कोई आने नहीं पाता था। यह क्या हो गया, कि लिपट गई। मैं तो काँप उठी!

१—इससे बढ़कर अचरज और क्या होगा?

२—और अभी उम्र क्या है?

१—अरे, अभी बच्चा है।

२—मैं तो बस जैसे योंही रह गई धक से।

१—महाराज, आप कौन हैं?

२—जोगीजी महाराज कहाँ से आना हुआ?

जोगी ने झुकके कहा—गुरू के घर से।

इतने में बाग़ का फाटक आया, तो मालिन ने कहा—अब महाराज आप यहाँ बिराजिए। हमारी सरकार का हुक्म है कि मर्द अन्दर न आने पाये।

चौकीदार ने भी यही कहा। मगर जोगी ने हिश ! कहकर अन्दर क़दम रखा। अपने कहारों को डाँटकर हुक्म दिया कि चले आओ। कहार उनके साथ थे। चौकीदार रौब मे आया। फ़िनस बाग़ के अन्दर कमरे तक आ गई। वहाँ से इन हमालियों ने जोगी की मदद से जोगिन को फ़िनस से निकाला और पलंग पर लिटाया, तो जोगी ने कहा—अच्छा, अब तुम लोग जाओ! हम इनको दवा देंगे।

उस पर वह सब बिगड़ खड़ी हुईं। महाराज जी, अब किरपा करिये!

दूसरी बोली—हाथ पकड़ते ही पहुँचा पकड़ लिया।

इतने में एक औरत इस तकरार की आवाज़ सुनकर जाग उठी, और दूसरी आई, और जोगी को देखकर कहा—अरे!

अब सुनिये कि इसकी असलियत क्या थी। कुछ औरतों को यक़ीन था कि यह अकासबानी है। कामिनी को डराया कि बाहर न जाओ। मगर 'नौचन्दी जुमेरात' का लफ़्ज़ सुनकर कामिनी से न रहा गया। वहाँ जाके 'कम्मन' का लफ़्ज़ सुना। यह समझी कि रनबीर सिंह हैं। सच है, दुनिया उम्मीद ही के सहारे क़ायम है। इस उम्मीद के सबब से बड़े-बड़े धोखे इन्सान खा जाता है। और जब कामिनी-सी सती स्त्री इस जोगी से लिपट गई तो साथ की औरत अचम्भे में डूब गईं, कि अरे! यह कायापलट कैसी! और सबके सामने पूरा यक़ीन हो गया कि जादूगर है।

अब सुनिये कि इस वाक़ये के दो दिन पहले एक अंग्रेज़ी अख़बार में यह छपा था—

'बड़ी खुशी की बात है कि जिन लोगों को टापू की फ़ौज ने फ़तह के बाद गिरफ़्तार करके क़िले में क़ैद किया था और उसके बाद क़िले के उस दरजे में आग लगा दी थी, जिसमें वह बेचारे बेकस जलभुनके खाक का ढेर हो गये थे—इनमें से कुछ आदमियों को वहाँ के एक अफ़सर ने पनाह दी थी और इनको टापू के गाँव में छिपाकर रखा था और पूरी कोशिश की थी कि अपनी गवरमेंट से छिपाकर इनको रिहा कर दें। मगर इस अफसर के एक दुश्मन ने गवरमेंट से जड़ दी। और गवरमेंट ने इस अफ़सर को तलब करके बड़ी सख़्ती के साथ हुक्म दिया कि अगर दो रोज़ के अन्दर उन क़ैदियों को हाज़िर न किया तो समुन्दर में डुबा दिया जायगा। यह अफ़सर बड़ा नेकदिल और भला आदमी था। उसने कतई इनकार किया; कहा, मैं कुछ भी नहीं जानता, और कमान के ऊँचे अफ़सरों को समझाया कि जंग के मैदान में तो बेशक मार-काट का दुश्मन को पूरा-पूरा अख़्तियार है, और जंग के मानी ही ये हैं कि दुश्मन को मौत के घाट पहुँचाए, मगर जब दुश्मन को गिरफ़्तार कर लिया और वह बस में आ गया और बिलकुल आपके क़ाबू में हो गया तो आपको अख़्तियार

है, चाहे क़त्ल कीजिए, चाहे जिला दीजिए; चाहे तोपदम कीजिए, चाहे तलवार से गर्दन उड़ा दीजिए। मगर अक़्ल और इन्साफ़ और जंग के उसूल यह हैं कि जो अपने बस और क़ाबू में आ जाय उसके साथ उम्दा सलूक करे। अगर मैंने किसी क़ैदी को बचाया भी होता तो गवरमेंट को लाज़िम था कि उस पर रहम करती न कि उसके साथ मुझ पर भी यह ज़ुल्म हो। जब रूसियों ने उसमान पाशा को गिरफ़्तार किया तो उसमान पाशा ने अपने भाई के नाम क़ैदखाने से ख़त लिखा कि जो आराम मुझ क़ैदी को यहाँ मिलता है, वह अपने घर पर भी नहीं मिलता था। सिपाही वही है जो दुश्मन क़ैदी पर रहम करे। इतना सुनना था कि वहाँ के उजड्ड लोगों ने फ़ौरन नादिर हुक्म दे दिया कि इसी दम इसको समुन्दर में डुबो दो। और दस प्यादे और पचास सवार और दो अफ़्सर पूरी वर्दियाँ डाटे इस बेचारे को समुन्दर में ले गये, और डुबा ही देने को थे कि उसके लड़के ने इन चार क़ैदियों के साथ-साथ दो क़ैदियों को पेश कर दिया और अपने बाप की जान बचाई। इन दोनों क़ैदियों के लिये गवरमेंट के ज़ालिम अफ़सरों ने क़त्ल का हुक्म जारी किया, और क़िले के फाटक के पास वह बेचारे लाये गये। उनसे पूछा गया कि तुम क्या चाहते हो? तुम्हारी गर्दन इस वक़्त उड़ाई जायगी। ऐसी हालत में एक ने कहा—मेरी लाश फूँकी या दफ़नाई न जाय, बहा दी जाय! दूसरे ने कहा—मुझे पूरी बोतल शराब की पिला दी जाय! इसके बाद जल्लाद ने पहले उस क़ैदी की गर्दन उड़ाई, जिसने अर्ज़ की थी कि लाश बहा दी जाय और उसका धड़ थोड़ी देर तड़प कर गिरा और ठंडा हो गया। इसके बाद उस बेचारे की बारी आई जो शराब की पूरी बोतल उड़ाकर बुत् बना हुआ था। जैसे ही जल्लाद ने तलवार उठाई, वैसे ही उसने डाँट बतलाई—ओ गीदी, ख़बरदार है और इस ज़ोर और डपट के साथ डाँटा, कि जल्लाद का हाथ काँप उठा और तलवार हाथ से गिर पड़ी। जो अफ़सर साथ थे उन्होंने जल्लाद को रोका और उस शराबी को रिहा कर और दूसरे जल्लाद को बुलाकर पहले जल्लाद की गर्दन उड़ा दी और क़ैदी और मरे हुए जल्लाद का ख़ून क़िले के फाटक के अजगरों को पिलवा दिया। क़िले के फाटक के इधर-उधर दो अजगर बने हुए थे। दोनों पीतल के। उनके मुँह में ख़ून डाल दिया और कटे हुए सर फाटक के इधर-उधर लटका दिये। जो क़ैदी मारा गया था उसका नाम दफ़ादार दीपसिंह था, क़ौम का जाट और जो बच गया उसका नाम सूबेदार खड़क सिंह सिख। जिस अफ़सर ने इन चार क़ैदियों को पनाह दी थी उसके लड़के को गवरमेंट ने टापू की फ़ौज का कमान्डर मुक़र्रर कर दिया। इसने मौक़ा पाकर इन तीनों क़ैदियों को गवरमेंट से छिपे तौर से अदन रवाना किया। अदन में तीनो आदमी इतने सख़्त बीमार हो गये कि वहाँ के डाक्टरों को इनकी जिन्दगी की उम्मीद नहीं

रही। कई दिन के बाद, दो की मौत हो गई। सिर्फ एक बच गया। और वह ब्रिटिश के पास काहरा गया, और कोंसल से सफ़र का ख़र्च लिया और अपने घर तार भेजा कि मैं मुद्दत के बाद सलामत आता हूँ।'

दुनिया के भी क्या कारखाने हैं। कामिनी रनबीर के नाम पर फ़िदा थी। अगर इसको यह मालूम हो जाता कि मेरी जान जाने से रनबीर सिंह ज़िन्दा हो जायँगे, तो यह जहर खा लेती। किसी न किसी तरह अपनी जान दे देती। इस जोगी को रनबीर सिंह समझकर ऐसी बेताब हो गई कि लिपट ही तो गई। बेहोश हो गई। और जिस वक्त फ़िनस चली, रास्ते में तीन बार आँख खुली। रनबीर सिंह और मालिनों ने कई बार पानी पिलाया, मुँह धुलाया। मगर दो-दो तीन-तीन मिनट के बाद ग़श आ जाता था, और जब आँखें खुलती थीं, तो उसको सब एक सपना-सा मालूम होता था।

कामिनी को इस थोड़े ही अर्से में कभी तो यक़ीन होता था कि यह रनबीर सिंह ही हैं और गोया दिल की बाछ खिल जाती थी, और कभी सब कुछ सपना समझती थी।

जब कामिनी को फ़िनस में लिटाया और फ़िनस चली और कई बार दिल ने पलटे खाये और कामिनी बेचारी उम्मीद और नाउम्मीदी के बीच झूल रही थी, एक दफ़ा आँखें अच्छी तरह से खोलकर नज़र भर के देखा तो वह ख़ुशी हासिल हुई जो लैला को मजनूँ और शीरीं को फ़रहाद के देखने से होती। मगर ज़रा ही देर के बाद फिर ख़याल आया, कि यह मैं सपना देख रही हूँ या वाक़ई यह सब हो रहा है जो मैं देख रही हूँ, तबीअत में जोश पैदा हुआ तो कहने लगी—अगर तुम रनबीर सिंह की रूह हो, तो... अगर परमेश्वर कोई चीज़ है तो उससे बढ़के कोई नहीं जानता कि मैं कैसी हूँ।.....हाय मेरा इम्तहान लेने को उसने अपनी रूह को भेजा है। अरी रूह, तू जिसको सबसे ज़्यादा प्यार करती है, तुझको उसी की क़सम कि तू ख़ुद मेरा इम्तहान ले। तू रनबीर सिंह बनके आई है! अरे, यह कौन-नाम मेरी ज़बान से निकल गया! हाय हाय, हम लोगों में दूल्हा का नाम नहीं लेते (बेहद रोकर) और क्यों नहीं लेते! अरे इस वजह से नहीं लेते कि....कुछ और कहने को थी कि गला रुँध गया; और फिर बेहोशी छा गई। फिर आँख खुली। इस वजह से नहीं लेते कि, हाय (आठ-आठ आँसू बहाकर) अगर दूल्हा का नाम बीवी ले ले तो दूल्हा ('दूल्हा' का लफ़्ज़ कहकर बहुत रोई, और कुछ कहने को थी कि फिर आँसू उमड़-उमड़के आने लगे) हाय! (फिर ज़ब्त करके कहा) नाम दूल्हा का इस सबब से नहीं लेते कि दूल्हा मर जायगा। मैं इन बातों को नहीं मानती, मगर फिर भी ख़याल आ ही जाता है। अरी रूह—या जो कोई तुम हो—क्या जाने रूह है या क्या है...

बस इतना सुनकर रनबीर सिंह ने कहा—'प्यारी कम्मन, मेरी जान से प्यारी ! मैं किसी की रूह हूँ न छलावा हूँ, न किसी ने मुझ पर टोना किया है, मैं तुम्हारा डियर डालिंग रनबीर सिंह हूँ। कामिनी ने पूछा, प्यारे, डियर डालिंग मैंने बेशक लिखा था, लेकिन तुम ठीक-ठीक बताओ कि कब लिखा था; और कैसे लिखा था। मुझे तो खूब याद है, मगर तुम बताओ !

जोगी ने खत का हवाला देते हुए वह शेर दोहराया—

मिला खत तुम्हारा डियर डालिंग—कलेजे से मैंने लगाया उसे।

बस यह शेर सुनना था कि कामिनी फिर लिपट गई। और तड़का हो गया। और जो खयालात कामिनी के थे वह सब बदल गये। और कामिनी जो अपने आप को राँड़ कामिनी, बेवा कामिनी समझती थी, वह अब मिसेज रनबीर सिंह है और सुहागिन है।

—:o:—